

विदेह VIDEHA

विदेह-सदेह १-३७ विस्तृत अध्ययन

Videha Sadeha 1-37 Detailed Study

विदेह ई-लर्निङ्ग प्रश्नोत्तरी शृंखला · Videha eLearning Quiz Book Series

खण्ड २ / २२ · Volume 2 of 22

सम्पादक / लेखक: गजेन्द्र ठाकुर

VIDEHA — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका | ISSN 2229-547X | www.videha.co.in

विदेह ई-लर्निङ्ग: <https://www.videha.co.in/videha-elearning.htm>

© Gajendra Thakur, Editor — Videha eJournal [Beta Version; suggestions invited]

विषय-सूची / Contents

१. विदेह-सदेह १ — विस्तृत अध्ययन

१२८० प्रश्न

२. विदेह-सदेह २ — विस्तृत अध्ययन

१२२० प्रश्न

प्रत्येक अध्यायक प्रश्न-खण्डक बाद ओहि अध्यायक उत्तरमाला (उत्तर ओ व्याख्या) देल गेल अछि।

In each chapter, the answer key with explanations (उत्तरमाला) follows the questions.

अध्याय १ : विदेह-सदेह १ — विस्तृत अध्ययन

खण्ड ५०५ : विदेह-सदेह १ — जानकी-नवमी: वेदवती, रावण-विनाश आ स्त्री-सम्मान

१. जानकी-नवमीक कथामे जनकजीक मूल दुःख की छल?

- (A) संतानहीनता
- (B) राज्य-विस्तार
- (C) वनवास
- (D) व्यापार-हानि

२. जनकजी खेतमे हर जोतैत काल की भेटलनि?

- (A) स्वर्ण-कलशसँ प्रकट दिव्य बालिका
- (B) शस्त्रसँ भरल संदूक
- (C) नदीक माछ
- (D) राज-दूतक पत्र

३. सीता नामक अर्थ लेखमे कोना जोड़ल गेल अछि?

- (A) हरसँ बनल रेखा/सीता सँ
- (B) समुद्रक लहर सँ
- (C) आकाशक तारा सँ
- (D) राजदरबारक सिंहासन सँ

४. वेदवती कथामे ओ ककरा अपन जीवन समर्पित कएने छलीह?

- (A) विष्णु देव केँ
- (B) रावण केँ
- (C) इन्द्र केँ
- (D) जनक केँ

५. रावणक प्रस्ताव वेदवती किएक अस्वीकार कएलनि?

- (A) किएक तँ ओ विष्णु प्रति समर्पित छलीह
- (B) किएक तँ ओ जनकक पुत्री छलीह
- (C) किएक तँ ओ राजगुरु छलीह
- (D) किएक तँ ओ वन नहि चाहैत छलीह

६. वेदवती कोन प्रतिज्ञा लेलनि?

- (A) पुनर्जन्ममे रावणक विनाशक कारण बनबाक
- (B) राज्य त्यागि व्यापार करबाक
- (C) जनकपुर छोड़बाक
- (D) विवाहक विरोध करबाक

७. मंदोदरी-सम्बन्धी कथान्तरमे सीताक जन्म-प्रसंग कोना अबैत अछि?

- (A) मंदोदरी अपन संतानक आश्रय जनकक मार्गमे नुकाबैत छथि
- (B) मंदोदरी सीताक गुरु बनैत छथि
- (C) मंदोदरी कोसीमे नाव चलबैत छथि
- (D) मंदोदरी मिथिला चित्र बनबैत छथि

८. राक्षस-अत्याचारक कथान्तरमे कलशमे की एकत्र कएल गेल छल?

- (A) ऋषि-मुनिक शोणित
- (B) मखानक बीज
- (C) राजमुद्रा
- (D) सोना-चाँदी

९. “यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते...” पंक्तिक भाव लेखमे की अछि?

- (A) स्त्री-सम्मान रहित समाज देवत्व आ मंगल पबैत अछि
- (B) स्त्री-अवमानना सदाचार अछि
- (C) युद्धे सभसँ पैघ धर्म अछि
- (D) धनहि देवता अछि

१०. जानकी-कथाक व्यापक सांकेतिक निष्कर्ष की अछि?

- (A) स्त्रीक अपमान करनिहारक अंत दुःखद होइत अछि
- (B) केवल राजवंश महत्त्वपूर्ण अछि
- (C) भोजन-विधान मुख्य अछि
- (D) भाषा-विस्मृति वांछनीय अछि

खण्ड ५०६ : विदेह-सदेह १ — ओमप्रकाश झा: मैथिल प्रवास, भाषा-स्मृति आ गोवा सम्मेलन

११. ओमप्रकाश झा केर लेख कोन प्रसंगसँ शुरू होइत अछि?

- (A) गोवामे अन्तरराष्ट्रीय मैथिली परिषदक सम्मेलन कभर करबाक अनुभवसँ
- (B) जनकपुरमे खेत जोतबाक कथासँ
- (C) मखानक खीर बनाबयसँ
- (D) संत रामदासक समाधिसँ

१२. गोवा सम्मेलनक कवर करबाक भार लेखककेँ कोना भेटल?

- (A) अपन समाचार-संस्थासँ
- (B) गामक पंचायतसँ
- (C) कन्यापक्षक आग्रहसँ
- (D) पंजीकारक आदेशसँ

१३. छत्तीसगढ़ आ मध्यप्रदेशक मैथिलक सम्बन्धमे लेख की कहैत अछि?

- (A) बहुत पीढ़ी बाद भाषा हराएल, मुदा मिथिलासँ स्नेह बचल
- (B) ओ सभ मिथिलासँ कोनो सम्बन्ध नहि रखैत छथि
- (C) ओ सभ केवल पंजी लिखैत छथि
- (D) ओ सभ मखानक खेती करैत छथि

१४. दिल्लीक नांगलोई प्रसंग ककर संकेत दैत अछि?

- (A) जीवन-यापन लेल मैथिलक विभिन्न व्यवसाय आ बिखरल बसाहट
- (B) केवल राजकीय समारोह
- (C) विद्यापतिक जन्म
- (D) रामलीलाक मंचन

१५. गोवा सम्बन्धी लेखमे स्कन्दपुराणक उल्लेख कोन दावासँ जुड़ल अछि?

- (A) गोवा बसाबयमे मैथिल ब्राह्मणक भूमिका
- (B) कोसी तटबंध निर्माण
- (C) जानकी नवमी तिथि
- (D) कोजागरा चुमाओन

१६. गोवन लोकक मातृभाषा कोंकणीमे मैथिली-सदृश शब्दक उदाहरण किएक देल गेल?

- (A) भाषिक-सांस्कृतिक निकटता देखेबाक लेल
- (B) भाषा कमजोर कहबाक लेल
- (C) पत्रकारिता त्यागबाक लेल
- (D) केवल हास्य लेल

१७. गोवा सम्मेलनमे नेपालक प्रतिनिधि आ नेपाल टीवीक उपस्थिति की देखबैत अछि?

- (A) मैथिली आयोजनक सीमा भारतसँ बाहर धरि फैलल छल
- (B) मैथिली केवल एक गामक विषय छल
- (C) भाषा केवल पाक-विधि छल
- (D) सम्मेलन गुप्त छल

१८. गोवाक मैथिल मीडिया-पुरोधा पर लेखकक आलोचना की अछि?

- (A) ओ सभ निकट रहितहुँ कार्यक्रम कवर करबामे सक्रिय नहि भेलाह
- (B) ओ सभ सभटा आयोजन करैत छलाह
- (C) ओ सभ किसान छलाह
- (D) ओ सभ बाल-कविता लिखैत छलाह

१९. लेखक भाषा-संस्कृति त्यागक तुलना कोन प्रवृत्तिसँ करैत छथि?

- (A) सम्पन्न रहितहुँ कर्ज लेबाक प्रवृत्तिसँ
- (B) साधना करबाक प्रवृत्तिसँ
- (C) मखान बाँटबाक प्रवृत्तिसँ
- (D) अतिथि-सत्कारसँ

२०. “मिथिले तक नहि छथि मैथिल”क मुख्य चिन्ता की अछि?

- (A) प्रवासमे मैथिल पहचान रहि गेल अछि, मुदा भाषा-संस्कृति बिसरबाक संकट अछि
- (B) मिथिलामे कोनो लोक नहि रहैत अछि
- (C) केवल पाकशास्त्रक कमी अछि
- (D) कोनो सम्मेलन नहि भेल

खण्ड ५०७ : विदेह-सदेह १ — ओमप्रकाश झा: मीडिया, नैतिकता आ मैथिली अस्मिता

२१. “मीडिया कतअ ल जा रहल अछि?” लेखमे आरुषि, कोसी आ बम-विस्फोटक उल्लेख किएक अछि?

- (A) समकालीन घटनापर मीडिया प्रस्तुति पर प्रश्न उठेबाक लेल
- (B) केवल कथा-सूची बनेबाक लेल
- (C) जानकी-व्रतक प्रमाण लेल
- (D) मखानक उपज बताबय लेल

२२. लेखक मीडिया-दर्शक सम्बन्धमे कोन विडम्बना देखैत छथि?

- (A) मीडिया जे परोसैत अछि, दर्शक-पाठक ओकरा ग्रहण करबाक लेल बाध्य होइत छथि
- (B) दर्शक सभ समाचार बनबैत छथि
- (C) मीडिया पूर्णतः निष्पक्ष अछि
- (D) मीडिया केवल लोकगीत गबैत अछि

२३. “खशी के जान जाय...” कहावतक प्रयोग कोन भाव लेल भेल?

- (A) भोग करनिहारक स्वाद आ पीड़ितक जीवनक बीचक असमानता
- (B) भोजनक प्रशंसा
- (C) कन्यादानक रस्म
- (D) बाल-कविताक लय

२४. लेख मीडिया संस्थानक आन्तरिक संरचना पर की भाव व्यक्त करैत अछि?

- (A) भीतरक नैतिक पतन आ दोहरापन पर कठोर टिप्पणी
- (B) पूर्ण संतोष
- (C) भाषा-संरक्षणक आश्वासन
- (D) केवल तकनीकी समस्या

२५. स्टिंग ऑपरेशन सम्बन्धी लेखकक प्रश्न की अछि?

- (A) दोसरक स्टिंग करनिहार मीडिया पर सेहो नजरदारी किएक नहि?
- (B) स्टिंग केवल बालकविता लेल हो
- (C) स्टिंगक जरूरत नहि
- (D) स्टिंग पाकशास्त्रक विधि अछि

२६. मीडिया शीर्ष पद पर मैथिल पुरोधाक चर्चा ककर आलोचना अछि?

- (A) अस्मिता-बोधक बावजूद सत्य बाजयमे संकोच
- (B) मैथिलक अनुपस्थिति
- (C) केवल ग्रामीणता
- (D) बाल-कविताक कमी

२७. लेखक अपनाकेँ मीडिया-भीड़मे शामिल कहलासँ की सूचित करैत छथि?

- (A) आत्मालोचनात्मक ईमानदारी
- (B) पूर्ण अहंकार
- (C) भाषा-त्यागक समर्थन
- (D) मिथिला-विरोध

२८. मंडन, अयाची, जनक आ विद्यापतिक सन्तानक उल्लेख किएक अछि?

- (A) पूर्वजक नैतिक-बौद्धिक परम्परा सँ वर्तमानक दूरी देखेबाक लेल
- (B) वंशावली पंजी बनाबय लेल
- (C) पाक-विधि सुधार लेल
- (D) गोवा यात्रा लेल

२९. “कोना बचत मिथिलाक स्मिता?”मे युवा वर्गक मुख्य स्थिति की कहल गेल?

- (A) दिग्भ्रमित आ मार्गदर्शन-विहीन
- (B) पूर्णतः मार्गदर्शक
- (C) केवल किसान
- (D) केवल गायक

३०. मीडिया आ अस्मिता-विमर्शक साझा निष्कर्ष की अछि?

- (A) भाषा-संस्कृति बचएब लेल आत्मालोचना, सत्यवादिता आ सामूहिक जिम्मेदारी चाही
- (B) केवल उपभोग बढ़ाबी
- (C) भाषा छोड़ि दिअ
- (D) मीडिया प्रश्नहीन अछि

खण्ड ५०८ : विदेह-सदेह १ — स्मिता, रामलीला आ गामक सांस्कृतिक क्षय

३१. “स्मिता” सम्बन्धी लेखमे पाबनि-तिहारक महीना ककर अवसर रूपमे देखल गेल?

- (A) गामक सांस्कृतिक कार्यक्रम आ सामुदायिक चेतना जाँचबाक अवसर
- (B) केवल बजारक मेला
- (C) सैन्य-अभ्यास
- (D) पुस्तक-बिक्री

३२. लेखक पुरान गामक युवकक कोन सांस्कृतिक अभ्यास स्मरण करैत छथि?

- (A) नाटक आ रामलीला खेलायब
- (B) केवल टीवी देखब
- (C) केवल होटल चलायब
- (D) विदेश यात्रा

३३. लेखमे “बाईजी/नाच”क आलोचना कोन कारणे अछि?

- (A) किएक तँ ओ स्थानीय कला आ नैतिक वातावरणक स्थान घेरि रहल अछि
- (B) किएक तँ ओ खेती बढ़बैत अछि
- (C) किएक तँ ओ विद्या सिखबैत अछि
- (D) किएक तँ ओ पंजी लिखैत अछि

३४. मंदिर-परिसरक दुर्दशाक वर्णन ककर प्रतीक अछि?

- (A) आस्था-स्थल पर अनुशासन आ संवेदनहीनता घटबाक
- (B) अत्यधिक श्रद्धाक
- (C) पाक-कला विकासक
- (D) भाषिक शुद्धताक

३५. तीन पुस्त एक संग नाचमे पाई लुटेबाक चित्र ककर आलोचना अछि?

- (A) सामूहिक रुचिक पतन आ अनियंत्रित उपभोगक
- (B) परम्परा-संरक्षणक
- (C) गरीबी निवारणक
- (D) विद्यापति-गानक

३६. रामलीला टोलीक “माला” उठेबाक पुरान प्रथा की देखबैत अछि?

- (A) भोजन-आश्रयक माध्यमे समाजक कलाकार प्रति जिम्मेदारी
- (B) कलाकारक अपमान मात्र
- (C) केवल टिकट-बिक्री
- (D) पाक-विधि

३७. बादक समयमे रामलीलाक टिकट-प्रथा पर लेखक की संकेत करैत छथि?

- (A) जे समाज बाहर रामलीला पर खर्च करैत अछि, मुदा अपन गामक टोलीक पेट नहि भरैत
- (B) रामलीला समाप्त भऽ गेल
- (C) टिकट सदिखन खराब अछि
- (D) गामक कलाकार धनी भेलाह

३८. गामक कलाक हासक मूल कारण लेखमे कोना देखाओल गेल?

- (A) लोकक रुचि, जिम्मेदारी आ सामूहिक सहयोग घटल
- (B) केवल वर्षा भेल
- (C) केवल सड़क बनल
- (D) भाषा स्वतः मरल

३९. भाईचाराक क्षयक प्रश्न लेखमे कोना उठैत अछि?

- (A) दस गोटेक भोजन धरि कठिन बुझबाक उदाहरणसँ
- (B) राजदरबारक युद्धसँ
- (C) मखान बाँटबासँ
- (D) कोजागरा चुमाओनसँ

४०. “कोना बचत मिथिलाक स्मिता?”क गाम-केन्द्रित निष्कर्ष की अछि?

- (A) स्थानीय कला, नाटक, रामलीला आ सामुदायिक सहयोग फेर जीवित करब जरूरी अछि
- (B) नाच-बाजारहि संस्कृति अछि
- (C) गामक जरूरत नहि
- (D) भाषा छोड़ू

खण्ड ५०९ : विदेह-सदेह १ — प्रकाश झा: बाल-बुदरुक लेल कविता-चक्र

४१. बाल-बुदरुक लेल कविता-चक्रक प्रस्तावनासँ कोन समस्या स्पष्ट होइत अछि?

- (A) मैथिलीमे बच्चा लेल गीतमय रचनाक कमी
- (B) मैथिलीमे गद्यक अधिकता
- (C) बच्चा सभकेँ भाषा नहि चाही
- (D) मिथिलामे पशु नहि अछि

४२. एहि बाल-कवितासभक लक्ष्य की बताओल गेल?

- (A) बच्चा रटि, गाबि, गुनगुना कऽ मानसिक विकास पाउ
- (B) केवल परीक्षा-प्रश्न बनब
- (C) राजनीतिक भाषण
- (D) नाटक समीक्षा

४३. “बिलाड़ि” कवितामे बिलाड़ि केँ बाघसँ कोना जोड़ल गेल?

- (A) बाघक मौसी कहल गेल
- (B) बाघक शत्रु कहल गेल
- (C) बाघक गुरु कहल गेल
- (D) बाघक सेवक कहल गेल

४४. “बाघ” कवितामे बाघक कोन रूप प्रमुख अछि?

- (A) जंगलक राजा
- (B) घरक दादी
- (C) पिंजराक सुग्गा
- (D) दीयाबातीक दीप

४५. “गैया” कवितामे गाय केँ ककर रूपमे आत्मीय बनाओल गेल?

- (A) हमर सभहक मैया
- (B) जंगलक राजा
- (C) कुतबाक शत्रु
- (D) रामलीलाक पात्र

४६. “कुतबा” कवितामे कुतबाक मुख्य काम की अछि?

- (A) राति जगि चोर भगायब
- (B) दूध देब
- (C) मिरचाई खायब
- (D) मेघ बरसाब

४७. “हाथी” कवितामे हाथीक कोन शारीरिक छवि अबैत अछि?

- (A) लम्बा सूँढ़ आ सूप सन कान
- (B) छोट ठोर
- (C) नील पाँखि
- (D) मछलीक पूँछ

४८. “चिड़ै/जानवर” कवितामे चिड़ै आ जानवरक सूची ककरा जोड़ैत अछि?

- (A) सुग्गा-मेना-कौआ-बगरा आ गैया-बरद-बिलाड़ि-कुतबा
- (B) केवल देवता-सूची
- (C) केवल नदी-सूची
- (D) केवल लेखक-सूची

४९. बाल-कवितासभमे ध्वनि-अनुकरणक महत्व की अछि?

- (A) पशु-पक्षी आ प्रकृतिक आवाजसँ बच्चाक लय-बोध बनैत अछि
- (B) अर्थ अस्पष्ट करब
- (C) भाषा हटाब
- (D) कठिन शास्त्र बनाब

५०. एहि बाल-कविता-समूहक साहित्यिक महत्व की अछि?

- (A) मिथिलाक बाल-लोक केँ मैथिली लयमे अपन परिवेश देब
- (B) केवल वयस्क आलोचना
- (C) केवल पंजी-विवरण
- (D) केवल पाक-विधि

खण्ड ५१० : विदेह-सदेह १ — बाल-कविता: कौआ, सुग्गा, मेघ, दीयाबाती, नानी आ छैठ

५१. “कौआ” कवितामे कौआक रंग आ आवाज कोना चित्रित अछि?

- (A) कारी देह आ कौँव-कौँव आवाज
- (B) लाल देह आ म्याऊँ आवाज
- (C) हरियर देह आ राम-राम
- (D) सफेद देह आ झमझम

५२. कौआ रोटी लऽ उड़बाक प्रसंग ककर लेल रोचक अछि?

- (A) बौआ/बच्चा लेल
- (B) राजा लेल
- (C) पंजीकार लेल
- (D) नवाब लेल

५३. “सुग्गा” कवितामे सुग्गा कतए अछि?

- (A) पिंजरामे
- (B) कोसी तटपर
- (C) राजमहलमे
- (D) शिवमंदिरमे

५४. सुग्गा कोन वाक्य रटैत देखाओल गेल?

- (A) राम-राम
- (B) जय बाजार
- (C) पत्र पढ़ू
- (D) नाटक खेलू

५५. सुग्गा की खाइत अछि?

- (A) मिरचाई
- (B) मखानक खीर
- (C) केसर पुलाव
- (D) मूली पराठा

५६. “मेघ” कवितामे मेघक रंग कोना कहल गेल?

- (A) कारी-कारी
- (B) सुनहला
- (C) दूधिया मात्र
- (D) लाल-नील

५७. मेघ कवितामे बरखाक ध्वनि कोना अबैत अछि?

- (A) झर-झर, झमझम, टपटप
- (B) म्याऊँ-म्याऊँ
- (C) कौव-कौव
- (D) राम-राम

५८. “दीयाबाती” कवितामे दादी की करैत छथि?

- (A) सूप पिटैत छथि
- (B) हर जोतैत छथि
- (C) पत्र लिखैत छथि
- (D) रामलीला बेचैत छथि

५९. “नानी” कवितामे नानीक मुख्य भूमिका की अछि?

- (A) मामा-मौसीक माँ आ किस्सा सुनाबयवाली आत्मीय बुजुर्ग
- (B) राज्यक राजा
- (C) पत्रकार
- (D) वरक सासुर

६०. “छैठ परमेसरी” कवितामे बच्चाक उत्साह कोन क्रियासँ देखाइत अछि?

- (A) घाट जाएब, सूरजकेँ अर्घ देखब आ ठेकुआ-मधुर खेब
- (B) समारोह बंद करब
- (C) गोवा सम्मेलन कभर करब
- (D) पत्राचार लिखब

खण्ड ५११ : विदेह-सदेह १ — प्रकाश झा: “हमर मिथिलाक दर्शन”

६१. “हमर मिथिलाक दर्शन”मे वक्ता कोन बातमे लाज न मानबाक बात कहैत अछि?

- (A) मैथिली बजबामे
- (B) मिथिला बिसरबामे
- (C) गायन छोड़बामे
- (D) गाम छोड़बामे

६२. कवितामे मिथिलाक पारिवारिक पौराणिक सम्बन्ध कोना बनाओल गेल?

- (A) जनक पिता, सीता बहिन, राम बहनोई
- (B) रावण पिता, मन्दोदरी बहिन
- (C) गंगा पुत्र, कोसी माता
- (D) नवाब गुरु

६३. कमला-कोशीक उल्लेख ककर प्रतीक अछि?

- (A) मिथिला-धामक चरण पखारयवाली नदी-मातृभूमि
- (B) केवल बाजारक सड़क
- (C) पत्रकारिता-कक्ष
- (D) विदेशी भाषा

६४. विद्यापति, मंडन, अयाची आ मैथिलीपुत्र प्रदीपक उल्लेख ककर स्मरण अछि?

- (A) मिथिलाक ज्ञान-साहित्य परम्परा
- (B) विवाहक खर्च
- (C) कोजागरा भार
- (D) प्रवासक दुख

६५. कवितामे पान, मखान, खराम ककर प्रतीक अछि?

- (A) मिथिलाक जीवन-संस्कृति आ इतिहास
- (B) केवल व्यापारिक माल
- (C) युद्ध-शस्त्र
- (D) मीडिया-उपकरण

६६. मड़ुआ रोटी-सागक स्वाद कोन जीवन-भाव दैत अछि?

- (A) ग्रामीण सादगी आ अपनापन
- (B) राजसी विलास
- (C) भाषा-विस्मृति
- (D) टेलीविजन-जीवन

६७. फूसक घर, खरहीक टाट, शीतल घासक चित्र की बनबैत अछि?

- (A) ग्रामीण मिथिलाक दृश्य-संसार
- (B) महानगरीय कार्यालय
- (C) युद्धभूमि
- (D) समुद्री तट

६८. घरक चारपर कुम्हर, कदीमा आ सजमिनिक लत्ती ककर संकेत अछि?

- (A) आँगन-बारीक जीवित ग्रामीणता
- (B) रेगिस्तानक जीवन
- (C) कारखानाक मशीन
- (D) मीडिया-कक्ष

६९. “काली-चून लेपल खापैड़”क उल्लेख कोन लोक-विश्वाससँ जुड़ल अछि?

- (A) नजर न लगबाक बचाव-चिन्ह
- (B) कृष्णभक्तिक शास्त्र
- (C) चिट्ठी-लेखन
- (D) सुग्गाक पिंजरा

७०. “हमर मिथिलाक दर्शन”क समग्र संदेश की अछि?

- (A) मैथिली, मिथिला-स्मृति, प्रकृति, लोक-जीवन आ गौरवक रक्षा
- (B) मिथिला त्याग
- (C) भाषा-विस्मृति
- (D) केवल शहर-प्रशंसा

खण्ड ५१२ : विदेह-सदेह १ — प्रीति: दोसर विवाह, विधवा-पुनर्विवाह आ लैंगिक न्याय

७१. प्रीतिक पहिल लेख कोन संस्था पर केन्द्रित अछि?

- (A) विवाह
- (B) पंजीकारिता
- (C) बाल-कविता
- (D) भोजन-विधान

७२. लेखमे प्राचीनकालक स्वयंवरक उल्लेख किएक अछि?

- (A) महिला केँ वर चुनबाक आजादीक स्मरण लेल
- (B) पुरुषक अकेल अधिकार सिद्ध करबाक लेल
- (C) भोज बढ़ेबाक लेल
- (D) पत्रकारिता आलोचना लेल

७३. बहुविवाह/दोसर विवाह पर समाजक व्यवहार लेखमे कोना देखल गेल?
- (A) पुरुषक पक्षमे अधिक उदार
(B) महिलाक पक्षमे पूर्ण समान
(C) दूनू लेल निष्पक्ष
(D) समाज उदासीन नहि
७४. विशेष परिस्थिति मे विधुरक दोसर विवाह पर लेख कोन दृष्टि रखैत अछि?
- (A) कारण बुझबा योग्य भऽ सकैत अछि
(B) सर्वथा असम्भव
(C) केवल अपराध
(D) केवल विलास
७५. शौक, दहेज लोभ वा आधुनिकता-दौड़मे दोसर विवाह केँ लेख कोना देखैत अछि?
- (A) अक्षम्य अपराध
(B) श्रेष्ठ परम्परा
(C) धर्मक मूल
(D) बालक्रीड़ा
७६. लेखक अनुसार दोसर विवाहक प्रश्नमे ककर सोच बदलबाक आवश्यकता अछि?
- (A) समाज आ स्वयं पुरुषक
(B) केवल विधवा स्त्रीक
(C) केवल बच्चाक
(D) केवल पंजीकारक
७७. महिला-पुनर्विवाह पर समाजक नजरिया सम्बन्धी लेखक मुख्य बात की अछि?
- (A) समय बदलल, मुदा महिला सम्बन्धी सोच अभी पूर्ण बदलेल नहि
(B) महिला सभ पूर्ण स्वतंत्र छथि
(C) विवाह अप्रासंगिक अछि
(D) समाजमे कोनो भेदभाव नहि
७८. पुरुषक दोसर विवाहक अधिकारक तुलना स्त्रीसँ किएक कएल गेल?
- (A) समान अधिकारक प्रश्न उठेबाक लेल
(B) स्त्रीक अधिकार घटेबाक लेल
(C) केवल हास्य लेल
(D) विवाह रोकबाक लेल
७९. संतानहीन जवान विधवाक पुनर्विवाह सम्बन्धी सुझाव की अछि?
- (A) ओकरा अनिवार्य बना देल जाय आ बाकीकेँ इच्छा पर छोड़ल जाय
(B) सदिखन निषिद्ध करल जाय
(C) केवल परिवार तय करय
(D) विवाहक चर्चा न हो
८०. प्रीतिक लैंगिक न्याय-विचारक निष्कर्ष की अछि?
- (A) पुनर्विवाह स्त्रीक नैराश्य हटबैत समाजक मुख्यधारामे पुनः प्रवेश दऽ सकैत अछि
(B) विधवा समाजसँ बाहर रहय
(C) पुरुषक अधिकारहि पर्याप्त
(D) विवाह केवल खर्च अछि

खण्ड ५१३ : विदेह-सदेह १ — प्रीति: कोजागरा पावनि, चुमाओन आ मखान-सनेस

८१. कोजागरा पावनि कोन तिथि पर मनाओल जाइत अछि?

- (A) आश्विन शुक्ल पूर्णिमा
- (B) वैशाख शुक्ल नवमी
- (C) कार्तिक धवल त्रयोदशी
- (D) माघ अमावस्या

८२. कोजागरा ककर लेल विशेष पावनि कहल गेल?

- (A) नवविवाहित बर लेल
- (B) केवल नवविवाहिता कन्या लेल
- (C) बालक लेल
- (D) पंजीकार लेल

८३. कोजागरा आ मधुश्रावणीमे मुख्य तुलना की अछि?

- (A) कोजागरा बर लेल, मधुश्रावणी नवकन्या लेल; कोजागरा एक दिनक, मधुश्रावणी लम्बा
- (B) दूनू भोजन मात्र
- (C) दूनू निषिद्ध
- (D) दूनू केवल बाजार

८४. कोजागरा अवसर पर बर की धारण करैत छथि?

- (A) सासुर सँ आयल नव वस्त्र
- (B) शिवमंदिरक भस्म
- (C) पुरान युद्धवस्त्र
- (D) मीडिया-कार्ड

८५. कोजागरा भारमे कोन वस्तुक विशेष महत्त्व अछि?

- (A) मखान
- (B) केवल माछ
- (C) केवल कलम
- (D) केवल तटबंध

८६. घर-आँगन नीपि-पोछि कोन ठाम धरि अरिपन देल जाइत अछि?

- (A) दोआरीसँ भगवतीक चिनवारि धरि
- (B) नदीक धारा धरि
- (C) कार्यालय धरि
- (D) रेलवे स्टेशन धरि

८७. लक्ष्मी-पूजामे कमलक अरिपन आ जल-भरल पात्रक प्रयोग ककर संकेत अछि?

- (A) समृद्धि, पवित्रता आ देवी-आह्वानक
- (B) युद्धाभ्यासक
- (C) विवादक
- (D) भाषा-विस्मृतिक

८८. बरक चुमाओन कतए आ कोना होइत अछि?

- (A) आँगनमे अष्टदल अरिपन, डाला, कलश आ पूर्वमुख बैसल बरक साथ
- (B) बाजारमे भीड़ बीच
- (C) नदीमे नाव पर
- (D) पत्रकारिता कक्षमे

८९. चुमाओनक डालामे कोन-कोन वस्तु राखल जाइत अछि?

- (A) मखान, नारियल, केरा, दहीक छाछ, पान, सुपारी, मखानक माला आदि
- (B) केवल पत्थर
- (C) केवल अखबार
- (D) केवल खिलौना

९०. कोजागरा लेखक सांस्कृतिक महत्व की अछि?

- (A) नवविवाहित सम्बन्ध, सासुर-सनेस, लक्ष्मी-पूजा आ मखान-बाँटबाक सामुदायिक पाबनि
- (B) केवल निजी भोज
- (C) केवल मीडिया-विवाद
- (D) केवल विवाह-विरोध

खण्ड ५१४ : विदेह-सदेह १ — प्रेमचन्द मिश्र: “अनाम कथा”क आरम्भ आ आदर्श-विवाह शर्त

९१. “अनाम कथा”क पी.सी. मिश्र कोन तरहक युवक छथि?

- (A) कम पढ़ल-लिखल मुदा संघर्षसँ आत्मविश्वासी बनल युवक
- (B) राजा जनक
- (C) वृद्ध पंजीकार
- (D) बाल-कवि

९२. पी.सी. मिश्र गामसँ दिल्ली कतेक वर्ष पहिने आएल छलाह?

- (A) लगभग छह वर्ष पहिने
- (B) एक दिन पहिने
- (C) पचास वर्ष पहिने
- (D) जन्मसँ दिल्लीमे छलाह

९३. पी.सी. मिश्रक अंग्रेजी-बोलबाक स्थिति कथामे कोना देखाओल गेल?

- (A) कम पढ़ल-लिखल रहितहुँ फरटिसँ अंग्रेजी बजैत छलाह
- (B) अंग्रेजी बिल्कुल नहि जनैत छलाह
- (C) केवल संस्कृत बजैत छलाह
- (D) केवल मौन रहैत छलाह

९४. पी.सी. मिश्र कोन तरहक कम्पनीमे काज करैत छलाह?

- (A) ट्रेवल एजेंटक काज करयवाली निजी कम्पनी
- (B) खेतीक खेत
- (C) राजदरबार
- (D) रेडियो स्टेशन

९५. पी.सी. मिश्रक विवाह लेल पिता किएक जल्दी चाहैत छलाह?

- (A) पिता बूढ़ापामे प्रवेश कए लेने छलाह आ छोट भाई सेहो छल
- (B) पिता राजा बनय चाहैत छलाह
- (C) पिता यात्रा पर जायब नहि चाहैत छलाह
- (D) पिता केवल धन चाहैत छलाह

९६. पी.सी. मिश्रक पहिल विवाह-शर्त की छल?

- (A) पैसाक आदान-प्रदान नहि; आदर्श विवाह
- (B) बहुत दहेज
- (C) सौ गोटे बैङ
- (D) विदेशी गाड़ी

९७. दोसर शर्तमे कन्याक शिक्षा सम्बन्धी की अपेक्षा छल?

- (A) पढ़ल-लिखल आ अंग्रेजी बजयवाली कन्या
- (B) अनपढ़ कन्या
- (C) केवल गीत गाबयवाली
- (D) केवल पंजीकार कन्या

९८. तेसर शर्त दिरागमन सम्बन्धी किएक छल?

- (A) जल्दी दिरागमनसँ विध-विधानमे कम खर्च होय
- (B) युद्ध करबाक लेल
- (C) मीडिया-कवर लेल
- (D) मखान बाँटबाक लेल

९९. चारिम शर्तमे पी.सी. मिश्र ककर घर विवाह चाहैत छथि?

- (A) अपनासँ गरीब घर, जँ सम्मान बेसी भेटत
- (B) अत्यन्त धनी राजघराना
- (C) विदेशी घर
- (D) केवल शास्त्रीक घर

१००. पी.सी. मिश्रक शर्तसभ कथाक मूल तनाव कोना बनबैत अछि?

- (A) आदर्श-विवाहक इच्छा आगे चलि व्यवहारिक लेन-देन सँ टकराएत अछि
- (B) शर्तसभ तुरन्त समाप्त भऽ जाइत अछि
- (C) कथा केवल पाक-विधि बनैत अछि
- (D) कथा विवाहहीन रहैत अछि

खण्ड ५१५ : विदेह-सदेह १ — “अनाम कथा”: सोनीक प्रस्ताव आ जयपुरक बातचीत

१०१. सोनीक सम्बन्ध पी.सी. मिश्रक प्रस्तावमे कोना अबैत अछि?

- (A) महारानी मिश्रक छोट बहिन अनीता झाक ननद रूपमे
- (B) पी.सी. मिश्रक गुरु रूपमे
- (C) संत रामदासक शिष्या रूपमे
- (D) जनकक पुत्री रूपमे

१०२. सोनीक विवाहक जिम्मेदारी मुख्यतः किनक पर छल?

- (A) दिलीप झा आ विनय झा पर
- (B) राजा जनक पर
- (C) ओमप्रकाश झा पर
- (D) प्रीति पर

१०३. अनीता झा प्रस्ताव सुनिते की भाव व्यक्त करैत छथि?

- (A) देरी नहि करबाक आ अवसर केँ लक्ष्मी आवि गेल जकाँ देखबाक
- (B) विवाह रोकबाक
- (C) भाषा छोड़बाक
- (D) गोवा जएबाक

१०४. दिलीप झा आ विनय झा सोनीक फोटो लऽ कतए पहुँचैत छथि?

- (A) जयपुर
- (B) जनकपुर
- (C) गोवा
- (D) पटना

१०५. रंजीत आ पी.सी. मिश्र जयपुर कोन बहाना सँ गेलाह?

- (A) होलीक बहाना बना कऽ
- (B) तीर्थयात्राक बहाना
- (C) मीडिया-कवर बहाना
- (D) पंजी देखबाक बहाना

१०६. महारानी पी.सी. मिश्रसँ जयपुरमे की प्रश्न करैत छथि?

- (A) विवाह कखन करब?
- (B) कविता कखन लिखब?
- (C) गोवा कखन जाएब?
- (D) मखान कखन कूटब?

१०७. पी.सी. मिश्र शर्त पूरा भेलासँ की कहैत छथि?

- (A) एखन विवाह करि लेब
- (B) कखनहुँ विवाह नहि करब
- (C) पैसा अनिवार्य अछि
- (D) कन्या नहि चाही

१०८. भरत झा दहेज-सन्दर्भमे कोन प्रश्न करैत छथि?

- (A) कतेक पैसा लेताह?
- (B) कतेक कविता लिखताह?
- (C) कतेक मेघ बरसत?
- (D) कतेक बालकविता गाबत?

१०९. रंजीत दहेज-प्रश्न पर कोन बात कहैत छथि?

- (A) लड़की नीक भेटत तँ पाई-रुपैयाक बात नहि
- (B) धनहि सब किछु
- (C) विद्या अनावश्यक
- (D) विवाह असम्भव

११०. रामानन्द मिश्र जल्दबाजी पर की सावधानी सुझाबैत छथि?

- (A) दूटा जिनगीक प्रश्न अछि; शर्त पर चिन्तन चाही
- (B) तुरन्त खर्च बढ़ाबी
- (C) कोनो विचार नहि चाही
- (D) विवाह खेल अछि

खण्ड ५१६ : विदेह-सदेह १ — “अनाम कथा”: फोटो, सौदा-सुलह आ दहेजक विडम्बना

१११. सोनीक फोटो देखला पर पी.सी. मिश्रक प्रतिक्रिया की छल?

- (A) फोटो आकर्षक अछि, मुदा शिक्षाक शर्त मुख्य अछि
- (B) फोटो खराब अछि
- (C) फोटो देखबासँ इंकार
- (D) फोटोहि विवाह अछि

११२. रंजीत मजाकमे की कहैत छथि?

- (A) अहाँ नहि करब तँ हमही दोसर विवाह कए लेब
- (B) विवाह छोड़ि देब
- (C) सोनी पढ़ल नहि छथिन
- (D) मखान बाँटब नहि

११३. पी.सी. मिश्र “सुन्दर-खराब” विषय पर की स्पष्ट करैत छथि?

- (A) ई हमर शर्तमे नहि; लड़की पढ़ल-लिखल चाही
- (B) सौन्दर्य सब किछु
- (C) धन सर्वोपरि
- (D) गाम नहि चाही

११४. बैरियातीक संख्या पर प्रारम्भिक बात कोना बढ़ैत अछि?

- (A) रंजीत ६५-७५ कहैत छथि, कन्यागत छूट माँगैत छथि
- (B) केवल पाँच गोटे तय होइत अछि
- (C) बैरियाती निषिद्ध
- (D) सभ विदेश जाएत

११५. दिलीप झा बाराती संख्या पर की कहैत छथि?

- (A) गरीबी कारण ७५ कठिन, छूट चाही
- (B) सौ अनिवार्य
- (C) एक गोटे काफी
- (D) बैरियाती नहि चाही

११६. महारानी कोन वस्तुसभक माँग/सुझाव बीचमे रखैत छथि?

- (A) अंगूठी, सोनाक चेन, कन्याक नामे जमा, कपड़ा आदि
- (B) केवल फूल
- (C) केवल कविता
- (D) केवल पानी

११७. बैरियाती अन्ततः कतेक पर बात ठहरबाक दिस जाइत अछि?

- (A) लगभग इक्यावन अथवा पैंसठक बीच समझौता-सूत्र
- (B) हजार
- (C) शून्य
- (D) केवल दू

११८. भरत झा विवाहोत्तर खर्च पर की संकेत करैत छथि?

- (A) विवाहक बाद वर्षभरि लड़की पक्षक काज रहैत अछि, खर्च महँग पड़त
- (B) खर्च समाप्त
- (C) कन्यागत धनी अछि
- (D) किछु चाही नहि

११९. दिन ताकबाक निर्णय कोनकें छोड़ल जाइत अछि?

- (A) गामक बाबूजी/परिवारक निर्णय पर
- (B) मीडिया कार्यालय पर
- (C) बालकवि पर
- (D) गुरु पर

१२०. एहि खण्डमे आदर्श-विवाहक विडम्बना कोना उभरैत अछि?

- (A) दहेज-विरोधी शर्तक बीच लेन-देन, सम्मान आ खर्चक सूची लौटि अबैत अछि
- (B) सभ खर्च तुरन्त हटि जाइत अछि
- (C) कन्या पक्ष अनुपस्थित अछि
- (D) विवाह आध्यात्मिक मात्र अछि

खण्ड ५१७ : विदेह-सदेह १ — “अनाम कथा”: दिनक विवाह, हाथ-धराई आ प्रतीक्षाक तनाव

१२१. विवाहक तिथि कथामे कोन दिन ठहरल?

- (A) एक्काइस अप्रैल
- (B) तेरह मई
- (C) कार्तिक त्रयोदशी
- (D) आश्विन पूर्णिमा

१२२. कन्यापक्ष आ वरपक्षक बीच हाथ-धराई सम्बन्धी सहमति की छल?

- (A) समयसँ पहुँचना आ दू आदमी हाथ धरैक लेल आबय
- (B) सौ आदमी आनब
- (C) हाथ-धराई नहि करब
- (D) राति भरि टारब

१२३. विवाह दिन वरपक्षक घरमे सबेरेसँ कोन स्थिति छल?

- (A) चहल-पहल, दाय-मायक दौड़धूप आ बाराती तैयारी
- (B) पूर्ण शून्यता
- (C) केवल कार्यालय-काज
- (D) बाढ़क शिविर

१२४. कन्यापक्षक विलम्बसँ बालकसभमे की असर भेल?

- (A) उत्साह घटए लगल
- (B) उत्साह बढ़ल
- (C) कनफुसकी बंद भेल
- (D) विवाह तुरन्त भेल

१२५. कन्यापक्षक आगमनक पहिल सूचना के आनैत अछि?

- (A) राजू, दिलीप झाक जेठ सार
- (B) नवाब
- (C) सुग्गा
- (D) पंजीकार

१२६. अन्ततः कन्यापक्ष कतबा लोकसँ पहुँचैत देखाइत अछि?

- (A) चौटा सज्जन आ एक बच्चा, कुल पाँच
- (B) मात्र दू
- (C) पचास
- (D) कोनो नहि

१२७. आगन्तुकक पएर धोबयक काज के करैत अछि?

- (A) विश्वनथवा
- (B) पी.सी. मिश्र स्वयं
- (C) महारानी
- (D) सुग्गा

१२८. अँगनामे आगमनक बाद कोन गीत शुरू भेल?

- (A) गोसाउनि आ ब्राह्मणक गीत
- (B) मीडिया गीत
- (C) बाल-कविता
- (D) कोसी गीत मात्र

१२९. लोकल ब्रीफकेसक आगमन कथा मे किएक निर्णायक बनैत अछि?

- (A) ओहिमे राखल सामान देखबासँ विवाद उठैत अछि
- (B) ओहिमे राजमुद्रा भेटैत अछि
- (C) ओहिसँ गीत शुरू होइत अछि
- (D) ओ खाली छल

१३०. पीयर दो-सूती तौलिया देखिते की बदलि जाइत अछि?

- (A) मंगल गीतक स्थान पर तनाव आ असन्तोष
- (B) सब खुशीसँ नाचैत अछि
- (C) विवाह तुरन्त पूरा
- (D) कन्या पक्ष भागैत अछि

खण्ड ५१८ : विदेह-सदेह १ — “अनाम कथा”: कपड़ा-विवाद, विश्वास-संकट आ मान-मर्यादा

१३१. पी.सी. मिश्र तौलिया-सामान देखला बाद की घोषणा करैत छथि?

- (A) हम विवाह नहि करब
- (B) हम तुरन्त विवाह करब
- (C) हम गीत गाबब
- (D) हम जयपुर जाएब

१३२. विभा पी.सी. मिश्र केँ कोन आग्रह करैत छथि?

- (A) क्रोध शान्त करू, बाहर लोक की कहताह
- (B) विवाह छोडू
- (C) सामान फेकू
- (D) बाराती भगाऊ

१३३. अँगनामे गीतक बदलामे की छा जाइत अछि?

- (A) सन्नाटा
- (B) हर्षोल्लास
- (C) बाल-नृत्य
- (D) पत्रकारिता

१३४. काका कपड़ा-विवाद केँ कोना छोट करबाक प्रयास करैत छथि?

- (A) कहैत छथि जे बाजारसँ चाही त वैह मँगवा देब
- (B) विवाह रोकबाक
- (C) कन्या दोषी नहि
- (D) सब सामान श्रेष्ठ

१३५. पी.सी. मिश्रक अनुसार मुद्दा कपड़ा नहि, की छल?

- (A) विश्वास आ वचनक पालन
- (B) रंगक पसन्द मात्र
- (C) भोजनक स्वाद
- (D) बारातीक संख्या मात्र

१३६. महारानी पी.सी. मिश्रक शिकायत पर की कहैत छथि?

- (A) कन्यागत गलत काज कएने छथि; पी.सी.क बात सही अछि
- (B) पी.सी. झूठ बाजैत छथि
- (C) सामान सर्वश्रेष्ठ अछि
- (D) विवाह असम्भव

१३७. पी.सी. मिश्र कन्यापक्ष पर अविश्वास किएक करैत छथि?

- (A) जे सामानमे ठकबाक संकेत अछि, लड़की विषयमे सेहो ठकबाक डर
- (B) किएक विवाह नहि चाहैत छथि
- (C) किएक भाषा नहि जनैत छथि
- (D) किएक यात्रा नहि भेल

१३८. “इज्जत आ मान-मर्यादा” कथामे कोन द्वन्द्व बनबैत अछि?

- (A) दूटा जिनगीक प्रश्न बनाम सामाजिक प्रतिष्ठा
- (B) भोजन बनाम मौसम
- (C) पक्षी बनाम पशु
- (D) गीत बनाम कविता

१३९. पी.सी. मिश्र मैथिल समाज पर कोन आत्मालोचन करैत छथि?

- (A) भूतकें बेसी महत्त्व दऽ भविष्यक गला दबा देब
- (B) भविष्यकें सभसँ बेसी बचाएब
- (C) कखनहुँ परम्परा नहि मानब
- (D) सदा समानता

१४०. एहि विवादक साहित्यिक केन्द्र की अछि?

- (A) सामानक बहाना बनि विवाह-संस्था, विश्वास आ सामाजिक प्रतिष्ठाक त्रासदी खुलैत अछि
- (B) केवल तौलियाक रंग
- (C) केवल गीतक अभ्यास
- (D) केवल भोजनक सूची

खण्ड ५१९ : विदेह-सदेह १ — “अनाम कथा”: पितृ-दबाव, त्याग आ शर्तसहित सहमति

१४१. भीम मिश्र विवादमे अन्ततः कोन कठोर बात कहैत छथि?

- (A) विवाह नहि करब तँ हम आत्महत्या कए लेब
- (B) विवाह रोकू
- (C) कन्यापक्ष घुराउ
- (D) गीत गाबू

१४२. भीम मिश्र अपन विकल्प कोना रखैत छथि?

- (A) या विवाह करब, या हमर दाह-संस्कार करब
- (B) या गोवा जाएब, या बालकविता गाबब
- (C) या मखान खेब, या पराठा
- (D) या मीडिया देखब

१४३. भीम मिश्रक निर्णायक मूल कारण की अछि?

- (A) पुरुषाक इज्जत जीवित रहते नहि गँवाबय चाहब
- (B) धन कमेबाक इच्छा
- (C) नाटक देखबाक इच्छा
- (D) भाषा-विस्मृति

१४४. पी.सी. मिश्र पिताक पएर पर खसि की कहैत छथि?

- (A) माफ करू; पिताक लेल अपन भविष्यक बलिदान दैत छी
- (B) हम विदेश जाइत छी
- (C) हम विवाह छोड़ि देलहुँ
- (D) हम गीत नहि गाबब

१४५. श्रवण कुमारक उल्लेख किएक अबैत अछि?

- (A) माता-पिताक लेल प्राण-त्यागक आदर्श देखेबाक लेल
- (B) व्यापारिक उदाहरण लेल
- (C) मीडिया आलोचना लेल
- (D) कोजागरा विधान लेल

१४६. पी.सी. मिश्र विवाह मानबाक पहिल शर्त की रखैत छथि?

- (A) कन्यागतक समान नहि लेब
- (B) अधिक दहेज लेब
- (C) बैरियाती बढ़ेब
- (D) गीत बन्द करब

१४७. दोसर शर्त की छल?

- (A) कन्यागतक गाड़ीपर नहि जाएब
- (B) गाड़ी अनिवार्य अछि
- (C) पैदल नहि चलब
- (D) जयपुर नहि जाएब

१४८. तेसर शर्त की छल?

- (A) देल गोरलगाइक रुपैया नहि लेब
- (B) दोगुना रुपैया लेब
- (C) फिक्स डिपोजिट लेब
- (D) सोनाक चैन लेब

१४९. दाय-माय आ पुरुषवर्गक हृदय किएक करुण होइत अछि?

- (A) पी.सी.क त्याग, पितृभक्ति आ दबावक त्रासदी देखिकय
- (B) भोजन नीक छल
- (C) बरसात भेल
- (D) बालकविता बजल

१५०. एहि खण्डक नैतिक विडम्बना की अछि?

- (A) मान-मर्यादाक रक्षा लेल व्यक्ति अपन भविष्यक बलिदान करबाकें विवश होइत अछि
- (B) सभी शर्त समाप्त
- (C) समाज पूर्ण आधुनिक
- (D) लेन-देन नैतिक बनि गेल

खण्ड ५२० : विदेह-सदेह १ — ओमप्रकाश, प्रीति आ प्रेमचन्द: आधुनिकता, अस्मिता आ परिवार

१५१. ओमप्रकाशक प्रवास-विचार आ प्रीतिक विवाह-विचारमे साझा प्रश्न की अछि?

- (A) आधुनिकता बीच पहचान आ न्याय कोना बचत
- (B) भोजन कोना पकत
- (C) मखान कतेक कुटत
- (D) पक्षी कोना उड़े

१५२. ओमप्रकाशक मीडिया-आलोचना आ प्रेमचन्दक कथा मे साझा संकट की अछि?

- (A) बाहरी चमकक भीतर विश्वास आ नैतिकता कमजोर होयब
- (B) सब किछु आदर्श होयब
- (C) भाषाक अभाव नहि
- (D) कोनो सामाजिक दबाव नहि

१५३. प्रीतिक पुनर्विवाह-विचार आ पी.सी. मिश्रक कथा ककर विरोध करैत अछि?

- (A) लैंगिक/सामाजिक दोहरा मापदण्डक
- (B) स्त्री-अधिकारक
- (C) आदर्श-विवाहक
- (D) शिक्षाक

१५४. पी.सी. मिश्रक “आदर्श विवाह” शर्त ओ नूतन झाक “बाराती-सत्कार” मे साझा भाव की अछि?

- (A) विवाहमे अपव्यय आ आर्थिक दबाव घटेबाक आग्रह
- (B) खर्च बढ़ेबाक आग्रह
- (C) दहेजक समर्थन
- (D) विवाह समाप्ति

१५५. बाल-कवितासभ आ “हमर मिथिलाक दर्शन”मे साझा सांस्कृतिक आधार की अछि?

- (A) बाल/युवा पीढ़ी केँ मिथिला-परिवेशसँ जोड़ब
- (B) भाषा बदलि देब
- (C) मीडिया-मात्र
- (D) दहेज-मात्र

१५६. कोजागरा लेख आ जानकी-नवमी लेखक साझा पक्ष की अछि?

- (A) स्त्री, गृह-मंगल आ पवित्र अनुष्ठानक मिथिला-परम्परा
- (B) मीडिया भ्रष्टाचार
- (C) प्रवास-विस्मृति
- (D) कपड़ा-विवाद

१५७. “स्मिताक लड़ाई” आ “कोना बचत मिथिलाक स्मिता” एक-दोसराकेँ कोना पूरक अछि?

- (A) पहिल कविता चेतना भरबाक आह्वान, दोसर लेख सांस्कृतिक क्षयक विश्लेषण
- (B) दूनों केवल पाक-विधि
- (C) दूनों केवल जीवनी
- (D) दूनों विवाह कथा

१५८. विद्यापति-स्मरण विभिन्न पाठमे कोना अबैत अछि?

- (A) मिथिलाक सांस्कृतिक-भाषिक गौरवक केन्द्र रूपमे
- (B) केवल तिथि-सूचना रूपमे
- (C) केवल पाक-विधि रूपमे
- (D) केवल व्यापार रूपमे

१५९. एहि समूहमे “भाषा”क मुख्य संकट की अछि?

- (A) प्रवास, आधुनिकता आ उदासीनता कारण मैथिली-बोलचाल घटब
- (B) भाषा अत्यधिक फैलि गेल
- (C) भाषाक कोनो भूमिका नहि
- (D) भाषा केवल देवता-पूजा

१६०. एहि बैचक समग्र सामाजिक संदेश की अछि?

- (A) मिथिलाक अस्मिता बचएब लेल भाषा, नैतिकता, स्त्री-सम्मान, विवाह-सुधार आ लोक-संस्कृति पर पुनर्विचार जरूरी अछि
- (B) केवल मनोरंजन चाही
- (C) दहेज बढ़ाबी
- (D) भाषा छोड़ू

खण्ड ५२१ : विदेह-सदेह १ — जानकी, कोजागरा आ विवाह-संस्कार: स्त्री-गरिमा केर पाठ

१६१. जानकी-नवमीमे सीताक जन्म-कथा आ प्रीतिक पुनर्विवाह-विचार ककर साझा आग्रह करैत अछि?

- (A) स्त्रीक गरिमा आ अधिकार केँ केन्द्रमे राखब
- (B) स्त्रीकेँ मौन राखब
- (C) विवाहमे खर्च बढ़ेब
- (D) भाषा छोड़ब

१६२. सीता-कथाक “स्त्रीक अपमान करनिहार दुखद अंत पाबैत अछि” भाव प्रीतिक लेखसँ कोना जुड़ैत अछि?

- (A) दूनू अन्यायपूर्ण स्त्री-दृष्टि पर चोट करैत अछि
- (B) दूनू स्त्री-विरोधी अछि
- (C) दूनू केवल पौराणिक कथा
- (D) दूनू पाक-विधि

१६३. कोजागरा चुमाओनमे सासुर-सनेसक परम्परा ककरा मजबूत करैत अछि?

- (A) नवविवाहित सम्बन्ध आ समुदायिक सहभागिता
- (B) विवाह-विच्छेद
- (C) भाषा-विस्मृति
- (D) पत्रकारिता

१६४. “अनाम कथा”मे सासुर-सामान विवाद कोजागरा/विवाह-संस्कारक कोन अँधार पक्ष देखबैत अछि?

- (A) सनेस आ सम्मानक नाम पर लेन-देनक तनाव
- (B) पूर्ण समानता
- (C) बाल-साहित्य
- (D) आध्यात्मिक मुक्ति

१६५. नूतन झा आ प्रेमचन्द मिश्रक विवाह-प्रसंगमे ककर आलोचना साझा अछि?

- (A) आडंबर, खर्च आ प्रतिष्ठा-दबाव
- (B) शिक्षा
- (C) स्त्रीक अधिकार
- (D) भाषा-प्रेम

१६६. प्रीतिक लेखमे विधवा/परित्यक्ता स्त्रीकेँ मुख्यधारामे आनबाक भाव ककर प्रतिरोध अछि?

- (A) उपेक्षा आ नैराश्यक
- (B) ज्ञानक
- (C) समानताक
- (D) समाज-सुधारक

१६७. सीताक कथा मे वेदवती-प्रसंगक संदेश आधुनिक स्त्री-विमर्शमे कोना पढ़ल जा सकैत अछि?

- (A) अन्याय सहनक बाद स्त्री न्यायक कारण बनि सकैत अछि
- (B) अन्याय सदिखन स्वीकार्य
- (C) स्त्रीक भूमिका शून्य
- (D) पुरुषहि सब

१६८. कोजागरा मे मखान बाँटब आ विवाहमे सनेस आनब ककर सामाजिक रूप अछि?

- (A) सम्बन्ध सार्वजनिक करब आ समुदाय केँ सहभागी बनाब
- (B) सम्बन्ध लुकाब
- (C) व्यक्ति अलगाव
- (D) केवल व्यापार

१६९. विवाह-संस्कारमे “मान-मर्यादा” कखन विनाशकारी बनैत अछि?

- (A) जखन ओ व्यक्ति-भविष्य आ न्याय पर भारी पड़ैत अछि
- (B) जखन ओ स्नेह बनैत अछि
- (C) जखन ओ खर्च घटबैत अछि
- (D) जखन ओ भाषा बचबैत अछि

१७०. एहि स्त्री-गरिमा खण्डक निष्कर्ष की अछि?

- (A) परम्परा तखन सार्थक जखन ओ सम्मान, समानता आ संवेदनाक संग हो
- (B) परम्परा केवल खर्च हो
- (C) स्त्रीक प्रश्न गौण
- (D) संस्कारमे न्यायक जगह नहि

खण्ड ५२२ : विदेह-सदेह १ — भाषा-चेतना: प्रवासी मैथिल, बाल-साहित्य आ मिथिला-दर्शन

१७१. प्रवासी मैथिलक भाषा-विस्मृति आ बाल-कविताक आवश्यकता किएक सम्बद्ध अछि?

- (A) बाल्यावस्थासँ भाषा-राग नहि बनल तँ प्रवासमे भाषा छूटि सकैत अछि
- (B) दूटा असम्बद्ध अछि
- (C) बालकविता भाषा हटबैत अछि
- (D) प्रवास भाषा बचबैत अछि

१७२. “मैथिली बजबामे लाज नहि” भाव ककर प्रतिवाद अछि?

- (A) आधुनिकता वा प्रवासक नाम पर मातृभाषा छिपेबाक
- (B) मैथिली-पाठक
- (C) बाल-रुचि
- (D) गामक दृश्य

१७३. गोवाक कोंकणीमे मैथिली-सदृश शब्दक उल्लेख भाषा-बोधमे की जोड़ैत अछि?

- (A) भाषिक सम्बन्धक खोज आ सांस्कृतिक स्मृति
- (B) भाषा-विरोध
- (C) केवल मजाक
- (D) दहेज-विवाद

१७४. बाल-कविता पशु-पक्षी, मेघ आ पाबनि सँ बच्चाकें की देत अछि?

- (A) अपन परिवेश मैथिली शब्द-लयमे
- (B) केवल विदेशी शब्द
- (C) निष्क्रियता
- (D) भाषा-विस्मृति

१७५. “हमर मिथिलाक दर्शन”मे लोकवस्तु आ प्रकृति किएक महत्त्वपूर्ण अछि?

- (A) मातृभूमिक ठोस अनुभूति देबाक लेल
- (B) भाषा हटेबाक लेल
- (C) केवल सजावट
- (D) राजनीतिक नारा मात्र

१७६. ओमप्रकाश झा मैथिल पुरोधाक मीडिया-निष्क्रियता पर किएक खिन्न छथि?

- (A) किएक तँ अस्मिता-बचावक अवसर छूटि रहल अछि
- (B) किएक तँ कार्यक्रम बहुत छोट छल
- (C) किएक तँ गोवा दूर छल
- (D) किएक तँ मखान कम छल

१७७. भाषा-चेतना आ सामाजिक आलोचना ककरा मिलबैत अछि?

- (A) मातृभाषाक स्वाभिमान, सच बोलबाक साहस आ संस्कृति-भागीदारी
- (B) केवल शब्द-सूची
- (C) केवल धन
- (D) केवल अनुष्ठान

१७८. बाल-कविता आ प्रवासी लेख दूनू मे “पीढ़ी”क प्रश्न कोना आबैत अछि?

- (A) भाषा अगिला पीढ़ी धरि पहुँचैबाक चिंता रूपमे
- (B) पीढ़ी अप्रासंगिक
- (C) केवल वृद्धक प्रश्न
- (D) केवल विवाहक प्रश्न

१७९. विद्यापति-स्मरण भाषा-संकटमे की भूमिका निभबैत अछि?

- (A) मैथिली गौरवक ऐतिहासिक दीपक रूपमे
- (B) भाषा छोड़बाक तर्क
- (C) केवल तिथि
- (D) निजी कथा

१८०. एहि भाषा-चेतना खण्डक निष्कर्ष की अछि?

- (A) मैथिली बचएब बाल्य-गीत, मातृभूमि-स्मृति, प्रवासी संवाद आ मीडिया-सत्यवादिता सभसँ जुड़ल अछि
- (B) भाषा अपने बचि जाएत
- (C) भाषा त्याग आवश्यक
- (D) बाल-साहित्य अनुपयोगी

खण्ड ५२३ : विदेह-सदेह १ — लोक-संस्कृति: पाबनि, नाटक, बालगीत आ गामक पुनर्स्मरण

१८१. दुर्गा-पूजा पर नाटक/रामलीला घटबाक प्रश्न ककर संकेत अछि?

- (A) लोक-संस्कृतिक मंचीय परम्परा कमजोर होयब
- (B) लोक-संस्कृति बहुत बलवान होयब
- (C) पाक-विधि
- (D) पंजी-प्रथा

१८२. बालगीतमे दीयाबाती आ छैठक उपस्थिति किएक महत्त्वपूर्ण अछि?

- (A) बच्चा पाबनि-संस्कृति भाषा-लयमे सीखैत अछि
- (B) पाबनि हटैत अछि
- (C) भाषा कठिन बनैत अछि
- (D) सामाजिक स्मृति टूटैत अछि

१८३. कोजागरा आ जानकी-नवमी लेखसभ पाबनिक कोन रूप देखबैत अछि?

- (A) गृह, देवी-भक्ति, सनेस आ समुदायिक सहभागिता
- (B) केवल निजी मनोरंजन
- (C) केवल राजनीतिक कार्यक्रम
- (D) केवल खर्च

१८४. “भानस-भात” पाक-विधि खण्डक सांस्कृतिक भूमिका की मानल जा सकैत अछि?

- (A) घर-गृहस्थी आ मिथिला-भोजन परम्पराक व्यवहारिक संरक्षण
- (B) लोक-संस्कृति नाश
- (C) मीडिया-समस्या
- (D) पंजी-विवाद

१८५. रामलीला टोलीकें भोजन देबाक पुरान प्रथा की बतबैत अछि?

- (A) कला-संरक्षण समाजक सामूहिक दायित्व छल
- (B) कलाकार अनावश्यक छलाह
- (C) भोजन मात्र विलास
- (D) समाजक कोनो भूमिका नहि

१८६. बालगीतक पशु-पक्षी आ “हमर मिथिलाक दर्शन”क गाम-दृश्य कोना जुड़ैत अछि?

- (A) दूनू मिथिला केँ बाल/लोक-इन्द्रिय अनुभवमे उपस्थित करैत अछि
- (B) दूनू राजनीति मात्र
- (C) दूनू विवाह-कथा
- (D) दूनू पंजी

१८७. पाबनि-संस्कृति जँ केवल प्रदर्शन बनि जाए तँ कोन खतरा अछि?

- (A) मूल सामाजिक-स्नेह आ नैतिक भाव खो जाए
- (B) भाषा तुरन्त बचि जाए
- (C) खर्च घटि जाए
- (D) समानता बढ़ि जाए

१८८. मखानक खीर, मखान-सनेस आ मिथिला-दर्शनमे मखानक उपस्थिति की देखबैत अछि?

- (A) मिथिलाक खाद्य, पाबनि आ पहचानक साझा प्रतीक
- (B) केवल बाजार माल
- (C) केवल खेलौना
- (D) विदेशी वस्तु

१८९. लोक-संस्कृति बचाबयमे बाल-साहित्यक भूमिका की अछि?

- (A) बचपनसँ भाषा, पाबनि, पशु-पक्षी आ घर-गामक स्मृति रोपब
- (B) केवल मनोरंजन
- (C) संस्कृति विस्मरण
- (D) किसी भूमिका नहि

१९०. एहि लोक-संस्कृति खण्डक निष्कर्ष की अछि?

- (A) जीवित परम्परा लेल पाबनि, गीत, नाटक, भोजन आ गाम-सहयोग फेर सक्रिय होयब चाही
- (B) अभिलेख मात्र पर्याप्त
- (C) आडम्बर बढ़ाबी
- (D) भाषा छोड़ू

खण्ड ५२४ : विदेह-सदेह १ — अगिला क्रमक संगति: जानकीसँ अनाम कथा धरि

१९१. जानकी-नवमी सँ “अनाम कथा” धरि स्रोत-क्रममे मुख्य संक्रमण की अछि?

- (A) पावनिक स्त्री-मर्यादा सँ आधुनिक विवाहक सामाजिक विडम्बना धरि
- (B) केवल भोजनसँ भोजन धरि
- (C) नदीसँ नदी धरि
- (D) युद्धसँ युद्ध धरि

१९२. ओमप्रकाश झा आ प्रेमचन्द मिश्र दूनूक लेखनमे “विश्वास” कोना प्रश्न बनैत अछि?

- (A) समुदाय/मीडिया पर विश्वास आ विवाह-पक्ष पर विश्वास दूनू टूटैत देखाइत अछि
- (B) विश्वास पूर्ण अछि
- (C) विश्वास अप्रासंगिक
- (D) केवल आध्यात्मिक विश्वास

१९३. प्रीतिक लेख आ “अनाम कथा” विवाहक कोन दू पक्ष खोलैत अछि?

- (A) नीतिगत समानता आ घरेलू व्यवहारक संघर्ष
- (B) केवल हास्य
- (C) केवल पौराणिकता
- (D) केवल पकवान

१९४. बाल-बुदरुक कविता आ स्मिता-लेखक सम्बन्ध कोना अछि?

- (A) बालपीढ़ी केँ भाषा-संस्कृतिसँ जोड़ब अस्मिता-संघर्षक भाग अछि
- (B) बालकविता अस्मिता-विरोधी
- (C) दूटा अलग संसार
- (D) बाल-साहित्य व्यर्थ

१९५. मैथिली बोलबाक लाज नहि मानबाक आग्रह ककर विरोधमे अछि?

- (A) आधुनिक/प्रवासी आत्महीनता
- (B) मातृभाषा-प्रेम
- (C) गामक स्नेह
- (D) पाबनि-भक्ति

१९६. समारोह, मीडिया, विवाह आ पाबनि सभमे बार-बार कोन प्रश्न उठैत अछि?

- (A) सामूहिक जिम्मेदारी बनाम औपचारिकता/आडम्बर
- (B) केवल नाम-सूची
- (C) केवल तिथि
- (D) कोनो समाज नहि

१९७. “अनाम कथा”मे छोट वस्तु—तौलिया—कथानकमे किएक पैघ बनैत अछि?

- (A) ओ विश्वास, सम्मान आ पूर्व-प्रतिज्ञाक कसौटी बनैत अछि
- (B) ओ महँगा अछि
- (C) ओ पाबनि-प्रसाद अछि
- (D) ओ पंजी अछि

१९८. जानकीक स्त्री-सम्मान, प्रीतिक पुनर्विवाह आ प्रेमचन्दक विवाह-कथा मिलि कोन बड़ प्रश्न बनबैत अछि?

- (A) समाज स्त्री, विवाह आ गरिमा केँ न्यायपूर्ण ढंगसँ कोना देखत?
- (B) भोजन कतए पकत?
- (C) मीडिया कतए रहत?
- (D) बालगीत के गाबत?

१९९. ओमप्रकाशक प्रवासी लेख आ प्रकाश झाक मिथिला-दर्शन मिलि की करैत अछि?

- (A) दूर पड़ल मैथिल केँ मातृभूमिक ठोस स्मृति सँ जोड़ैत अछि
- (B) मिथिला नकारैत अछि
- (C) प्रवासक प्रशंसा मात्र
- (D) भाषा हटबैत अछि

२००. एहि ५०५-५२४ बैचक अगिला तार्किक पठन-बिन्दु की अछि?

- (A) “अनाम कथा”क शेष विवाह-संकट आ ओकर सामाजिक परिणाम
- (B) जानकी-नवमी फेर शुरू
- (C) मखानक खीर मात्र
- (D) गोवा सम्मेलन फेर

खण्ड ५२५ : विदेह-सदेह १ — “अनाम कथा”: सनेस, सम्मान आ अविश्वास

२०१. “अनाम कथा”क विवाह-दिनमे कन्यापक्षक देरी कथानकमे कोन तनाव बनबैत अछि?

- (A) पूर्व-सहमति आ वास्तविक व्यवहारक बीच पहिल दरार
- (B) पूर्ण उत्सवक सहजता
- (C) कथानकक समाप्ति
- (D) बालगीतक शुरुआत

२०२. पीयर दू-सूती तौलिया देखिते प्रेमचन्दक प्रतिक्रिया किएक तीव्र भेल?

- (A) कारण ओ वस्तु छोट रहितहुँ विश्वासभंग आ अपमानक संकेत बनि गेल
- (B) कारण तौलिया बहुत महँगा छल
- (C) कारण विवाह समाप्त भऽ गेल
- (D) कारण ओकरा पाबनि चाही छल

२०३. प्रेमचन्द “हम विवाह नहि करब” किएक कहैत छथि?

- (A) कन्यापक्ष पर भरोसा टूटबाक कारण
- (B) भोजन स्वादिष्ट छल
- (C) मंच सजल छल
- (D) बरियाती प्रसन्न छल

२०४. विभा आ दाय-माय प्रेमचन्दकेँ किएक शान्त करय चाहैत छथि?

- (A) क्योंकि विवाह-समारोहमे सार्वजनिक अपमान टारब हुनका आवश्यक लगैत अछि
- (B) क्योंकि कथा समाप्त भेल
- (C) क्योंकि सब भागि गेल
- (D) क्योंकि गीत नहि छल

२०५. महारानी प्रेमचन्दक पक्ष किएक स्वीकारैत छथि?

- (A) ओ कहैत छथि जे बौआक बात सही अछि आ कन्यापक्ष गलती कयने अछि
- (B) ओ कन्यापक्षकेँ निर्दोष मानैत छथि
- (C) ओ विवाह रोकि देलनि
- (D) ओ तौलिया नदेखलनि

२०६. प्रेमचन्दक “मान-मर्यादा बनाम दूटा जिनगी” वाला द्वंद्व कथाक मुख्य प्रश्न कोना बनैत अछि?

- (A) विवाह-संस्था व्यक्ति-भविष्य पर कतेक भारी पड़ि सकैत अछि, से देखबैत अछि
- (B) कथा केवल हास्य अछि
- (C) विवाहमे कोनो समस्या नहि
- (D) दहेजक महिमा अछि

२०७. कन्यापक्ष पर अविश्वास कथामे लड़कीक विषय धरि किएक पहुँचैत अछि?

- (A) एक छल वा उपेक्षा देखलापर प्रेमचन्दकेँ अन्य बातमे धोखा सम्भव लगैत अछि
- (B) क्योंकि लड़की अनुपस्थित अछि
- (C) क्योंकि विवाह नै होयत
- (D) क्योंकि कन्यापक्ष बहुत गरीब नहि

२०८. गामक स्त्री-पुरुष सभक बीच सन्नाटा ककर संकेत अछि?

- (A) विवाह-उत्सव अचानक सामाजिक संकटमे बदलि गेल अछि
- (B) नृत्यक शुरुआत
- (C) भोजनक समय
- (D) बालकविताक पाठ

२०९. प्रेमचन्दक तर्कमे “हमरा किछु नहि चाही, मुदा अपने अनब तँ नीक कम्पनीक” कथनक अर्थ की अछि?

- (A) माँग नहि, मुदा स्वेच्छासँ देल वस्तुमे ईमान आ सम्मान चाही
- (B) ओ धन माँगि रहल छथि
- (C) ओ विवाह नहि चाहैत छलाह
- (D) ओ भोजन चाहैत छलाह

२१०. एहि आरम्भिक संकटक सामाजिक सार की अछि?

- (A) विवाहमे वस्तु, वचन, विश्वास आ प्रतिष्ठा गूढ़ रूपसँ जुड़ल रहैत अछि
- (B) विवाह केवल खेल अछि
- (C) सनेसक कोनो अर्थ नहि
- (D) परिवार अप्रासंगिक अछि

खण्ड ५२६ : विदेह-सदेह १ — “अनाम कथा”: पितृ-दबाव आ शर्तसहित समर्पण

२११. भीम मिश्रक आत्महत्या-धमकी कथामे कोन सामाजिक दबावक चरम रूप अछि?

- (A) पितृ-अधिकार आ कुल-मानक भावनात्मक दबाव
- (B) बालगीतक रस
- (C) भोजनक आग्रह
- (D) मीडिया-आलोचना

२१२. प्रेमचन्द पिताक पएर पर खसि किएक कानैत छथि?

- (A) व्यक्तिगत इच्छा आ पितृ-आज्ञाक बीच टूटैत मनस्थिति कारण
- (B) ओ प्रसन्न छलाह
- (C) ओ जीतल छलाह
- (D) ओ कन्यापक्ष सँ धन पेलनि

२१३. श्रवण कुमारक उदाहरण प्रेमचन्दक निर्णयमे की भूमिका निभबैत अछि?

- (A) पितृ-भक्ति केँ आत्म-बलिदानक नैतिक तर्क बनबैत अछि
- (B) विवाह टारैत अछि
- (C) मीडिया जोड़ैत अछि
- (D) भोजनक सूची दैत अछि

२१४. प्रेमचन्दक तीन शर्त — समान नहि लेब, गाड़ी नहि चढ़ब, गोरलगाइ रुपैया नहि लेब — ककर घोषणा अछि?

- (A) अपन स्वाभिमान बचाबक अन्तिम प्रयास
- (B) धन-लोभ
- (C) कन्यापक्षक सम्मान
- (D) मौज-मस्ती

२१५. दाय-माय आ पुरुष-वर्गक करुण होयब किएक महत्त्वपूर्ण अछि?

- (A) समाज देखैत अछि जे विवाहक निर्णय एक युवकक आन्तरिक पराजय बनि रहल अछि
- (B) सभ उत्साहित अछि
- (C) कथामे कोनो दुख नहि
- (D) कन्या अनुपस्थित अछि

२१६. हाथधरीक विधि जल्दी पूरा करबाक हड़बड़ी कोन बात सूचित करैत अछि?

- (A) संकट केँ रस्मक वेगमे ढाकय चाहैत समाज
- (B) विवाह स्थगित
- (C) समारोहक अन्त
- (D) कथा-प्रारम्भ

२१७. बड़की भौजीक काजर नोरमे बहब कोन भाव बनबैत अछि?

- (A) घरक स्त्रीपक्षक करुण सहानुभूति
- (B) हास्य
- (C) क्रोधहीनता
- (D) उत्सवक उल्लास

२१८. बरियाती प्रस्थानक समय प्रेमचन्दक नोरक धार कोन संकेत दैत अछि?

- (A) बाहरी विवाह-यात्रा भीतर शोक-यात्रा जकाँ अछि
- (B) ओ बहुत प्रसन्न छथि
- (C) ओ गीत गबैत छथि
- (D) ओ भोजन लैत छथि

२१९. मान-मर्यादा प्रेमचन्दक जीवनपर कोना भारी पड़ैत अछि?

- (A) निजी निर्णयक अधिकार परिवारिक प्रतिष्ठा लेल दबि जाइत अछि
- (B) मान-मर्यादा मुक्ति दैत अछि
- (C) मान-मर्यादा अप्रासंगिक
- (D) ओ पूर्ण स्वतंत्र छथि

२२०. एहि खण्डक कथानक-सार की अछि?

- (A) प्रेमचन्द निजी विरोध राखितहुँ पितृ-दबाव आ समाज-मर्यादा सँ विवाह स्वीकारैत छथि
- (B) प्रेमचन्द विवाह रद्द करैत छथि
- (C) कन्यापक्ष भागि जाइत अछि
- (D) कथा हास्यमे समाप्त

खण्ड ५२७ : विदेह-सदेह १ — “अनाम कथा”: विवाह-स्थान, कोबर आ मौन संवाद

२२१. कन्यापक्षक पंडाल आ वरक लेल आयल निम्न वस्तुक तुलना किएक मार्मिक अछि?

- (A) बाहरी सजावट आ अन्तरंग सम्मानक अन्तर उजागर करैत अछि
- (B) टूटा समान अछि
- (C) सजावट नहि छल
- (D) सनेस श्रेष्ठ छल

२२२. बरियातीक शहरी सुविधा आ प्रेमचन्दक शोकमग्न मनक विरोधाभास की देखबैत अछि?

- (A) समारोहक बाहरी चमक भीतरक पीड़ा नहि ढाकि सकैत अछि
- (B) पीड़ा समाप्त
- (C) विवाह हर्षमय
- (D) बरिया निराश नहि

२२३. परिछनक समय प्रेमचन्दक डेग आगू नहि होयब कोन भावक संकेत अछि?

- (A) अन्तरात्मा विवाहक रीतिमे सहभागी हेबाक लेल तैयार नहि अछि
- (B) ओ अस्वस्थ मात्र
- (C) ओ नाच देखैत छथि
- (D) ओ रास्ता भुलि गेल छथि

२२४. पिताक वचन “जाधरि हम रहब” प्रेमचन्दक व्यवहारमे कोना असर करैत अछि?

- (A) ओ क्रोध रोकि मौन निभबैत छथि
- (B) ओ सबकेँ डाँटैत छथि
- (C) ओ विवाह त्यागैत छथि
- (D) ओ कन्यापक्षसँ धन लैत छथि

२२५. द्विरागमन संगे करबाक निर्णय किएक लेल गेल?

- (A) आगामी अपमान वा अविश्वास टारि नववधू केँ अपना संस्कारमे आनबाक सोचसँ
- (B) भोजन बचाबय लेल
- (C) कन्यापक्ष हटाबय लेल
- (D) मीडिया बोलाबय लेल

२२६. कोबरमे प्रेमचन्दक मौन आ रोयब ककर प्रतीक अछि?

- (A) असमर्थ, आहत आ भविष्यहीन मनोदशाक
- (B) पूर्ण आनन्द
- (C) कन्याप्रेम
- (D) हास्य

२२७. नवविवाहिता द्वारा चरण-स्पर्श आ चुप्पी कोन सम्बन्ध-संकेत बनबैत अछि?

- (A) स्त्रीक विनम्र उपस्थिति आ संवादहीन वैवाहिक आरम्भ
- (B) अहंकार
- (C) खुला वाद-विवाद
- (D) समारोह समाप्त

२२८. चारि रात्रि धरि नववधूक चरण-स्पर्श कथा मे ककर प्रतीक्षा अछि?

- (A) आशीर्वाद, स्वीकृति आ संवादक प्रतीक्षा
- (B) पुरस्कार
- (C) कानूनी निर्णय
- (D) मीडिया-साक्षात्कार

२२९. प्रेमचन्दक “अहाँ के छी?” प्रश्न किएक देर सँ आबैत अछि?

- (A) क्योंकि विवाह विधिपूर्वक भेल, मुदा भावनात्मक परिचय अबोधारि नहि भेल छल
- (B) क्योंकि ओ देख नहि सकैत छथि
- (C) क्योंकि कन्या नहि आयल
- (D) क्योंकि ओ प्रसन्न छलाह

२३०. एहि खण्डक मूल अर्थ की अछि?

- (A) रसम पूरा होएब दाम्पत्यक भावनात्मक आरम्भक गारंटी नहि अछि
- (B) रसम अनावश्यक नहि
- (C) सब स्वाभाविक अछि
- (D) कथा बालगीत अछि

खण्ड ५२८ : विदेह-सदेह १ — “अनाम कथा”: सोनीक सत्य आ समाजक दोष

२३१. सोनी द्वारा “दसम बोर्ड फेल” सच्चाई कहब कथामे किएक निर्णायक अछि?

- (A) प्रेमचन्दक पूर्व शर्त टूटैत अछि, मुदा सोनीक सत्यवादिता उभरैत अछि
- (B) ओ झूठ बाजैत छथि
- (C) शिक्षा अप्रासंगिक
- (D) विवाह रद्द भऽ जाइत अछि

२३२. प्रेमचन्दक आँखिमे फेर नोर किएक आबैत अछि?

- (A) ओ अपन भरोसा, सपना आ शर्तसभ टूटल देखैत छथि
- (B) ओ अत्यधिक खुश छथि
- (C) ओ परीक्षा उत्तीर्ण भेलाह
- (D) ओ पुरस्कार पेल्लह

२३३. सोनी “हम अपनेसँ झूठ नहि बाजि सकैत छी” कहि की स्थापित करैत छथि?

- (A) स्वयं दोषी नहि, सत्यप्रिय आ आहत पात्र छथि
- (B) ओ छल करैत छथि
- (C) ओ उदासीन छथि
- (D) ओ अहंकारी छथि

२३४. प्रेमचन्दक बीमारी, विकलांगता आ जीवन-लक्ष्य सम्बन्धी प्रश्न कोन खोज अछि?

- (A) विवाहक धोखाक बीच वास्तविक व्यक्ति केँ बुझबाक प्रयास
- (B) सामान्य मजाक
- (C) कानूनी जिरह मात्र
- (D) खेलक प्रश्न

२३५. सोनीक “अहाँक खुशी” सबसे पैघ लक्ष्य कहब ककर संकेत अछि?

- (A) उसक आत्मसमर्पित दाम्पत्य-धारणा आ सहानुभूति
- (B) व्यापारिक इच्छा
- (C) भोजन-पसन्द
- (D) राजनीतिक मत

२३६. प्रेमचन्द “अहाँक कोनो दोष नहि” कहि कोन नैतिक निर्णय दैत छथि?

- (A) व्यक्ति आ समाज/परिवारक छल बीच भेद करैत छथि
- (B) सोनी दोषी छथि
- (C) कथा समाप्त
- (D) विवाह व्यर्थ

२३७. आशावादी आ पुरुषार्थवादी भेद प्रेमचन्दक मनोवृत्ति की देखबैत अछि?

- (A) ओ नियति-समर्पण नहि, परिश्रम आ स्वनिर्णयक पक्षधर छथि
- (B) ओ आलसी छथि
- (C) ओ भाग्यवाद मानैत छथि
- (D) ओ प्रश्न नहि करैत छथि

२३८. सोनीक धार्मिक आशावाद आ प्रेमचन्दक पुरुषार्थवादक टकराव की बनबैत अछि?

- (A) दाम्पत्यक विचार-दूरीक आरम्भिक संकेत
- (B) पूर्ण विचार-समानता
- (C) काव्य-पाठ
- (D) बालगीत

२३९. द्विरागमनक बाद प्रेमचन्दक दिल्ली लौटि काम सँ जुड़ब ककर संकेत अछि?

- (A) बाहरी जीवन चलैत अछि, मुदा भीतरक लक्ष्य नष्ट भऽ गेल अछि
- (B) सब ठीक भऽ गेल
- (C) कथा हास्यमय समाप्त
- (D) विवाह भंगल

२४०. “कतेक नवयुवक-युवती करुण जिनगी जीबाक लेल मजबूर” कथनक सार की अछि?

- (A) व्यक्तिगत कथा समाजक व्यापक वैवाहिक अन्याय पर टिप्पणी बनि जाइत अछि
- (B) घटना अपवाद मात्र
- (C) समाज पूर्ण न्यायी
- (D) विवाहक कोनो दोष नहि

खण्ड ५२९ : विदेह-सदेह १ — डॉ. प्रेमशंकर सिंह: जीवन, कृति आ साहित्य-दृष्टि

२४१. डॉ. प्रेमशंकर सिंहक परिचयमे हुनका कोन-कोन रूपमे देखाओल गेल अछि?

- (A) सृजनशील चिन्तक, समालोचक, नाटक-रंगमंच गवेषक आ अनुवादक
- (B) केवल गायक
- (C) केवल चित्रकार
- (D) केवल पाक-लेखक

२४२. मैथिली गद्यकें नव स्वरूप देबाक उल्लेख हुनक कोन योगदानक संकेत अछि?

- (A) गद्य-लेखन आ आलोचना मे रूपगत नवता
- (B) केवल संगीत रचना
- (C) केवल खेती
- (D) केवल व्यापार

२४३. मौलिक मैथिली कृतिमे “मैथिली नाटक ओ रंगमंच”क स्थान किएक महत्त्वपूर्ण अछि?

- (A) मैथिली नाट्य-अध्ययन आ रंगमंचक आधारग्रन्थीय योगदानक कारण
- (B) ओ बालगीत अछि
- (C) ओ पाक-विधि अछि
- (D) ओ पंजी-पुस्तक अछि

२४४. हुनक कृतिसूचीमे विद्यापति पर हिन्दी ग्रन्थक उपस्थिति की बतबैत अछि?

- (A) मैथिली विषय पर हिन्दी माध्यमे सेहो व्यापक आलोचना-कर्म
- (B) हुनका विद्यापति मे रुचि नहि
- (C) ओ केवल अंग्रेजी लिखैत छथि
- (D) ओ केवल कथा लिखैत छथि

२४५. अनुवाद-कर्मक उल्लेख हुनक साहित्यिक व्यक्तित्वमे की जोड़ैत अछि?

- (A) भारतीय भाषिक-सांस्कृतिक संवादक क्षमता
- (B) एकभाषिकता
- (C) रचना-विराम
- (D) व्यवसाय

२४६. सम्पादन-कर्मक दीर्घ सूची हुनका कोन भूमिकामे स्थापित करैत अछि?

- (A) साहित्यिक धरोहर-संरक्षक आ पाठ-निर्माता
- (B) केवल दर्शक
- (C) केवल नृत्यकार
- (D) केवल भोजन-विशेषज्ञ

२४७. मिथिला विभूति सम्मान आ वरिष्ठ लेखक सम्मानक उल्लेख की संकेत करैत अछि?

- (A) हुनक दीर्घ साहित्य-सेवा कें सार्वजनिक मान्यता भेटल
- (B) समाज हुनका नहि चिन्हलक
- (C) कृति प्रकाशित नहि
- (D) साहित्यसँ दूरी

२४८. प्रेमशंकर सिंहक अकादमिक सेवा आ अवकाशोपरान्त साधना का देखबैत अछि?

- (A) सारस्वत कर्म आजीवन जारी रहल
- (B) लेखन समाप्त भेल
- (C) अध्ययन अप्रासंगिक
- (D) सेवा असंबद्ध

२४९. हुनक प्रोफाइलमै मैथिली, हिन्दी, संस्कृत, बांग्ला, अंग्रेजी अध्ययनक संकेत किएक महत्त्वपूर्ण अछि?

- (A) तुलनात्मक आ बहुभाषिक साहित्य-दृष्टि केर आधार
- (B) भाषा-विरोध
- (C) केवल स्थानीयता
- (D) साहित्य-विरक्ति

२५०. एहि जीवन-परिचयक मुख्य निष्कर्ष की अछि?

- (A) डॉ. प्रेमशंकर सिंह मैथिली अध्ययनक शोध, आलोचना, रंगमंच, अनुवाद आ सम्पादनक केन्द्रीय व्यक्तित्व छथि
- (B) ओ केवल एक कविता लिखलनि
- (C) ओ साहित्यसँ असंबद्ध
- (D) ओ अज्ञात पात्र

खण्ड ५३० : विदेह-सदेह १ — “बीसम शताब्दी मैथिली साहित्यक स्वर्णिम युग”: सैद्धान्तिक आधार

२५१. लेखक साहित्यकें अतीत आ भविष्यसँ कोना जोड़ैत छथि?

- (A) साहित्य अतीतक अनुभव आ भविष्यक चेतनाकें वर्तमानमे जोड़ैत अछि
- (B) साहित्य केवल मनोरंजन
- (C) साहित्यक समयसँ सम्बन्ध नहि
- (D) साहित्य केवल तिथि-सूची

२५२. साहित्यक अध्ययनकें केवल जीवनी, भाषा आ पाठ धरि सीमित नहि मानबाक कारण की अछि?

- (A) साहित्य संस्कृति-इतिहास, मानव-मन आ सभ्यताक संरक्षित चेतना सँ जुड़ल अछि
- (B) जीवनी पर्याप्त अछि
- (C) संस्कृति असंबंधित
- (D) मनुष्य अनुपस्थित

२५३. रवीन्द्रनाथक विचारक उल्लेख किएक आयल अछि?

- (A) विश्व-मानवक विराट जीवन साहित्य द्वारा आत्मप्रकाश करैत अछि, से आधार देबाक लेल
- (B) गीत-सूची देबाक लेल
- (C) राजनीति हटेबाक लेल
- (D) बालकविता बुझाबय लेल

२५४. “अतीतक प्रेरणा आ भविष्यक चेतना नहि तँ साहित्य नहि” कथनक भावार्थ की अछि?

- (A) साहित्य स्मृति आ संभावना दुनू सँ ऊर्जा पबैत अछि
- (B) साहित्य वर्तमान-विरहित अछि
- (C) साहित्य केवल अतीत
- (D) भविष्य असंगत

२५५. मानव प्रगतिक नियम-सिद्धान्तक “मंगल कंगन” रूपक कोन अर्थ दैत अछि?

- (A) साहित्य मानव-जीवनक विकास-संकल्प केँ सौन्दर्य आ मूल्य सँ बाँधैत अछि
- (B) कंगन केवल आभूषण अछि
- (C) प्रगति असंभव
- (D) साहित्य निष्क्रिय

२५६. गद्यकार-काव्यकारक जीवनी-पाठ अध्ययनक पार जएबाक आग्रह कोन आलोचनात्मक दृष्टि अछि?

- (A) सामाजिक-सांस्कृतिक आलोचना
- (B) सिर्फ नामावली
- (C) कथासारहीन दृष्टि
- (D) साहित्य-विमुखता

२५७. लेखक साहित्यक गवाक्ष रूपक सँ की संकेत करैत छथि?

- (A) साहित्य अतीतक जीवन-धाराक दर्शन करएबाक झरोखा अछि
- (B) गवाक्ष असंबंधित
- (C) साहित्य बन्द कोठरी
- (D) भाषा समाप्त

२५८. भूल आ संशोधन द्वारा उद्देश्य पाबय बात साहित्यक ककरा दर्शबैत अछि?

- (A) मानवक आत्म-संशोधक यात्रा
- (B) स्थिरता
- (C) पूर्ण निष्क्रियता
- (D) केवल मनोरंजन

२५९. आरम्भिक सैद्धान्तिक चर्चा “स्वर्णिम युग” लेखकें कोन आधार दैत अछि?

- (A) साहित्य-इतिहास केँ सांस्कृतिक युग-चेतनाक रूपमे पढ़बाक आधार
- (B) केवल संख्या-गणना
- (C) केवल पृष्ठ-पाठ
- (D) केवल लेखक-सूची

२६०. सैद्धान्तिक आधारक प्रमुख बात की अछि?

- (A) साहित्य समय, संस्कृति, मानव-मन आ भविष्य-संकल्पक समन्वय अछि
- (B) साहित्य केवल अक्षर
- (C) इतिहास अप्रासंगिक
- (D) संस्कृति बाधा

खण्ड ५३१ : विदेह-सदेह १ — उन्नैसम शताब्दी, नवजागरण आ मैथिली

२६१. उन्नैसम शताब्दीमे भारतक नवजागरण मिथिलापर कम असरदार किएक कहल गेल?

- (A) मिथिलावासी प्राचीन परम्परा आ संस्कृत शिक्षामे अधिक रत रहलाह
- (B) मिथिलामे लोग नहि छल
- (C) साहित्य नहि छल
- (D) भाषा नहि छल

२६२. अंग्रेजी शिक्षा आ पाश्चात्य विचारधाराक प्रति मिथिलाक आरम्भिक उदासीनता की परिणाम देलक?

- (A) नव सामाजिक-सांस्कृतिक बदलाव अपेक्षाकृत देर सँ आयल
- (B) तुरन्त क्रांति भेल
- (C) मैथिली राजभाषा बनल
- (D) साहित्य समाप्त

२६३. कोर्ट ऑफ वाईसक अधीन मिथिला प्रशासन गेलाक प्रभाव की बताओल गेल?

- (A) पश्चिमक स्पर्श अनुभूति पहिल बेर व्यापक रूपमे भेल
- (B) मिथिला पूर्ण अलग भऽ गेल
- (C) भाषा उन्नति तुरन्त भेल
- (D) साहित्य हटि गेल

२६४. कोर्ट ऑफ वाईस द्वारा मैथिली आ ओकर लिपिक बहिष्कार ककर प्रतीक अछि?

- (A) स्थानीय भाषा-सांस्कृतिक संस्थागत उपेक्षा
- (B) भाषाक सम्मान
- (C) लिपिक उन्नति
- (D) लोकगीतक विकास

२६५. महाराज लक्ष्मीश्वर सिंहक गद्दीनशीन होयब किएक महत्त्वपूर्ण बताओल गेल?

- (A) सामाजिक, सांस्कृतिक आ साहित्यिक जीवनमे नव चेतना आयल
- (B) कोनो परिवर्तन नहि
- (C) साहित्य बन्द भेल
- (D) भाषा त्यागल गेल

२६६. लक्ष्मीश्वर सिंहक व्यक्तित्वक कोन गुण साहित्यकारसभ केँ आकर्षित कएलक?

- (A) विद्या-व्यसन, दानशीलता, देशभक्ति आ कृपापूर्ण व्यवहार
- (B) कठोर दमन
- (C) भाषा-विरोध
- (D) साहित्य-विरोध

२६७. रमेश्वर सिंहक उल्लेख ककर निरन्तरता दर्शबैत अछि?

- (A) लक्ष्मीश्वर सिंहक साहित्य-पोषक परम्परा
- (B) साहित्यक अन्त
- (C) नवजागरण-विरोध
- (D) भाषा-विस्मृति

२६८. उन्नीसम शताब्दीक अन्तिम भागमे रूढ़िवादक छाया ककरा बाधित कएलक?

- (A) बौद्धिक आ साहित्यिक प्रगति
- (B) कृषि मात्र
- (C) भोजन मात्र
- (D) नाटक मंच

२६९. “मातृभाषानुरागी आ प्रकाशन-सौविध्य” ककर जन्म दैत अछि?

- (A) मैथिली साहित्यक नव रूप आ नव प्रवृत्ति
- (B) भाषा-विलुप्ति
- (C) साहित्य-विराम
- (D) सांस्कृतिक शून्यता

२७०. नवजागरण-प्रसंगसँ आधुनिक मैथिली साहित्यक उदय कोना बुझाईत अछि?

- (A) मिथिलाक आधुनिक साहित्य नवजागरण, परम्परा, राजाश्रय आ भाषा-संघर्षक जटिल संयोग सँ बनल
- (B) मैथिली स्वतः विकसित भेल बिना संघर्ष
- (C) कोर्ट ऑफ वार्ड्स केवल कल्याणकारी
- (D) परम्परा अप्रासंगिक

खण्ड ५३२ : विदेह-सदेह १ — आधुनिक मैथिली साहित्यक उदय: लेखक-परम्परा आ परिवर्तन

२७१. कवीश्वर चन्दा झा, जीवन झा, लालदास आदि नामक सूची किएक महत्त्वपूर्ण अछि?

- (A) आधुनिक मैथिली साहित्यक नव प्रवृत्तिक अग्रगामी परम्परा देखाबय लेल
- (B) साधारण पाठक-सूची
- (C) भोजन-सूची
- (D) विवाह-सूची

२७२. विविध साहित्यिक विधाक जन्म देब आ संवर्धन करब कोन युगधर्म देखबैत अछि?

- (A) आधुनिक मैथिली साहित्यक विधा-विस्तार
- (B) साहित्य संकुचन
- (C) भाषा-पतन
- (D) विधाहीनता

२७३. विगत शताब्दी के “क्रान्तिकारी युग” कहबाक आधार की अछि?

- (A) साहित्य, समाज, राजनीति, विज्ञान आ विचारमे नव स्फूर्ति आ पुनर्संस्कार
- (B) कुनो परिवर्तन नहि
- (C) केवल युद्ध
- (D) केवल राजदरबार

२७४. आधुनिक शिक्षा, छापाखाना आ यातायातक अभाव रहितहुँ मैथिली लेखन चलैत रहबाक अर्थ की अछि?

- (A) मातृभाषा-सृजनक आन्तरिक शक्ति प्रबल छल
- (B) लेखन असम्भव
- (C) भाषा मृत
- (D) साहित्यक रुचि नहि

२७५. मैथिली साहित्य दीर्घ काल संस्कृत-साहित्यक प्रतिछाया सदृश रहल, एहि कथनक अर्थ की अछि?

- (A) पुरान परम्पराक प्रभाव गहिर छल, मुदा धीरे-धीरे स्वतंत्र नवता आयल
- (B) मैथिली साहित्य नहि छल
- (C) संस्कृत असंबद्ध
- (D) भाषा नष्ट

२७६. दुइ विश्वयुद्धक बीचक कालमे की प्रमुख चेतना आयल कहल गेल?

- (A) मैथिली साहित्यक सर्वांगीण समुद्धारक चेतना
- (B) पूर्ण मौन
- (C) केवल धार्मिक लेखन
- (D) केवल पाक-विधि

२७७. विभिन्न विधामे उल्लेख्य परिवर्तन होयब ककर प्रमाण अछि?

- (A) साहित्यक आधुनिक विस्तार आ प्रयोगशीलता
- (B) परम्पराक अन्त
- (C) साहित्य-विरोध
- (D) लेखकाभाव

२७८. लेखक-नामावली केँ केवल सूची नहि, युग-संकेत किएक मानब चाही?

- (A) नामसभ मिलि साहित्यिक आन्दोलनक सामाजिक-सांस्कृतिक पंक्ति बनबैत अछि
- (B) सूची निष्प्राण अछि
- (C) नाम याद करब उद्देश्य
- (D) कथा असंबद्ध

२७९. आधुनिक मैथिली साहित्यक उदयमे परम्परा आ नवता कोना एक संग छथि?

- (A) संस्कृत-प्रभावित आधार पर नव विधा, प्रकाशन आ मातृभाषा-चेतना विकसित भेल
- (B) परम्परा पूर्ण हटि गेल
- (C) नवता नहि आयल
- (D) दूटा विरोधी मात्र

२८०. लेखक-परम्परा आ परिवर्तनक संयुक्त निष्कर्ष की अछि?

- (A) बीसम शताब्दीक मैथिली साहित्य पूर्व परम्परा सँ निकलि आधुनिक विधा-विस्तार आ नव चेतनाक युग बनल
- (B) साहित्य स्थिर रहल
- (C) मैथिली गौण रहल
- (D) सृजन बन्द भेल

खण्ड ५३३ : विदेह-सदेह १ — राजेन्द्र पटेलक कविता: हाथ, जड़ आ अस्तित्व-बोध

२८१. राजेन्द्र पटेलक कविता मे “हाथ” बारम्बार ककर प्रतीक बनैत अछि?

- (A) मनुष्यक पकड़, कर्म, स्मृति आ जड़-खोजक प्रतीक
- (B) केवल शरीरक अंग
- (C) भोजनक साधन मात्र
- (D) विवाह-रीति

२८२. “धरा बिन शाख” आ “हाथ बिना” अनुभूति कोन बेचैनी व्यक्त करैत अछि?

- (A) मूलाधारहीनता आ अस्तित्वगत अपूर्णता
- (B) पूर्ण सुरक्षा
- (C) उत्सव
- (D) शारीरिक बल

२८३. हाथसभक एक-दोसरमे ओझराएब ककर भाव दैत अछि?

- (A) मानवीय सम्बन्ध, उलझन आ अंतहीन विस्तार
- (B) पूर्ण अलगाव मात्र
- (C) खेलक दृश्य
- (D) किसानक सूची

२८४. बाबाक छड़ीक पकड़ आ बसक लटकल चक्रक स्मरण की बनबैत अछि?

- (A) पीढ़ी-स्मृति आ दैनिक जीवनक स्पर्श-चित्र
- (B) कथा-विवाह
- (C) पाक-विधि
- (D) राजनीति

२८५. हरक फारक चिन्ह भाग्य-रेखा हाथक कहल गेल, एकर अर्थ की अछि?

- (A) खेती, श्रम आ भाग्य एक प्रतीक-व्यवस्थामे मिलैत अछि
- (B) खेती असंबंधित
- (C) भाग्यक कोनो अर्थ नहि
- (D) हाथ निष्क्रिय

२८६. हाथक जड़ पर आक्रमणक बिम्ब की संकेत करैत अछि?

- (A) पहचानक मूल कारण/आधार तक पहुँचबाक बेचैनी
- (B) केवल युद्ध
- (C) बालगीत
- (D) पंजिका

२८७. श्वेत धरापर रोशनाईसँ पसरल हाथक अर्थ कोना पढ़ल जा सकैत अछि?

- (A) लेखन, स्मृति आ अस्तित्वक निशान बनबैत हाथ
- (B) रंग-रोगन मात्र
- (C) भोजन-पात्र
- (D) संगीत-स्वर

२८८. मस्तिष्क-कोशिका मे हाथक प्रवेश ककर संकेत अछि?

- (A) हाथक बिम्ब चेतना आ अवचेतन धरि पैठि गेल अछि
- (B) हाथ गायब अछि
- (C) कथा समाप्त
- (D) आनन्द मात्र

२८९. राजेन्द्र पटेलक कविता अनुवाद-सन्दर्भमे किएक महत्त्वपूर्ण अछि?

- (A) गुजराती सँ अंग्रेजी आ अंग्रेजी सँ मैथिली आनि भाषा-पार संवेदना जोड़ैत अछि
- (B) केवल मैथिली मूल गीत
- (C) कोनो अनुवाद नहि
- (D) केवल पाक-विधि

२९०. एहि कविता-केंद्रित खण्डक सार की अछि?

- (A) हाथक बिम्ब सँ मनुष्य, धरती, स्मृति, श्रम आ जड़-चेतना खोजल गेल अछि
- (B) कविता केवल हास्य अछि
- (C) हाथ अर्थहीन अछि
- (D) कविता पाबनि-विधि अछि

खण्ड ५३४ : विदेह-सदेह १ — राजेन्द्र विमल: व्यक्तित्व आ साहित्यिक प्रतिष्ठा

२९१. राजेन्द्र विमलकें नेपालक मैथिली साहित्यक “स्तम्भ” किएक कहल गेल?

- (A) मानवीय संवेदना, कथा, समालोचना, गीत-गजल आ बहुभाषिक लेखनक कारण
- (B) केवल पाक-कला
- (C) केवल खेल
- (D) केवल चित्रकला

२९२. मैथिली, नेपाली आ हिन्दी भाषामे हुनक प्राज्ञता कोन मूल्य जोड़ैत अछि?

- (A) सीमापार बहुभाषिक साहित्यिक संवाद
- (B) भाषा-त्याग
- (C) एकभाषिकता
- (D) काव्य-विरोध

२९३. भाषामे प्राञ्जलता आ सुललित शब्द-चयन हुनक लेखनक कोन विशेषता बताओल गेल?

- (A) पाठकक हृदयमे सहज प्रवेश करबाक शक्ति
- (B) दुर्गम गद्य मात्र
- (C) निर्जीव लेखन
- (D) संगीतहीनता

२९४. “कम लिखिकऽ यथेष्ट यश” कथन हुनकर साहित्यिक छविमे की जोड़ैत अछि?

- (A) रचना-गुण मात्रा सँ अधिक महत्त्वपूर्ण अछि
- (B) ओ अप्रसिद्ध छथि
- (C) किछु लिखने नहि
- (D) यश असंबंधित

२९५. मानवीय संवेदनाक अभिव्यक्ति मे हुनक कलम “बेजोड़” कहल गेल — एकर अर्थ की अछि?

- (A) हृदयगत पीड़ा, प्रेम आ करुणा केँ गहिर रूपे व्यक्त करबाक क्षमता
- (B) केवल व्याकरण कौशल
- (C) केवल हास्य
- (D) केवल आँकड़ा

२९६. त्रिभुवन विश्वविद्यालय अन्तर्गत अध्यापनक उल्लेख ककर संकेत अछि?

- (A) साहित्यकारक अकादमिक गुरु-भूमिका
- (B) राजनीतिक पद
- (C) व्यापारिक भूमिका
- (D) गीत-मंच मात्र

२९७. जनकपुरधामक हुनक घर साहित्य-जिज्ञासु सभक अखाड़ा जकाँ बनल रहबाक अर्थ की अछि?

- (A) साहित्यिक संवादक खुला केन्द्र बनब
- (B) घर खाली छल
- (C) साहित्यिक निषेध
- (D) निजता मात्र

२९८. धीरेन्द्रक बाद जनकपुर-परिसरक साहित्यिक गुरु कहल जाएब कोन परम्परा देखबैत अछि?

- (A) गुरु-शिष्य, प्रेरणा आ साहित्यिक पीढ़ी-सततता
- (B) विच्छेद
- (C) केवल संस्था
- (D) संगीत-मंडली

२९९. राजेन्द्र विमलक पूर्ण नाम राजेन्द्र लाभ होयबाक उल्लेख ककर परिचयात्मक भूमिका निभबैत अछि?

- (A) लेखक-नाम आ साहित्यिक नामक सम्बन्ध स्पष्ट करैत अछि
- (B) कोनो अर्थ नहि
- (C) भोजन-सूची
- (D) गीतक राग

३००. राजेन्द्र विमलक परिचय पाठक लेल हुनक कोन छवि बनबैत अछि?

- (A) राजेन्द्र विमल संवेदना, शैली, आलोचना, गीत-गजल आ साहित्यिक मार्गदर्शनक बहुआयामी व्यक्तित्व छथि
- (B) ओ केवल एक कथा-पात्र
- (C) ओ पाबनि-लेखक मात्र
- (D) ओ अज्ञात कलाकार

खण्ड ५३५ : विदेह-सदेह १ — राजेन्द्र विमलक गजल: सपना, दिवाली आ परिवर्तन

३०१. पहिल गजलमे सपना फूलबासँ पहिले झरि जाएब ककर प्रतीक अछि?

- (A) अधूरा आकांक्षा आ समयपूर्व विफलता
- (B) पूर्ण सफलता
- (C) उत्सवक उल्लास
- (D) पाक-विधि

३०२. कलमक सिन्दूरदान पएबासँ पहिले गीतक कुमारावस्थामे मरब की संकेत करैत अछि?

- (A) रचनात्मक संभावनाक असमय मृत्यु
- (B) गीतक विवाह सफल
- (C) कलम निष्क्रिय
- (D) आनन्द-नृत्य

३०३. भादवक अन्हरिया, मेघ आ कोजगरा छविसभ ककर भावभूमि बनबैत अछि?

- (A) अँधार, प्रतीक्षा आ उजियारक अस्थिर संघर्ष
- (B) मौसम-रिपोर्ट
- (C) कृषि-सूची
- (D) युद्धक योजना

३०४. नदी उफनाएल रहितहुँ बालू-पाथरक बिछान बनबाक भाव की अछि?

- (A) उत्कट जीवनधारा अन्ततः शुष्कता वा थम्हाव मे बदलि सकैत अछि
- (B) नदी सदिखन बढैत रहत
- (C) बालू नहि होइत
- (D) पानी अप्रासंगिक

३०५. “जगमग सृष्टि करए तखने दिवाली” भावक मूल सन्देश की अछि?

- (A) प्रेम-चेतना जागल बिनु बाहरी उत्सव अधूरा अछि
- (B) केवल दीप खरीदब
- (C) उत्सव निरर्थक
- (D) अन्हार चाही

३०६. जीर्ण-पुरातनकें हुड़का-लोली बनाबयक आह्वान ककर संकेत अछि?

- (A) नव चेतना लेल पुरान जड़ता हटाबयक
- (B) पुरान जड़ता बचाबयक
- (C) सृजन रोकयक
- (D) अन्धकार बढ़ाबयक

३०७. स्नेहक धार बहि जग ज्योतिर्मय बनब कथन कोन मूल्य पर बल दैत अछि?

- (A) प्रेम आ करुणाक सामूहिक प्रकाश
- (B) धन-संचय
- (C) अलगाव
- (D) उदासी

३०८. रामशक्ति आगू रावण न टिकब कोन नैतिक प्रतीक बनैत अछि?

- (A) अधर्म पर नैतिक शक्तिक विजय
- (B) रावणक विजय
- (C) अनीति-अंधकार
- (D) केवल युद्ध-गाथा

३०९. दू गजल मिलि राजेन्द्र विमलक कोन पक्ष देखबैत अछि?

- (A) करुण स्वप्न-भंग आ प्रेमपूर्ण नव-प्रकाशक द्वंद्व
- (B) केवल हास्य
- (C) केवल बालगीत
- (D) केवल पाक-विधि

३१०. एहि गजल-खण्डक सार की अछि?

- (A) सपना, क्षरण, प्रेम, उजियार आ नवजीवनक मूल्य गजलमे घनिष्ठ अछि
- (B) गजल तिथि-सूची अछि
- (C) कविता निरर्थक अछि
- (D) उत्सव मात्र पटाखा अछि

खण्ड ५३६ : विदेह-सदेह १ — “तृष्णा”: पात्र, इच्छा आ वैवाहिक असंतोष

३११. “तृष्णा”मे सिकिलिया आ सोनावतीक आपसी तुलना कथाक मूल विषय कोना खोलैत अछि?

- (A) दुनू स्त्री अपन-अपन पति सँ असंतुष्ट आ दोसरक जीवनक प्रति आकर्षित अछि
- (B) दुनू पूर्ण सुखी छथि
- (C) दुनू अजनबी छथि
- (D) दुनू साधु छथि

३१२. राजदेबा ककर रूपमे उभरैत अछि?

- (A) कमाऊ, गंभीर, घर चलाबयवाला मुदा भाव-स्पर्शमे रूख पात्र
- (B) मद्यपी आवारा
- (C) ढोलकिया
- (D) कवि-गायक

३१३. देबलरैना ककर रूपमे उभरैत अछि?

- (A) चंचल, आकर्षक, ढोलकिया, परन्तु मद्यपी आ अस्थिर पात्र
- (B) पूर्ण संयमी गृहस्थ
- (C) अस्पताल कर्मचारी
- (D) मौन विद्वान

३१४. सिकिलियाक देबलरैनाप्रति आकर्षणक आधार की अछि?

- (A) रंग, शरीर, बाँसुरी/ढोलक आ कल्पित रसमय जीवन
- (B) धर्मशास्त्र
- (C) पंजी
- (D) साहित्यिक आलोचना

३१५. सोनावती राजदेबाकेँ किएक पसिन्न करैत देखाइत अछि?

- (A) ओ गंभीर, कमाऊ, घर-परिवार निभेनिहार अछि
- (B) ओ मद्यपी अछि
- (C) ओ हिंसक अछि
- (D) ओ कुछ नहि करैत

३१६. “जे भेटैत छै, तकर मोल नै बुझाई” कथाक मनोवैज्ञानिक निष्कर्ष कोना अछि?

- (A) लोग अपन उपलब्ध जीवनक अच्छाई कम, अभाव अधिक देखैत अछि
- (B) सब पूर्ण सन्तुष्ट
- (C) तुलना समाप्त
- (D) इच्छा नहि रहैत

३१७. कथा मे “नो वन इज परफेक्ट” प्रकारक निष्कर्षक भावार्थ की अछि?

- (A) कोनो व्यक्ति पूर्ण नहि, आकर्षण चयनात्मक देखाइत अछि
- (B) सभ पूर्ण छथि
- (C) दोष असंभव
- (D) दाम्पत्य आसान अछि

३१८. सिकिलिया आ सोनावतीक पति-बदलाव चर्चा सामाजिक मर्यादा पर की प्रश्न उठबैत अछि?

- (A) इच्छा, देह, दाम्पत्य आ समाज-बंधनक टकराव
- (B) बाल-साहित्यिक प्रश्न
- (C) राजनीतिक पद
- (D) भोजन-सूची

३१९. छह मास बाद दुनू स्त्रीक अपन-अपन पति लग घुरब कथाक तर्क की सिद्ध करैत अछि?

- (A) कल्पित आकर्षण व्यवहारिक जीवनमे स्थायी समाधान नहि भेल
- (B) दुनू सदा सुखी भेल
- (C) दुनू गायब
- (D) दुनू साध्वी बनलीह

३२०. “तृष्णा”क शीर्षक पात्रसभक जीवनसँ कोना मेल खाइत अछि?

- (A) इच्छा, अभाव आ तुलनाक बुझि न सकल प्यास कथा चलबैत अछि
- (B) तृष्णा जल-पान मात्र
- (C) शीर्षक असंबद्ध
- (D) कथा उत्सव पर अछि

खण्ड ५३७ : विदेह-सदेह १ — “तृष्णा”: देह, गरीबी आ लोक-भाषाक यथार्थ

३२१. चंचलिया प्रसंग “तृष्णा”मे किएक कड़ा सामाजिक धरातल बनबैत अछि?

- (A) देह, गरीबी, हिंसा आ पुरुष-स्वामित्वक क्रूरता देखबैत अछि
- (B) उत्सवक उल्लास
- (C) बालकथा
- (D) पाक-विधि

३२२. राजदेबाक परिवारिक बोझ ककरा दशबैत अछि?

- (A) विधवा माय, पत्नी, बेटा आ मृत बहिन बाद घर सँघारबाक आर्थिक दायित्व
- (B) पूर्ण विलासिता
- (C) कुनो जिम्मेदारी नहि
- (D) राजकीय जीवन

३२३. सिकिलियाक श्रृंगार, स्वाद, सिनेमा आ परबा-पोसाकक चाह कोन सामाजिक आयाम दैत अछि?

- (A) गरीबीक भीतर देहिक-सांस्कृतिक चाह आ उपभोग-आकांक्षा
- (B) पूर्ण तपस्या
- (C) विरक्ति
- (D) शोधकार्य

३२४. देवलरैनाक ढोलक-गुमकी आ बाँसुरीक बिम्ब सिकिलियाक कल्पनामे की करैत अछि?

- (A) रोजमर्रा नीरसता सँ अलग रसभर जीवनक स्वप्न जगबैत अछि
- (B) भय मात्र
- (C) घृणा मात्र
- (D) पंजी-संकेत

३२५. सोनावतीक फाटल नूआ आ मारपीटक शिकायत कोन यथार्थ खोलैत अछि?

- (A) दारू, गरीबी, वैवाहिक हिंसा आ स्त्री-अपमान
- (B) समृद्धि
- (C) सुखी दाम्पत्य
- (D) उत्सव मात्र

३२६. रजदेबामाइक हस्तक्षेप कथा मे कोन आवाज प्रतिनिधित्व करैत अछि?

- (A) परिवार-समाजक नैतिक बंधन आ स्त्री-नियंत्रणक लोक-स्वर
- (B) बाहरी न्यायालय
- (C) मीडिया
- (D) पुस्तकालय

३२७. फ्रूटीक खाली डिब्बा प्रसंग ककर प्रतीक बनैत अछि?

- (A) उपभोग-लालसा, अभाव आ चमकदार संसारक दूरस्थ आकर्षण
- (B) धार्मिक कलश
- (C) वैज्ञानिक यंत्र
- (D) राजकीय मुहर

३२८. देवलरैना द्वारा सिनेमा/होटल/घुमबाक प्रस्ताव सिकिलियाकें किएक खींचैत अछि?

- (A) ओहि प्रस्तावमे उपेक्षित इच्छा, मनोरंजन आ मानोचित देखभालक वादा अछि
- (B) ओ धर्मशास्त्र सुनबैत अछि
- (C) ओ काम करब कहैत अछि
- (D) ओ पंजी लिखैत अछि

३२९. कथाक लोक-भाषा किएक महत्त्वपूर्ण अछि?

- (A) पात्रक जातीय, वर्गीय, देहिक आ भावनात्मक यथार्थ केँ सीधा स्वर दैत अछि
- (B) भाषा असंबद्ध
- (C) कथा निर्जीव बनैत अछि
- (D) केवल शुद्ध व्याकरण उद्देश्य

३३०. “तृष्णा”क देह-गरीबी-विमर्शक प्रमुख अर्थ की अछि?

- (A) “तृष्णा” इच्छा केँ नैतिक उपदेश नहि, गरीबी, देह, हिंसा आ लोक-समाजक जटिलता मे पढ़ैत अछि
- (B) कथा केवल हास्य
- (C) कथा पूर्ण पौराणिक
- (D) कथा पाक-विधि

खण्ड ५३८ : विदेह-सदेह १ — “तृष्णा”: दाम्पत्य, समाज-बंधन आ मनोविज्ञान

३३१. सिकिलिया-सोनावतीक छह मास तक न घुरब कथामे की संकेत करैत अछि?

- (A) इच्छा सामाजिक सीमा तोड़ि व्यवहारिक प्रयोग बनि गेल
- (B) दू दिनक उत्सव
- (C) केवल यात्रा
- (D) सपना मात्र

३३२. पंचैती भेलाक बादो दुनू स्त्री अपन पति लग नहि घुरबाक किएक तैयार नहि भेलीह?

- (A) कारण असंतोष मात्र क्षणिक नहि, गहिर वैवाहिक अनुभवसँ जुड़ल छल
- (B) ओ रास्ता भुलि गेलीह
- (C) पति अनुपस्थित
- (D) समाज नहि छल

३३३. छह मास बाद अपन-अपन पति लग कनैत घुरब कोन भाव जगबैत अछि?

- (A) तृष्णा आ यथार्थक टकरावसँ उपजल पछतावा/स्वीकार
- (B) पूर्ण विजय
- (C) उत्सव
- (D) कोनो परिवर्तन नहि

३३४. दुनू स्त्रीक फेर एक-दोसर पर आरोप ककर मनोविज्ञान देखबैत अछि?

- (A) दोष दोसरमे देखबाक आ अपन चयनसँ बचबाक प्रवृत्ति
- (B) पूर्ण आत्मस्वीकार
- (C) मौन साधना
- (D) साहित्य-चर्चा

३३५. सोनावती राजदेबाकेँ “गुम्मा” कहि आलोचना किएक करैत अछि?

- (A) स्थिरता भेटलाक बाद ओकर नीरसता खलैत अछि
- (B) ओ हिंसक अछि
- (C) ओ खर्चालु अछि
- (D) ओ ढोलकिया अछि

३३६. सिकिलिया देबलरैनाकेँ गुंडा, नशेबाज, लापरवाह कहि किएक लौटैत अछि?

- (A) आकर्षणक पीछे छिपल दोष व्यवहारिक जीवनमे असह्य भेल
- (B) देबलरैना पूर्ण आदर्श
- (C) नशा नहि
- (D) कथा झूठ

३३७. प्रो. सत्यनारायणक टिप्पणी कथा में ककर प्रतिनिधित्व करैत अछि?

- (A) मनोवैज्ञानिक/सैद्धान्तिक व्याख्याक आवाज
- (B) भोजनकार
- (C) नायक
- (D) बालक

३३८. गंभीर पति चाहनिहार स्त्री आ चंचल पति चाहनिहार स्त्रीक उलट-पुलट ककर व्यंग्य अछि?

- (A) मानवीय असंतोषक चिरन्तन चक्र
- (B) पूर्ण संतोष
- (C) नैतिक पूर्णता
- (D) अधिकार समाप्त

३३९. रजदेबामाइक “समाज आ परिवारक बंधन टूटत...” कथन ककर चिंता व्यक्त करैत अछि?

- (A) व्यक्ति-इच्छा से सामाजिक व्यवस्था अस्थिर होयबाक भय
- (B) पूर्ण स्वतंत्रताक उत्सव
- (C) बालसाहित्यक प्रश्न
- (D) भोजन-विवरण

३४०. “तृष्णा”क दाम्पत्य-मनोविज्ञानसँ की बोध होइत अछि?

- (A) “तृष्णा” दाम्पत्यक असंतोष केँ इच्छा, प्रयोग, पछतावा आ सामाजिक बंधनक चक्रमे देखबैत अछि
- (B) कथा एकरेखा सुखान्त
- (C) कथा दाम्पत्य-विरोध नहि
- (D) कथा केवल नैतिक श्लोक

खण्ड ५३९ : विदेह-सदेह १ — डॉ. रमानन्द झा “रमण”: जीवन आ सगर राति दीप जरय

३४१. डॉ. रमानन्द झा “रमण”क परिचयमे हुनक प्रमुख साहित्यिक क्षेत्र की अछि?

- (A) समीक्षा, सम्पादन, अनुवाद आ कथा-विमर्श
- (B) केवल गायन
- (C) केवल चित्रकला
- (D) केवल पाक-विधि

३४२. हुनक मौलिक समीक्षात्मक कृतिसूची ककर प्रमाण अछि?

- (A) मैथिली साहित्य, कविता, राजनीति आ आलोचना पर दीर्घ कार्य
- (B) अल्प लेखन
- (C) साहित्य-विमुखता
- (D) केवल गीत

३४३. मानवाधिकार घोषणा अनुवादक उल्लेख हुनकर काजमे की जोड़ैत अछि?

- (A) साहित्य सँ आगे सामाजिक-वैश्विक पाठक मैथिलीकरण
- (B) केवल नाटक
- (C) भोजन-रचना
- (D) व्यक्तिगत पत्र

३४४. “बहुत दिनक बाद मिथिलाक ग्रामांचल में सगर राति दीप जरयक आयोजन” कथनक भाव की अछि?

- (A) कथा-परम्परा शहरसँ गाम दिस फेरि आयल
- (B) गाममे साहित्यक निषेध
- (C) कथा समाप्त
- (D) केवल संगीत सभा

३४५. हटनी, घोघरडीहा आ डयोढ़क पूर्व आयोजनक उल्लेख किएक अछि?

- (A) सगर रातिक ऐतिहासिक निरन्तरता देखाबय लेल
- (B) तिथि-संग्रह मात्र
- (C) भोजन-स्थान
- (D) यात्रा-सूची

३४६. “शहरे शहरे बौआए सगर राति गाम दिस आएल” कथनमे कोन भाव अछि?

- (A) साहित्यिक यात्रा शहर केन्द्रितता छोड़ि ग्रामांचलमे प्रवेश करैत अछि
- (B) गाम छोड़ि देलक
- (C) साहित्य बंद भेल
- (D) केवल रेलयात्रा

३४७. अशोक कुमार झा “अविचल”क धन्यवाद किएक कएल गेल?

- (A) ग्रामांचलमे आयोजन सम्भव बनेबाक भूमिकालेल
- (B) कथा रोकबाक लेल
- (C) आयोजन छोड़बाक लेल
- (D) केवल धन संग्रह

३४८. कतेको गोटे आयोजन बन्द करबाक सलाह देलाक बावजूद दीप जरैत रहल — ई की बतबैत अछि?

- (A) कथाकार आ मातृभाषा अनुरागीक दृढ़ सामूहिकता
- (B) आन्दोलन समाप्त
- (C) कथा अनुत्साह
- (D) भाषा-विस्मृति

३४९. काठमांडूसँ कोलकाता, विराटनगरसँ बनारस आदि स्थानक उल्लेख ककर संकेत अछि?

- (A) सगर रातिक भौगोलिक विस्तार आ साहित्यिक नेटवर्क
- (B) भ्रमण-पर्यटन मात्र
- (C) कथा-विरोध
- (D) भोजन-यात्रा

३५०. रमणजीक सगर राति-बोधक केन्द्रीय बात की अछि?

- (A) रमणजी सगर राति केँ मैथिली कथा-जागरणक जीवित आन्दोलन रूपमे देखैत छथि
- (B) ओ आयोजनक विरोधी छथि
- (C) ओ केवल आत्मकथा लिखैत छथि
- (D) ओ पाबनि-वर्णन करैत छथि

खण्ड ५४० : विदेह-सदेह १ — सगर राति दीप जरय: जन्म, प्रारम्भ आ नियम

३५१. सगर राति दीप जरयक अवधारणाक जन्म कोन प्रसंगमे कहल गेल?

- (A) किरण जयंतीक अवसर पर लोहनामे साहित्यकारसभक बीच
- (B) विवाह-मंडपमे
- (C) राजकीय आदेशमे
- (D) विद्यालयी परीक्षा मे

३५२. अवधारणाकेँ साकार करबाक श्रेय ककरा देल गेल?

- (A) प्रभास कुमार चौधरी
- (B) भीम मिश्र
- (C) सोनावती
- (D) देबलरैना

३५३. पंजाबी “दीवा जले सारी रात” जकाँ आयोजनक विचार की छल?

- (A) भरिक रात कथा-पाठ, घुमि-घुमि विभिन्न स्थान पर
- (B) दिवसीय भोजन
- (C) नाटक-प्रतियोगिता
- (D) पाकशाला

३५४. पहिल नियोजित आयोजन कटिहारमे स्थगित किएक भेल?

- (A) एक दुखद घटनाक कारण
- (B) समय न भेटल
- (C) भाषा नापसंद
- (D) कथा नहि छल

३५५. मुजफ्फरपुर आयोजनमे कथापाठ संग की विशेष छल?

- (A) नव लिखल कथा आ ओहि पर विशेष चर्चा
- (B) केवल गीत
- (C) केवल भोजन
- (D) केवल पुरस्कार

३५६. आगामी कार्यक्रमक स्थान-तिथि एही कार्यक्रममे तय करबाक नियम ककर संकेत अछि?

- (A) सामूहिक, जीवित आ सतत आयोजन-प्रक्रिया
- (B) ऊपरसँ आदेश
- (C) गुप्त योजना
- (D) कार्यक्रम समाप्त

३५७. ज्योत्सना चौधरीक भैरात टेमी उसकबैत रहब ककर प्रतीक अछि?

- (A) गृह-सहभागिता आ साहित्यिक आतिथ्यक जीवित रूप
- (B) केवल घरेलू काम
- (C) साहित्य-विरोध
- (D) आयोजन-विघ्न

३५८. रूपा धीरूक काठमांडू आयोजन-सन्दर्भ कोन निरन्तरता देखबैत अछि?

- (A) साहित्यिक आतिथ्यक स्त्री-सहभागिता दोहरायल गेल
- (B) आतिथ्य समाप्त
- (C) सगर राति टूटल
- (D) स्त्री अनुपस्थित

३५९. आमंत्रित करनिहारक स्वयं सहभागी होयबाक शर्त किएक “प्राण” कहल गेल?

- (A) जिम्मेदारी, आत्मीयता आ साहित्यिक स्वाभिमान बचबैत अछि
- (B) अनुपस्थित आयोजन सहज
- (C) दूरी जरूरी
- (D) केवल पैसा महत्वपूर्ण

३६०. सगर रातिक जन्म-नियमसँ ओकर कोन रूप स्पष्ट होइत अछि?

- (A) सगर राति व्यक्तिगत आतिथ्य, नव कथा-पाठ आ प्रत्यक्ष संवादक सामुदायिक विधि अछि
- (B) सगर राति केवल औपचारिक सम्मेलन
- (C) केवल पुरस्कार मंच
- (D) केवल संगीत-रात

खण्ड ५४१ : विदेह-सदेह १ — सगर राति: प्रारम्भिक आयोजन आ कथा-संवाद

३६१. पहिल सगर रातिमे कथापाठक सूची किएक उल्लेखनीय अछि?

- (A) आरम्भे अनेक रचनाकार एक मंच पर नव कथा संग आएलाह
- (B) कोनो कथा नहि पढ़ल गेल
- (C) केवल गीत भेल
- (D) सभा स्थगित रहल

३६२. डॉ. नन्दकिशोर द्वारा हिन्दी कथा पाठ कएल जाएब की संकेत करैत अछि?

- (A) मैथिली आयोजनमे भाषा-पार साहित्यिक संवादक अवकाश
- (B) मैथिली निषेध
- (C) हिन्दी वर्चस्व मात्र
- (D) कथापाठक अभाव

३६३. कथाचर्चामे जीवकान्त, भीमनाथ झा, मोहन भारद्वाज आदि भागीदारी ककर प्रमाण अछि?

- (A) कथा-पाठ मात्र नहि, समालोचनात्मक विमर्श सेहो केन्द्रमे छल
- (B) केवल श्रोता मौन
- (C) पुरस्कार वितरण
- (D) भोजन कार्यक्रम

३६४. “समाद पर आयोजन-भार नहि लेब” निर्णय किएक महत्त्वपूर्ण अछि?

- (A) साहित्यकारक स्वाभिमान आ आयोजकीय जिम्मेदारी सुरक्षित करैत अछि
- (B) दूरस्थ आदेश प्रोत्साहित
- (C) आयोजन बन्द
- (D) कथा हटाउ

३६५. दोसर सगर राति डयोढ़मे करबाक निर्णय कोना आयल?

- (A) जीवकान्तक अनुरोध पर तीन मास बाद आयोजन तय भेल
- (B) राजकीय आदेशसँ
- (C) अनायास
- (D) कन्यादान प्रसंगसँ

३६६. डयोढ़ आयोजनक उद्देश्य-पत्र मे कथाकारसभक लेल कोन लक्ष्य छल?

- (A) नव रचना पढ़ब आ टीका-विश्लेषण द्वारा कथाक गति देब
- (B) कथा रोकब
- (C) केवल पुरस्कार लेब
- (D) केवल गीत गाब

३६७. दरभंगा आयोजन “नव अध्याय” किएक कहल गेल?

- (A) सगर राति अवसर पर पोथीक लोकार्पण शुरू भेल
- (B) कथा समाप्त
- (C) आयोजन विफल
- (D) भाषा बदली

३६८. पहिल लोकार्पित पोथी “सामाक पौतैं”क उल्लेख ककर संकेत अछि?

- (A) कथा आन्दोलन पुस्तक-संस्कृतिसँ जुड़ल
- (B) गीत-संगीतक अन्त
- (C) पुस्तक-विरोध
- (D) पाक-विधि

३६९. प्रभास, जीवकान्त आ भीमनाथ झाक पत्रसभक उपयोग लेखमे किएक अछि?

- (A) आयोजनक लक्ष्य आ परिस्थिति प्रत्यक्ष स्रोतसँ स्पष्ट करबाक लेल
- (B) पत्र अप्रासंगिक
- (C) केवल सजावट
- (D) लेखक-सूची

३७०. प्रारम्भिक सगर राति आयोजनसभक संयुक्त उपलब्धि की अछि?

- (A) सगर राति कथा-पाठ, टीका-विश्लेषण, आयोजकीय शर्त आ पोथी-लोकार्पणक बहुआयामी मंच बनल
- (B) सगर राति केवल मनोरंजन
- (C) कथा संवाद नहि
- (D) पोथीक सम्बन्ध नहि

खण्ड ५४२ : विदेह-सदेह १ — सगर राति: विस्तार, सहभागी आ मतभेद

३७१. जनकपुर आयोजन विलम्बित भेलापर पटना मे चतुर्थ आयोजन कोना भेल?

- (A) दमनकान्त झाक आवास पर गोविन्द झाक संयोजकत्वमे
- (B) आयोजन बन्द
- (C) कथा-पाठ निषिद्ध
- (D) संगीत-सभा मात्र

३७२. उपेन्द्रनाथ झा “व्यास”क अध्यक्षता आ कथा-पाठ ककर प्रतीक अछि?

- (A) वरिष्ठ कथाकारक सक्रिय नेतृत्व
- (B) युवा-विरोध
- (C) कार्यक्रम रिक्त
- (D) केवल दर्शक भूमिका

३७३. प्रदीप बिहारी द्वारा बेगूसराय आयोजनक भार लेब कोन क्रम दिखबैत अछि?

- (A) एक आयोजन सँ दोसर आयोजनक जिम्मेदारी जन्म लैत अछि
- (B) कोनो अगिला क्रम नहि
- (C) कार्यक्रम समाप्त
- (D) आकस्मिक शून्यता

३७४. मुजफ्फरपुर, पटना, बेगूसराय, बनारस आदि स्थानक यात्रा-सूत्र ककर संकेत अछि?

- (A) मैथिली कथा-जगतक विस्तृत भौगोलिक नेटवर्क
- (B) संगठन विफल
- (C) कथा सीमित
- (D) केवल प्रशासनिक यात्रा

३७५. नेहरा मे प्रतिनिधि कथा-संग्रह प्रकाशित करबाक निर्णय किएक महत्वपूर्ण अछि?

- (A) पठित कथाकेँ लिखित दस्तावेज आ संकलनमे बदलबाक हेतु
- (B) कथा मिटेबाक
- (C) चर्चा रोकबाक
- (D) गीत संकलन

३७६. “श्वेतपत्र” प्रकाशनक उल्लेख ककर प्रमाण अछि?

- (A) सगर राति पाठमे सँ बीछल कथाक प्रतिनिधि संकलन बनल
- (B) कुनो कथा नहि
- (C) पत्र रिक्त
- (D) भोजन-पत्र

३७७. किछु सहभागी असम्बद्ध होइत गेलाह — कारणसभ की बताओल गेल?

- (A) अस्वास्थ्य, प्रतिक्रिया सँ आहत होयब, हतोत्साह, कार्यालयीय व्यस्तता
- (B) केवल धनाभाव
- (C) केवल यात्रा
- (D) कथा-पाठ निषेध

३७८. रमाकान्त मिश्रक प्रतिक्रिया-संदर्भ ककर खतरा देखबैत अछि?

- (A) कठोर आलोचना सँ साहित्यिक सम्बन्ध आ सहभागिता प्रभावित भऽ सकैत अछि
- (B) चर्चा असंभव नहि
- (C) सभ प्रसन्न
- (D) कथापाठ निष्क्रिय

३७९. “मास्टरी”क आतंककारी आ अनुत्पादक होयब ककर आलोचना अछि?

- (A) वरिष्ठ/नियामक आलोचना जँ नव आगन्तुक केँ दबा दे तकर
- (B) अध्यापनक समर्थन मात्र
- (C) समीक्षा-विरोध नहि
- (D) कथा-विरोध

३८०. सगर रातिक विस्तार आ मतभेदक पाठ की अछि?

- (A) सगर राति विस्तार पेलक, मुदा वृद्धि संग मतभेद, आलोचना-तनाव आ सहभागिता-संकट सेहो आयल
- (B) कुनो समस्या नहि
- (C) कार्यक्रम न बदल
- (D) लेख केवल प्रशंसा अछि

खण्ड ५४३ : विदेह-सदेह १ — सगर राति: रचनात्मक प्रभाव आ कथा-क्रान्ति

३८१. अप्रकाशित आ अपठित कथा पढ़बाक बाध्यता ककर कारणे महत्वपूर्ण अछि?

- (A) रचनात्मक सक्रियता बढ़बैत अछि
- (B) पुरान कथा दोहरबैत अछि
- (C) कथा रोकैत अछि
- (D) साहित्यकार निष्क्रिय बनबैत अछि

३८२. तत्कालिक प्रतिक्रिया सुनबाक व्यवस्था ककर अवसर दैत अछि?

- (A) शिल्प-सुधार, सहनशीलता आ रचनात्मक आत्मपरीक्षण
- (B) अहंकार मात्र
- (C) मौन
- (D) कथा-त्याग

३८३. कथासंख्या क्रमशः बढ़ैत गेल — ई की संकेत करैत अछि?

- (A) आन्दोलनक रचनात्मक आकर्षण बढ़ल
- (B) उत्साह घटल
- (C) कथा समाप्त
- (D) सहभागी न रहल

३८४. महिषीमे सर्वाधिक कथाकारक सहभागिता ककर प्रमाण अछि?

- (A) ग्रामांचल/स्थानीयता सहित आयोजनक व्यापक स्वीकार्यता
- (B) कथा-विरोध
- (C) सिर्फ शहर केन्द्र
- (D) आयोजन विफल

३८५. अधिकांश कथा-संग्रह सगर राति पर पढ़ल-चर्चित कथा सँ बनल कहलाक अर्थ की अछि?

- (A) मंच प्रकाशित साहित्यक जनक बनि रहल छल
- (B) कथा मंचहीन छल
- (C) संग्रह असंबद्ध
- (D) साहित्य समाप्त

३८६. श्यामानन्द ठाकुर प्रत्येक आयोजन लेल दू कथा लिखैत छथि — ई ककर प्रतीक अछि?

- (A) आयोजन लेखकक रचनात्मक अनुशासन बढ़बैत अछि
- (B) अनिच्छा
- (C) साहित्य-विराम
- (D) दर्शक-मात्र भूमिका

३८७. कवि सम्मेलन संग तुलना किएक आयल अछि?

- (A) मनोरंजनमुखी मंच बनाम रचनात्मक कथामुखी मंचक भेद देखाबय लेल
- (B) कवि सम्मेलन श्रेष्ठ बताबय
- (C) कथा हटाबय
- (D) गीत निषेध

३८८. विदाइक व्यवस्था नहि होयबाक बात ककर नैतिक अर्थ दैत अछि?

- (A) व्यावसायिकता सँ मुक्त मातृभाषा-प्रेमक सहभागिता
- (B) लेन-देनक अभाव दोष
- (C) अतिथि अनादर
- (D) भोजन नहि

३८९. सगर राति समानधर्मी कैं भैरात एकठाम रखि की उपलब्धि करैत अछि?

- (A) परिचय, अनुभव, विचार-आदानप्रदान आ भावात्मक सम्बद्धता बढ़बैत अछि
- (B) अलगाव
- (C) मौन
- (D) व्यवसाय

३९०. “शान्तिपूर्ण क्रान्ति” कथनक अर्थ की अछि?

- (A) मैथिली कथा लेखनमे निरन्तर, अहिंसक, रचनात्मक बदलाव आयल
- (B) राजनीतिक विद्रोह
- (C) हिंसक घटना
- (D) कथा-विनाश

खण्ड ५४४ : विदेह-सदेह १ — सगर राति: उपलब्धि, संकट आ अगिला पथ

३९१. दरभंगाक पहिल आयोजनमे दू पोथी आ स्वर्ण जयंतीमे छत्तीस पोथी लोकार्पणक तुलना की देखबैत अछि?

- (A) आन्दोलनक परिमाणात्मक विकास
- (B) विकास रुका
- (C) पुस्तक घटल
- (D) कथा समाप्त

३९२. दरभंगामे अमेरिकी नागरिक द्वारा मैथिली कथा पाठ ककर संकेत अछि?

- (A) मैथिली कथामंचक वैश्विक/परभाषी आकर्षण
- (B) मैथिली सीमित
- (C) विदेशी असम्बद्ध
- (D) कथा निषिद्ध

३९३. बोकारो, राँची, जमशेदपुर, देवघर, पूर्णिया आदि स्थानक सक्रियता की बतबैत अछि?

- (A) मैथिली कथा-आन्दोलन प्रवासी/क्षेत्रीय केन्द्रसभमे फैलल
- (B) केवल दरभंगा तक सीमित
- (C) कथा समाप्त
- (D) गाम नहि जुड़ल

३९४. मूल अवधारणासँ भिन्न प्रयोजन लेल सगर रातिक उपयोग पर चेतावनी किएक देल गेल?

- (A) लोकप्रियता दुरुपयोग होयबाक खतरा अछि
- (B) कुनो खतरा नहि
- (C) विस्तार असंभव
- (D) कथा अनावश्यक

३९५. सहरसा आयोजनक संदर्भमे “भेटघॉंट” आकर्षण सँ बाहरक साहित्यकार वंचित रहलाह — एकर अर्थ की अछि?

- (A) आयोजनमे साहित्यिक मिलन सेहो महत्वपूर्ण तत्व अछि
- (B) भेटघॉंट अनावश्यक
- (C) कथा-पाठ अकेला पर्याप्त सदिखन
- (D) बाहरी लेखक अप्रासंगिक

३९६. जीवकान्तक टिप्पणीमे सरकारी मान्यताक बाद भाषामे “राजरोग”क बात किएक आयल?

- (A) मान्यता बाद संस्थागत अहंकार, सुविधा-लालसा वा लेखकीय शिथिलता बढ़बाक भय
- (B) मान्यता सदिखन दोषहीन
- (C) भाषा रोगमुक्त
- (D) लेखन बढ़ल नहि

३९७. सगर राति मैथिलीकें राजरोगसँ मुक्त रखत, एहि विश्वासक आधार की अछि?

- (A) नियमित नव लेखन, खुला प्रतिक्रिया आ मातृभाषा-प्रेमक अभ्यास
- (B) सरकारी पद
- (C) पुरस्कार मात्र
- (D) भाषा-त्याग

३९८. साहित्य अकादेमी पुरस्कृत कथा-संग्रह “सरोकार”क कथासभ सगर रातिमे सुनल/चर्चित होयबाक उल्लेख ककर उपलब्धि अछि?

- (A) मंचीय आलोचना सँ मान्य पुस्तक तक पहुँचल रचना-प्रक्रिया
- (B) पुरस्कार असंबद्ध
- (C) सगर राति निष्फल
- (D) कथा पाठ नहि भेल

३९९. “इतिहास दोहराइत रहय” कामना ककरा लेल अछि?

- (A) मैथिली कथा-जागरणक निरन्तरता लेल
- (B) कार्यक्रम बन्द लेल
- (C) भाषा-विस्मृति लेल
- (D) कथा-त्याग लेल

४००. एहि बैचक अगिला स्रोत-पथ कोन अछि?

- (A) सगर राति लेखक बाद रामाश्रय झा “रामरंग”क संगीत-रचना/राग-विषयक खण्ड
- (B) अनाम कथा फेर
- (C) जानकी-नवमी फेर
- (D) प्रवास-कथा फेर

खण्ड ५४५ : विदेह-सदेह १ — रामाश्रय झा “रामरंग”: राग विद्यापति कल्याण

४०१. रामाश्रय झा “रामरंग”क परिचयमे हुनका कोन-कोन रूपमे चिन्हायल गेल अछि?

- (A) विद्वान, वाग्गेयकार, शिक्षक आ मंच-सम्पादक
- (B) कथा-नायक, पंजीकार, चित्रकार
- (C) राजनीतिज्ञ, सैनिक, व्यापारी
- (D) किसान, रसोइया, वैद्य

४०२. राग विद्यापति कल्याणक एकताल रचनामे स्थाईक मुख्य भाव की अछि?

- (A) विद्यापतिक गुणक स्तुति
- (B) बाढ़क आलोचना
- (C) विवाहक विवाद
- (D) पत्रकारिताक जोगार

४०३. एकताल रचनाक अन्तरामे विद्यापतिक कोन छवि उभरैत अछि?

- (A) मिथिला-कोकिल, कीर्ति-पताका आ शिव-भक्त
- (B) केवल योद्धा
- (C) केवल व्यापारी
- (D) केवल बालकवि

४०४. एकताल रचनाक संगीत-टिप्पणीमे कोन स्वर-व्यवस्था संकेतित अछि?

- (A) गंधार कोमल, मध्यम तीव्र, निषाद आ आन स्वर शुद्ध
- (B) सभ स्वर कोमल
- (C) केवल पंचम वर्जित
- (D) तालरहित गायन

४०५. राग विद्यापति कल्याणक त्रिताल रचनामे शिवक उगना-भेष ककर संकेत अछि?

- (A) विद्यापतिक भक्ति सँ शिवक चाकर रूप धारण करब
- (B) गणेशक वाहन
- (C) कोशीक बाढ़
- (D) पत्रकारिताक शिक्षा

४०६. “डमरु त्रिशूल बसहा बिसरि” पंक्ति विद्यापति-भक्ति केँ कोना रूपायित करैत अछि?

- (A) शिव अपन दिव्य चिह्न छोड़ि सेवक-रूपमे अबैत छथि
- (B) शिव युद्धमे जाइत छथि
- (C) शिव मौन रहैत छथि
- (D) शिवक उल्लेख नहि अछि

४०७. त्रिताल रचनाक अन्तरामे मिथिलाक ऊँच पागड़ीक उल्लेख किएक अछि?

- (A) विद्यापति मिथिलाक गौरव बढ़बैत छथि
- (B) मिथिलाक अपमान
- (C) संगीतक निषेध
- (D) भोजनक विधि

४०८. रामरंगक रचना-संरचना मे शब्द आ सरगम दुनू किएक साथ देल गेल अछि?

- (A) गीतकेँ पाठ आ गायन, दुनू रूपमे व्यवस्थित करबाक लेल
- (B) केवल सजावट लेल
- (C) प्रश्नोत्तरी बनाबय लेल
- (D) कथा रोकबाक लेल

४०९. विद्यापति कल्याण नामकरणक सांस्कृतिक अर्थ की अछि?

- (A) विद्यापतिक स्मृति केँ शास्त्रीय राग-रचनामे प्रतिष्ठित करब
- (B) विद्यापतिक उपेक्षा
- (C) केवल लोक-हास्य
- (D) राजनीतिक नारा

४१०. एहि खण्डक मुख्य मूल्यांकन की अछि?

- (A) रामरंग विद्यापति-भक्ति केँ शास्त्रीय संगीत-विन्यासमे रूपान्तरित करैत छथि
- (B) ओ केवल कथा लिखैत छथि
- (C) ओ पंजी-विवाद करैत छथि
- (D) ओ पत्रकारिता पाठ पढ़बैत छथि

खण्ड ५४६ : विदेह-सदेह १ — रामरंग: गणेश, मिथिला आ शिव-वन्दना

४११. “श्री गणेश जीक वन्दना” कोन राग आ तालमे देल गेल अछि?

- (A) राग बिलावल, त्रिताल, मध्य लय
- (B) राग तीरभुक्ति, झपताल
- (C) राग भूपाली, एकताल
- (D) राग विद्यापति कल्याण, झपताल

४१२. गणेश-वन्दनाक स्थाईमे गणेशक कोन रूप पुकारल गेल अछि?

- (A) विघ्नहरण गजबदन दयाकर रूप
- (B) बाढ़क नदी रूप
- (C) पत्रकार रूप
- (D) कथाकार रूप

४१३. गणेश-वन्दनाक अन्तरामे “अधम आयल रामरंग अहाँ शरण” कथन ककर भाव अछि?

- (A) भक्तक विनय आ शरणागति
- (B) अहंकार
- (C) राजनीतिक घोषणा
- (D) हास्य-व्यंग्य

४१४. मिथिलाक वन्दना कोन राग-तालसँ जुड़ल अछि?

- (A) राग तीरभुक्ति, झपताल
- (B) राग भैरवी, दादरा
- (C) राग बिलावल, एकताल
- (D) राग मेघ, कहरवा

४१५. मिथिला-वन्दनाक स्थाईमे किन नदीसभक उल्लेख अछि?

- (A) गंगा, बागमती आ कोशी
- (B) नर्मदा, ताप्ती, गोदावरी
- (C) कावेरी, कृष्णा, महानदी
- (D) सरयू, यमुना, चम्बल

४१६. मिथिला-वन्दनाक अन्तरामे जनक आ याज्ञवल्क्यक उल्लेख की सूचित करैत अछि?

- (A) मिथिलाक संत-विद्वान परम्परा
- (B) मिथिलाक व्यापार
- (C) मिथिलाक खनन
- (D) मिथिलाक सेना

४१७. शिव-वन्दना कोन राग आ तालमे अछि?

- (A) राग भूपाली, त्रिताल, मध्य लय
- (B) राग बिलावल, झपताल
- (C) राग तीरभुक्ती, एकताल
- (D) राग काफ़ी, दादरा

४१८. शिव-वन्दनाक भाव-विषय की अछि?

- (A) दुःख, चिन्ता, व्याधि आ असाध्य संकटक बीच शिवसँ करुण पुकार
- (B) विवाह-हास्य
- (C) मतदान-चुनाव
- (D) पत्रकारिता-जोगार

४१९. रामरंगक ई वन्दनासभ मिथिलाक धार्मिक-सांस्कृतिक स्वरूप कोना देखबैत अछि?

- (A) गणेश, मिथिला-भूमि आ शिवक संग पंचदेवोपासक भावभूमि केँ जोड़ैत अछि
- (B) केवल लौकिक मनोरंजन
- (C) धर्मक निषेध
- (D) असंबद्ध सूची

४२०. रामरंगक संगीतांश पढ़ैत प्रमुख सावधानी की चाही?

- (A) सरगम-संकेत केँ प्रश्नक यांत्रिक तथ्य नहि, भाव-संगीतक संरचना रूपमे पढ़ब
- (B) केवल अंक गिनब
- (C) स्रोत छोड़ब
- (D) तालकेँ कथा मानब

खण्ड ५४७ : विदेह-सदेह १ — रामलोचन ठाकुर: शिक्षा-व्यंग्य आ क्षणिका

४२१. रामलोचन ठाकुरक परिचयमे हुनका कोन साहित्यिक-सांस्कृतिक रूपसभ मे देखाओल गेल अछि?

- (A) वरिष्ठ कवि, रंगकर्मी, सम्पादक, समीक्षक आ भाषाई आन्दोलनक सहभागी
- (B) केवल व्यापारी
- (C) केवल पंजीकार
- (D) केवल डॉक्टर

४२२. “पास करबाक लेल” कविता कोन प्रसंगसँ आरम्भ होइत अछि?

- (A) उत्तर-पुस्तिका देखबाक बाद शिक्षिकासँ संवाद
- (B) बाढ़ राहत
- (C) कोबर-राति
- (D) गणेश-वन्दना

४२३. कविता मे बच्चाक अंग्रेजी अंक-अंतर पर प्रश्न किएक उठल अछि?

- (A) एक पत्रमे पचासी आ दोसरमे पचीस अंकक असंगति सोचबाक विषय अछि
- (B) क्योंकि बच्चा अनुपस्थित छल
- (C) क्योंकि परीक्षा नहि भेल
- (D) क्योंकि भाषा बदलि गेल

४२४. “संयुक्त परिवार सुखी परिवार” केँ गलती मानल जाएब कवितामे ककर आलोचना अछि?

- (A) पाठ्य-पुस्तकक आधुनिक संकुचित परिवार-दृष्टि
- (B) संयुक्त परिवारक उत्सव
- (C) व्याकरणक महिमा
- (D) गणितक प्रश्न

४२५. “बसुधैव कुटुम्बकम्”क संदर्भ कवितामे किएक महत्त्वपूर्ण अछि?

- (A) बच्चाक संस्कार व्यापक परिवार-बोधसँ बनल अछि
- (B) विद्यालय बंद अछि
- (C) काव्य हास्य मात्र
- (D) संगीतक राग अछि

४२६. “पास करबाक लेल उएह सिखए पड़ैतैक” कथनक निहितार्थ की अछि?

- (A) शिक्षा प्रणाली पास करबाक नाम पर संस्कार-विरुद्ध पाठ थोपैत अछि
- (B) स्वतंत्र विचारक सम्मान
- (C) गुरुकुलक स्तुति
- (D) खेलक नियम

४२७. रामलोचन ठाकुरक हाइकू-क्षणिका मे “भोजक पान / सासुरक सम्मान / पुनिमाक चान” कोन भाव बनबैत अछि?

- (A) लोक-संबंध, आतिथ्य आ पूर्णिमा-जकाँ उजासक संक्षिप्त बिम्ब
- (B) राजनीतिक क्रोध
- (C) बाढ़क विभीषिका
- (D) पत्रकारिता-जोगार

४२८. “दूरक चास / गामक कात बास / कोन विश्वास” क्षणिका की सूचित करैत अछि?

- (A) दूरी, स्वामित्व आ भरोसाक अनिश्चितता
- (B) पूर्ण निश्चय
- (C) भोजन-विधि
- (D) विवाहक गीत

४२९. रामलोचनक क्षणिकासभमे व्यंग्य आ लोक-छवि कोना साथ चलैत अछि?

- (A) छोट बिम्बमे सामाजिक कटाक्ष आ लोक-उदाहरण आबैत अछि
- (B) लम्बा आख्यान मात्र
- (C) कोनो अर्थ नहि
- (D) केवल पुराण

४३०. रामलोचन ठाकुरक शिक्षा-व्यंग्य आ क्षणिकाक समेकित अर्थ की अछि?

- (A) रामलोचन ठाकुर शिक्षा-संस्कृति आ लोकानुभव पर तीक्ष्ण, संक्षिप्त आ व्यंग्यपूर्ण दृष्टि रखैत छथि
- (B) ओ केवल भक्तिगीत लिखैत छथि
- (C) ओ केवल पाक-विधि दैत छथि
- (D) ओ केवल पंजीकार छथि

खण्ड ५४८ : विदेह-सदेह १ — राम नारायण देव: मधेशी हुँकार आ मिथिला राज्य

४३१. राम नारायण देवक कविता “उठल मधेशी कयल हुँकार”क केंद्रीय मांग की अछि?

- (A) अधिकार आ मिथिला राज्यक मांग
- (B) केवल पाक-पद्धति
- (C) व्यक्तिगत प्रेम
- (D) गणेश-वंदना

४३२. “अप्पन भाषा, अप्पन संस्कृति” पंक्ति कविता मे ककर घोषणा अछि?

- (A) सांस्कृतिक स्वायत्तता आ पहिचानक
- (B) भाषा-विस्मृति
- (C) संगीत-ताल
- (D) शिक्षा-व्यंग्य

४३३. “अप्पन अर्थनीति, अप्पन राजनीति” कथन कोन व्यापकता जोड़ैत अछि?

- (A) सांस्कृतिक मागसँ आगे आर्थिक-राजनीतिक स्वनिर्णय
- (B) केवल लोकगीत
- (C) केवल विवाह
- (D) केवल बाल-कविता

४३४. कविता मे राजतंत्रक अवसान आ लोकतंत्रक बरदानक उल्लेख कोन परिप्रेक्ष्य दैत अछि?

- (A) नेपालक राजनीतिक परिवर्तनक पृष्ठभूमि
- (B) विद्यालयी परीक्षा
- (C) मधुश्रावनी गीत
- (D) कौटुम्बिक कथा

४३५. “राज्यक पुनर्संरचना”क मांग कविता मे किएक अछि?

- (A) समावेशी लोकतंत्र आ समानुपातिक कल्पना लेल
- (B) व्यक्तिगत पद लेल
- (C) भोजन-वितरण लेल
- (D) गजल रचना लेल

४३६. “शिक्षित बेरोजगार” पंक्ति सामाजिक प्रश्न कोना जोड़ैत अछि?

- (A) राजनीतिक अधिकारक संग रोजगार आ विकासक चिंता जोड़ैत अछि
- (B) सिर्फ प्रेम-व्यथा
- (C) सिर्फ पूजा
- (D) सिर्फ परीक्षा

४३७. “छोड़ू आपसी मेल, करु विकासक मात्र खेल” पंक्ति कोना बुझल जा सकैत अछि?

- (A) आन्तरिक झगड़ा छोड़ि विकासपर केन्द्रित होबाक आग्रह
- (B) मेल-जोलक विरोध मात्र
- (C) विकासक निषेध
- (D) गीतक ताल

४३८. “उखाड़ि फेकू राजाक ताज” पंक्ति कोन क्रांतिकारी भाव दैत अछि?

- (A) सामंती सत्ता-विरोध आ गणतांत्रिक आकांक्षा
- (B) राजतंत्रक समर्थन
- (C) शांत विराम
- (D) घर-परिवारक वर्णन

४३९. कविताक दोहरायल “जन-जनकेँ एके आवाज” ककर काव्य-प्रभाव बनबैत अछि?

- (A) सामूहिक नारा आ आंदोलनकारी लय
- (B) निजी फुसफुसाहट
- (C) भोजनक सूची
- (D) गीत-विराम

४४०. राम नारायण देवक आंदोलनकारी कविताक समेकित पाठ की अछि?

- (A) कविता मधेशी अधिकार, मिथिला राज्य, भाषा-संस्कृति, लोकतंत्र आ विकासक आंदोलनकारी पाठ अछि
- (B) कविता केवल हास्य
- (C) कविता केवल प्रकृति
- (D) कविता निरर्थक नारा

खण्ड ५४९ : विदेह-सदेह १ — रत्नेश्वर मिश्र: मोदानन्द झा परिचय आ पंजी-परम्परा

४४१. प्रोफेसर रत्नेश्वर मिश्रक लेख मे मोदानन्द झा केँ कोन रूपमे स्थापित कएल गेल अछि?

- (A) मिथिला-विभूति आ अत्यन्त सम्मानित पंजीकार
- (B) केवल कवि
- (C) केवल बाल-लेखक
- (D) केवल पत्रकार

४४२. मोदानन्द झाक आधुनिकता आ पारम्परिकता विषयक वर्णन कोना अछि?

- (A) आधुनिक कसौटीपर अनुदार, पारम्परिक कसौटीपर उदार
- (B) पूर्ण आधुनिक व्यापारी
- (C) परम्पराविरोधी मात्र
- (D) संगीतकार मात्र

४४३. पंजीशास्त्रसँ जुड़ल जिज्ञासा पर मोदानन्द झाक व्यवहार कोन छल?

- (A) सदैव समाधान लेल तत्पर
- (B) प्रश्न टारि देब
- (C) ज्ञान छिपायब मात्र
- (D) अध्ययन छोड़ि देब

४४४. मोदानन्द झा कोन पारिवारिक आधारसँ आबैत छलाह?

- (A) पूर्णिया जिलाक पंजीकार परिवार
- (B) नाट्य-परिवार
- (C) व्यापारी परिवार
- (D) सैनिक परिवार

४४५. रसाढ़ आ शिवनगरक उल्लेख मोदानन्द झाक जीवनमे किएक अछि?

- (A) रसाढ़ मूल निवास आ बादमे शिवनगरमे बसोबासक सूचना लेल
- (B) युद्धस्थल लेल
- (C) विद्यालयक नाम लेल
- (D) नदी-तट लेल

४४६. मोदानन्द झाक पिता भिखिया झाक विषयमे की कहल गेल अछि?

- (A) पंजीकारी करैत छलाह, मुदा नीक कृषक सेहो रहथि
- (B) रंगमंचक अभिनेता
- (C) पत्रकार
- (D) गायक

४४७. बाल्यावस्थामे मोदानन्द झा ककर विशेष स्नेह पेलनि?

- (A) माता-पिता, काका-काकी आ कुटुम्बक प्रचुर स्नेह
- (B) केवल गुरु
- (C) केवल राजा
- (D) कोनो स्नेह नहि

४४८. पूर्णिया क्षेत्रक मलेरिया-कालाजार प्रसंग ककर संकेत अछि?

- (A) बाल्यावस्थाक बीमारी आ अंचलक कठिन स्वास्थ्य-परिस्थिति
- (B) संगीत-राग
- (C) मंच-आयोजन
- (D) विद्यालय परीक्षा

४४९. कलकत्तासँ डॉक्टर मँगाओल जेबाक प्रसंग ककर द्योतक अछि?

- (A) मातृ-चिन्ता, आर्थिक क्षमता आ पुत्र-रक्षा लेल चरम प्रयास
- (B) साधारण उपेक्षा
- (C) राजनीतिक सभा
- (D) कथा-पाठ

४५०. मोदानन्द झाक आरम्भिक जीवन-चित्रक निष्कर्ष की अछि?

- (A) मोदानन्द झाक पंजीकार-व्यक्तित्व पारिवारिक परम्परा, कठोर अध्ययन आ सामाजिक विश्वाससँ बनल
- (B) ओ आकस्मिक कवि मात्र छलाह
- (C) ओ पंजीसँ असंबद्ध
- (D) ओ केवल खेतिहर

खण्ड ५५० : विदेह-सदेह १ — मोदानन्द झा: सौराठ शिक्षा, धौत परीक्षा आ प्रतिष्ठा

४५१. दस वर्षक अल्पायुमे मोदानन्द झा केँ कतय पठाओल गेल?

- (A) सौराठमे विद्याध्ययन लेल
- (B) दिल्ली पत्रकारिता लेल
- (C) गोवा सम्मेलन लेल
- (D) जनकपुर रंगमंच लेल

४५२. सौराठमे हुनक गुरु आ आश्रयदाता के रहथि?

- (A) पं. विश्वनाथ प्रसिद्ध निरसू झा
- (B) रामरंग झा
- (C) शैलेन्द्र मोहन झा
- (D) संतोष मिश्र

४५३. पंजीशास्त्रक अध्ययन लेल सामान्यतः कतेक काल उचित मानल गेल छल?

- (A) पन्द्रह वर्षक कालावधि
- (B) दू दिन
- (C) एक मास
- (D) सत्तर वर्ष

४५४. मोदानन्द झा कतेक समयमे निष्णात भेलाह?

- (A) दस-एगारह वर्षमे गुरु-कृपासँ
- (B) पचास वर्षमे
- (C) एक रातिमे
- (D) कहियो नहि

४५५. ओ बादो सौराठसँ कोना जुड़ल रहलाह?

- (A) वार्षिक वैवाहिक सभाक अवसरपर आजीवन अबैत-जाइत रहलाह
- (B) सौराठ छोड़ि पूर्णतः असंबद्ध
- (C) कहियो न गेलाह
- (D) केवल पर्यटन लेल

४५६. धौत परीक्षामे १९४० मे मोदानन्द झाक उपलब्धि की छल?

- (A) सर्वोच्च स्थान प्राप्त कयलनि
- (B) असफल भेलाह
- (C) भाग नहि लेलनि
- (D) केवल दर्शक रहलाह

४५७. धौत परीक्षामे सर्वोच्च घोषित भेलाक बाद हुनका की विशेष सम्मान भेटल?

- (A) धोतीक संग दोशाला
- (B) केवल पुस्तक
- (C) केवल भोजन
- (D) कोनो सम्मान नहि

४५८. धौत परीक्षाक पारम्परिक महत्त्व की छल?

- (A) उत्तीर्ण होयब बड़ सम्मान, सर्वोच्चता अनुपम मानल जाइत छल
- (B) सामान्य खेल
- (C) भोजन विधि
- (D) बालकविता

४५९. निरसू झाक निधन बाद मोदानन्द झाक भूमिका की रहल?

- (A) गुरुक ऋण अदाय करबाक भावसँ सौराठमे सेवा आ निर्णय-लेखन
- (B) गुरु-परम्परा छोड़ब
- (C) संगीत गायब
- (D) पत्रकारिता पढ़ाबय

४६०. कालीकादत्त झा मोदानन्द बाबू प्रति कोन भाव रखैत छथि?

- (A) गुरु रूपेँ श्रद्धा
- (B) प्रतिद्वन्द्वी रूपेँ घृणा
- (C) अजनबी भाव
- (D) बाल-मित्र मात्र

खण्ड ५५१ : विदेह-सदेह १ — मोदानन्द झा: शोध-दृष्टि आ पंजी-परियोजना

४६१. मोदानन्द बाबूक कमाइबिषयक दृष्टि की छल?

- (A) पंजीकारी, सिद्धान्त-लेखन, विदाइ आ खेत-पथारसँ संतोषजनक आय होइत छल
- (B) केवल दानपर निर्भर
- (C) कोनो आय नहि
- (D) केवल राजकोष

४६२. कमाइसँ बेसी हुनकर अभिरुचि कतय छल?

- (A) ज्ञान-विस्तार आ पंजी-संबंधी शोधमे
- (B) नाच-गानमे मात्र
- (C) व्यापारमे
- (D) राजनीतिक पदमे

४६३. डॉ. रमानाथ झाक संग मोदानन्द झा कोन काज दिस प्रवृत्त भेलाह?

- (A) विभिन्न मूलक प्रसिद्ध व्यक्ति, विद्वान आ राजवंशक वंश-परिचय तैयार करब
- (B) बालगीत संग्रह
- (C) बूथ कब्जा
- (D) मीडिया संस्थान

४६४. बनेली राजवंशक परिचयात्मक पुस्तकक नाम की देल गेल अछि?

- (A) अलयी कुल प्रकाश
- (B) सगर राति दीप
- (C) पास करबाक लेल
- (D) जोगार

४६५. विशिष्ट गाममे बसनिहार मैथिल ब्राह्मणक बीजी पुरुष धरि परिचय तैयार करबाक परियोजना ककर संकेत अछि?

- (A) ग्राम-वंशावलीक गहन सामाजिक इतिहास-लेखन
- (B) केवल गीत-लेखन
- (C) विद्यालयी परीक्षा
- (D) विवाह-हास्य

४६६. कोइलख गामसँ जुड़ल रचना किएक उल्लेखनीय अछि?

- (A) एहन ग्राम-परिचयात्मक परियोजनाक प्रथम प्रयास रूपमे
- (B) हाइकू-संग्रह
- (C) नाटक-रूपक
- (D) भोजन-पत्रक

४६७. दूषण-पंजीक विवरण प्रकाशित करबाक विषयमे आलोचना किएक भेल?

- (A) एहि विवरणमे परिवार-विशेषक अशोभनीय/अप्रकाश्य बात रहैत छल
- (B) क्योंकि भाषा कठिन छल
- (C) क्योंकि संगीत गलत
- (D) क्योंकि भोजन कम

४६८. पुरान पंजीकार परिवारक पांडुलिपि-संग्रह परियोजना किएक महत्त्वपूर्ण छल?

- (A) क्योंकि पंजी-पोथी नष्ट भऽ रहल छल आ पेशा चलाबयवाला नहियो रहथि
- (B) क्योंकि ओ सब नई किताब छल
- (C) क्योंकि संगीत-पत्र छल
- (D) क्योंकि खेलक नियम छल

४६९. पारिवारिक संपत्तिक प्रबंधन हुनक शोध-काज पर की असर देलक?

- (A) दरभंगा-संपर्क घटल आ समय पूर्णिया प्रबंधनमे लगल
- (B) शोध पूर्ण वेगसँ समाप्त
- (C) ओ विदेश गेलाह
- (D) काज असंबद्ध

४७०. मोदानन्द झाक शोध-दृष्टि सम्बन्धी खण्डक सार की अछि?

- (A) मोदानन्द झा पंजीकार मात्र नहि, पंजी-सूचना केँ सामाजिक इतिहासमे बदलय चाहनिहार शोध-दृष्टा छलाह
- (B) ओ शोध-विरोधी छलाह
- (C) ओ केवल कृषक छलाह
- (D) ओ स्रोत न बचाबय चाहैत छलाह

खण्ड ५५२ : विदेह-सदेह १ — मोदानन्द झा: जिज्ञासु-सहायता आ विद्वत्ता

४७१. लेखक केँ मोदानन्द झासँ प्रथम उल्लेखित लाभ कोन प्रसंगमे भेटल?

- (A) पूर्व मुख्यमंत्री विनोदानन्द झाक वंश-परिचय खोजबाक समय
- (B) बूथ कैप्चरिंगक समय
- (C) विवाह गीतक समय
- (D) गणेश-वन्दना समय

४७२. गिरिजानन्द झाक संग्रहक चर्चा किएक आयल?

- (A) गंगाक दक्षिण बसल मैथिल ब्राह्मण आ पंडासभक वंशावलीक सम्भावित स्रोत रूपमे
- (B) संगीत-ताल लेल
- (C) बाढ़ राहत लेल
- (D) कविता-पुरस्कार लेल

४७३. गिरिजानन्द झाक पंजी-पोथी व्यवस्थित नहि होएबाक भय की छल?

- (A) महत्त्वपूर्ण पूर्वज-सूचना लुप्त भऽ सकैत छल
- (B) गीत बदलि जाएत
- (C) भोजन खराब होएत
- (D) चुनाव हारि जाएत

४७४. दोसरा अवसरमे लेखक केँ कोन पुस्तकक समीक्षा लिखबाक छल?

- (A) प्रो. जगदीश चन्द्र झाक “माइग्रेसन एंड अचीवमेंट्स ऑफ मैथिल पंडित्स”
- (B) राजू आ टाकाक गाछ
- (C) भोर
- (D) बूथ कैचरिंग

४७५. तीन विद्वानक मूल ज्ञात नहि होएबाक समस्या पर मोदानन्द झाक प्रतिक्रिया की छल?

- (A) क्षणभर ध्यानस्थ भऽ क्रमशः मूल बतौलनि
- (B) उत्तर टारि देलनि
- (C) कहिलनि असंभव
- (D) विषय बदलि देलनि

४७६. गोकुलनाथ, पीताम्बर आ रघुनाथ पर मोदानन्द झाक सूचना की विशेष देखबैत अछि?

- (A) स्रोत-पुस्तकक तथ्य-संशोधन धरि हुनक ज्ञान पहुँचैत छल
- (B) ओ केवल नाम सुनलनि
- (C) ओ असहमति नहि रखलनि
- (D) ओ गीत गबैत रहलाह

४७७. धीरेन्द्र झा विषयक टिप्पणी हुनक पंजी-ज्ञानक कोन आयाम खोलैत अछि?

- (A) बंगालमे पंजी-सूचनाक संशोधन-संवर्द्धन आ जटिल सामाजिक पंजीकरणक ज्ञान
- (B) विद्यालयी अंकराजि
- (C) भोजनक स्वाद
- (D) बालगीतक ताल

४७८. मोदानन्द झाक विद्वत्ता “सहज सम्प्रेषणीयता”सँ जुड़ल किएक कहल गेल?

- (A) ओ जिज्ञासुकें सूचना सहजता सँ देइत छलाह
- (B) ओ मौन रहैत छलाह
- (C) ओ लिखैत नहि छलाह
- (D) ओ प्रश्न रोक्कैत छलाह

४७९. विभिन्न उदाहरणसभ लेखमे ककर प्रमाण बनैत अछि?

- (A) मोदानन्द झाक स्मृति, पंजी-प्रामाणिकता आ शोध-सहयोगक
- (B) हुनक संगीतक
- (C) हुनक पाक-कला
- (D) हुनक रंगमंचीय अभिनयक

४८०. मोदानन्द झाक जिज्ञासु-सहायता पर निष्कर्ष की अछि?

- (A) मोदानन्द झा पंजी-स्रोतक जीवित कोश जकाँ जिज्ञासु सभक मदति करैत छलाह
- (B) ओ सूचना रोकि रखैत छलाह
- (C) ओ पंजी नहि जनैत
- (D) ओ केवल कथा-पात्र छथि

खण्ड ५५३ : विदेह-सदेह १ — मोदानन्द झा: सम्मान, सुधार-चिन्ता आ विरासत

४८१. मोदानन्द झाक खान-पान आ छूआछूत-संबंधी व्यवहार कोना वर्णित अछि?

- (A) ओ सभक छुइल भोजन नहि करैत, प्रायः अपन पाक करैत छलाह
- (B) ओ सबसँ भोजन लैत
- (C) ओ पाक नहि करैत
- (D) ओ भोजन-विमुख छलाह

४८२. कपिलेश्वर मिश्रक हाथे पाक करबाक प्रसंग ककर संकेत अछि?

- (A) परिवारक गहन सम्मान आ विश्वासक
- (B) अपमानक
- (C) अपरिचयक
- (D) व्यापारक

४८३. बोधगाममे पएर पखारि चरणोदक लेबाक घटना की दर्शबैत अछि?

- (A) दूरस्थ मैथिल समाजमे पंजीकारक अतिशय आदर
- (B) सामान्य अतिथि-सूची
- (C) राजकीय दंड
- (D) शिक्षा-व्यंग्य

४८४. मोदानन्द बाबूक चिंतनमे प्रगतिशील पक्ष की कहल गेल?

- (A) पंजीकारक संस्थाकें जीवित बनाबय आ समाजकें दिशा देबाक इच्छा
- (B) पंजी समाप्त करबाक चाह
- (C) समाजसँ दूरी
- (D) ज्ञान छिपायब

४८५. ओ पंजीकारसभक आपसी द्वेषभाव पर की सोचैत छलाह?

- (A) ई हुनका नीक नहि लगैत छल
- (B) ओ ओकर समर्थन करैत छलाह
- (C) ओ तटस्थ नहि छलाह
- (D) ओ पंजीकार नहि छलाह

४८६. राजदरभंगा-नियंत्रित पंजी व्यवस्था संबंधी हुनक विचार की छल?

- (A) प्रजातंत्रीकरणक पक्षमे रहथि
- (B) पूर्ण राज-नियंत्रणक पक्षमे मात्र
- (C) पंजी-विनाशक पक्षमे
- (D) कोनो विचार नहि

४८७. जातीय स्तरोन्नयन पर मोदानन्द झाक दृष्टि की छल?

- (A) विहित रीति सँ नीक वैवाहिक सम्बन्ध करनिहार परिवारक स्तरोन्नयन सम्भव मानथि
- (B) कोनो परिवर्तन नहि
- (C) सभक अवनति
- (D) विवाह असंबद्ध

४८८. जमींदारी उन्मूलनक असर पंजी व्यवस्था पर कोना देखल गेल?

- (A) पंजीकारक स्थिति आ परम्परागत संरक्षणक क्षति भेल
- (B) पंजी व्यवस्था बहुत समृद्ध भेल
- (C) कोनो असर नहि
- (D) संगीत बन्द भेल

४८९. मोडानन्द झाक स्मृति-संरक्षण लेल लेखमे की वांछनीय कहल गेल?

- (A) शोध-परियोजना, पंजी-पांडुलिपि-संग्रह आ मूल-ग्राम अभिज्ञान पर काम
- (B) केवल मूर्ति-स्थापना
- (C) केवल भोज
- (D) स्रोत नष्ट करब

४९०. मोडानन्द झाक सम्मान आ विरासत पर समेकित सार की अछि?

- (A) मोडानन्द झाक विरासत पंजी-विद्वत्ता, सामाजिक सम्मान, सुधार-दृष्टि आ स्रोत-संरक्षणक आह्वानमे अछि
- (B) ओ केवल निजी पात्र
- (C) ओ सुधार-विरोधी
- (D) ओ अप्रासंगिक

खण्ड ५५४ : विदेह-सदेह १ — रेवतीरमण लाल: मधुश्रावनी आ डरक जनकपुर

४९१. “मधुश्रावनी” कवितामे ऋतु-परिदृश्य कोना रचल गेल अछि?

- (A) साओन, घन, मलय पवन, दामिनी आ जल-थलक बिम्बसँ
- (B) सूखा मरुभूमि
- (C) शीतकालक हिम
- (D) मंचीय अंधकार

४९२. “काँख फूलडालि मुस्कथि कामिनी” पंक्ति कोन उत्सवी भाव रचैत अछि?

- (A) स्त्री-सौंदर्य, पाबनि-सज्जा आ हर्षक दृश्य
- (B) भयमात्र
- (C) राजनीतिक क्रोध
- (D) विद्यालयी व्यंग्य

४९३. “विरही यक्षक नोर” रूपक वर्षाकेँ कोना बदलैत अछि?

- (A) मेघ-वर्षाकेँ विरहक भावनात्मक आँसू बना दैत अछि
- (B) वर्षा रोकैत अछि
- (C) बाढ़क आँकड़ा बनबैत अछि
- (D) ताल-संकेत बनबैत अछि

४९४. “रोशन जनकपुरी”क “डर लगैए” मे डरक पुनरावृत्ति की करैत अछि?

- (A) समकालीन सामाजिक-राजनीतिक भयक लय बनबैत अछि
- (B) उत्सवक हास्य
- (C) भोजनक सूची
- (D) निर्भयता मात्र

४९५. “कफन पहिरने लोक” आ “शहर बनल मरघट” बिम्ब ककर संकेत अछि?

- (A) समाजक मृत्यु-जैसी भयावह स्थिति
- (B) पूर्ण उल्लास
- (C) बाल-खेल
- (D) विवाह-सजावट

४९६. “हमरे बलपर पहुँचल अछि जे संसदमे” पंक्ति कोन आलोचना करैत अछि?

- (A) जनबलसँ उठल प्रतिनिधिक जनविरोधी दूरी
- (B) किसानक गीत
- (C) देवताक स्तुति
- (D) बालकविता

४९७. “घर घरमे अछि रोहित-कन्ना” बिम्ब ककर वातावरण बनबैत अछि?

- (A) घरेलू आ सामाजिक शोक-चिन्ता
- (B) दिवालीक उल्लास
- (C) विवाहक नाच
- (D) राग-वन्दना

४९८. “घेंटकटीसँ भरल अछि पन्ना” कथन कोन मीडिया/समय आलोचना करैत अछि?

- (A) समकालीन लेखन/समाचार हिंसा आ कटुता सँ भरल देखबैत अछि
- (B) कविता शांत अछि
- (C) पन्ना खाली अछि
- (D) केवल पाक-विधि अछि

४९९. अन्तिम आग्रह “डेग बढ़ैत आगूक डेगसँ” ककर दिशा दैत अछि?

- (A) डर-संस्कृति पार करि सामूहिक प्रगति
- (B) पीछे हटब
- (C) मौन रहब
- (D) कथा बन्द करब

५००. रेवतीरमण लालक मधुश्रावनी आ डर-विषयक कविताक सार की अछि?

- (A) रेवतीरमण लाल प्रकृति-पाबनि सौंदर्य आ सामाजिक भय, दुनू स्वर लिखैत छथि
- (B) ओ केवल हास्य लिखैत छथि
- (C) ओ केवल पंजी लिखैत छथि
- (D) ओ केवल संगीत लिखैत छथि

खण्ड ५५५ : विदेह-सदेह १ — रूपा धीरू: परिचय आ “अंगेजल काँट”

५०१. रूपा धीरूक परिचयमे हुनक रचनात्मक क्षेत्र कोन-कोन अछि?

- (A) कविता, अनुवाद, संगीत-संबंधी कृति, संपादन आ पाठ्य-पुस्तक सहयोग
- (B) केवल पंजीकारी
- (C) केवल खेती
- (D) केवल बूथ राजनीति

५०२. “कोइली कानए” आ “माटिसँ सिनेह” ककर रूपमे देल अछि?

- (A) प्रथम प्रकाशित रचना/कविता-संदर्भ
- (B) पत्रकारिता संस्थान
- (C) भोजन-विधि
- (D) राग-ताल

५०३. “नेहक वएन”, “भोर” आदि उल्लेख हुनक कोन पक्ष देखबैत अछि?

- (A) संगीत-संबंधी मैथिली कृतिसँ जुड़ाव
- (B) न्यायालय कार्य
- (C) बाढ़ सर्वेक्षण
- (D) विद्यालय परीक्षा

५०४. “अंगेजल काँट” कविता ककरा सम्बोधित करैत प्रतीत होइत अछि?

- (A) बिहिना/बहिनकें आत्मीय संवाद रूपमे
- (B) राजा कें
- (C) पत्रकार कें
- (D) पंजीकार कें

५०५. गुलाब आ काँटक रूपक कवितामे की अर्थ बनबैत अछि?

- (A) सुंदर जीवन-सपना संग दुख-चोट केँ स्वीकारब
- (B) केवल बागवानी
- (C) राजनीतिक झंडा
- (D) संगीतक स्वर

५०६. “छहोछित्त कऽ देबवला मर्मभेदी वाण” पंक्ति बहिनक कोन भूमिका देखबैत अछि?

- (A) कटु-सच पूछबवाली आत्मीय आलोचक
- (B) शत्रु
- (C) मौन दर्शक
- (D) गायिका मात्र

५०७. “ती-ती आ पंचगोटिया” स्मृति कवितामे किएक आयल अछि?

- (A) बचपनक खेल आ जीवनक हारक तुलना लेल
- (B) केवल खेल-नियम लेल
- (C) परीक्षा-सूची लेल
- (D) भोजनक नाम लेल

५०८. “जिनगी जीबाक खेलमे हम हारि गेल छी” कथन ककर भाव अछि?

- (A) आत्मस्वीकार, पीड़ा आ संघर्षक
- (B) पूर्ण विजय
- (C) सामान्य हास्य
- (D) भक्ति-वंदना

५०९. “मालिन जँ काँटकेँ नइ अंगेजतै...” पंक्ति कोन परिपक्वता दैत अछि?

- (A) पीड़ा स्वीकारल्यासँहि जीवनक सुगंध सम्भव अछि
- (B) काँट हटेबाक आदेश
- (C) गुलाबक निषेध
- (D) मौन अंत

५१०. रूपा धीरूक “अंगेजल काँट”क समेकित सार की अछि?

- (A) रूपा धीरूक कविता बहिन-संवादमे स्त्री-अनुभव, चोट आ स्वीकारक मार्मिक रूपक रचैत अछि
- (B) कविता केवल बालगीत
- (C) कविता केवल राजनीति
- (D) कविता केवल पंजीशास्त्र

खण्ड ५५६ : विदेह-सदेह १ — रूपेश कुमार झा “त्यौंथ”: बूथ कैचरिंग

५११. रूपेश कुमार झा “त्यौंथ”क परिचयमे हुनका कोना प्रस्तुत कएल गेल अछि?

- (A) कोलकातामे स्नातक-स्तरक विद्यार्थी आ साहित्यिक गतिविधिमे सक्रिय युवा
- (B) वरिष्ठ पंजीकार
- (C) राग-वाग्गेयकार
- (D) बाढ़ अधिकारी

५१२. “बूथ कैचरिंग” कवितामे वक्ता गाम किएक अबैत अछि?

- (A) मोनक बात मानि, अवकाश कठिन रहितहुँ गामवास करबाक लेल
- (B) राजा बनबाक लेल
- (C) पत्रकारिता पढ़बाक लेल
- (D) विवाह करबाक लेल

५१३. वक्ता गामक हवा केँ “बिगड़ल” किएक कहैत अछि?

- (A) चुनाव, स्वार्थ आ सामाजिक विकृतिसँ वातावरण खराब भेल अछि
- (B) प्रकृति सुंदर मात्र
- (C) गाम पूर्ण आदर्श
- (D) कुनो चुनाव नहि

५१४. ग्रामिणसभक आग्रह पर वक्ता की सोचैत अछि?

- (A) सेवाक अवसर मानि मुखियाक प्रतिनिधि बनबाक
- (B) घर छोड़ि भागब
- (C) कविता बंद करब
- (D) बालगीत गेबाक

५१५. चुनाव-प्रचारक बाद कविता मे कोन हिंसात्मक दृश्य उभरैत अछि?

- (A) मारामारी, लाठी-लठौवल, नोट बाँटि वोट पड़ब
- (B) पूर्ण शांति
- (C) केवल गीत
- (D) विवाहक रस्म

५१६. वक्ताक जमानत जप्त होएब ककर परिणाम अछि?

- (A) ईमानदार आदर्श बनाम धन-गुंडागर्दीक चुनावी हार
- (B) पूर्ण विजय
- (C) संगीत पुरस्कार
- (D) गुरु-दीक्षा

५१७. अन्तमे वक्ता पुनः चुनाव लड़बाक निर्णय कोना बदलल अछि?

- (A) अब गुंडा पोसि बूथ कैप्चरिंग करबाक संकल्प करैत अछि
- (B) और अधिक सेवा करब
- (C) चुनाव छोड़ब
- (D) संगीत सीखब

५१८. “उगि गेलैछ हमरो दू गोटे सिंग” पंक्ति कोन रूपान्तरण देखबैत अछि?

- (A) सज्जनता सँ हिंसक राजनीतिक सीख दिस झुकाव
- (B) देवत्व
- (C) बालपन
- (D) संगीतिक कौशल

५१९. कविताक शीर्षक “बूथ कैप्चरिंग” ककर प्रतीक बनैत अछि?

- (A) चुनावी लोकतंत्रक अपराधी कब्जा
- (B) विद्यालयी उत्तर-पुस्तिका
- (C) पाबनि-विधान
- (D) राग-वन्दना

५२०. रूपेश कुमार झाक “बूथ कैप्चरिंग”क समेकित सार की अछि?

- (A) कविता चुनावी भ्रष्टाचार देखबैत अछि जे आदर्शवादी ग्राम-सेवा केँ गुंडागर्दीमे धकेलैत अछि
- (B) कविता केवल प्रेमगीत
- (C) कविता बाढ़-वर्णन
- (D) कविता पंजी इतिहास

खण्ड ५५७ : विदेह-सदेह १ — सच्चिदानन्द यादव आ संतोष मिश्र: ठाढ़ होएब आ “एना किए?”

५२१. सच्चिदानन्द यादवक “आई हम ठाढ़ भेल छी”मे वक्ता कतय नहि ठाढ़ अछि?

- (A) चौबटियापर नहि, बल्कि जीवनक एक निर्णायक बाट पर
- (B) मंचपर मात्र
- (C) विद्यालयमे
- (D) नदीक घाटपर

५२२. कपड़ा-दोकानक पुतरासँ तुलना ककर प्रतीक अछि?

- (A) दर्शकक नजरमे वस्तु बनि ठाढ़ रहबाक अनुभव
- (B) स्वतंत्र उड़ान
- (C) कृषिकाज
- (D) राग-ताल

५२३. “बाट तऽ एक्केटा छै” कथन कोन तनाव रखैत अछि?

- (A) चयन सीमित, मुदा रोकबाक जिम्मेदारीक आग्रह
- (B) बहुत विकल्प
- (C) कोनो बाट नहि
- (D) पूर्ण भ्रमरहित सुख

५२४. संतोष मिश्रक “एना किए?” कविता कोन सम्बन्धक प्रश्न करैत अछि?

- (A) एक स्त्रीक सेवा, निकटता, डाँट, दूरी आ प्रेम-भावक जटिल सम्बन्ध
- (B) चुनावी हिंसा
- (C) बाढ़ राहत
- (D) पंजी शोध

५२५. कवितामे स्त्री घरक काज आ जरूरत पूरा करैत अछि — ई ककर संकेत अछि?

- (A) निकट घरेलू सहचर्य आ भावनात्मक निर्भरता
- (B) अजनबीपन
- (C) राजकीय आदेश
- (D) विद्यालयी पाठ

५२६. रात बिताबय, नोर बहाबय, डाँटब — एहि विरोधाभाससँ की बनैत अछि?

- (A) प्रेम, अधिकार, क्रोध आ देखभालक मिश्रित भाव
- (B) पूर्ण उदासीनता
- (C) केवल घृणा
- (D) कानूनी सूचना

५२७. “की ईहे त प्रेम नहि?” प्रश्नक भूमिका की अछि?

- (A) वक्ता अपन अनुभवक नाम खोजि रहल अछि
- (B) उत्तर निश्चित अछि
- (C) कविता बंद अछि
- (D) प्रेम असंभव

५२८. टोका-चाली बन्द भेलोपर आँखिक प्रेमगीत ककर बिम्ब अछि?

- (A) मौनमे व्यक्त होइत प्रेम आ विश्वास
- (B) पूर्ण अलगाव
- (C) राजनीतिक नारा
- (D) बूथ कब्जा

५२९. “जेना ओ हमरासँ चिनतीते नहि हुए” व्यवहारक पुनरागमन की देखबैत अछि?

- (A) संबंधमे रूठब-मनाबक चक्र आ अस्थिर निकटता
- (B) पूर्ण समाप्ति
- (C) राजकीय निर्णय
- (D) कथा का आरम्भ

५३०. सच्चिदानन्द यादव आ संतोष मिश्रक कविताक संयुक्त सार की अछि?

- (A) दू कवितामे ठाढ़ होएबाक अस्तित्व-बोध आ प्रेम-सम्बन्धक प्रश्नात्मक उलझन व्यक्त अछि
- (B) दून्तू केवल पाक-विधि
- (C) दून्तू पंजी-लेख
- (D) दून्तू संगीत-सरगम

खण्ड ५५८ : विदेह-सदेह १ — सतीश चन्द्र झा: शब्द, राति आ कविता

५३१. सतीश चन्द्र झाक परिचयमे हुनक शिक्षा आ कार्यक्षेत्र कोना अछि?

- (A) दर्शनशास्त्रमे एम.ए., व्याख्याता आ एन.जी.ओ. संचालनसँ जुड़ल
- (B) केवल गायक
- (C) केवल पंजीकार
- (D) केवल चिकित्सक

५३२. कविता मे शब्द कोन समय आ वातावरणमे आबैत अछि?

- (A) निन्न पड़ल निःशब्द रातिमे
- (B) दोपहरिया बाजारमे
- (C) राजनीतिक सभा मे
- (D) विवाह-मंडपमे

५३३. शब्दक “उदंड, उच्छृंखल” होयब ककर संकेत अछि?

- (A) कविताक आवेग नियंत्रित करब कठिन अछि
- (B) शब्द पूर्ण मौन
- (C) शब्द मृत
- (D) शब्द निष्प्रभ

५३४. कवि कान बन्द किएक नहि कऽ पबैत छथि?

- (A) हृदयक वेदना उतरि अबैत अछि
- (B) क्योंकि संगीत तेज अछि
- (C) क्योंकि विद्यालय अछि
- (D) क्योंकि चुनाव अछि

५३५. “शब्द शब्द के हाथ पकड़ने” पंक्ति कविता निर्माण कोना समझबैत अछि?

- (A) बिखरल शब्द आपस मे जुड़ि कविता बनैत अछि
- (B) शब्द भागि जाइत
- (C) कविता निषेध
- (D) केवल व्याकरण

५३६. “शब्दकें व्याकरणक ज्ञान बोध नहि” कथन ककर रक्षा करैत अछि?

- (A) स्वाभाविक, अबोध, अनगढ़ काव्य-ऊर्जाक
- (B) केवल शास्त्रीय नियम
- (C) निर्जीव लेखन
- (D) नकलक भाषा

५३७. शब्द नेना सन अबोध अछि — ई बिम्ब की करैत अछि?

- (A) कविताक नग्न, निष्कपट आ असुरक्षित प्रकृति देखबैत अछि
- (B) शब्दक छल
- (C) शब्दक अपराध
- (D) शब्दक व्यापार

५३८. शब्द कखन आगि आ कखन शीतलता जगा दैत अछि — एहि विरोधाभासक अर्थ की अछि?

- (A) कविता पीड़ा आ स्नेह दुनू उत्पन्न करैत अछि
- (B) कविता निष्क्रिय
- (C) शब्द अर्थहीन
- (D) केवल हास्य

५३९. “शब्द ब्रह्म अछि नहि अछि दोषी” पंक्ति कविक जिम्मेदारी कोना ठहरबैत अछि?

- (A) दोष शब्दक नहि, कवि-अज्ञानक होइ सकैत अछि
- (B) शब्द दोषी अछि
- (C) कवि निर्दोष सदैव
- (D) कविता असंभव

५४०. सतीश चन्द्र झाक शब्द-कविताक समेकित सार की अछि?

- (A) सतीश चन्द्र झा शब्दकें आध्यात्मिक, वेदनात्मक आ स्वतः-कविता बनयवाली शक्ति मानैत छथि
- (B) कविता केवल राजनीति
- (C) कविता केवल पाबनि
- (D) कविता केवल हँसी-मजाक

खण्ड ५५९ : विदेह-सदेह १ — शैलेन्द्र मोहन झा: “चलला मुरारी छौरी फँसबय”

५४१. शैलेन्द्र मोहन झाक परिचयमे गोनू झाक गाम भरवारा किएक उल्लेखित अछि?

- (A) हास्य-परम्परासँ आत्मीय जुड़ाव बताबय लेल
- (B) पंजीकार कुल लेल
- (C) राग-ताल लेल
- (D) बाढ़-क्षेत्र लेल

५४२. “चलला मुरारी छौरी फँसबय”क आरम्भ कोन मित्र-चुनौतीसँ होइत अछि?

- (A) गलफ्रेंड नहि होएब पर मित्रसभक चुटकी
- (B) चुनाव लड़बाक आग्रह
- (C) पंजी सीखबाक आग्रह
- (D) भजन गेबाक आग्रह

५४३. वक्ता आरम्भमे प्रेम-प्रसंगसँ किएक बचैत छथि?

- (A) ओ भारतमे पढ़य-लिखयक समय मानैत आ छौरीसँ डरैत छथि
- (B) ओ विवाहित छथि
- (C) ओ राजा छथि
- (D) ओ डॉक्टर छथि

५४४. कृष्ण-कन्हैया सँ प्रार्थना ककरा व्यंग्यात्मक बनबैत अछि?

- (A) प्रेम-प्रयास कें भक्तिपूर्ण मनौतीक हास्यमे बदलैत अछि
- (B) गंभीर तपस्या मात्र
- (C) राजनीतिक भाषण
- (D) विज्ञान प्रयोग

५४५. आँखि मारला सँ छौरी पटतै सोचब ककर संकेत अछि?

- (A) अनुभवहीन, फिल्मी आ हास्यास्पद प्रेम-रणनीति
- (B) गंभीर दर्शन
- (C) सफल नीति
- (D) साहित्यिक पुरस्कार

५४६. आँखि मारलाक परिणाम की भेल?

- (A) छौरी पीटलक आ वक्ता पहिल सपथ खेलक
- (B) छौरी तुरन्त पटल
- (C) विवाह भऽ गेल
- (D) सभा भेल

५४७. दोसरा प्रयासमे वक्ता प्रशंसा-गीत किएक गबैत अछि?

- (A) बातचीत आ काव्यात्मक चापलूसीसँ छौरी पटेबाक कोशिश
- (B) चुनाव जीतबाक लेल
- (C) शिव-वंदना लेल
- (D) पंजी जाँच लेल

५४८. छौरीक थप्पड़ आ मोहल्ला जुटब कथानकमे की करैत अछि?

- (A) हास्यकें सार्वजनिक अपमानमे बदलैत अछि
- (B) पूर्ण प्रेम-सफलता
- (C) कथा समाप्ति बिना घटना
- (D) राजकीय सम्मान

५४९. अन्तमे “भूलि कऽ अंग्रेजी, हम मैथिल बनि जायब” कथनक व्यंग्य की अछि?

- (A) फैशनदार प्रेम-नकल छोड़ि अपनी सांस्कृतिक पहचानक ओर लौटब
- (B) मैथिली त्याग
- (C) अंग्रेजी विजय
- (D) प्रेम-सफलता

५५०. “चलला मुरारी छौरी फँसबय”क हास्य-सार की अछि?

- (A) कथा युवा-प्रेमक फिल्मी नकलबाजी पर मैथिली हास्य-व्यंग्यक चुटीला प्रहार अछि
- (B) कथा पंजीशास्त्र अछि
- (C) कथा बाढ़ रिपोर्ट
- (D) कथा शास्त्रीय राग

खण्ड ५६० : विदेह-सदेह १ — शैलेन्द्र मोहन झा: “सपना”

५५१. “सपना” कविता कोन स्थिति सँ आरम्भ होइत अछि?

- (A) दुपहरियामे सुतल वक्ता विवाहक सपना देखैत अछि
- (B) राति मतदान
- (C) विद्यालय परीक्षा
- (D) बाढ़ राहत

५५२. सपनामे किनियाँक छवि केहन कहल गेल?

- (A) चाँद-जकाँ सुन्दर
- (B) कुरूप
- (C) अनुपस्थित
- (D) राजनीतिक नेता

५५३. रजनी नामक स्वप्न-सुन्दरी वक्ताक मोनमे कोन स्थान पाबैत अछि?

- (A) हृदयक रानी बनि जाइत अछि
- (B) शत्रु बनि जाइत अछि
- (C) गुरु बनैत अछि
- (D) माता बनैत अछि

५५४. वक्ता किनियाँक रूपक तुलना किन लोकप्रिय अभिनेत्रीसभसँ करैत अछि?

- (A) ऐश्वर्या, जूही चावला, नीलम, वैजयंतीमाला आदि छविसँ
- (B) गोनू झा मात्र
- (C) विद्यापति मात्र
- (D) मोडानन्द झा मात्र

५५५. किनियाँ द्वारा वक्ताक रूप पर “ठीक-ठाक” टिप्पणी ककरा हास्यास्पद बनबैत अछि?

- (A) वक्ताक आत्म-मुग्धता पर हल्का व्यंग्य
- (B) वक्ताक देवत्व
- (C) पूर्ण प्रशंसा
- (D) चुनाव विजय

५५६. “केश किछु बेसी कम” टीका कोन आत्म-उपहास जोड़ैत अछि?

- (A) वक्ताक बाल-कमजोरी पर हास्य
- (B) राजनीतिक आलोचना
- (C) संगीत त्रुटि
- (D) पंजी तथ्य

५५७. दरभंगा घूमय आ उमा टाकीजक टिकट स्वप्नमे की रचैत अछि?

- (A) स्थानीय रोमांस आ सिनेमाई कल्पना
- (B) पंजी-सभा
- (C) बाढ़-शिविर
- (D) गुरु-दीक्षा

५५८. “ममता गाबय गीत”क उल्लेख ककर सांस्कृतिक संकेत अछि?

- (A) मैथिली सिनेमा-स्मृति आ स्थानीय लोकप्रियता
- (B) न्यायालय
- (C) धर्मशास्त्र
- (D) पाक-विधि

५५९. पिंटुआ द्वारा जगाएब कथाक हास्य-अंत कोना बनैत अछि?

- (A) संपूर्ण प्रेम-संसार दुपहरियाक सपनाहि सिद्ध भऽ जाइत अछि
- (B) विवाह सचमुच होइत अछि
- (C) कथा दुखान्त
- (D) चुनाव शुरू

५६०. शैलेन्द्र मोहन झाक “सपना”क समेकित सार की अछि?

- (A) “सपना” फिल्मी सौंदर्य, स्थानीय स्मृति आ आत्म-उपहाससँ बनल हलुक हास्य-कविता अछि
- (B) कविता गंभीर पंजी-लेख
- (C) कविता बाढ़ रिपोर्ट
- (D) कविता संगीत-संहिता

खण्ड ५६१ : विदेह-सदेह १ — शक्ति शेखर: “कखन बदलब हम”

५६१. “कखन बदलब हम” लेख/निबन्ध कोन आपदाक संदर्भमे आरम्भ होइत अछि?

- (A) बिहारमे आएल बाढ़क संदर्भमे
- (B) विद्यालय परीक्षा
- (C) प्रेम-सपना
- (D) राग-वन्दना

५६२. लेखक भगवानक “उपस्थिति” मिथिलांचलमे दर्ज करबाक बात किएक कटाक्ष रूपमे कहैत अछि?

- (A) लगभग हर साल बाढ़-संकट आबैत अछि, ताहि पर तिवक्त व्यंग्य अछि
- (B) दैवी उत्सव मात्र
- (C) सुखक वर्षा
- (D) भक्ति-गीत

५६३. लेखक अनुमानित बाढ़-पीड़ित संख्या कोना प्रस्तुत करैत अछि?

- (A) करीब पचास लाख लोक प्रभावित कहल गेल
- (B) केवल दस लोक
- (C) कोनो प्रभावित नहि
- (D) एक परिवार मात्र

५६४. जुलाई-अगस्तक मासक उल्लेख किएक अछि?

- (A) बिहारक लोक बाढ़-भय सँ आतंकित होइत छथि
- (B) फसल कटनी मात्र
- (C) सर्दी सुरू
- (D) परीक्षा काल

५६५. बाढ़ केँ आतंकवादीसँ बेसी भयावह कहबाक आशय की अछि?

- (A) ई बार-बार गाम, जमीन आ जीवन निगलैत अछि
- (B) बाढ़ सुखद अछि
- (C) आतंकक चर्चा नहि
- (D) कथा हास्य अछि

५६६. संबंधित विभाग पर लेखकक आरोप की अछि?

- (A) जानकारी रहितहुँ कारगर कदम नहि उठबैत अछि
- (B) बेसी तत्परता
- (C) पूर्ण पारदर्शिता
- (D) कोनो दायित्व नहि

५६७. बाढ़ राहत-अनुदान पर लेखकक मुख्य शंका की अछि?

- (A) पीड़ित धरि सहायता नहि पहुँचि, बीचमे लूट-घोटाला होय सकैत अछि
- (B) सब पीड़ित पूर्ण लाभान्वित
- (C) कोनो धन नहि
- (D) बाढ़ नहि आयल

५६८. प्रधानमंत्री द्वारा राष्ट्रीय आपदा घोषित कएलाक बादो लेखक किएक सन्तुष्ट नहि?

- (A) घोषणा पीड़ित लेल सांत्वना मात्र, पहुँच व्यवस्था अस्पष्ट अछि
- (B) घोषणा अस्वीकार
- (C) पीड़ित नहि
- (D) राजनीति समाप्त

५६९. बाढ़-राजनीति विषयमे लेखक की कहैत अछि?

- (A) नेता सभ दोषारोपण आ सीट-सुरक्षा मे लगैत छथि, पीड़ित पिसाइत छथि
- (B) नेता पूर्णतः निष्काम
- (C) राजनीति अनुपस्थित
- (D) सब समस्या हल

५७०. निबन्धक अन्तिम आग्रह की अछि?

- (A) एकजुट भऽ बाढ़-पीड़ितक मदति करब
- (B) दर्शक बने रहब
- (C) केवल दोष देब
- (D) भोजन-विधान

खण्ड ५६२ : विदेह-सदेह १ — शक्ति शेखर: “जोगार” आ मीडिया-व्यवस्था

५७१. “जोगार” लेख कोन आरम्भिक प्रसंगसँ शुरू होइत अछि?

- (A) इलेक्ट्रॉनिक चैनल, स्टिंग ऑपरेशन आ सत्य-दावा
- (B) मधुश्रावनी गीत
- (C) पंजी-सभागार
- (D) बालकविता

५७२. चैनल सभ स्वयंकेँ कोन नैतिक छवि सँ जोड़ि देखाबैत अछि?

- (A) राजा हरिश्चन्द्रक सत्य-नीति पर आधारित बतबैत अछि
- (B) रावणक नीति
- (C) कौरव सभा
- (D) पूर्ण मौन

५७३. “स्टिंग ऑपरेशन” लेखमे कोना वर्णित अछि?

- (A) सत्य उजागर करबाक हथकंडा रूपमे, मुदा मीडिया-प्रतिस्पर्धाक साधन सेहो
- (B) भोजन-विधि
- (C) राग-ताल
- (D) विवाह-गीत

५७४. “जोगार” शब्द लेखमे कोन क्षेत्रसँ विशेष जुड़ल अछि?

- (A) पत्रकारिता, विशेषतः इलेक्ट्रॉनिक मीडिया मे प्रवेश आ टिकबाक व्यवस्था
- (B) कृषि
- (C) पंजी-शास्त्र
- (D) मधुश्रावनी

५७५. युवा पत्रकारिता पढ़ाई पर लाखों खर्च किएक करैत छथि?

- (A) एक दिन मीडिया क्षेत्रमे नाम रौशन करबाक आशासँ
- (B) खेती सीखय
- (C) राग सीखय
- (D) पंजी लिखय

५७६. मीडिया संस्थान खोलि रोजगारक वादा करबाक असर साधारण तबका पर की देखाओल गेल?

- (A) साधारण वर्गक युवासभ लेल काम पाबय पहाड़ खोदनाजेकाँ कठिन भऽ जाइत अछि
- (B) सहज अवसर
- (C) पूर्ण समानता
- (D) काजक कमी नहि

५७७. लेखक बेरोजगारी पर चैनलसभक दोहरापन किएक देखैत छथि?

- (A) बेरोजगारी पर बात करैतहुँ अंदर जोगार-मंत्रसँ काज देल जाइत अछि
- (B) चैनल जोगार-विरोधी
- (C) रोजगार पूर्ण पारदर्शी
- (D) कोनो युवा नहि

५७८. पत्रकारिता क्षेत्रमे जोगारवालाक प्रतिशत बहुत ऊँच होएबाक कथन ककर संकेत अछि?

- (A) व्यवस्थागत पक्षपात आ संपर्क-राजक आलोचना
- (B) सही मेरिट प्रणाली
- (C) पूर्ण निष्पक्षता
- (D) भाषा-वंदना

५७९. “चौथा स्तम्भ जोगार पर टिकल” कथनक व्यंग्यार्थ की अछि?

- (A) लोकतांत्रिक निगरानी संस्थाहि भीतर अनौपचारिक सिफारिस-तंत्र मजबूत अछि
- (B) मीडिया पूर्ण शुद्ध
- (C) स्तम्भ पत्थरक
- (D) जोगार असंबद्ध

५८०. शक्ति शेखरक “जोगार” लेखक समेकित सार की अछि?

- (A) “जोगार” मीडिया-शिक्षा, भर्ती, संपर्क-तंत्र आ नैतिक दावे पर तीखा प्रश्न उठबैत अछि
- (B) लेख पाक-विधि
- (C) लेख प्रेमगीत
- (D) लेख केवल राग-संगीत

खण्ड ५६३ : विदेह-सदेह १ — डॉ. शुभंकुमार सिंह: परिचय आ “दूभि”क आरम्भ

५८१. डॉ. शुभंकुमार सिंहक जन्मस्थल कोन अंचलमे बताओल गेल अछि?

- (A) सहरसा जिलाक महिषी प्रखंडक लहुआर गाम
- (B) मधुबनीक भरवारा
- (C) सप्तरीक मयनाकडेरी
- (D) पूर्णियाक शिवनगर

५८२. हुनक उच्च शिक्षा मे कोन उपलब्धि उल्लेखित अछि?

- (A) एम.ए. मैथिलीमे स्वर्णपदक प्राप्त
- (B) केवल प्राथमिक शिक्षा
- (C) संगीत-दीक्षा
- (D) पत्रकारिता डिप्लोमा मात्र

५८३. पी-एच.डी.क विषय की बताओल गेल अछि?

- (A) मैथिली नाटकक सामाजिक विवर्तन
- (B) बूथ कैप्चरिंग
- (C) गणेश-वंदना
- (D) मधुश्रावनी पाबनि

५८४. वर्तमान कार्यक्षेत्र रूपमे हुनका कहाँ काज करैत कहल गेल अछि?

- (A) राष्ट्रीय अनुवाद मिशन, केन्द्रीय भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर मे शैक्षिक सलाहकार
- (B) पंजीकार कार्यालय
- (C) चैनल स्टूडियो
- (D) ग्राम पंचायत

५८५. “दूभि”क आरम्भ कोन स्मृति-स्थिति सँ होइत अछि?

- (A) गाम गेल लेखक साँझमे स्कूलक प्रांगणमे सुस्ताय चाहैत छथि
- (B) रातिक विवाह
- (C) बूथ कब्जा
- (D) गणेश पूजा

५८६. अप्रत्याशित स्वर “हे बाउ!” ककर प्रवेश करबैत अछि?

- (A) दूभि-रूपिणी स्त्रीक
- (B) राजनीतिज्ञक
- (C) गुरुक
- (D) बाढ़ अधिकारीक

५८७. दूभिक शरीरक हरित वर्ण की सूचित करैत अछि?

- (A) स्कूल हाता मे पसरल दूभिक प्रतीकात्मक देह
- (B) सोना
- (C) आगि
- (D) कागज

५८८. दूभिक दयनीय दशा मे गुटखा, सिगरेट, कागद, गोबर आदि ककर प्रतीक अछि?

- (A) विद्यालय परिसरक गंदगी, उपेक्षा आ छात्र-समाजक कुकर्म
- (B) आभूषण
- (C) पूजा-सामग्री
- (D) संगीत-वाद्य

५८९. दूभि लेखकसँ अपन दशा पत्र-पत्रिका मे छपबय किएक कहैत अछि?

- (A) उपेक्षित पर्यावरण/विद्यालय-जीवनक पीड़ा सार्वजनिक करबाक लेल
- (B) व्यक्तिगत यश लेल
- (C) भोजन माँगय लेल
- (D) विवाह करय लेल

५९०. डॉ. शुभंकुमार सिंहक “दूभि” आरम्भक समेकित सार की अछि?

- (A) “दूभि” प्रकृति/विद्यालय-परिसरक मानवीकृत करि सामाजिक गंदगी आ असंवेदनशीलता पर प्रश्न उठबैत अछि
- (B) कथा केवल प्रेम-सपना
- (C) कथा राग-संहिता
- (D) कथा चुनावी व्यंग्य मात्र

खण्ड ५६४ : विदेह-सदेह १ — विविध स्वर: संगीत, समाज, हास्य, मीडिया आ प्रकृति

५९१. रामरंग सँ शुभंकुमार सिंह धरि एहि स्रोत-खंडमे विधागत विविधता कोना देखाइत अछि?

- (A) संगीत-रचना, व्यंग्य, राजनीतिक कविता, पंजी-लेख, प्रेम/हास्य, मीडिया-आलोचना आ रूपक-कथा साथ अछि
- (B) केवल एकहि विधा
- (C) केवल पाक-विधि
- (D) केवल पंजी-सूची

५९२. संगीत-रचना आ शिक्षा-व्यंग्य साथ राखल गेलासँ पत्रिका-स्वरूपक कोन विशेषता देखाइत अछि?

- (A) उच्च शास्त्रीयता आ लोक-सामाजिक आलोचना एकहि मंचपर उपस्थित अछि
- (B) संगीतक निषेध
- (C) शिक्षा अप्रासंगिक
- (D) एकरूपता मात्र

५९३. मधेशी आंदोलन, बाढ़ आ मीडिया-जोगारक लेखसभक साझा सामाजिक धागा की अछि?

- (A) सत्ता, प्रतिनिधित्व, प्रशासन आ जनहितक प्रश्न
- (B) केवल निजी प्रेम
- (C) केवल भक्ति
- (D) केवल हास्य

५९४. मोडानन्द झा पर लेख एहि विविध खंडमे किएक विशिष्ट अछि?

- (A) ओ पंजी, वंश, शोध-स्रोत आ मिथिलाक सामाजिक इतिहासक अभिलेखीय आयाम दैत अछि
- (B) ओ केवल हास्य लिखैत छथि
- (C) ओ चुनाव प्रचार
- (D) ओ बालगीत

५९५. रूपा धीरू, संतोष मिश्र आ सतीश चन्द्र झाक रचनासभमे आन्तरिक भाव-संसार कोना देखाइत अछि?

- (A) पीड़ा, प्रेम, प्रश्न, शब्द आ आत्मस्वीकारक मार्फत
- (B) कोनो भाव नहि
- (C) केवल तथ्य-सूची
- (D) राजनीति मात्र

५९६. शैलेन्द्र मोहन झाक हास्य-कवितासभ एहि स्रोत-विस्तारमे की योगदान दैत अछि?

- (A) स्वयं-उपहास, युवा-कल्पना आ मैथिली हास्यक हलुक किंतु तीक्ष्ण स्वर
- (B) सर्वथा गंभीर इतिहास
- (C) पंजी-शोध
- (D) बाढ़ रिपोर्ट

५९७. “दूभि”क मानवीकरण संपूर्ण खंडक सामाजिक विवेकमे की जोड़ैत अछि?

- (A) पर्यावरण, विद्यालयी अनुशासन आ सार्वजनिक स्थानक उपेक्षा पर नैतिक दृष्टि
- (B) केवल प्रेम कथा
- (C) राजनीतिक नारा
- (D) राग-ताल

५९८. एहि बैचमे कविताक भाषा-संसारमे लोक, शास्त्र आ आधुनिकता कोना मिलैत अछि?

- (A) राग-संगीत, पाबनि, ग्राम्य-हास्य, मीडिया आ लोकतंत्र सभ एकत्र आबैत अछि
- (B) केवल संस्कृत
- (C) केवल अंग्रेजी
- (D) केवल मौन

५९९. एहि खंडक प्रश्न बनबैत समय मुख्य गुणवत्ता-सावधानी की रहल?

- (A) पृष्ठ-संख्या वा बाहरी अनुमान नहि, पाठक भाव, पात्र, विचार आ विधा पर प्रश्न
- (B) अनुमान जोड़ब
- (C) स्रोत छोड़ब
- (D) क्रमांक गिनब

६००. एहि २० खण्डक सामूहिक सार की अछि?

- (A) सादेह १ मे मैथिली समाजक संगीत, स्मृति, संघर्ष, हास्य, प्रेम, शोध आ जनचेतना समान रूपेँ सक्रिय अछि
- (B) केवल एक लेखकक जीवनी
- (C) केवल भोजन-संग्रह
- (D) केवल परीक्षा-पत्र

खण्ड ५६५ : विदेह-सदेह १ — “दूभिः” प्रतीक, देह आ पर्यावरण

६०१. “दूभिः” कथामे हरियर देहवाली नारीक पहिल प्रतीक-अर्थ की अछि?

- (A) ओ विद्यालयक मैदानमे पसरल दूभिक मानवीकृत रूप छथि।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

६०२. दूभिक माथपर गुटखा, सिगरेट, कागद आ मैला कियैक देखाओल गेल अछि?

- (A) विद्यालय परिसरक उपेक्षा आ विद्यार्थी-समाजक गंदगी देखेबाक लेल।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

६०३. दूभिक घावसभ कथामे कोन सामाजिक दोषक संकेत बनैत अछि?

- (A) लापरवाही, अस्वच्छता आ सार्वजनिक स्थानक हिंसक दुरुपयोगक।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

६०४. कथाकार दूभिसेँ भेंट कोन स्थानपर करैत छथि?

- (A) ओ विद्यालयक प्रांगणमे, जतय नेनपनमे पढ़ैत छलाह।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

६०५. दूभि अपन दयनीय दशा प्रकाशित करबय किएक चाहैत अछि?

- (A) ताकि समाज विद्यालय-परिसरक वास्तविक हालत देखय।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

६०६. दूभिक हरियर शरीरक अर्थ की अछि?

- (A) विद्यालय-मैदानमे जीवित, हरियर दूभिक प्रतीक।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

६०७. कथामे दूभिक “दुर्गन्ध” कोन संकेत दैत अछि?

- (A) परिसरक शारीरिक गंदगी संगे नैतिक सड़नक।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

६०८. दूभि कथामे पशु-प्रवेशक उल्लेख कियैक महत्वपूर्ण अछि?

- (A) ई बतबैत अछि जे विद्यालयक हाता अनुशासन आ संरक्षणसँ वंचित अछि।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

६०९. कथाक आरम्भमे स्त्रीक विचित्र देह-वर्णनक मुख्य प्रभाव की अछि?

- (A) पाठककें चौंका कऽ पर्यावरणीय-शैक्षिक संकट दिस नेब।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

६१०. “दूभि”मे कथाकारक जिज्ञासा कोन दिशामे बढ़ैत अछि?

- (A) ओ स्त्रीक देह-दशासँ विद्यालयक पतनक कारण बुझय चाहैत छथि।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

खण्ड ५६६ : विदेह-सदेह १ — “दूभि”: पुरान विद्यालय-स्मृति

६११. दूभि पुरान विद्यालयक प्रार्थना-स्मृति कियैक सुनबैत अछि?

- (A) पहिने विद्यालयमे अनुशासन, सामूहिकता आ संस्कार छल, से देखेबाक लेल।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

६१२. श्रीवास्तव मास्टर साहेबक प्रसंगक अर्थ की अछि?

- (A) पुरान शिक्षक अनुशासन आ सफाईक संस्कार दैत छलाह।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

६१३. पुरान नामसभ — हरेराम, युगलकिशोर, चंद्रकला आदि — कथामे कियैक आएल अछि?

- (A) नाममे सांस्कृतिक अर्थ आ आत्मीयता देखेबाक लेल।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

६१४. नेनासभक कबड्डी आ खो-खो खेलब दूभिक लेल की अनुभव छल?

- (A) ओ वात्सल्य अनुभव करैत छल, कारण गिरला पर बच्चा सभकें चोट कम लगैत छल।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

६१५. शनिचरक गुरु-चाउर प्रसंगक स्रोत-अर्थ की अछि?

- (A) विद्यालयी जीवनमे सामुदायिक खाद्य-स्मृति आ आत्मीय उत्सव छल।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

६१६. पुरान सांस्कृतिक कार्यक्रमसभक स्मरण कथामे की करैत अछि?

- (A) गीत, भक्ति आ सामूहिक अभ्यासक सांस्कृतिक स्तर देखबैत अछि।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

६१७. मोलवी मास्टरक प्रसंगक कार्य की अछि?

- (A) अनुशासनक हास्यपूर्ण मुदा गंभीर स्मृति उपस्थित करब।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

६१८. अन्त्याक्षरीक पुरान रूप ककरा महत्व दैत छल?

- (A) कविताक पंक्ति, कंठस्थ पाठ आ साहित्यिक स्मृतिकेँ।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

६१९. रविशंकरक बीड़ी प्रसंग कथामे कियैक अछि?

- (A) विद्यालयक अनुशासन आ दुर्व्यसन-विरोधक पुरान सतर्कता देखेबाक लेल।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

६२०. दूभिक अतीत-वर्णनक मूल भाव की अछि?

- (A) वर्तमान पतन बुझाबय लेल अतीतक स्वच्छ, संस्कारित रूपक तुलना।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

खण्ड ५६७ : विदेह-सदेह १ — “दूभि”: शिक्षक, गीत आ सांस्कृतिक अवनति

६२१. दूभि वर्तमान विद्यालयक भवन-सुविधा मानि किएक असंतुष्ट अछि?

- (A) भवन रहितहुँ शिक्षा, अनुशासन आ व्यवहारक स्थिति बिगड़ल अछि।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

६२२. चार कक्ष आ चारि सय विद्यार्थी सभक उल्लेखक अर्थ की अछि?

- (A) संरचना आ छात्रसंख्याक बीच असंतुलन देखेबाक लेल।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

६२३. शौचालय-मूत्रालयक वर्णन कथामे कोन प्रश्न उठबैत अछि?

- (A) सुविधाक नामपर कागजी व्यवस्था आ वास्तविक गंदगीक प्रश्न।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

६२४. कॉन्ट्रैक्ट शिक्षकक आलोचना कथामे ककर विरोध अछि?

- (A) बिना तैयारी नियुक्ति आ शिक्षाक गुणवत्ता-हासक।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

६२५. प्रार्थनामे अस्पष्ट उच्चारणक प्रसंग की बतबैत अछि?

- (A) विद्यार्थी-संस्कार आ भाषा-अभ्यासक गिरावट।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

६२६. फिल्मी गीतसभक प्रवेश कथामे कियैक आलोच्य अछि?

- (A) विद्यालयी सांस्कृतिक कार्यक्रमक अश्लील आ बाजारू दिशा देखेबाक लेल।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

६२७. मंजय मास्टरक “मायाराम” नामकरणक अर्थ की अछि?

- (A) सकारात्मक नैतिक व्याख्या देनिहार शिक्षकक उपहास।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

६२८. “दूभि”क अन्तमे नारीसभक कर्कश स्वर आ दूभिक गायब भेनाइ की करैत अछि?

- (A) कथा केँ यथार्थ आ भ्रमक बीच अनिश्चित बना दैत अछि।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

६२९. कथाकार “दूभि” शीर्षक कियैक चुनैत छथि?

- (A) कारण पूरा अनुभव विद्यालय-मैदानक दूभिक पीड़ा पर केन्द्रित अछि।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

६३०. “दूभि” कथाक समग्र केन्द्र की अछि?

- (A) विद्यालय, प्रकृति, भाषा-संस्कार आ सामाजिक उपेक्षाक संयुक्त आलोचना।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

खण्ड ५६८ : विदेह-सदेह १ — “जाग’ जाग’ महादेव”: धर्म आ विसंगति

६३१. “जाग’ जाग’ महादेव”क आरम्भमे मिथिलाक विशेषता कोन रूपमे कहल गेल अछि?

- (A) धर्म, शिक्षा, साहित्य आ संस्कृति लेल अनादिकालसँ विशिष्ट भूमि।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

६३२. लेखक वर्तमान सामाजिक परिस्थिति केँ कोना देखैत छथि?

- (A) भूख, भय, भ्रष्टाचार, राजनीतिक अपराध आ बेरोजगारीसँ भरल संकट।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

६३३. “धर्मक दोकान” रूपकक अर्थ की अछि?

- (A) लोकक बेचैनीकेँ उपयोग कऽ नयका धार्मिक कारोबारक फैलाव।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

६३४. महादेवकेँ “गुरु” बनएबाक प्रस्ताव कथामे कियैक व्यंग्यात्मक अछि?

- (A) एहि द्वारा सभ समस्या तुरन्त मिटबाक दावा पर कटाक्ष अछि।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

६३५. महादेवक साक्षात्कार कथामे कोन शैली बनेबैत अछि?

- (A) संवादात्मक व्यंग्य आ आत्मालोचनात्मक कथा-रूप।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

६३६. “मोन चंगा तँ कठौतमे गंगा” कथनक स्रोत-अर्थ की अछि?

- (A) श्रद्धा आ दृष्टिकोणक भीतरू परिवर्तनपर जोर।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

६३७. “सत्यं शिवं सुन्दरम्”क व्याख्या कथामे कोन बातसँ जुड़ैत अछि?

- (A) संस्कार, संस्कृति, लोकाचार, भाषा-साहित्य आ धर्माचरण बुझबाक आग्रहसँ।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

६३८. शिक्षित लोक बेसी मूर्ख बनैत अछि — एहि कथनक उद्देश्य की अछि?

- (A) ज्ञान आ व्यवहारक विरोधाभास देखेबाक लेल।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

६३९. पूजा आ “डील”क भेद कथामे कोना आएल अछि?

- (A) लोक भक्ति लेल नहि, लाभक सौदाक लेल देवता लग अबैत अछि।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

६४०. “जाग’ जाग’ महादेव”क मूल सामाजिक आलोचना की अछि?

- (A) धर्म, शिक्षा, राजनीति आ भाषा-संकटमे पसरल स्वार्थ आ पाखंड।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

खण्ड ५६९ : विदेह-सदेह १ — “जाग’ जाग’ महादेव”: डील आ मैथिली

६४१. बालकक महादेवसँ माँग कथामे ककर उदाहरण अछि?

- (A) मेहनत बिना परीक्षा पास करएबाक इच्छाक।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथक सार नहि।

६४२. नवयुवकक “मालबम” विवाह-माँग कोन प्रवृत्ति देखबैत अछि?

- (A) धर्मयात्राकेँ रोमानी स्वार्थसँ जोड़बाक प्रवृत्ति।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथक सार नहि।

६४३. दहेजक दानव हटेबाक युवतीक पुकार कोन वास्तविक पीड़ा दिस संकेत अछि?

- (A) रूप-गुण रहितहुँ विवाह न होयबाक सामाजिक बाधा।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथक सार नहि।

६४४. रोगग्रस्त प्रौढ़क प्रार्थना कथामे की खोलैत अछि?

- (A) अपन दुराचरणक परिणामसँ देवताक माध्यमे बचि जाएबाक चाह।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथक सार नहि।

६४५. बेरोजगारक लादेनसँ भेंट चाहब कोन संकेत अछि?

- (A) बेरोजगारीक हताशा आ हिंसक दिशामे भटकबाक भय।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथक सार नहि।

६४६. वृद्ध दम्पतीक प्रार्थना समाजक कोन त्रासदी देखबैत अछि?

- (A) संपन्न बेटा-पुतोहु रहितहुँ माता-पिताक बोझ बनि जेबाक पीड़ा।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथक सार नहि।

६४७. राजनेताक “सीट” आ धनक प्रसंग कोन व्यंग्य अछि?

- (A) सत्ताक सौदा, विधायकी खरीद आ लोकतंत्रक भ्रष्ट रूप।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथक सार नहि।

६४८. व्याख्याताक प्रार्थना शिक्षा-संस्थाक कोन रोग देखबैत अछि?

- (A) चोरी-जोगाइसँ बढ़ल करियर आ छात्र-राजनीतिक अवरोधक स्वार्थ।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथक सार नहि।

६४९. मैथिली भाषाक पुकार कथामे कोन तरहक छवि बनबैत अछि?

- (A) अपनहि घरमे उपेक्षित अबला भाषा, जे नवजागरण चाहैत अछि।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

६५०. कथा “जाग’ जाग’ महादेव”क अन्तिम पुकारक अर्थ की अछि?

- (A) महादेव संगे समाजकें सेहो जागबाक आह्वान।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

खण्ड ५७० : विदेह-सदेह १ — “आह्वान” आ “पसीझक काँट”

६५१. “आह्वान” कवितामे कवि किनका सम्बोधित करैत छथि?

- (A) भारतभूमिक नवयुवक-नवयुवती पीढ़ीकें।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

६५२. “आह्वान”मे भारतीय दशा कोना चित्रित अछि?

- (A) शोणित-रंजित, जखम-भरल, अमन-चैन लुटल मातृभूमि।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

६५३. “आह्वान”मे कश्मीरक स्मरण कोन विरोध रचैत अछि?

- (A) पावन, हरियर सौन्दर्यक स्थानपर गोली आ रक्तक वर्तमान।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

६५४. जाति-धर्मक उन्माद पर “आह्वान”क दृष्टि की अछि?

- (A) ई मानवताकें लड़बैत सत्ता-स्वार्थक साधन अछि।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

६५५. “पसीझक काँट”मे काँटबला झाड़ की प्रतीक बनैत अछि?

- (A) मानवीय सम्बन्ध रोकयबला बाधा आ संवेदनाहीन फैलाव।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

६५६. “पसीझक काँट”मे फूलक क्यारीक प्रश्न की सूचित करैत अछि?

- (A) स्नेह, मित्रता आ खुलापन लोप भए गेल।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

६५७. अशोक-साखू वृक्षक छवि कवितामे की करैत अछि?

- (A) ऊँचाइ सँ नीचे देखैत अलगाव आ अहंकारक संकेत।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

६५८. मोथा आँख भोकैत अछि — एहि बिम्बक अर्थ की अछि?

- (A) पीड़ा केवल पाँव धरि नहि, दृष्टि आ चेतना धरि पहुँचि गेल।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

६५९. नगरकें बोनमे बदलबाक भाव की अछि?

- (A) लोक खुला ठाममे सेहो मानवीय सम्पर्कसँ घृणा करए लागल।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

६६०. “आह्वान” आ “पसीझक काँट” संयुक्त रूपेँ की प्रश्न उठबैत अछि?

- (A) समाज, राष्ट्र आ मानवीय सम्बन्धक विघटनक प्रश्न।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

खण्ड ५७१ : विदेह-सदेह १ — शीतल झा: संघीय संरचनाक आधार

६६१. शीतल झाक अनुसार “राज्य”क आधारभूत अर्थ की अछि?

- (A) राजनीतिक भूक्षेत्र जे आर्थिक, प्रशासनिक अधिकारसँ युक्त हो।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

६६२. “संघ”क परिभाषामे मूल बात की अछि?

- (A) राज्यसभ मिलि केन्द्रीय सत्ता केँ अधिकार दैत अछि।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

६६३. नेपाल संघीय होयबाक एक कारण की कहल गेल अछि?

- (A) नेपाल बहुजाति, बहुभाषा, बहुसंस्कृति देश अछि।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

६६४. संघीय शासनमे प्राकृतिक सम्पदापर अधिकार कोना कल्पित अछि?

- (A) ओहि राज्यक जनता जल, जमीन, जंगल, खनिजक उपयोग करैत।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

६६५. भाषा-प्रयोगक दृष्टिसँ संघीय संरचनाक लाभ की कहल गेल अछि?

- (A) राज्यक प्रमुख भाषा प्रशासन आ न्यायमे स्वतंत्र रूपेँ चलि सकैत अछि।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

६६६. संघीय संरचनाक आधारसभमे कोन-कोन तत्व आएल अछि?

- (A) इतिहास, भूखंड, जातीय बहुलता, संस्कृति, भाषा आ प्राकृतिक सम्पदा।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

६६७. एकात्मक राज्य-व्यवस्थापर लेखकीय दृष्टि की अछि?

- (A) ओ पूर्णतः असफल भेल, तँ संघीय संरचना आवश्यक।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

६६८. संघीयता पृथकतावादक प्रश्नसँ कोना जोड़ल गेल अछि?

- (A) संघीयता पृथकतावादी प्रवृत्तिक स्थायी समाधान बनि सकैत अछि।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

६६९. लोकतांत्रिक समावेशनक लेल संघीयता कियैक महत्त्वपूर्ण अछि?

- (A) कारण सत्ता आ प्रशासनमे समानुपातिक प्रतिनिधित्वक बाट खुलैत अछि।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

६७०. शीतल झाक संघीय तर्कक मूल स्वर की अछि?

- (A) अधिकार, पहचान, स्थानीय संसाधन आ लोकतांत्रिक भागीदारीक पक्षधरता।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

खण्ड ५७२ : विदेह-सदेह १ — शीतल झा: राज्य-प्रस्ताव आ मिथिला

६७१. लेखमे नेपालक संघीय विभाजन लेल किन राज्यसभक उल्लेख अछि?

- (A) लिम्बुवान, किरांत, नेवा, तमुवान, थरुहट, अवध, भोजपुरी, मिथिला आदि।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

६७२. मिथिला राज्यक नामकरणमे कोन सावधानी सुझाओल गेल अछि?

- (A) नव तथ्यपूर्ण जनगणना आ सामूहिक निर्णयक आधार।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

६७३. मिथिला राज्यक पक्षमे पहिल तर्क की अछि?

- (A) मिथिला प्रागैतिहासिक आ पुराणवर्णित भूमि अछि।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

६७४. मिथिला आर्य संस्कृतिक संदर्भमे कोना वर्णित अछि?

- (A) आर्यजाति आ आर्य-संस्कृतिक निर्माण-भूमि रूपमे।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

६७५. मिथिलाक भूगोलक आधार कोन नदी-पर्वत सँ जोडल गेल अछि?

- (A) कोशी, गंडक, गंगा आ हिमालयक बीचक भूखंड।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

६७६. मिथिला गणराज्यक इतिहासक उल्लेख कियैक अछि?

- (A) राजनीतिक परंपरा आ सामूहिक पहचान प्रमाणित करबाक लेल।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

६७७. मिथिला राज्यसँ आर्थिक लाभक कोन अपेक्षा राखल गेल अछि?

- (A) उद्योग, कृषि, पर्यटन, जंगल, जल आदिसँ स्थानीय जनताक अधिकतम लाभ।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

६७८. मिथिला पावनि-तिहारपर छुट्टीक माँगक अर्थ की अछि?

- (A) सांस्कृतिक जीवनकें प्रशासनिक मान्यता देबाक आग्रह।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

६७९. मिथिलाक लोकगाथा, लोकनृत्य, लोककला आदिक रक्षा कियैक जरूरी कहल गेल?

- (A) सांस्कृतिक पहचान आ परंपरा संरक्षित राखबाक लेल।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

६८०. मिथिला राज्यक पक्षक समग्र तर्क की अछि?

- (A) इतिहास, भूगोल, भाषा, संस्कृति, अर्थव्यवस्था आ सामूहिक मनोभावना।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

खण्ड ५७३ : विदेह-सदेह १ — सीमा, मधेश आ गणतंत्र

६८१. प्राचीन मिथिलाक सीमा कोना बताओल गेल अछि?

- (A) उत्तरमे हिमालय, दक्षिणमे गंगा, पूरुमे कोशी, पश्चिममे गंडक।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथक सार नहि।

६८२. सुगौली सन्धिक बाद मिथिलाक स्थिति कोना वर्णित अछि?

- (A) मिथिला खंडित भेल, मुदा जीवित भूगोल-संस्कृति रहल।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथक सार नहि।

६८३. मधेश आ मिथिलाक सम्बन्ध लेखमे कोना देखाओल गेल अछि?

- (A) मधेश राजनीतिक दमनक साझा क्षेत्र, मिथिला सांस्कृतिक-जातीय आधार सहित आन्दोलनी केन्द्र।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथक सार नहि।

६८४. मधेश आन्दोलनक लक्ष्य कोन सत्ता-विरोधमे देखाओल गेल?

- (A) खस प्रभुत्ववादी सत्ता-विरोधी राजनीतिक आन्दोलन।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथक सार नहि।

६८५. मिथिला आन्दोलनक अन्तरवस्तु की कहल गेल अछि?

- (A) सांस्कृतिक, जातीय आ राजनीतिक अधिकारक संयुक्त स्वर।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथक सार नहि।

६८६. गणतंत्रक परिभाषामे मुख्य तत्व की अछि?

- (A) जन्माधारित विशेषाधिकार बिनु, जनप्रतिनिधि द्वारा राष्ट्र-प्रमुखक व्यवस्था।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथक सार नहि।

६८७. नेपाल गणतंत्रात्मक देश होयबाक तर्कमे राजतंत्र कोना चित्रित अछि?

- (A) निरंकुश, दमनकारी आ जनअधिकार-विरोधी व्यवस्था।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथक सार नहि।

६८८. एक देश-एक भाषा-एक भेष नीति पर लेखकीय दृष्टि की अछि?

- (A) ई निरंकुश एकात्मक सोचक रूप अछि।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथक सार नहि।

६८९. मिथिला मुक्ति लेल संघीय शासन कियैक शर्त कहल गेल?

- (A) राज्याधिकार आ स्थानीय पहचान बिना मुक्ति सम्भव नहि।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

६९०. सीमा, मधेश आ गणतंत्रक विमर्शक साझा उद्देश्य की अछि?

- (A) मिथिलाक अधिकारकें व्यापक लोकतांत्रिक पुनर्संरचनासँ जोड़ब।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

खण्ड ५७४ : विदेह-सदेह १ — संघीयता, वर्ग, जाति, जनजाति आ थारू

६९१. संघीय आन्दोलन वर्गीय आन्दोलनकें कमजोर करैत अछि — एहि धारणापर लेखकीय मत की अछि?

- (A) ई भ्रम अछि; अधिकार-आन्दोलन वर्गीय शोषणक रूप सेहो लैत अछि।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

६९२. मिथिला आन्दोलन वर्गीय कियैक कहल गेल अछि?

- (A) एक समृद्ध भाषा-संस्कृति आ समाज शोषण-दमनक शिकार अछि।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

६९३. जातीय आन्दोलनक दिशा ककरा पर निर्भर कहल गेल?

- (A) जातिक स्वरूप, इतिहास आ ओहि पर होइत शोषण-दमनक मात्रापर।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

६९४. मिथिलाक भीतरक छोटे-छोटे द्वन्द्व पर लेखकीय दृष्टि की अछि?

- (A) ओ मुख्य द्वन्द्वक समाधानमे बाधा बनल तँ राजनीतिक-वैचारिक आन्दोलनसँ हटाओल जा सकैत अछि।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

६९५. जनजाति सम्बन्धी भागमे मुख्य आग्रह की अछि?

- (A) जनजातिसभकें विश्वासमे लैत समानुपातिक अधिकार देब।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

६९६. थारू आन्दोलन सम्बन्धमे कोन सावधानी बताओल गेल?

- (A) थारू समुदायकें मधेश-विरोधी प्रयोगसँ बचा कऽ अधिकार-संघर्षसँ जोड़ब।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

६९७. थारू जातिक भाषा-संस्कृति पर लेखकीय कथन की अछि?

- (A) ओ अलग पहचान रखैत अछि, मुदा क्षेत्रक भाषासँ जुड़ल अछि।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

६९८. मधेशी आन्दोलनमे जनजातिक भूमिका कियैक आवश्यक अछि?

- (A) समान अधिकारक व्यापक मोर्चा बनेबाक लेल।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

६९९. संघीयता-वर्ग-जाति विमर्शक मूल उद्देश्य की अछि?

- (A) अलग-अलग अधिकार-संघर्षकें साझा लोकतांत्रिक आन्दोलनमे जोड़ब।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

७००. एहि खण्डमे मिथिला आन्दोलनक स्वरूप कोना उभरैत अछि?

- (A) भाषिक-सांस्कृतिक संग राजनीतिक, वर्गीय आ सामाजिक न्यायक आन्दोलन।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

खण्ड ५७५ : विदेह-सदेह १ — भारत-नेपाल मिथिला आ समावेशी राज्य

७०१. नेपालक मिथिला आ भारतक मिथिलाक सम्बन्ध कोना बताओल गेल?

- (A) राजनीतिक सीमा अलग, मुदा भाषा-संस्कृति-साहित्यक सम्बन्ध जीवित।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

७०२. दूनू देशक मिथिला आन्दोलनक सम्बन्ध कोन प्रकारक कहल गेल?

- (A) भावनात्मक आ नैतिक समर्थनक सम्बन्ध।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

७०३. आत्मनिर्णयक अधिकारक मूल मर्म की अछि?

- (A) राजनीतिक-प्रशासनिक निर्णय आ आर्थिक जीवन अपन शैलीमे चलाबयक अधिकार।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

७०४. मिथिला आ जातीय स्वायत्तता सम्बन्धी लेखकीय मत की अछि?

- (A) मिथिला सीमित स्वायत्तता नहि, पूर्ण राज्याधिकार चाहैत अछि।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

७०५. दलित आन्दोलन पर मिथिला राज्यक कर्तव्य की कहल गेल?

- (A) दलित मुक्ति आन्दोलनक समर्थन, सहयोग आ अगुवाई।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

७०६. राजनीतिक दलसभक कमजोरी कोना बताओल गेल?

- (A) संघीय संरचनापर स्पष्ट धारणा आ ईमानदार नीति बाहर नहि आएल।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

७०७. महिला आन्दोलन मिथिला आन्दोलनसँ कियैक जोड़ल गेल?

- (A) लोकतांत्रिक मिथिला राज्य निर्माणमे अधिकारसंपन्न महिलाक भूमिका आवश्यक।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

७०८. कथित पिछड़ा-आगे बढ़ल वर्गविमर्शमे मुख्य घोषणा की अछि?

- (A) मिथिला कोनो एक जाति, विशेषतः उच्च जातिक राज्य नहि।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

७०९. मानक मैथिली सम्बन्धमे लेखकीय सावधानी की अछि?

- (A) कोनो एक बोलीकें उच्चवर्गीय नियन्त्रणक आधारपर मानक मानब उचित नहि।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

७१०. समावेशी मिथिला राज्यक मूल आधार की अछि?

- (A) सभ जाति, भाषा, वर्ग, महिला, दलित, जनजाति आ बोलीक सम्मानित सहभागिता।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

खण्ड ५७६ : विदेह-सदेह १ — मिथिला राज्य: कार्यक्रम, बाधा आ निष्कर्ष

७११. मिथिला राज्य स्थापनाक नीतिगत कार्यक्रममे पहिल बल ककरा पर अछि?

- (A) राजतंत्र-विरोधी लोकतांत्रिक आ मानवाधिकारवादी शक्तिसँ मिलि संघर्ष।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

७१२. संघीय संरचना लेल कोन व्यापक एकता अपेक्षित अछि?

- (A) जाति, जनजाति, आदिवासी, दलित, पिछड़ा, अल्पसंख्यक आ मानवाधिकारवादी समूहसभसँ।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

७१३. मुक्त मधेश आ मिथिला राज्यक सम्बन्ध कायरदिशामे कोना अछि?

- (A) मुक्त मधेश बिना मिथिला राज्यक कल्पना अधूरी, संघीयता बिना मुक्त मधेश असम्भव।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

७१४. संघीय शासन देश खंडित करैत अछि — एहि भयक उत्तर की अछि?

- (A) संघीय शासन देशकेँ विखंडनसँ बचबैत अछि।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

७१५. मिथिला राज्य निर्माणक आन्तरिक बाधामे की प्रमुख कहल गेल?

- (A) राजनीतिक संगठन, एकीकृत सांस्कृतिक संगठन आ स्थापित नेतृत्वक अभाव।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

७१६. आन्दोलनक बौद्धिक नेतृत्वपर आलोचना की अछि?

- (A) स्वाभिमान कम, अहंकार बेसी; संयोजन कम, फुट बेसी।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

७१७. बाह्य बाधामे खस सत्ता सम्बन्धी कथन की अछि?

- (A) खस प्रभुत्ववादी सोच संघीयता-विरोधी अछि।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

७१८. हिन्दी-आसक्ति पर बाह्य बाधा कियैक कहल गेल?

- (A) मातृभाषा-प्रेमी समुदाय आ खसवादी दुनूकेँ संशय होइत अछि।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

७१९. निष्कर्षमे नेपालक स्थिति कोना देखाओल गेल?

- (A) अधिकार-प्राप्तिक नयका मोड़पर ठाढ़ समाज, जतय वंचित वर्ग आन्दोलनमे अछि।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

७२०. लेखकक अन्तिम आह्वान की अछि?

- (A) समाजक सभ वर्ग आन्दोलनमे भाग लऽ नैसर्गिक अधिकार स्थापित करू।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

खण्ड ५७७ : विदेह-सदेह १ — “जुम्मा”: अम्मी, भय आ नमाज

७२१. “जुम्मा” कथाक भावात्मक केन्द्र कोन सम्बन्ध अछि?

- (A) अम्मी आ पुत्रक प्रेम, डर आ धार्मिक स्मृति।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

७२२. अम्मीक फोन कथामे कियैक निर्णायक अछि?

- (A) मक्का मस्जिद विस्फोटक खबरि बाद पुत्रक सुरक्षा लेल भय प्रकट करैत अछि।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

७२३. नरेटरक मस्जिद न जाएबाक बात अम्मीक प्रतिक्रिया कियैक जटिल अछि?

- (A) धार्मिक कर्तव्यक आग्रह आ पुत्र-सुरक्षाक डर दुनू एकसंग अछि।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

७२४. हैदराबाद स्मृतिमे अम्मी कियैक भावुक भेल छलीह?

- (A) बेटाक पैघ नगरमे स्वतंत्र जीवन देखिकए।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

७२५. अम्मी पुत्रकें जुम्माक नमाज लेल कियैक प्रेरित करैत छलीह?

- (A) मुस्लिम रूपमे कमसँ कम सप्ताहमे एक दिन नमाज आवश्यक मानैत छलीह।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

७२६. नमाज सम्बन्धमे अम्मीक सामाजिक दृष्टि की अछि?

- (A) धनी, गरीब, व्यापारी, मजदूर सब एकसंग काँध मिलाबैत अछि।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

७२७. मक्का मस्जिद जाएबाक प्रसंगमे चारमीनारक भूमिका की अछि?

- (A) मस्जिद-यात्राक संग शहर-दर्शनक स्मृति बनैत अछि।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

७२८. बुरका प्रसंग कथामे ककर संकेत अछि?

- (A) स्त्रीक सामुदायिक पहचान, संकोच आ पुत्रक आधुनिक दृष्टिक द्वन्द्व।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

७२९. मस्जिदक शान्त वातावरणक वर्णन कियैक महत्वपूर्ण अछि?

- (A) विस्फोटक हिंसासँ विपरीत पवित्रता आ शान्तिक स्मृति बनेबाक लेल।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

७३०. “जुम्मा”मे भयक परिवर्तन कोना देखाइत अछि?

- (A) जाहि नमाजक लेल अम्मी आग्रह करैत छलीह, ओहिसँ विस्फोट बाद ओ पुत्रकेँ दूर रहबाक कहैत छलीह।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

खण्ड ५७८ : विदेह-सदेह १ — “जुम्मा”: विस्फोट आ मातृ-प्रेम

७३१. मक्का मस्जिदक प्रसंगमे परबासभक दृश्यक अर्थ की अछि?

- (A) शान्त, आह्लादकारी, जीवित धार्मिक परिसरक छवि।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

७३२. नरेटर मक्का मस्जिदमे नमाज पढ़बाक प्रण कियैक करैत अछि?

- (A) अम्मीक श्रद्धा आ मस्जिदक पवित्र वातावरणसँ प्रभावित भऽ।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

७३३. नरेटर अपन प्रण किएक तोड़ैत अछि?

- (A) सामान्य जीवनमे लौटि ओ मस्जिद-प्रणकेँ कात राखि दैत अछि।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

७३४. विस्फोटक खबरि बाद नरेटर अम्मीसँ की पुछैत अछि?

- (A) कोन मस्जिदमे बम फूटल, से जानैत छलीह की नहि।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

७३५. खूनसँ भीजल देह आ परबासभक उल्लेखक असर की अछि?

- (A) पूर्व शान्त छविक हिंसक विखंडन।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

७३६. अम्मी पुत्रकेँ “गाम चलि आउ” कियैक कहैत छलीह?

- (A) मातृ-भय बेटाकेँ महानगरीय खतरा सँ दूर रखय चाहैत अछि।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

७३७. अम्मीक “ओहि मस्जिदमे नहि जाएब” कथनक गूढ़ अर्थ की अछि?

- (A) मातृ-प्रेम धार्मिक आदर्शपर सेहो भारी पड़ि सकैत अछि।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

७३८. नरेटरक प्रश्न — अल्ला आन भऽ गेलथि? — की खोलैत अछि?

- (A) भय, प्रेम आ आस्था बीचक नैतिक उलझन।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

७३९. कथाक अन्तिम प्रार्थना कोन भावना लैत अछि?

- (A) आन जुम्माकेँ रक्तहीन राखबाक विनती।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

७४०. “जुम्मा”क समग्र उपलब्धि की अछि?

- (A) आस्था, स्मृति, आतंक आ मातृत्वक बीच संवेदनशील कथा रचना।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

खण्ड ५७९ : विदेह-सदेह १ — सुशांत झा: बलिराज गढ़क पुरातात्विक प्रश्न

७४१. बलिराजपुरक किला कथनानुसार कतय अवस्थित अछि?

- (A) मधुबनी जिला मुख्यालयसँ उत्तर-पूर्व दिशामे, खोजपुर लग।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

७४२. बलिराज गढ़क देखभाल के करैत अछि?

- (A) भारत सरकारक पुरातत्व विभाग।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

७४३. किलाक खुदाईसँ कोन प्रकारक सामग्री भेटबाक उल्लेख अछि?

- (A) मृद्भांड, विभिन्न वस्तु आ सोनाक सिक्का।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

७४४. बाहरी बोर्डक अनुसार किला कोन कालक होयबाक सम्भावना अछि?

- (A) मौर्यकालीन।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

७४५. किलासँ जुड़ल लोककिंवदन्तीमे कोन दावा अछि?

- (A) ई राक्षस राजा बलिक राजधानी छल।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

७४६. साँझ बाद लोक किला दिस कियैक नहि जाए चाहैत?

- (A) राजा बलि आ भयक किंवदन्ती कारण।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

७४७. किलाक देवारक वर्णन कोन बात देखबैत अछि?

- (A) अत्यन्त चाकर आ विशाल प्राचीन निर्माणक क्षमता।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

७४८. किलाक पोखरिक सम्बन्धमे की लोकमत अछि?

- (A) ओ राक्षसक कोरल मानल जाइत अछि, आ सुरंगक कथा सेहो अछि।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

७४९. किलाक आसपासक गाम-नाम कियैक महत्वपूर्ण कहल गेल?

- (A) फुलबरिया, गढ़ी/गरही, रमणीपट्टी, भूपट्टी आदि नाम ऐतिहासिकता सूचित करैत अछि।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

७५०. बलिराज गढ़क प्रथम बड़ा प्रश्न की अछि?

- (A) ई केवल लोककथा-स्थल अछि कि मिथिलाक प्राचीन राजधानीक सम्भावित अवशेष।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

खण्ड ५८० : विदेह-सदेह १ — बलिराज गढ़: राजधानी-दावा, खुदाई आ पर्यटन

७५१. बलिराज गढ़क राजधानी-दावा लेल लेखक कोन ऐतिहासिक तर्क उद्धृत करैत छथि?

- (A) जनकपुरक ऐतिहासिकता पर संदेह आ हिनसांग-संबंधी दूरी-तर्क।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

७५२. रामायण-संकेतक उपयोग कोना कएल गेल अछि?

- (A) मिथिलाक प्राचीन राजधानीक सम्भावना बलिराजपुर दिस संकेत करैत अछि, से रूपमे।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

७५३. भोगेन्द्र झाक मत अनुसार राजा बलिक राजधानी कतय सेहो सम्भव कहल गेल?

- (A) दक्षिण भारतक महाबलीपुरम।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

७५४. पूरा मिथिलामे बलिराजपुरसँ पुरान किला नहि — एहि कथनक अर्थ की अछि?

- (A) बलिराज गढ़क प्राचीन राजधानी-दावाकें बल भेटैत अछि।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

७५५. किलाक भीतर उबड़-खाबड़ मैदानक अर्थ कोना लगाओल गेल?

- (A) राजमहल वा निर्माणक धरती भीतर धँसल रहबाक संकेत।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

७५६. ढंगसँ खुदाई कएलासँ की सम्भावना बताओल गेल?

- (A) कतेक रहस्यसँ आवरण उठि सकैत अछि।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

७५७. सरकारी प्रयासपर लेखकक मत की अछि?

- (A) एखन धरि ठोस प्रयास नहि भेल।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

७५८. बलिराज गढ़मे संग्रहालयक सुझाव कियैक अछि?

- (A) पुरातात्विक सामग्री आ इतिहासकें व्यवस्थित रूपमे देखेबाक लेल।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

७५९. मिथिला पेंटिंग संस्थान वा आर्ट गैलरीक सुझावक अर्थ की अछि?

- (A) स्थानीय सांस्कृतिक पूंजीकें पर्यटन-विकाससँ जोड़ब।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

७६०. बुद्ध सर्किट वा रामायण सर्किटसँ जोड़बाक प्रस्तावक लक्ष्य की अछि?

- (A) बलिराज गढ़कें व्यापक तीर्थ-पर्यटन मानचित्रपर आनब।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

खण्ड ५८१ : विदेह-सदेह १ — “मिथिला मंथन”: पिछड़ापन, बाढ़ आ विकास-दिशा

७६१. “मिथिला मंथन”मे मिथिलांचलक पिछड़ापन कोन मापदंडसँ देखाओल गेल?

- (A) प्रति व्यक्ति आय, साक्षरता आ प्रसवकालीन मातृ-शिशु मृत्यु।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

७६२. मिथिलाक पिछड़ापनक एक बड़ा कारण की कहल गेल?

- (A) भौगोलिक बनावट आ नीक नेतृत्वक अभाव।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

७६३. गोआ, पंजाब आ बिहारक तुलना कियैक अछि?

- (A) क्षेत्रीय आर्थिक असमानता देखेबाक लेल।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

७६४. मिथिलांचलक आधा सँ बेसी इलाका बाढ़मे डूबल रहैत अछि — एहि कथनक अर्थ की अछि?

- (A) बाढ़ विकासक मूल संरचनात्मक बाधा अछि।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

७६५. बाढ़ नियंत्रण लेल राज्य सरकार मात्र पर्याप्त कियैक नहि?

- (A) केंद्र सरकारक सहयोग आवश्यक मानल गेल अछि।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

७६६. बाढ़ उद्योग-धंधापर की प्रभाव डालैत अछि?

- (A) सड़क, रेल, पुल सन आधारभूत ढाँचा नष्ट करैत अछि।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

७६७. मिथिलामे पैघ उद्योगक कठिनाईक एक कारण की अछि?

- (A) सड़क-बिजलीक अभाव आ खाली जमीनक कमी।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

७६८. शहरीकरणक अभाव कियैक महत्त्वपूर्ण अछि?

- (A) शहर सरकारी नौकरीपर टिकले अछि, उद्योगक बलपर नहि।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

७६९. दिल्ली-पंजाबमें श्रम-प्रवासक अर्थ की अछि?

- (A) मिथिलाक श्रम अपन घरक आधारभूत निर्माणमे नहि, बाहरक विकासमे लगैत अछि।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

७७०. “मिथिला मंथन”क विकास-प्रश्नक मूल चिंता की अछि?

- (A) बाढ़, अवसंरचना, शिक्षा, उद्योग आ क्षेत्रीय असमानता बीच वास्तविक विकास-दिशा खोजब।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

खण्ड ५८२ : विदेह-सदेह १ — “मिथिला मंथन”: शिक्षा, महिला आ पूनम-प्रवीण

७७१. अलग मिथिला राज्यक मांग लेखमे संस्कृति संगे ककर कारण उचित कहल गेल?

- (A) आर्थिक विकासक कारण सेहो।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

७७२. मिथिला विकास मॉडलमे कृषि लेल की जरूरी कहल गेल?

- (A) फोरलेन हाईवे आ रेलवे रेफ्रिजरेटर डिब्बा।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

७७३. मिथिलामे उच्च शिक्षा लेल की प्रस्ताव अछि?

- (A) बहुत इंजीनियरिंग कालेज, मेडिकल कालेज आ महिला विश्वविद्यालय।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

७७४. २४ घंटा बिजलीक तर्क कियैक अछि?

- (A) छोट उद्योग आ स्थानीय रोजगार लेल।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

७७५. महिला शिक्षाक दशा कियैक खराब कहल गेल?

- (A) घर लग कालेज नहि, सामाजिक दबाव आ विवाह-दहेजक बाधा।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

७७६. पूनम आ प्रवीणक प्रसंगमे मुख्य तुलना की अछि?

- (A) दूनू प्रतिभाशाली, मुदा अवसरक अन्तरसँ प्रवीण आगे, पूनम रुकि गेल।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

७७७. प्रवीणक जीवन-मार्ग की बताओल गेल?

- (A) राउरकेला सँ इंजीनियरिंग कऽ कम्पनी द्वारा शिकागो पठाओल गेल।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

७७८. पूनमक प्रतिभा कोना दबि गेल?

- (A) दहेज, विवाह-चिन्ता आ उच्च शिक्षा-संरचना अभावसँ।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

७७९. लेखक पूनमक प्रश्नकेँ केवल दहेज धरि सीमित कियैक नहि रखैत?

- (A) कालेज-सुविधा आ क्षेत्रीय शिक्षा-अभाव सेहो कारण अछि।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

७८०. पूनम-प्रवीण प्रसंगक सामाजिक अर्थ की अछि?

- (A) प्रतिभाक भविष्य समाज, लिंग, क्षेत्रीय सुविधा आ अवसरसँ निर्धारित होइत अछि।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

खण्ड ५८३ : विदेह-सदेह १ — शिक्षा, धर्म, राज्य आ समाज: संयुक्त विवेचन

७८१. “दूभि” आ “मिथिला मंथन” दूनूमे शिक्षा-संकट कोना जुड़ैत अछि?

- (A) एकमे विद्यालयक नैतिक-भौतिक पतन, दोसरमे उच्च शिक्षाक अभाव।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

७८२. “जाग’ जाग’ महादेव” आ “जुम्मा” दूनूमे धर्मक भिन्न रूप की अछि?

- (A) एकमे धर्म-व्यापार पर व्यंग्य, दोसरमे भयग्रस्त मातृ-आस्था।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

७८३. शीतल झाक संघीय लेख आ “मिथिला मंथन”क साझा चिन्ता की अछि?

- (A) अधिकार आ विकासक प्रश्नकेँ स्थानीय संरचना सँ जोड़ब।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

७८४. “दूभि”क मैदान आ बलिराज गढ़क किला कोन साझा प्रश्न उठबैत अछि?

- (A) सार्वजनिक स्थल आ विरासतक संरक्षण।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

७८५. “आह्वान” आ शीतल झाक लेखमे जन-सक्रियताक स्वर कोना अछि?

- (A) दूनू समाजकें निष्क्रियता छोड़ि अधिकार आ न्याय लेल जागबाक कहैत अछि।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

७८६. पूनम-प्रवीण प्रसंग आ “दूभि”क बालिका-बालक विद्यालय-संसारमे की समानता अछि?

- (A) शिक्षा-व्यवस्था कमजोर भेल तँ भविष्य असमान आ अधूरा रहैत अछि।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

७८७. “जुम्मा” आ “आह्वान” दूनूमे हिंसाक भाव की अछि?

- (A) मानव जीवनक असुरक्षा आ रक्तपातक विरुद्ध करुण प्रतिरोध।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

७८८. “पसीझक काँट” आ “जाग’ जाग’ महादेव”मे आधुनिक समाजक कोन रोग साझा अछि?

- (A) सम्बन्धक अवरोध, स्वार्थ आ संवेदनाहीनता।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

७८९. बलिराज गढ़ आ मिथिला राज्य-विमर्शमे इतिहासक भूमिका की अछि?

- (A) वर्तमान अधिकार आ पहचानक समर्थन लेल अतीतक पुनर्पाठ।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

७९०. एहि संयुक्त खण्डक समग्र निष्कर्ष की अछि?

- (A) साहित्य शिक्षा, धर्म, राजनीति, इतिहास आ विकासक प्रश्नकें एक-दोसरसँ जोड़ि पढ़बैत अछि।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

खण्ड ५८४ : विदेह-सदेह १ — वर्तमान सामाजिक आलोचना: पुनरावलोकन

७९१. एहि बैचमे “दूभि”क सबसे बड़ा योगदान की अछि?

- (A) विद्यालय-पर्यावरणक दुर्दृष्टिकें जीवित पात्रक रूपमे बोलबेनाइ।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

७९२. “जाग’ जाग’ महादेव” समाजक धर्म-बोध पर कोन चोट करैत अछि?

- (A) भक्ति कें लाभक सौदामे बदलयबला प्रवृत्तिपर।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

७९३. शीतल झाक निबंध वर्तमान राज्य-विमर्शमे की जोड़ैत अछि?

- (A) संघीयता, मिथिला राज्य, समावेशन आ आत्मनिर्णयक क्रमबद्ध तर्क।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

७९४. “जुम्मा”क साहित्यिक बल कोन ठाम अछि?

- (A) माँक आवाजमे आस्था, भय आ प्रेमक बदलैत स्वर पकड़ब।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

७९५. बलिराज गढ़ लेखक मुख्य आग्रह की अछि?

- (A) ठोस पुरातात्विक खुदाई, संग्रहालय आ सांस्कृतिक पर्यटन।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

७९६. “मिथिला मंथन” विकासक चर्चा ककरा सँ शुरू करैत अछि?

- (A) आर्थिक असमानता, बाढ़, अवसंरचना आ नेतृत्व-अभाव सँ।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

७९७. पूनमक प्रसंगक स्थायी महत्त्व की अछि?

- (A) मिथिलाक महिला-शिक्षा आ अवसर-अभावक मानवीय उदाहरण।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

७९८. एहि अंशसभमे भाषा-संस्कृति कोना उपस्थित अछि?

- (A) कहीं मैथिली अबला रूपमे पुकारैत अछि, कहीं राज्यक अधिकार-आधार बनैत अछि।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

७९९. वर्तमान सामाजिक आलोचनाक साझा लक्ष्य की अछि?

- (A) समाजकें अपन उपेक्षा, पाखंड, हिंसा आ विकास-अभाव पहिचानब।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

८००. आगू पढ़बाक दृष्टिसँ एहि बैचक निष्कर्ष की राखल जा सकैत अछि?

- (A) सदेह १ सामाजिक यथार्थ, मिथिला-अस्मिता आ आत्मसुधारक बहुस्तरीय मंच बनैत अछि।
- (B) स्रोत-प्रसंगमे एकर उलट अर्थ भेटैत अछि।
- (C) ई बाहरी अनुमान अछि, मूल अंशक केन्द्र नहि।
- (D) ई केवल सजावटी व्याख्या अछि, कथ्यक सार नहि।

खण्ड ५८५ : विदेह-सदेह १ — “मिथिला मंथन”: पूनम-प्रवीण प्रसंगक tail

८०१. “मिथिला मंथन” मे पूनम-प्रवीण प्रसंगक मूल सवाल की अछि?

- (A) प्रतिभाशाली लड़कीक शिक्षा सामाजिक-ढाँचा आ सुविधा-अभाव सँ रुकि जाइत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

८०२. प्रवीणक विदेश-यात्रा आ पूनमक रुकल शिक्षा बीच लेखक कोन विरोधाभास रखैत छथि?

- (A) लड़का आगे बढ़ि विदेश पहुँचि गेल, लड़की घरेलू सीमा मे रोकाइ गेल।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

८०३. पूनमक शिक्षा रुकबाक एक प्रमुख सामाजिक दबाव कोन बताओल गेल अछि?

- (A) अधिक पढ़ल लड़कीक विवाह कठिन होएबाक डर।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

८०४. लेखक पूनमक प्रसंगमे दहेजसँ अतिरिक्त कोन प्रश्न उठबैत छथि?

- (A) घर लग नीक कॉलेजक अभाव सेहो लड़कीक शिक्षा रोकैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

८०५. कर्नाटक/केरलक तुलना पूनम प्रसंगमे किएक आयल अछि?

- (A) ई देखेबाक लेल जे अनुकूल शिक्षा-संरचना रहलासँ पूनम सेहो इंजीनियर बनि सकैत छलीह।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

८०६. पूनमक प्रतिभा बादमे कोन घरेलू क्रियामे खपि गेल बताओल गेल?

- (A) सिलाई-कढ़ाई आ स्वेटरक नब डिजाइन सीखबामे।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

८०७. हाईस्कूलक दूरी पर लेखकक आपत्ति की अछि?

- (A) पाँच किलोमीटर दूर पढ़ए जाएब लड़की लेल व्यवहारिक बाधा बनैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

८०८. लड़की सबकँ साइकिल देबाक योजना पर लेखकक मूल शंका की अछि?

- (A) साइकिलसँ केवल हाईस्कूल-स्तरक समस्या हल होइत अछि, उच्च शिक्षा नहि।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

८०९. बिहारमे महिला विश्वविद्यालय आ तकनीकी विश्वविद्यालयक अभावक उल्लेख कोन अर्थमे अछि?

- (A) संस्थागत पिछड़ापनक उदाहरण रूपमे।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

८१०. “पूनम इंजीनियरिंग कॉलेजमे जेती?” — ई प्रश्न कोन चिंता प्रकट करैत अछि?

- (A) आगामी समयमे सेहो बेटीक उच्च तकनीकी शिक्षा अनिश्चित रहबाक चिंता।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

खण्ड ५८६ : विदेह-सदेह १ — श्यामल सुमन “प्यास”

८११. श्यामल सुमनक गीत “प्यास”क आरम्भिक भाव की अछि?

- (A) पेट भरबाक लेल गाम छोड़लाक पीड़ा।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

८१२. “नौकरी की भेटल, अपनापन छूटल” पंक्ति कोन अनुभवकें व्यक्त करैत अछि?

- (A) रोजगार भेटितहुँ सामाजिक आत्मीयता खोएबाक अनुभव।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

८१३. पावनि-त्योहारक प्रसंग गीतमे कोन द्वंद्व उत्पन्न करैत अछि?

- (A) गाम जाएबाक इच्छा आ घर/परिवारक व्यवहारिक रोक।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

८१४. गीतमे “घर लागय अछि जेल” कथनक भावार्थ की अछि?

- (A) परदेसक घर सुरक्षा नहि, बंदिश आ अलगावक ठाम बनि गेल अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

८१५. “नवका रस्ता निकालत” मे कोन भाव अछि?

- (A) विपरीत परिस्थिति बीच रास्ता खोजबाक जिद्द।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

८१६. श्यामल सुमनक परिचयमे कोन क्षेत्रीय-सामाजिक विस्तार देखाइत अछि?

- (A) नोकरी, लेखन, गीत-गजल, रेडियो/टीवी आ मंच-संचालनक संयोजन।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

८१७. “प्यास”मे प्रवासी मनक मूल अभाव कोन अछि?

- (A) रोजगारक बीचोबीच अपन गाम, नेह आ अस्मिताक कमी।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

८१८. गीतक शैली कोन कारण सँ स्मरणीय बनैत अछि?

- (A) ध्रुव-पंक्ति आ छोटे-छोटे प्रवासी प्रसंगक दोहराव।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

८१९. “दोस्त यार कतऽ गेल” प्रसंग की देखबैत अछि?

- (A) प्रवासमे पुरान सामाजिक गोत्र टूटि जाइत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

८२०. “प्यास”क सामाजिक पाठ की अछि?

- (A) आर्थिक प्रवास केवल आयक प्रश्न नहि, भावनात्मक विस्थापनक प्रश्न सेहो अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

खण्ड ५८७ : विदेह-सदेह १ — श्याम सुन्दर शशि “मरदे कि बरदे”: दोहा-प्रवास

८२१. “मरदे कि बरदे”क कथास्थल कोन प्रवासी स्थानसँ जुड़ल अछि?

- (A) कतारक दोहा आ नेपाली दूतावासक परिवेश।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

८२२. लक्ष्मण दूतावास किएक जाइत अछि?

- (A) अपन प्रेमिका रेशमासँ भेटबाक लेल।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

८२३. दोहाक ताप आ मरुभूमि-वर्णन कथामे कोन भूमिका निभबैत अछि?

- (A) प्रवासी श्रमिकक कठोर जीवनक बाह्य वातावरण रचैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

८२४. लक्ष्मण अपनाकेँ “बरद जेकाँ” किएक कहैत अछि?

- (A) ओ मरुभूमिमे श्रम करैत रहल अपन जीवनकेँ बोझा ढोइत बैलसँ तुलना करैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

८२५. रेशमाक दूतावासमे उपस्थिति कोन संकटक संकेत करैत अछि?

- (A) प्रवासी स्त्रीक असुरक्षा आ आश्रय-खोज।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

८२६. दूतावासक नेबोक गाछक ओटमे रेशमाक दृश्य कोन भाव बनबैत अछि?

- (A) दूर-प्रवासमे पुनर्भेटक संवेदनशील क्षण।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

८२७. कथा मे “नौ महिनाक हिसाब-किताब” कोन अर्थ देत अछि?

- (A) लंबा बिछोह आ अनकहल संबंध-संकट।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

८२८. दोहाक “चकमक” आ “मरुभूमि” बीच विरोधाभास की अछि?

- (A) शहरक चमक प्रवासी श्रमिकक अंधकारमय श्रम-संसार ढाँपि दैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

८२९. कथाक शीर्षक “मरदे कि बरदे” कोन प्रश्न उठबैत अछि?

- (A) पुरुषत्व, श्रम-दासता आ प्रवासी अस्मिताक प्रश्न।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

८३०. प्रेम प्रसंग एहि कथामे मात्र निजी किएक नहि रहैत?

- (A) ओ प्रवास, श्रम, दूतावास, असुरक्षा आ परिवारक प्रश्नसँ जुड़ि जाइत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

खण्ड ५८८ : विदेह-सदेह १ — महेन्द्र कापर: कतारक मैथिल भेड़ा-चरवाह

८३१. महेन्द्र कापर कोन जिलाक कोन गामसँ संबंधित बताओल गेल छथि?

- (A) नेपालक सिरहा जिलाक कमलाकात भेड़िया गामसँ।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

८३२. महेन्द्र कतारमे की काज करैत अछि?

- (A) भेड़ा-बकरी चरबैत आ गोहियाक देखभाल करैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

८३३. महेन्द्र कतार आबि की अपेक्षा रखने छल?

- (A) बगैचाक काज आ कमाइ सँ घर बनएबाक आशा।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

८३४. महेन्द्रक श्रम-प्रवासक मुख्य आर्थिक बाधा की अछि?

- (A) दलालक ७५ हजार रुपैयाक कर्ज।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

८३५. महेन्द्र अपन बेटा-बेटी लेल की चाहैत छल?

- (A) बोर्डिंग स्कूलमे पढ़एबाक सपना।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

८३६. महेन्द्रक राति कोना बितैत अछि?

- (A) खुला आकाशक नीचाँ तरेगन गनैत।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

८३७. चान देखैत महेन्द्रक प्रश्न कोन भाव जगबैत अछि?

- (A) गामक माए-बाउ सेहो एही चान देखैत हेताह — ई स्मृति आ दूरीक पीड़ा।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

८३८. खुबुज आ प्याउजक उल्लेख कोन सामाजिक अंतर खोलैत अछि?

- (A) मालिकक बिरयानी आ मजदूरक सस्ता भोजन बीचक अंतर।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

८३९. मरुभूमि-वर्णन महेन्द्रक जीवनमे कोन स्थिति बनबैत अछि?

- (A) एकाकी, कठोर आ सुविधा-विहीन श्रम-स्थितिक प्रतीक।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

८४०. महेन्द्रक कथा प्रवासी श्रमक कोन सत्य देखबैत अछि?

- (A) चमकैत विदेशक भीतर श्रमिकक ऋण, छल आ एकांत लुकायल रहैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

खण्ड ५८९ : विदेह-सदेह १ — “मरदे कि बरदे”: श्रम, छल आ भोजन-विरोध

८४१. मानव-तस्कर/दलालक भूमिका “मरदे कि बरदे”मे कोना देखाओल गेल अछि?

- (A) ओ मजदूरकें एक काज कहि दोसर कठोर काजमे धकेलि दैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

८४२. “दोहा शहर दिल्ली दूर अछि” वाक्यक भाव की अछि?

- (A) शहरक चमक मजदूरक वास्तविक पहुँचसँ बाहर अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

८४३. महेन्द्रक “फ्रिज/एयर कंडीशन” कोन वस्तुकेँ कहल गेल?

- (A) कपड़ा लपेटल पानीक बोतल।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

८४४. महेन्द्रक अतिथि-सत्कार मे की देखा जाइत अछि?

- (A) अभावमे सेहो अपनपन आ पानी देबाक सहजता।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

८४५. मजदूरक भोजन-वर्णनमे “नून, मिरचाई, तेल, प्याउज” कोन अर्थ धारण करैत अछि?

- (A) न्यूनतम जीवन-निर्वाह आ आर्थिक असमानता।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

८४६. मरुभूमिमे बबूर आ ऊँटक संग मजदूरक उल्लेख कोन भाव बनबैत अछि?

- (A) कठोर भूगोलकेँ जीवित रखनिहार जीव आ श्रमिकक साझी सहनशीलता।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

८४७. महेन्द्रक श्रमक समयावधि कोना बढ़ि गेल?

- (A) एक वर्ष बादो कर्ज नहि चुकल, आओर दू वर्ष रहबाक बाध्यता बचल।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

८४८. कथाकार महेन्द्रक आँखिक चमक किएक नोट करैत छथि?

- (A) अपन भाषा/अपन लोक भेटलासँ ओकर अकेलापन टूटैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

८४९. “भेड़ा बकरी संगे रहैत-रहैत ओहने भऽ गेल छी” कथन कोन पीड़ा जनबैत अछि?

- (A) मानवीय संवादक अभाव सँ आत्म-अवमूल्यनक अनुभव।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

८५०. एहि प्रसंगक व्यापक आलोचना की अछि?

- (A) प्रवासी कमाइकेँ चमकदार सपना मानबाक भ्रम।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

खण्ड ५९० : विदेह-सदेह १ — श्रीधरम “फानी”: पंचैतीक आरम्भ

८५१. “फानी”क आरम्भमे पंच सभ कतए जुटैत छथि?

- (A) कारी मड़रक दुआर पर।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

८५२. पंचैती शुरू होएबाक लेल ककर प्रतीक्षा अछि?

- (A) रामअधीन नेताक।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

८५३. रामअधीन नेता ककर प्रतिनिधि बनि उभरैत अछि?

- (A) दलित पार्टीक प्रखंड अध्यक्ष आ स्थानीय सत्ता-बिचौलिया।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

८५४. डोमन सभ जातिक पंच किएक बजाबए चाहैत रहय?

- (A) न्यायकेँ व्यापक बनएबाक इच्छा सँ।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

८५५. सोमन आ डोमनक झगड़ाक मूल संपत्ति की अछि?

- (A) सीलिंगमे भेटल दसकठबा खेत।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

८५६. पँचू सदाय बेटा सभकेँ खेतक पर्ची दैत की चेतावनी देने रहै?

- (A) सरकारक देल जमीन जोगा कऽ राखब।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

८५७. रामअधीन नेताक खेतक संबंध एहि विवादसँ कोना जुड़ल अछि?

- (A) दसकठबा खेत ओकर खेतक आड़ि लग अछि आ ओकर नजर ओहि पर अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

८५८. सोमन-डोमनक घरेलू विवादमे स्त्री-पात्र सभक भूमिका की अछि?

- (A) दियादिनी सभक झगड़ा जमीन-विवादकें हिंसक दिशा दैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

८५९. कथा मे “जातिनामा पंचैती” कोन प्रश्न उठबैत अछि?

- (A) जाति-आधारित न्यायक सीमित आ सत्ता-नियंत्रित रूप।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

८६०. आरम्भिक दृश्यक सामाजिक तनाव की अछि?

- (A) परिवारक बँटवारा, जमीन, जातीय सत्ता आ स्थानीय राजनीति एक संग गुंथल अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

खण्ड ५९१ : विदेह-सदेह १ — “फानी”: जमीन, दियादिनी-संघर्ष आ हिंसा

८६१. सोमन आ डोमनक पिता पँचू सदायक जमीन कोना भेटल छल?

- (A) सरकारक देल सीलिंग जमीन रूपमे।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

८६२. डोमन परदेशमे रहलाकाल खेतक फसलक बखरा कोना चलैत छल?

- (A) सोमन खेती करैत आ फसलक आधा डोमनक बहुकें देत।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

८६३. महरैलवाली कें फसल-बँटवारा किएक खटकैत छल?

- (A) ओ सोचैत छल जे मेहनत ओकर साँय करै, बखरा दोसर ले जाए।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

८६४. रेवाड़ीवाली आ महरैलवालीक झगड़ा कोन मौके भड़कैत अछि?

- (A) गहूमक बँटवारा करबाक समय।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

८६५. “रंडिया” शब्दक प्रयोगक बाद की होइत अछि?

- (A) महरैलवालीक आक्रोश तेज भऽ झोंटा-पकड़ाइ आरम्भ होइत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

८६६. गंगवा झगड़ामे की करैत अछि?

- (A) ओ रेवाड़ीवालीकें पेट ताक मारए लगैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

८६७. रेवाड़ीवालीक नुकसान की बताओल गेल?

- (A) चार मासक गर्भ नोकसान भऽ गेल।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

८६८. रेवाड़ीवाली थाना जाए चाहैत छलीह, मुदा ककरा द्वारा रोकल गेलीह?

- (A) रामअधीन नेताक द्वारा।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

८६९. सोमनक भय कोन अछि?

- (A) मर्डर केस बनि जेल आ जमानत-संकट होएबाक डर।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

८७०. “फानी” मे घरेलू स्त्री-विवाद सामाजिक न्यायक प्रश्न कोना बनैत अछि?

- (A) नुकसान स्त्रीक देहपर अछि, मुदा निर्णय पुरुष-सत्ता आ नेता करैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

खण्ड ५९२ : विदेह-सदेह १ — “फानी”: रामअधीन नेताक जुर्माना-राज

८७१. रामअधीन नेता पंचैतीमे डोमन आ सोमन दुनूक लेल की निर्णय देत अछि?

- (A) दुनू कें पाँच-पाँच हजार जुर्माना देबाक।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

८७२. जुर्माना कोन नामे जमा करबाक कहल जाइत अछि?

- (A) जातिनाम खाता।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

८७३. मोहन सदाय जुर्मानाक पैसासँ की बनेबाक तर्क देत अछि?

- (A) दीना-भदरीक गहबर।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

८७४. मड़र कका दीना-भदरीक गहबर विषयमे भीतर-भीतर की देखैत छथि?

- (A) दस सालसँ गहबर बनबाक नाम सुनितहुँ ठोस परिणाम नहि।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

८७५. मोहन सदाय रामअधीनक प्रभावसँ कोन लाभ पाबैत अछि?

- (A) ठेकादारी आ कार्यालयी दबदबा।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

८७६. रामअधीनक पी.ए. जकाँ ककर चित्रण भेल अछि?

- (A) मोहन सदायक।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

८७७. “पंच सभ पमरियाक तेसर जकाँ” — एहि चित्रणक अर्थ की अछि?

- (A) पंचक स्वतंत्र निर्णय-क्षमता नहि, मात्र हाँ-मे-हाँ मिलब।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

८७८. सोमनक आर्थिक असमर्थता पर मोहन कोन समाधान सुझबैत अछि?

- (A) दसकठबा खेत भरना राखबाक।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

८७९. रामअधीनक वास्तविक लक्ष्य कोन बुझाइत अछि?

- (A) जमीन पर नियंत्रण।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

८८०. “फानी” मे जुर्माना-राज कोन सामाजिक तंत्रक आलोचना अछि?

- (A) स्थानीय नेता, जाति, धर्म-नाम आ गरीबक जमीन हड़पबाक गठजोड़।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

खण्ड ५९३ : विदेह-सदेह १ — “फानी”: भरना-षड्यंत्र आ महरैलवालीक प्रतिरोध

८८१. मोहन सदाय खेत भरना देबाक बात कोना शुरू करैत अछि?

- (A) जुमाना भरबाक उपाय नहि अछि, तँ सझिया खेत ताबत कोनो ले ले — एहन तर्कसँ।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

८८२. डाकमे जब क्यो आगे नहि अबैत, मोहन की संकेत करैत अछि?

- (A) नेताजी टोलक इज्जति बचए लेल खेत ले सकैत छथि।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

८८३. महरैलवाली जमीन भरना देबाक विरोध किएक करैत अछि?

- (A) ओ बुझैत अछि जे गहबरक नामे गरीबक जमीन हड़पल जा रहल अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

८८४. रेवाड़ीवाली महरैलवालीक विरोधकें कोना देखैत अछि?

- (A) ओकर मौन समर्थन करैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

८८५. रामअधीन नेता महरैलवाली पर कोना प्रतिक्रिया करैत अछि?

- (A) लैंगिक गारि आ धमकीसँ।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

८८६. महरैलवालीक प्रत्युत्तरक सार की अछि?

- (A) मायक दूध पीने छी तँ मारि कऽ देख — निर्भीक प्रतिरोध।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

८८७. “दीना-भदरी गरीबक जमीन लेतै” कथनक निहितार्थ की अछि?

- (A) धर्म/देवता नामे गरीबक संसाधन छीनेबाक विडंबना।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

८८८. पंचक चुप्पी पर महरैलवालीक आरोप की अछि?

- (A) न्याय बोलबाक जगह सभक मुँहमे जाबी लागल अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

८८९. महारैलवालीक हस्तक्षेप कथाक सत्ता-संतुलन पर की असर करैत अछि?

- (A) सोमनक पक्ष कमजोर होइत अछि, मुदा नेता-साजिश उजागर भऽ जाइत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

८९०. “फानी” एहि बिंदुपर कोन प्रश्न उठबैत अछि?

- (A) गरीबक न्याय-व्यवस्था मे बोलबाक अधिकार आ जमीन-सुरक्षाक प्रश्न।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

खण्ड ५९४ : विदेह-सदेह १ — नचिकेता “नो एंट्री: मा प्रविश”: परिचय आ रंग-संरचना

८९१. “नो एंट्री: मा प्रविश” कोन विधाक रचना अछि?

- (A) चार-अंकीय मैथिली नाटक।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

८९२. नाटककार उदय नारायण सिंह “नचिकेता” संबंधी विशेष बात की बताओल गेल?

- (A) दीर्घ मौनक बाद हुनक टटका नाटक पाठकक सामने आयल।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

८९३. नाटकक प्रथम दृश्यक मुख्य मंच-चिह्न की अछि?

- (A) बीचमे बड़का दरबज्जा आ अदृश्य मजबूत देवाल।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

८९४. प्रथम कत्तारमे कोन-कोन किसिमक पात्र देखाइत अछि?

- (A) चोर, उचक्का, भद्र व्यक्ति, प्रेमी-प्रेमिका, बीमा एजेंट, रद्दीवाला, भिखमंगनी आदि।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

८९५. प्रेमी-प्रेमिका युगलक मृत्यु कोना संकेतित अछि?

- (A) विष-पान कऽ आत्महत्या।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

८९६. बाजार सँ घुरैत प्रौढ़ व्यक्ति संबंधी संकेत की अछि?

- (A) ओ शायद पथ-दुर्घटनाक शिकार भेल अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

८९७. मृत सैनिक सभक व्यवहार कतारमे दोसर सँ कोना भिन्न अछि?

- (A) ओ सभ शांत, अविकृत आ हड़बड़ीहीन अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

८९८. प्रथम दृश्यक प्रकाश-संयोजन कोन अस्पष्टता बनबैत अछि?

- (A) दिन-रातक भेद साफ नहि रहैत।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

८९९. नाटकक दरबज्जा कोन प्रतीक रूपमे उभरैत अछि?

- (A) यमालय/परलोकक प्रवेश-द्वार, जतय मनुष्य अपन स्वभाव सहित पहुँचल अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

९००. “नो एंट्री” शीर्षकक प्रारंभिक व्यंग्य कोन अछि?

- (A) प्रवेश-द्वार लग पहुँचियो प्रवेश स्थगित आ अस्थिर अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

खण्ड ५९५ : विदेह-सदेह १ — “नो एंट्री”: कतार, चोर-उचक्का आ बाजारी

९०१. दरबज्जा लग कतारमे धीरजक अभाव कोना देखाइत अछि?

- (A) किछु पात्र दोसरकेँ लाँघि आगाँ जाए चाहैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

९०२. बाजारी प्रौढ़ चोर आ उचक्काकेँ की करैत अछि?

- (A) कॉलर पकड़ि पाछाँ चतुर्थ-पंचम स्थानपर घसीटि आनैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

९०३. उचक्का बाजारीकेँ डरएबाक लेल की देखबैत अछि?

- (A) रामपुरी चाकू।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

९०४. पॉकेटमार अपन पेशा कतेक संकेतसँ बतबैत अछि?

- (A) दूटा आँगुर कैची जकाँ चला कऽ।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

९०५. चोर अपन असफल चोरीक कथा कोना हास्य बनबैत अछि?

- (A) गिरहथ जागि गेल, बालक आ कुकुर सभ हल्ला मचा ओकरा पिटि एतए पठा देलक।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

९०६. उचक्का आ चोर पॉकेटमारकेँ “अपने बिरादरीक” कोना मानैत अछि?

- (A) अपराध-व्यवसायक साझा पहचान सँ।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

९०७. बाजारीक भय की अछि?

- (A) यदि चोर-उचक्का स्वर्गमे जेताह तँ स्वर्गक स्वरूप बिगड़त।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

९०८. पॉकेटमार स्वर्ग पर ककर बपौती नहि मानैत अछि?

- (A) ककरहु नहि; स्वर्ग सभक लेल होइत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

९०९. “चोर सिखाबय गुण केर महिमा” पंक्ति कोन स्थिति पर व्यंग्य अछि?

- (A) जखन अपराधी नैतिकता/गुणक भाषा बोलए लागैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

९१०. एहि दृश्यक रंग-ऊर्जा कोन तत्वसँ बनैत अछि?

- (A) झगड़ा, चाकू, हँसी, गीत-जकाँ फकरा आ कतारक उलटफेर।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

खण्ड ५९६ : विदेह-सदेह १ — “नो एंट्री”: तस्कर-राज आ जेबक सफाई

९११. पॉकेटमार चोर पर हँसैत अपनाकेँ कोना प्रस्तुत करैत अछि?

- (A) तस्कर-राज/हाथक सफाई वाला रूपमे।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

९१२. पॉकेटमार स्टूल पर चढ़ि कोन घोषणा-जकाँ अभिनय करैत अछि?

- (A) बुद्धि-शंकर महाराज तस्कर सम्राट आबि रहल छथि।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

९१३. चोरक आँखिमे पानी किएक आबि जाइत अछि?

- (A) ओ अपन पिटाईक याद आ अपमान सँ दुखी होइत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

९१४. पॉकेटमारक “हाथक सफाई”क प्रमाण की भेटैत अछि?

- (A) बाजारीक जेब टटोलिते पॉकेट फाटल/खाली बुझाइत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

९१५. बाजारीक जेबक घटना केकर हँसीक कारण बनैत अछि?

- (A) बीमा बाबू आ आन पात्र सभक।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

९१६. सब गोटे जेब टेबैत की पबैत छथि?

- (A) पाइ अथवा बटुआ गायब।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

९१७. भिखमंगनी “नंगटाक कोन डर” कहि की व्यक्त करैत अछि?

- (A) जकर किछु नहि, ओकरा चोरी/उचक्कागिरीसँ डर किएक।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

९१८. चोर-उचक्का-पॉकेटमारक समवेत गीत कोन माहौल बनबैत अछि?

- (A) हास्य, अव्यवस्था आ नैतिक उलटबाँसी।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

९१९. बीमा बाबूक “तमाशा बंद कर” चीत्कारक उत्तरमे पात्र सभ की शब्द-खेल करैत अछि?

- (A) तमाशा, हताशा, निराशा — एहन ध्वनि-खेल।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

९२०. बटुआ लौटेबाक अभिनयमे पॉकेटमारक चाल की अछि?

- (A) बटुआ फेंकिते सभकेँ उलझा कऽ कतारक आगाँ पहुँचना।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

खण्ड ५९७ : विदेह-सदेह १ — “नो एंट्री”: धनक निरर्थकता आ यमालय-द्वार

९२१. रद्दीवाला बटुआ लौटि अयबाक खुशीक भ्रम किएक तोड़ैत अछि?

- (A) किएक तँ यमालयक द्वारपर पैसा-बटुआक उपयोग नहि।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

९२२. रद्दीवाला पात्र सभकेँ कोन ठाम ठाढ़ बतबैत अछि?

- (A) यमालयक बंद दरबज्जाक सामने।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

९२३. भद्र व्यक्ति पैसा-प्रसंग पर कोन तुलना करैत अछि?

- (A) दोसर देशमे अपन रुपैया नहि चलबाक।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

९२४. बाजारीक “सबटा फूसी?” प्रश्न पर रद्दीवाला कोन बात साफ करैत अछि?

- (A) बटुआ आ पाइसँ स्वामित्व बचल अछि, मुदा ओ काजक नहि।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

९२५. एहि दृश्यमे कतारक झगड़ा कोन विडंबना बनैत अछि?

- (A) प्रवेश-पहलाक झगड़ा, जखन भीतर सांसारिक लाभ नहि।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

९२६. रमणी-मोहन धन-प्रसंगकेँ रूप/रूपा प्रसंगमे कोना मोड़ैत अछि?

- (A) रुपैया सँ रूपा/रमणीक ओर अर्थ-खेल करैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

९२७. बीमा बाबू रमणी-मोहनकेँ किएक डाँटैत अछि?

- (A) ओ धनक बातमे रूप/रमणीक बात जोड़ि दैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

९२८. भिखमंगनी रमणी-मोहन लग किएक आकर्षित होइत अछि?

- (A) ओ ओकर स्त्री-विषयक भाषा आ शरीरगत दृष्टि पकड़ि लैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

९२९. दरबज्जा भीतरक कल्पना पात्र सभक वासनाकें कोना उजागर करैत अछि?

- (A) कोनो देवत्व नहि, अप्सरा, बीमा, धन, रूपक कल्पना उभरैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

९३०. “नो एंट्री” एहि चरणमे कोन दार्शनिक प्रश्न उठबैत अछि?

- (A) मृत्यु पछातियो मनुष्य अपन लोभ, भय, वासना आ पेशागत स्वभाव छोड़ि पबैत अछि की नहि।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

खण्ड ५९८ : विदेह-सदेह १ — “नो एंट्री”: अप्सरा, बीमा आ नीलामी-व्यंग्य

९३१. रमणी-मोहन दरबज्जा भीतर कोन कल्पना करैत अछि?

- (A) उर्वशी, मेनका, रंभा सन सुर-नारी भेटबाक।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

९३२. भिखमंगनी अप्सरा-कल्पना पर कोना प्रतिक्रिया करैत अछि?

- (A) ईर्ष्या/क्रोधसँ “बज्जर खसौ” सन प्रतिक्रिया।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

९३३. बीमा बाबू स्वर्गमे कोन असंगत संभावना सोचैत अछि?

- (A) जीवन-बीमा चलाएबाक।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

९३४. देवराज इन्द्रक वज्रक बीमा कोन हास्य-संरचना बनबैत अछि?

- (A) दैवी वस्तु पर बाजारू बीमा-नीलामी।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

९३५. वज्रक बीमाक बोलीमे के-के सक्रिय होइत अछि?

- (A) उचक्का, चोर, पॉकेटमार, बीमा बाबू, रमणी-मोहन आ भिखमंगनी।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

९३६. बाजारी लोक नीलामी पर किएक हँसैत छथि?

- (A) चोर, भिखमंगनी आ पॉकेटमार स्वर्गीय वज्रक बीमा-मोल लगा रहल छथि।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

९३७. “चोर सिखाबय बीमा-महिमा” पंक्ति कोन उलट स्थिति देखबैत अछि?

- (A) अपराधी पात्र आर्थिक-नैतिक उपदेशक जकाँ बोलैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

९३८. “कौआ बजबै हंसक बाजा” कोन अर्थ देत अछि?

- (A) अनुपयुक्त पात्र उच्च भूमिका निभएबाक विडंबना।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

९३९. दृश्यक अंतमे “क्रमशः” कोन बात जनबैत अछि?

- (A) नाटकक अंश आगू जारी रहबाक।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

९४०. एहि नीलामी दृश्यक मुख्य सामाजिक व्यंग्य की अछि?

- (A) बाजारीकरण, लोभ आ धार्मिक-दैवी प्रतीकक व्यापारिकरण।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

खण्ड ५९९ : विदेह-सदेह १ — बैकुंठ झा: “दुनियाँ तँ ई धोखा अछि”

९४१. बैकुंठ झाक गीत “दुनियाँ तँ ई धोखा अछि”क मूल स्वर की अछि?

- (A) समाजक भ्रष्टाचार, छल आ सर्वव्यापी बेईमानी पर व्यंग्य।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

९४२. गीतमे पेपर, रेडियो, टी.वी. पर कोन बातक शोर अछि?

- (A) सार्वजनिक जीवनमे अनाचार आ भ्रष्टाचारक शोर।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

९४३. वृद्धा-पेंशन आ खरात प्रसंगमे गीत कोन आलोचना करैत अछि?

- (A) कमीशनखोरी आ गरीब-हितक योजनामे लूट।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

९४४. “दुनियाँमे अछि सब चोर-चोर”क भावार्थ की अछि?

- (A) नैतिक पतनक व्यापकता।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

१४५. “काटय केउ सेंध अन्हरियामे, लूटय तऽ केउ इजोरियामे” कोन विरोधाभास अछि?

- (A) गुप्त अपराध आ खुल्लमखुल्ला लूट दुनू चलैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

१४६. “ईमान जतय घर टाटक अछि” से की बुझाईत अछि?

- (A) ईमानदारी दरिद्र/अस्थिर, पापक महल समृद्ध।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

१४७. गीतमे गाय-महीश आ वृद्धा-पेंशनक संग भ्रष्टाचार जोड़ब कोन प्रभाव बनबैत अछि?

- (A) ग्रामीण-सार्वजनिक जीवनक सूक्ष्म स्तर धरि लूटक प्रसार।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

१४८. “मान बड़ाईक नोभा” कथन कोन मानसिकता पर चोट करैत अछि?

- (A) दिखावा, अभिमान आ खोखल सामाजिक प्रतिष्ठा।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

१४९. बैकुंठ झाक परिचयमे कोन बहुभाषी-सर्जनात्मकता देखाइत अछि?

- (A) मैथिली, हिन्दी आ अंग्रेजीमे गीत, नाटक, उपन्यास/कहानी लेखन।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

१५०. “दुनियाँ तँ ई धोखा अछि”क सामाजिक निष्कर्ष की अछि?

- (A) लोकजीवनमे नैतिक मूल्य उलटि गेल अछि आ छल व्यवस्था बनि गेल अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

खण्ड ६०० : विदेह-सदेह १ — बैकुंठ झा: विरह, पत्र आ परदेश-गीत

१५१. “लिखलौं कतेक पत्र” गीतक मूल भाव की अछि?

- (A) पत्र, नोर आ विरहक मिलल भाव।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

१५२. “नोरक जगहकँ छोड़ि-छोड़ि” कोन काव्य-बिंब अछि?

- (A) पत्रमे अनकहल पीड़ा आ आँसू लेल रिक्त स्थान।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

९५३. सावनक बूंद आ नोरक तुलना कोन भाव बढबैत अछि?

- (A) प्रकृति-वर्षा आ अंतर-विरहक संगति।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

९५४. “मुहब्बतमे तऽ तरपब भाग्यमे लिखला” गीतक मुख्य भाव की अछि?

- (A) प्रेममे विरह नियति-जकाँ स्वीकार कएल गेल अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

९५५. यक्षक विरहक उल्लेख प्रेम-विरहक कोना ऊँचाई दैत अछि?

- (A) व्यक्तिगत पीड़ाकें साहित्यिक/पुराण-प्रसिद्ध विरहसँ जोड़ैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

९५६. “परदेश” गीतमे पायल, केश आ योगिन-वेश कोन प्रसंग बनबैत अछि?

- (A) प्रवासी पाहुनक बिछोहमे स्त्री-विरहक दृश्य।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

९५७. “बिजुलीसँ चमकै घर, मुदा अन्हरिया” पंक्ति कोन विरोधाभास रखैत अछि?

- (A) बाहरी रोशनी रहितो मन/घरक अंधकार।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

९५८. “परदेश गेलहुँ” गीतमे पत्नीक मुख्य शिकायत की अछि?

- (A) स्वामी परदेश गेल, घर-परिवारक भार ओकरा पर छोड़ि देल।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

९५९. “साल-साल त बाढ़ि अबै छै” पंक्ति कोन ग्रामीण संकट जोड़ैत अछि?

- (A) प्रवासी अनुपस्थितिमे बाढ़ि आ घर-आँगनक संकट।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

९६०. बैकुंठ झाक एहि गीत-समूहक मुख्य सूत्र की अछि?

- (A) प्रेम, नोर, परदेश, घरेलू भार आ सामाजिक विडंबना।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

खण्ड ६०१ : विदेह-सदेह १ — वासुदेव सुनानी “अनुमति”

९६१. “अनुमति” कविता कोन स्वरमे आरम्भ होइत अछि?

- (A) श्रमिक द्वारा मालिकसँ थोड़े विश्रामक अनुमति माँगब।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

९६२. कविताक वक्ता कोन-कोन काज पूरा कएल बतबैत अछि?

- (A) छाह बाहर देनाइ, बत्तूकेँ खुआओनाइ, नाला साफ करनाइ।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

९६३. “हमर आँगुर स्थिरताक राखए आश” कोन थकान व्यक्त करैत अछि?

- (A) लगातार श्रम सँ हाथ-देहक विश्राम चाह।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

९६४. पुरखाक स्वेद आ मृतात्माक अनुभवक उल्लेख कोन गहराई दैत अछि?

- (A) व्यक्तिगत श्रमकेँ पीढ़ीगत श्रम-दासता सँ जोड़ैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

९६५. कवितामे “श्रीमान” संबोधन कतेक अर्थ रखैत अछि?

- (A) बाहरी सम्मानक भीतर वर्गीय दूरी आ व्यंग्य।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

९६६. “घंटा भिरक विश्राम” कोन मांग बनैत अछि?

- (A) मानवीय अधिकारक न्यूनतम दावा।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

९६७. दुर्गंध, स्वेद आ कीट-संक्रमित जिनगीक उल्लेख कोन यथार्थ देखबैत अछि?

- (A) श्रमिक जीवनक अपमानित, अस्वस्थ आ अवमाननापूर्ण दशा।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

९६८. “प्रतीक्षा थकान भरि दैत अछि” भाव की अछि?

- (A) उपकार/अनुमतिक इंतजार स्वयं श्रम-जकाँ थकबैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

९६९. अंतिम पंक्ति “छोट-मोट विद्रोहक कला” कोन मोड़ दैत अछि?

- (A) विनम्र याचना प्रतिरोधमे बदलि जाइत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

९७०. “अनुमति”क मुख्य सामाजिक कथ्य की अछि?

- (A) सेवा-काम करनिहार श्रमिकक मानवीय विश्राम आ प्रतिरोधक अधिकार।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

खण्ड ६०२ : विदेह-सदेह १ — शिक्षा, प्रवास आ श्रम: संयुक्त पाठ

९७१. पूनम, प्रवीण आ महेन्द्र कापरक प्रसंग संयुक्त रूपेँ कोन प्रश्न उठबैत अछि?

- (A) अवसरक असमान वितरण।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

९७२. पूनमक रुकल शिक्षा आ महेन्द्रक प्रवासमे साझा पीड़ा की अछि?

- (A) घर-समाजक संरचना व्यक्ति-सपना सीमित करैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

९७३. “प्यास” आ “मरदे कि बरदे” दुनूमे प्रवास कोना देखाइत अछि?

- (A) रोजगारक मजबूरी, अपनापनक कमी आ मनुष्यता-कटाव रूपमे।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

९७४. “अनुमति” आ महेन्द्रक कथा बीच कोन संबंध देखल जा सकैत अछि?

- (A) श्रमिकक थकान, निर्भरता आ न्यून अधिकार।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

९७५. मिथिला मंथनक विकास-विमर्श आ “प्यास”क गीतक संबंध की अछि?

- (A) सुविधा-अभाव गाम छोड़बाक मजबूरी बनैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

९७६. पूनमक प्रश्न महिला शिक्षाक स्तरपर की मांग करैत अछि?

- (A) निकट उच्च शिक्षा, महिला विश्वविद्यालय, तकनीकी संस्थान।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

९७७. महेन्द्रक कथा श्रम-बाजारक कोन अनैतिक पक्ष देखबैत अछि?

- (A) दलालक झूठ, ऋण आ रोजगार-छल।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

९७८. “दुनियाँ तँ ई धोखा अछि” एहि बैचक सामाजिक पाठसँ कोना जुड़ैत अछि?

- (A) व्यवस्था, राजनीति, श्रम आ जीवनमे छलक व्यापक उपस्थिति।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

९७९. “फानी” आ “नो एंट्री” दुनूमे कोन समान सामाजिक व्यंग्य अछि?

- (A) न्याय/व्यवस्था/क्रमक मंच पर लोभ आ छलक प्रवेश।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

९८०. एहि बैचक समग्र दृष्टि की अछि?

- (A) व्यक्ति-पीड़ा मार्फत समाजक संरचनात्मक अन्यायकें देखब।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

खण्ड ६०३ : विदेह-सदेह १ — व्यवस्था-व्यंग्य: पंचायतसँ यमालय धरि

९८१. “फानी”क पंचायत आ “नो एंट्री”क कतारमे साझा संरचना की अछि?

- (A) अनुशासनक नाम पर असल शक्ति-क्रीड़ा।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

९८२. रामअधीन नेता आ पॉकेटमारक चालमे साझा तत्त्व की अछि?

- (A) मौका पाबि संसाधन/स्थान हथियाएब।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

९८३. जातिनाम खाता आ स्वर्ग-द्वारक बटुआ प्रसंग कोन सवाल उठबैत अछि?

- (A) धनक सामाजिक उपयोग बनाम धनक निरर्थकता।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

९८४. महरैलवालीक प्रतिरोध आ भिखमंगनीक संवादक समानता की अछि?

- (A) हाशिये पर रहल स्त्री-पात्र अचानक सत्ता/वासना-भाषाकें चुनौती दैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

९८५. “फानी”क गहबर-तर्क आ “नो एंट्री”क वज्र-बीमा बीच कोन व्यंग्य-सूत्र अछि?

- (A) धर्म/दैवी नामक आर्थिक उपयोग।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

९८६. बैकुंठ झाक “सब चोर-चोर” पंक्ति “नो एंट्री”क चोर-पॉकेटमार दृश्यसँ कोना संवाद करैत अछि?

- (A) व्यक्तिगत चोरक मंच व्यापक सामाजिक चोरिएल संसारक रूपक बनैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

९८७. रामअधीनक पंचायतक सबसे खतरनाक पक्ष की अछि?

- (A) कानूनक भय देखाकऽ गरीबकेँ सामुदायिक निर्णयमे कैद करब।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

९८८. “नो एंट्री”मे मृत पात्र सभक जीवित आदत बाँचल रहबाक अर्थ की अछि?

- (A) मृत्यु नैतिक रूपांतरण आपसँ नहि करैत।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

९८९. “दुनियाँ तँ ई धोखा अछि” एहि दू दृश्यक व्याख्या कोना करैत अछि?

- (A) धोखा केवल बाजारमे नहि, धर्म, न्याय, राजनीति आ परलोक कल्पना धरि पसरल अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

९९०. एहि खण्डक आलोचनात्मक निष्कर्ष की अछि?

- (A) व्यवस्था बदलल बिना न्यायक मंचो शोषणक मंच बनि सकैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

खण्ड ६०४ : विदेह-सदेह १ — बैच ५८५-६०३ पुनरावलोकन

९९१. एहि बैचमे “मिथिला मंथन”क पूनम प्रसंगक केंद्रीय शिक्षा की अछि?

- (A) लड़कीक प्रतिभा सुविधा-अभाव आ विवाह-दबावसँ नष्ट भऽ सकैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

९९२. “प्यास” एहि बैचमे प्रवासक कोन भाव जोड़ैत अछि?

- (A) गाम छोड़लाक बादो भूख, नेहक कमी आ मनक प्यास।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

१९३. “मरदे कि बरदे”क महेन्द्र कापर प्रसंगक सार की अछि?

- (A) विदेशी चमकक पाछाँ ऋणग्रस्त, अकेल श्रमिकक कठोर जीवन।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

१९४. “फानी”क सबसे मजबूत सामाजिक आलोचना की अछि?

- (A) जाति-पंचायत आ स्थानीय नेता द्वारा न्यायक नाम पर गरीबक जमीन पर नजर।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

१९५. “नो एंट्री” परलोक-द्वारकें ककर मंच बनबैत अछि?

- (A) मानवीय लोभ, पेशागत चालाकी, वासना आ हास्य-व्यंग्यक।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

१९६. बैकुंठ झाक गीत एहि बैचक सामाजिक स्वरकें कोन वाक्यमे समेटैत अछि?

- (A) दुनियाँ छल-धोखासँ भरल अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

१९७. “अनुमति” कविता एहि बैचमे श्रम-विमर्शकें कोन दिशा दैत अछि?

- (A) थोड़ा विश्राम माँगैत श्रमिकक स्वर प्रतिरोधमे बदलैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

१९८. पूनम, महेन्द्र, श्रमिक-वक्ता आ रेवाड़ीवाली मे साझा तत्व की अछि?

- (A) हाशिये पर रहल लोकक पीड़ा आ सीमित विकल्प।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

१९९. एहि बैचमे हास्यक प्रयोग कतेक प्रकारें भेल अछि?

- (A) व्यंग्यक माध्यमे गम्भीर सामाजिक सड़ाँध खोलबाक लेल।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

१०००. आगाँक पाठ लेल मुख्य सूत्र की बचैत अछि?

- (A) स्रोतक प्रत्येक रचना कें सामाजिक-सांस्कृतिक गहराईसँ पढ़ब।
- (B) ई विकल्प स्रोत-प्रसंगक मुख्य अर्थ सँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई बात एहि अंशमे केंद्रस्थ नहि अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

खण्ड ६०५ : विदेह-सदेह १ — विभा रानी: जीवन, लेखन आ रंग-साधना

१००१. विभा रानीक परिचयमे हुनका कोना देखाओल गेल अछि?

- (A) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (B) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (C) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (D) लेखिका, अनुवादक, रंगकर्मी, पत्रकार आ सामाजिक कार्यकर्ता रूपमे।

१००२. विभा रानीक अनुवादक भूमिका किएक महत्त्वपूर्ण अछि?

- (A) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (B) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (C) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (D) मैथिलीक प्रमुख अकादमी-पुरस्कृत लेखकक कृति हुनका द्वारा हिन्दीमे पहुँचल।

१००३. विभा रानीक लेखनमे कोन विषय-क्षेत्र प्रमुख रूपेँ देखाइत अछि?

- (A) समकालीन विषय, फिल्म, महिला, बाल-विषय आ लोक-संस्कृति।
- (B) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (C) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (D) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।

१००४. मिथिलाक लोक-संसार पर विभा रानीक काज कोन बातसँ स्पष्ट अछि?

- (A) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (B) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (C) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (D) लोककथा, रीति-रिवाज, लोकगीत आ खान-पानक संकलन-संवर्धनसँ।

१००५. ‘भाग रौ’ विभा रानीक कृतित्वमे कोन स्थान रखैत अछि?

- (A) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (B) मैथिलीमे लिखल हुनकर नाटक सभमे एक प्रमुख नाटक।
- (C) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (D) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।

१००६. “थिएटर व आर्ट—सभी के लिए” दृष्टि की संकेत करैत अछि?

- (A) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (B) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (C) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (D) कला केँ सामाजिक सहभागिता आ परिवर्तनक माध्यम मानल गेल अछि।

१००७. “रंग जीवन” दृष्टिक तहत विभा रानी कोन समूह सभ संग काज करैत छथि?

- (A) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (B) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (D) जेल-बन्दी, वृद्धाश्रम, अनाथालय, विशेष बच्चा आ मुख्यधाराक लोक सभ संग।

१००८. रेडियो, फिल्म आ टीवी अनुभव हुनकर नाट्य-लेखनकेँ की देइत अछि?

- (A) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (B) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (C) स्वर, दृश्य आ मंचीय संवेदनाक संयुक्त अनुभव।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

१००९. “अवितोको” संस्था संग जुड़ावक अर्थ की अछि?

- (A) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (B) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (C) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (D) कला-संस्कृतिक माध्यमे सामाजिक विकासक सक्रिय योजना।

१०१०. विभा रानीक परिचय आ “भाग रौ” मे साझा सूत्र की अछि?

- (A) सामाजिक प्रश्नकें रंगमंचीय रूप देबाक प्रवृत्ति।
- (B) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (D) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।

खण्ड ६०६ : विदेह-सदेह १ — “भाग रौ”: पात्र-सूची आ मंच-परिसर

१०११. “भाग रौ”क पात्र-सूची नाटकक सामाजिक संसार कोना बनबैत अछि?

- (A) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (B) भिखारी बच्चा, पुलिस, यात्री, पत्रकार, गुंडा, हिजड़ा, परिवार आ दर्शक सभकें संग रखि।
- (C) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (D) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।

१०१२. मंगतू पात्रक नाम कोन सामाजिक संकेत दैत अछि?

- (A) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (B) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (C) भीख, सड़क-जीवन आ वंचनाक संसार।
- (D) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।

१०१३. भीखारी बच्चा १, २, ३ सन नामकरणक प्रभाव की अछि?

- (A) ओ सभ व्यक्तिगत संगहि वर्ग-प्रतिनिधि बनि जाइत अछि।
- (B) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

१०१४. पुलिस पात्रक उपस्थिति कोन तनावक पूर्व-सूचना दैत अछि?

- (A) सड़कपर रहनिहार गरीब बच्चा आ राज्य-बल बीच टकराव।
- (B) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (C) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

१०१५. पत्रकार युवक-युवती पात्र-सूचीमे रहबाक अर्थ की भऽ सकैत अछि?

- (A) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (B) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (C) सड़क-यथार्थकें देखब, लिखब वा रिपोर्ट करबाक संभावना।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

१०१६. गुंडा पात्र सभ नाटकक वातावरणमे की जोड़ैत अछि?

- (A) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (B) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (C) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (D) असुरक्षा, दबंगई आ हिंसक सत्ता।

१०१७. हिजड़ा पात्र सभक उपस्थिति नाटकक सामाजिक दृष्टि कोना बढ़बैत अछि?

- (A) हाशियाक लैंगिक समुदायकेँ मंचीय समाजमे जगह दैत अछि।
- (B) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (D) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।

१०१८. “आदमी”, “स्त्री”, “पुरुष” सन सामान्य नाम कोन प्रयोग करैत अछि?

- (A) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (B) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (C) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (D) विशेष व्यक्ति सँ आगू बढ़ि सामाजिक प्रकार बनबैत अछि।

१०१९. ट्रेन नहि तऽ हाट-बाजार/मेला-ठेला सेहो भऽ सकैत अछि — एकर अर्थ की?

- (A) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (B) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (C) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (D) दृश्य कोनो एक स्थान नहि, व्यापक सार्वजनिक स्थल-यथार्थ अछि।

१०२०. “भाग रौ” शीर्षक आ पात्र-सूची मिलि कोन भाव बनबैत अछि?

- (A) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (B) सड़कक भय, भगदड़, जीविका आ बचबाक संघर्ष।
- (C) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (D) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।

खण्ड ६०७ : विदेह-सदेह १ — “भाग रौ” दृश्य १: बाल-भिखारी आ भूख

१०२१. दृश्य १ मे तीनू बच्चा भीख माँगबाक लेल कोन साधन लैत अछि?

- (A) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (B) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (C) हारमोनियम, पत्थरक खपटा आ खँजड़ी।
- (D) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।

१०२२. तीनू बच्चाक फाटल-चीकट कपड़ा कोन दृश्य-चिह्न अछि?

- (A) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (B) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (C) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (D) बाल-दरिद्रताक तीख संकेत।

१०२३. बच्चा ३क भूमिका एहि दृश्य मे की अछि?

- (A) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (B) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (C) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (D) छोट, भूखसँ पीड़ित आ भोला प्रश्न करैत बाल-स्वर।

१०२४. दिन भरक कमाई “साढ़े एगारह” सुनि की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) मेहनत बहुत, कमाई अपर्याप्त।
- (B) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (C) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (D) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।

१०२५. “गरीबसँ बेसी गरीब बनल रह” कथन कोन सच खोलैत अछि?

- (A) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (B) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (C) दया पाबय लेल गरीबीक अभिनय सेहो करय पड़ैत अछि।
- (D) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।

१०२६. पटना-दानापुर-साहेब संवाद कोन व्यंग्य करैत अछि?

- (A) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (B) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (D) नाम बदललासँ गरीबक भूख नहि बदलैत।

१०२७. बच्चा ३ प्रधानमंत्री केँ खायबला चीज बुझैत अछि — अर्थ की?

- (A) राजनीतिक शब्द भूखल बच्चा लेल भोजनक प्रश्नमे बदलि जाइत अछि।
- (B) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (C) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (D) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।

१०२८. बच्चा ३क “भूख” पुकार दृश्यक लयमे की करैत अछि?

- (A) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (B) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (C) हास्य/संवादक बीच असली पीड़ा निरंतर जीवित राखैत अछि।
- (D) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।

१०२९. टी.वी. आ समाचारक उल्लेख बच्चा सभक संसारमे की देखबैत अछि?

- (A) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (B) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (C) मीडिया-सूचना अबैत अछि, मुदा पेट नहि भरैत।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

१०३०. दृश्य १क बाल-भिखारी प्रसंगक मूल संवेदना की अछि?

- (A) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (B) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (C) बचपनक स्थान पर जीविका, भूख आ अपमान आ गेल अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

खण्ड ६०८ : विदेह-सदेह १ — “भाग रौ”: मंगतू, पढ़ाई आ अखबार

१०३१. मंगतू पात्र बच्चा सभ लेल किएक जिज्ञासा जगबैत अछि?

- (A) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (B) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (C) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (D) ओ पढ़ल-लिखल भिखारी जकाँ देखाइत अछि।

१०३२. मंगतू अखबार कोना पबैत अछि?

- (A) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (B) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (C) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (D) प्रेसक बाहर बैसि चौकीदारसँ पुरान अखबार पबैत अछि।

१०३३. बच्चा ३ “पढ़ल” केँ स्टेशन जकाँ बुझैत अछि — अर्थ की?

- (A) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (B) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (C) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (D) अमूर्त शिक्षा ओकर अनुभव-संसारसँ बाहर अछि।

१०३४. बच्चा १ पढ़ाईक बारेमे की स्वीकार करैत अछि?

- (A) पढ़ल-पढ़ि लोक पैघ बनैत अछि, मुदा अपन भाग्य मे नहि।
- (B) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (C) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

१०३५. बच्चा ३क “हमहू पढ़ब” कथनक महत्त्व की अछि?

- (A) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (B) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (C) भूखक बीचो शिक्षा-कामना जीवित अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

१०३६. “पढ़ि लेलासँ बेसी भीख भेटत” धारणा कोन कटु व्यंग्य अछि?

- (A) शिक्षा सेहो पेटक रणनीति बनि बुझाइत अछि।
- (B) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (C) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

१०३७. मंगतू “धंधा-पानी” कहि भीख केँ कोना नाम दैत अछि?

- (A) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (B) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (C) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (D) सड़कक रोजी-रोटी-व्यवस्था रूपमे।

१०३८. मंगतू बरसात नीक कहैत अछि आ बच्चा सभ नाराज — कारण की?

- (A) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (B) एकर लेल हरियाली, ओहिर लेल भीख बन्द करनिहार विपत्ति।
- (C) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (D) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।

१०३९. मंगतू आ बच्चा सभक “घर” संवाद की खोलैत अछि?

- (A) भिखारी बच्चा सभक असल घर-सुरक्षा टूटल अछि।
- (B) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (D) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।

१०४०. मंगतू प्रसंग शिक्षा-विमर्शकेँ कोना जोड़ैत अछि?

- (A) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (B) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (C) अखबार, पढ़ाई आ भूखक संबंध सड़कक स्तरपर खुलैत अछि।
- (D) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।

खण्ड ६०९ : विदेह-सदेह १ — “भाग रौ”: पुलिस, बरखा आ सार्वजनिक हिंसा

१०४१. बरखा पड़ला पर बच्चा सभक भीख पर कोन असर पड़ैत अछि?

- (A) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (B) लोक घर/दुकान/कार्यालयमे बन्द होइत अछि, तँ भीख घटैत अछि।
- (C) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (D) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।

१०४२. भीजल माय-बच्चाक उदाहरणसँ नाटक की कहैत अछि?

- (A) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (B) भवनक नीचे सेहो गरीबकेँ आसरा नहि भेटैत अछि।
- (C) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

१०४३. पुलिसक प्रवेश भाव-गति कोना बदलैत अछि?

- (A) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (B) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (C) संवादसँ हिंसा आ भगदड़ दिस।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

१०४४. पुलिस बच्चा सभपर पॉकिटमारीक आरोप लगबैत अछि — अर्थ की?

- (A) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (B) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (C) गरीबीकेँ अपराध मानबाक प्रवृत्ति।
- (D) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।

१०४५. मंगतू पुलिसक मारसँ किएक बचि नहि पबैत?

- (A) बच्चा सभक रक्षा-प्रयासमे स्वयं सेहो चोट खाइत अछि।
- (B) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (C) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

१०४६. पुलिसक मंगतू पर “मौज” कहब कोन व्यंग्य अछि?

- (A) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (B) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (C) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (D) पीड़ाकेँ मौज कहि उपहास करब।

१०४७. “भाग रौ” शीर्षक पुलिस-दृश्य मे कोना मूर्त होइत अछि?

- (A) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (B) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (D) बच्चा सभ डंडासँ बचबाक लेल गली दिस भागैत अछि।

१०४८. पुलिस-दृश्य बाल-अधिकारक कोन प्रश्न उठबैत अछि?

- (A) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (B) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (C) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (D) भूखल आ बेघर बच्चा अपराधी नहि, संरक्षणक अधिकारी छथि।

१०४९. बरखा, भूख आ पुलिसक संगम की बनबैत अछि?

- (A) प्रकृति, पेट आ सत्ता—तीनू दबावक त्रिकोण।
- (B) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (C) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

१०५०. एहि दृश्यक असहज प्रश्न की अछि?

- (A) सार्वजनिक स्थलमे कोन लोक सुरक्षित, कोन लोक लगातार हाँकल जाइत अछि।
- (B) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (C) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

खण्ड ६१० : विदेह-सदेह १ — “भाग रौ” : रंग-शिल्प आ सामाजिक व्यंग्य

१०५१. ट्रेन/हाट/मेला विकल्प नाटकमे किएक महत्त्वपूर्ण अछि?

- (A) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (B) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (D) कथा केँ व्यापक सार्वजनिक स्थलपर लागू करैत अछि।

१०५२. भिखारी बच्चा सभक संगीत नाटकमे की करैत अछि?

- (A) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (B) मनोरंजनक भेषमे दैन्य आ भूख देखबैत अछि।
- (C) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

१०५३. बच्चा ३क भोले प्रश्नक नाट्य-प्रयोग की अछि?

- (A) वयस्क समाजक शब्द आ व्यवस्था पर बाल-भूखक आईना।
- (B) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

१०५४. मंगतू पढ़ैत अछि मुदा भिखारी अछि — अर्थ की?

- (A) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (B) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (C) ज्ञान मात्रसँ संरचनात्मक गरीबी नहि टूटैत।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

१०५५. नाम-परिवर्तन पर बाल-टिप्पणी की खोलैत अछि?

- (A) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (B) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (C) प्रतीकात्मक राजनीति बनाम पेटक यथार्थक टकराव।
- (D) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।

१०५६. बरखा पर विपरीत प्रतिक्रिया कोन अर्थ दैत अछि?

- (A) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (B) एकहि प्रकृति अलग सामाजिक स्थिति मे अलग अनुभव बनैत अछि।
- (C) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

१०५७. पुलिस-दृश्य नाटकक नैतिक केंद्र किएक अछि?

- (A) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (B) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (C) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (D) राज्य-बलक सामने बाल-गरीबीक असुरक्षा देखबैत।

१०५८. “भाग रौ” मे भाषा कतेक स्तरपर चलैत अछि?

- (A) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (B) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (C) सड़क-बोलचाल, व्यंग्य, बाल-भोलापन आ सत्ता-भाषा।
- (D) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।

१०५९. शीर्षक “भाग रौ” एक आदेश मात्र नहि, आर की अछि?

- (A) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (B) हाशियाक जीवनक लगातार भगाइल जाएबाक अनुभव।
- (C) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (D) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।

१०६०. “भाग रौ”क केंद्रीय सामाजिक प्रश्न की अछि?

- (A) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (B) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (C) भूखल बच्चा दया, ज्ञान, राज्य आ सार्वजनिक स्थानसँ कोना टकराइत अछि।
- (D) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।

खण्ड ६११ : विदेह-सदेह १ — विद्यानन्द झा “मोहनजी” आ “सृष्टि चक्र”

१०६१. विद्यानन्द झाक मुख्य पारंपरिक पहचान की अछि?

- (A) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (B) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (C) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (D) पंजीकार मोहनजी रूपमे।

१०६२. विद्यानन्द झाक पिताक परिचय कोन पृष्ठभूमि सूचित करैत अछि?

- (A) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (B) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (C) पंजीशास्त्रक विद्वत् पारिवारिक पृष्ठभूमि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

१०६३. “सृष्टि चक्र” कोन आरम्भ-बिम्बसँ चलैत अछि?

- (A) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (B) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (C) शून्यसँ सृष्टि आ शान्तिक आरम्भ।
- (D) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।

१०६४. कविता मे “शून्य” केवल खालीपन नहि, आर की बनैत अछि?

- (A) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (B) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (D) सत्ता, शान्ति, आरम्भ आ विरामक आधार।

१०६५. “सृष्टि चक्र”मे विधाता की रचैत छथि?

- (A) खेत, पथार, पोखरि, जीव-संचार आ संसार-विस्तार।
- (B) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (C) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (D) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।

१०६६. दिति-अदिति उल्लेख कोन अर्थ खोलैत अछि?

- (A) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (B) पुराण-सांस्कृतिक आधारसँ सृष्टि-विस्तारक कल्पना।
- (C) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (D) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।

१०६७. कर्म सभ धरतीपर आनल गेल — भाव की अछि?

- (A) जीवनक विविध कर्मफल-संरचना सृष्टिसँ जुड़ल अछि।
- (B) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (C) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (D) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।

१०६८. वृत्त-विस्तारक बिम्बक अर्थ की अछि?

- (A) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (B) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (D) शून्यक विखंडनसँ रूप, भूगोल आ जीवनक विस्तार।

१०६९. कविता संसारक विविधता केना देखबैत अछि?

- (A) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (B) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (C) जलचर, थलचर, नभचर, भेष-भाषा आ गोत्रक बहुलता।
- (D) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।

१०७०. पंजी-परिचय आ “सृष्टि चक्र” बीच सांकेतिक संबंध की अछि?

- (A) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (B) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (C) वंश-विस्तार आ सृष्टि-विस्तार दुनू क्रम-स्मृति सँ जुड़ैत अछि।
- (D) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।

खण्ड ६१२ : विदेह-सदेह १ — “सृष्टि चक्र”: बहुलता, द्वन्द्व आ भूख

१०७१. “विष ओ अमृत संग जनमि गेल”क अर्थ की अछि?

- (A) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (B) सृष्टिमे शुभ-अशुभ, सुख-दुख संगहि जन्मैत अछि।
- (C) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (D) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।

१०७२. “स्नेह-प्रेम-आघात” एकसंग आबि की रचैत अछि?

- (A) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (B) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (D) संबंधक मिठास आ चोट दूनू।

१०७३. “चोर-उचक्का” आ “भलमानुष”क एकसंग जन्म कोन दृष्टि दैत अछि?

- (A) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (B) नैतिक विरोधी रूप एकहि सृष्टिक अंश अछि।
- (C) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

१०७४. विविध भेष-भाषा आ गोत्रक बखानक अर्थ की?

- (A) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (B) पहिचानक बहुलता सृष्टिक स्वाभाविक अंग अछि।
- (C) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

१०७५. “भूख रचल प्यास रचल” पंक्तिसँ दिशा कोना बदलैत अछि?

- (A) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (B) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (C) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (D) ब्रह्मांडीय रचना सँ मानवीय देह-आवश्यकता दिस।

१०७६. “काम भूख दाम भूख” मे भूख कोना फैलैत अछि?

- (A) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (B) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (D) देह, धन, वासना, मान, दान सभमे।

१०७७. “शाम-दाम-दंड-भेद” कोन क्षेत्र आनैत अछि?

- (A) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (B) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (C) शासन, नीति, नियंत्रण आ कुशासन।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

१०७८. “काम-क्रोध-लोभ-मोह” कोन भाषा खोलैत अछि?

- (A) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (B) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (C) मानवीय दोष आ अंतःसंघर्षक भाषा।
- (D) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।

१०७९. “नेता भगवान” आ “पंडा शैतान” बिम्बक अर्थ की अछि?

- (A) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (B) सत्ता आ धर्मक विकृतिक आलोचना।
- (C) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (D) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।

१०८०. “सृष्टि चक्र”क समग्र यात्रा की अछि?

- (A) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (B) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (D) शून्यसँ संसार, संसारसँ समाज, समाजसँ नैतिक विघटन धरि।

खण्ड ६१३ : विदेह-सदेह १ — विनीत उत्पलः पत्रकारिता, कविता आ “ककर गलती”

१०८१. विनीत उत्पलक शिक्षा-यात्रा कोन प्रकृति देखबैत अछि?

- (A) गणित, जनसंचार, पत्रकारिता आ रचनात्मक लेखनक बहु-विषयक पृष्ठभूमि।
- (B) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (C) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (D) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।

१०८२. विनीत उत्पलक प्रसारण अनुभव कोन माध्यमसँ जुड़ल अछि?

- (A) आकाशवाणी भागलपुरसँ कविता-पाठ आ परिचर्चा।
- (B) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (D) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।

१०८३. विनीत उत्पल कतेक पत्रकारिता-परिसरमे सक्रिय रहल छथि?

- (A) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (B) अनेक पत्र-पत्रिका आ समाचार-संस्थामे।
- (C) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (D) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।

१०८४. “ककर गलती”क वक्ता गाम जाइत की देखिकेँ स्तब्ध होइत अछि?

- (A) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (B) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (C) गौरी दायक विधवा जीवन।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

१०८५. गौरी दायक उजरा नुआ आ सेनूर-अभाव कोन अर्थ दैत अछि?

- (A) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (B) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (C) नवयुवती विधवाक सामाजिक चिह्न आ वंचना।
- (D) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।

१०८६. “की यह मिथिला थिक” प्रश्न कोन आलोचना करैत अछि?

- (A) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (B) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (D) संस्कृतिक नाम पर स्त्री-जीवनक दमन।

१०८७. गौरी दायक पति मृत्युकें कविता कोना देखैत अछि?

- (A) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (B) बीमारीक कारण मृत्यु; स्त्रीक दोष नहि।
- (C) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (D) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।

१०८८. विवाह-व्यवस्था पर कविता कोन प्रश्न उठबैत अछि?

- (A) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (B) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (D) घटक/द्वितीकारक सूचना आ वरक बीमारी लुकाएल होएबाक जिम्मेदारी।

१०८९. गौरी दायक खुशीमे नोत नहि देल जाएब कोन व्यवहार देखबैत अछि?

- (A) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (B) विधवा केँ अशुभ मानि सामाजिक अलगाव।
- (C) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (D) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।

१०९०. “ककर गलती” शीर्षकक मूल संकेत की अछि?

- (A) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (B) गलती स्त्रीक नहि, सामाजिक विवाह-संरचना आ रूढ़ि अछि।
- (C) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (D) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।

खण्ड ६१४ : विदेह-सदेह १ — विनीत उत्पल: “समर्पण” आ नृत्य-संवेदना

१०९१. “समर्पण” कविता ककर लेल समर्पित अछि?

- (A) कथक नृत्यांगना पुनीता शर्मा लेल।
- (B) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

१०९२. कविता जीवनक जीवंतता आ मनुष्यता केँ ककर संग जोड़ैत अछि?

- (A) मन, भाव आ समर्पणक अवस्था संग।
- (B) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

१०९३. राग मालकौसक उल्लेख कोन वातावरण बनबैत अछि?

- (A) शास्त्रीय संगीत, प्रकाश आ देह-अभिव्यक्तिक गहन मंच।
- (B) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (D) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।

१०९४. नर्तकीक देहमे देवता बैस गेल जकाँ लागबक अर्थ की?

- (A) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (B) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (C) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (D) कला-क्षणमे कलाकार निजी देह पार कऽ ऊर्ध्व अनुभव दैत अछि।

१०९५. चक्कर/ठाठक वर्णन कठिन किएक अछि?

- (A) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (B) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (C) शब्द नृत्य-अनुभवक पूर्णता पकड़ि नहि पबैत।
- (D) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।

१०९६. “समर्पण” मे प्रेम, परिवार आ कला बीच संबंध की अछि?

- (A) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (B) नर्तकीक पूर्ण समर्पणसँ ओकर प्रिय/परिजन सेहो भाग्यशाली मानल जाइत अछि।
- (C) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (D) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।

१०९७. “संपूर्ण अस्तित्व नृत्य मे झोंक देब”क भाव की अछि?

- (A) कलाक प्रति पूर्ण देह-मन समर्पण।
- (B) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (C) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

१०९८. “समर्पण” आ “ककर गलती” कोना भिन्न छथि?

- (A) एक सामाजिक रूढ़ि पर प्रश्न, दोसर कला-देहक उत्सव।
- (B) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (C) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

१०९९. कविता नर्तकीक मंच-उपस्थिति केँ की बनबैत अछि?

- (A) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (B) राग, रोशनी, देह, भाव आ आत्मा-केंद्रित दृश्य।
- (C) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (D) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।

११००. “समर्पण”क केंद्रीय सौंदर्य-बोध की अछि?

- (A) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (B) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (C) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (D) कला पूर्ण समर्पणमे देहसँ देवत्व-जकाँ उजास पबैत अछि।

खण्ड ६१५ : विदेह-सदेह १ — देवांशु वत्स: मैथिली चित्र-शृंखला “नताशा”

११०१. देवांशु वत्सक “मैथिली चित्र-शृंखला”क अर्थ की अछि?

- (A) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (B) कॉमिक्स/चित्र-कथा माध्यमे मैथिली अभिव्यक्ति।
- (C) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

११०२. देवांशु वत्सक रचनात्मक क्षेत्र कोन-कोन विधा धरि पसरल अछि?

- (A) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (B) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (C) कथा, लघुकथा, विज्ञान-कथा, चित्र-कथा, कार्टून आ चित्र-पहेली।
- (D) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।

११०३. “नताशा”मे शिक्षण-दृश्यक हास्य कोन बातसँ जन्मैत अछि?

- (A) बाल-भाषा आ शिक्षक/बुजुर्गक शब्दार्थ-भ्रमसँ।
- (B) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (C) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (D) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।

११०४. पहिल कॉमिक दृश्य मे नताशा ककरा सड़क पार करबाक बात कहैत अछि?

- (A) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (B) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (C) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (D) पाँचटा बच्चा एकटा बूढ़ि माय केँ।

११०५. “बूढ़िका पार हँकायब” प्रसंगक हास्य-तत्त्व की अछि?

- (A) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (B) सहायता-भाव आ बाल-अतिशयोक्ति एक संग अबैत अछि।
- (C) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (D) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।

११०६. दोसर कॉमिकमे “माय” कहि जोत देब पर बाल-प्रतिक्रिया की करैत अछि?

- (A) शब्दार्थकें शाब्दिक पकड़ि हास्य बनबैत अछि।
- (B) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (C) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (D) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।

११०७. डॉक्टर-संवादमे “कनेक काल बाद कतेक पाइ” प्रश्न की बनबैत अछि?

- (A) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (B) इलाज/फीसक व्यावहारिकता पर बाल-संदेह।
- (C) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (D) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।

११०८. “तीन टा पैसेंट परा गेल” कथनक प्रभाव की अछि?

- (A) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (B) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (C) डॉक्टर/बच्चा संवादमे भय, गलतफहमी आ हास्यक झटका।
- (D) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।

११०९. “जंग” विज्ञान-कथा उल्लेख कोन दिशा देखबैत अछि?

- (A) बाल/किशोर विज्ञान-कथाक प्रकाशन-दिशा।
- (B) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

१११०. “नताशा”क महत्त्व मैथिली साहित्य-संसारमे की अछि?

- (A) चित्र, हास्य, बाल-दृष्टि आ मैथिली संवादकें मिलाकऽ आधुनिक दृश्य-आख्यान बनबैत अछि।
- (B) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (C) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (D) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।

खण्ड ६१६ : विदेह-सदेह १ — नवीन नाथ झा “नवनीत” आ “दया करू माँ”

११११. “दया करू माँ” कोन भावभूमि पर अछि?

- (A) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (B) भक्ति, शरणागति आ विश्व-कल्याणक प्रार्थना।
- (C) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (D) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।

१११२. “अहाँक शरणमे आएल छी माँ” पंक्तिक भाव की अछि?

- (A) भक्त अपन दुःखक समाधान मातृ-दैवी करुणामे ताकैत अछि।
- (B) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (C) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (D) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।

१११३. गीतमे संसार के कोना चित्रित कएल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (B) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (C) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (D) माया-जाल, स्वार्थ, आतंक, अज्ञान आ अनुशासन-अभावसँ भरल।

१११४. “सत्कर्मक भाव जन-जनमे” भरबाक याचना की सूचित करैत अछि?

- (A) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (B) नैतिक सामाजिक सुधारक आकांक्षा।
- (C) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

१११५. “सत्यम् शिवम् सुन्दरम्” कोन त्रयीकेँ जोड़ैत अछि?

- (A) सत्य, मंगल/शिवत्व आ सौंदर्य।
- (B) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (C) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (D) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।

१११६. “वसुधैव कुटुम्ब” विचार गीतमे की काम करैत अछि?

- (A) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (B) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (C) विश्व-परिवारक व्यापक मानवीय दृष्टि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

१११७. गीतमे “स्वार्थक लीला”क अर्थ की अछि?

- (A) जगतक व्यवहार करुणा सँ दूर भऽ गेल अछि।
- (B) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (C) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (D) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।

१११८. “दुःखी जनक दुःख दूर करू” पंक्तिसँ सामाजिक विस्तार की अछि?

- (A) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (B) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (C) भक्ति निजी दुखसँ आगू बढ़ि सामूहिक पीड़ा धरि जाइत अछि।
- (D) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।

१११९. नवीन नाथ झाक गीत एहि भागमे कोन ध्वनि जोड़ैत अछि?

- (A) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (B) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (C) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (D) वंचना आ व्यंग्यक बीच करुणामय प्रार्थना।

११२०. “दया करू माँ”क केन्द्रीय आग्रह की अछि?

- (A) माँक करुणासँ व्यक्ति, समाज आ विश्वक अंधकार दूर हो।
- (B) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (C) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (D) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।

खण्ड ६१७ : विदेह-सदेह १ — विस्मृत कवि रामजी चौधरी: भजन, राग आ विरह

११२१. रामजी चौधरीक “भजन भैरवी”क मुख्य भाव की अछि?

- (A) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (B) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (C) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (D) हरि चरणमे अनुराग आ वासना-दंभ-कपट त्याग।

११२२. “सुत-बनिता-परिजन” अन्तमे काज नहि आबत — अर्थ की?

- (A) भक्ति-पथमे सांसारिक संबंध अंतिम सहारा नहि।
- (B) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

११२३. “बिनु हरि भजन बृथा जात दिन” की चेतावनी दैत अछि?

- (A) भजन बिना जीवन-दिन व्यर्थ जकाँ बीतैत अछि।
- (B) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (C) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (D) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।

११२४. राग विहागक पदमे कोन उद्धार-स्मरण अछि?

- (A) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (B) अहिल्या, गजेन्द्र आ द्रौपदीक प्रसंग।
- (C) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (D) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।

११२५. “राम बिनु दोसर आन को” भावक आधार की अछि?

- (A) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (B) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (C) ईश्वर-आश्रयक विशिष्ट भक्ति-सिद्धान्त।
- (D) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।

११२६. चैतक ठुमरी मे “पिया नहि आएल” कोन भाव जगबैत अछि?

- (A) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (B) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (D) ऋतुराज बीच विरह, बेचैनी आ प्रतीक्षा।

११२७. चैत-ठुमरी मे प्रकृति-वर्णनक भूमिका की अछि?

- (A) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (B) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (C) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (D) बाहरी ऋतु-सौंदर्य आ भीतरी विरहक टकराव।

११२८. रामजी चौधरीक तीन रचनात्मक स्वर कोन-कोन अछि?

- (A) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (B) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (C) भक्ति, उद्धार-स्मरण आ विरह-ठुमरी।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

११२९. “भजन भैरवी” आ “दया करू माँ” मे समानता की अछि?

- (A) दुनू दैवी करुणा आ नैतिक जागरण दिस लौटैत अछि।
- (B) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (C) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (D) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।

११३०. रामजी चौधरीक रचनाक पुनर्पाठक महत्त्व की अछि?

- (A) विस्मृत मैथिली भक्ति-संगीत परंपरा केँ फेर सुनाएब।
- (B) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (C) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (D) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।

खण्ड ६१८ : विदेह-सदेह १ — मानक मैथिली: पंचमाक्षर आ अनुस्वार

११३१. मानक मैथिली अंशक प्रारम्भ कोन दू स्रोत-धारा राखैत अछि?

- (A) नेपालक भाषा-वैज्ञानिक मानक आ मैथिली अकादमी पटना लेखन-शैली।
- (B) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (C) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

११३२. पंचमाक्षर मे कोन अक्षर-समूह अबैत अछि?

- (A) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (B) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (C) ङ, ज, ण, न, म।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

११३३. संस्कृत-नियम अनुसार वर्गक अन्तमे कोन अक्षर अबैत अछि?

- (A) ओहि वर्गक पंचमाक्षर।
- (B) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (D) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।

११३४. मैथिली व्यवहारमे पंचमाक्षरक बदला अक्सर की देखल जाइत अछि?

- (A) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (B) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (C) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (D) अनुस्वारक प्रयोग।

११३५. गोविन्द झाक सुझाव अनुसार कवर्ग, चवर्ग आ टवर्गसँ पूर्व की लिखल जाय?

- (A) अनुस्वार।
- (B) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (C) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

११३६. तवर्ग आ पवर्गसँ पूर्व की लिखल जाय?

- (A) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (B) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (C) पंचमाक्षर।
- (D) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।

११३७. अनुस्वारक छोट बिन्दु अस्पष्ट भेलासँ कोन समस्या होइत अछि?

- (A) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (B) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (C) अर्थक अनर्थ आ उच्चारण-दोषक सम्भावना।
- (D) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।

११३८. कसँ पवर्ग धरि पंचमाक्षर प्रयोगक पक्षमे कारण की अछि?

- (A) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (B) स्पष्ट लेखन आ उच्चारण-सुरक्षा।
- (C) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (D) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।

११३९. यसँ ज धरि अक्षरक संग अनुस्वारक प्रयोग पर दृष्टि की अछि?

- (A) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (B) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (C) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (D) एहि क्षेत्रमे विवाद नहि देखल जाइत।

११४०. पंचमाक्षर-अनुस्वार चर्चा मानक मैथिलीक कोन लक्ष्य सूचित करैत अछि?

- (A) लेखन, उच्चारण आ अर्थक स्थिरता।
- (B) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (C) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (D) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।

खण्ड ६१९ : विदेह-सदेह १ — मानक मैथिली: ढ/ढ़, “न्ह”, ऐ/औ आ रूप-विकल्प

११४१. मानक मैथिली अंशमे “ढ़”क उच्चारण कोना बताओल गेल अछि?

- (A) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (B) “रू ह” जकाँ।
- (C) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (D) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।

११४२. जतय “रू ह” सदृश उच्चारण इष्ट हो, ओतय कोन अक्षर लिखबाक संकेत अछि?

- (A) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (B) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (C) ढ।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

११४३. प्राचीन मैथिलीक “न्ह” ध्वनिक स्थानमे की वैकल्पिक रूपें लिखल जा सकैत अछि?

- (A) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (B) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (C) “न”।
- (D) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।

११४४. “ऐ” आ “औ” ततय लिखबाक नियम की अछि?

- (A) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (B) जतय स्पष्टतः “अइ” वा “अउ” सदृश उच्चारण चाही।
- (C) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

११४५. जैह, सैह, इएह, ओऐह, लैह, दैह सन रूप सभक स्थिति की अछि?

- (A) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (B) मैथिलीमे विशिष्ट रूपे प्रयोग योग्य मानक शब्द।
- (C) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

११४६. ह्रस्व इकारान्त शब्दमे “इ” लुप्त करब पर दृष्टि की अछि?

- (A) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (B) सामान्यतः अग्राह्य।
- (C) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (D) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।

११४७. स्वतंत्र ह्रस्व “ए” वा “य” प्राचीन उद्धरणमे कोना राखल जाय?

- (A) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (B) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (C) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (D) यथावत।

११४८. आधुनिक प्रयोगमे कयल/कएल, जाय/जाए सन रूपक स्थिति की अछि?

- (A) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (B) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (C) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (D) वैकल्पिक रूपे स्वीकार्य।

११४९. दू स्वरक बीच आबयवला “य” ध्वनिक लेखन कोना मानल गेल?

- (A) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (B) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (C) वैकल्पिक रूपे स्थान देल जा सकैत अछि।
- (D) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।

११५०. सानुनासिक स्वतंत्र स्वरक लेल कोन विकल्प दैत अछि?

- (A) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (B) यथासंभव ज अथवा सानुनासिक स्वर-चिह्न।
- (C) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (D) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।

खण्ड ६२० : विदेह-सदेह १ — मानक मैथिली: विभक्ति, चन्द्रबिन्दु, हलन्त आ अंक

११५१. कारक-विभक्तिक “हाथ” उदाहरणसँ कोन रूप सभ देल गेल?

- (A) हाथकँ, हाथसँ, हाथै, हाथक, हाथमे।
- (B) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (C) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (D) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।

११५२. “मे” मे अनुस्वारक विषयमे निर्देश की अछि?

- (A) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (B) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (D) सर्वथा त्याज्य।

११५३. “क”क वैकल्पिक रूप कोन राखल जा सकैत अछि?

- (A) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (B) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (C) “केर”।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

११५४. पूर्वकालिक क्रियापदक बाद कोन अव्यय वैकल्पिक रूपे लगाओल जा सकैत अछि?

- (A) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (B) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (C) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (D) कय वा कए।

११५५. माँग, भाँग आदि शब्दक स्थानमे कोन रूप सुझाओल गेल?

- (A) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (B) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (C) माड, भाड।
- (D) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।

११५६. अर्द्ध “न” आ अर्द्ध “म”क बदला सम्बन्धी निर्देश की अछि?

- (A) अनुसार बदलल नहि जाय।
- (B) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (D) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।

११५७. हलन्त चिन्हक प्रयोगक नियम की अछि?

- (A) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (B) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (C) नियमतः लगाओल जाय, मुदा विभक्तिसँग अकारान्त प्रयोग।
- (D) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।

११५८. एकल कारक-चिह्न कोना लिखल जाय?

- (A) शब्दमे सटा कऽ।
- (B) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (C) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (D) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।

११५९. संयुक्त विभक्तिक विषयमे निर्देश की अछि?

- (A) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (B) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (C) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (D) फराक लिखल जाय, जस्तै घर परक।

११६०. पूर्ण विराम आ अंकक विषयमे कोन निर्देश देल गेल?

- (A) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (B) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (C) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (D) पूर्ण विराम पासीसँ “।” आ अंक देवनागरी रूपमे।

खण्ड ६२१ : विदेह-सदेह १ — अन्तिम पाठ-सूत्र: नाटक, कविता, कॉमिक्स आ मानक भाषा

११६१. “भाग रौ” आ “नताशा” मे साझा तत्त्व की अछि?

- (A) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (B) बाल-दृष्टि मार्फत समाजक विसंगति उजागर करब।
- (C) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (D) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।

११६२. “सृष्टि चक्र” आ मानक मैथिली अंश बीच संबंध की सोचल जा सकैत अछि?

- (A) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (B) एक संसारक क्रम, दोसर भाषाक क्रम खोजैत अछि।
- (C) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (D) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।

११६३. “ककर गलती” आ “भाग रौ” दुनू कोन प्रश्न उठबैत अछि?

- (A) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (B) समाज पीड़ितक दोष लगबैत अछि कि व्यवस्था बदलबाक?
- (C) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (D) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।

११६४. “दया करू माँ” आ रामजी चौधरीक भजन मिलि कोन स्वर बनबैत अछि?

- (A) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (B) सामाजिक अंधकारक बीच भक्ति आ नैतिक जागरण।
- (C) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (D) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।

११६५. “समर्पण” आ “दया करू माँ” मे समर्पणक रूप केना भिन्न अछि?

- (A) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (B) एक कला-देहमे, दोसर भक्ति-शरणागति मे।
- (C) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (D) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।

११६६. मानक मैथिली अंश सदेह १क अंतमे किएक महत्त्वपूर्ण अछि?

- (A) रचनात्मक बहुलता बाद भाषा-लेखनक अनुशासन सामने राखैत अछि।
- (B) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (D) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।

११६७. “भाग रौ”क सार्वजनिक स्थल आ मानक मैथिलीक नियम मे साझा सार्वजनिकता की अछि?

- (A) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (B) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (D) दुनू समाजक साझा प्रयोगक्षेत्र पर केन्द्रित अछि।

११६८. कॉमिक्स आ नाटक दुनू मैथिली माध्यमक कोना विस्तार दैत अछि?

- (A) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (B) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (C) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (D) दृश्य, संवाद आ मंच/चित्रक आधुनिक रूपमे।

११६९. विनीत उत्पल आ विभा रानीक पाठ स्त्री-अनुभव पर कोना प्रकाश दैत अछि?

- (A) एक विधवा/नर्तकी, दोसर सामाजिक हाशियाक पात्र-समाज।
- (B) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (C) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

११७०. अन्तिम खण्ड सभक संयुक्त पाठ की अछि?

- (A) मैथिली साहित्य समाज, भाषा, दृश्यता, भक्ति, व्यंग्य आ न्याय-प्रश्नक व्यापक मंच अछि।
- (B) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (C) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

खण्ड ६२२ : विदेह-सदेह १ — “भाग रौ” आ हाशियाक आवाज: पुनरावलोकन

११७१. “भाग रौ”मे हास्यक आधार की अछि?

- (A) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (B) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (D) अभाव, भूख आ जीविका-संघर्ष।

११७२. बच्चा ३क “भूख” पुकार दृश्यकें कोना बाँधैत अछि?

- (A) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (B) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (D) प्रत्येक चर्चा फेर पेटक प्रश्न पर लौटैत अछि।

११७३. मंगतू पढ़ल अछि मुदा सड़कपर — अर्थ की?

- (A) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (B) शिक्षा-सूचना मात्र पर्याप्त नहि, सामाजिक ढाँचा चाही।
- (C) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (D) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।

११७४. पुलिसक हिंसा बच्चा सभकें कोन स्थिति मे धकेलैत अछि?

- (A) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (B) सार्वजनिक स्थानसँ भगाड़ल, अपराधीकरण भेल अस्तित्व।
- (C) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (D) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।

११७५. बरखा प्रसंगमे “घर”क प्रश्न किएक महत्वपूर्ण अछि?

- (A) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (B) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (D) आश्रय-विहीनक लेल प्रकृति-सुख सेहो संकट अछि।

११७६. नाम-परिवर्तन पर टिप्पणीक सामाजिक अर्थ की अछि?

- (A) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (B) प्रतीकात्मक बदलाव गरीबक जीवन नहि बदलैत।
- (C) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (D) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।

११७७. “भाग रौ”क बाल-पात्र समाजक कोन अंधा कोना देखबैत अछि?

- (A) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (B) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (D) जे बच्चा सभकेँ दया, शिक्षा, सुरक्षा चाही, तिनका मारि/डाँटि भगाओल जाइत अछि।

११७८. मंगतू आ बच्चा सभक संबंध की अछि?

- (A) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (B) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (C) एके बिरादरीक भीतर अनुभव, ज्ञान आ सहानुभूतिक संवाद।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

११७९. नाटकक भाषा मे लोक-उपमा, सड़क-बोली आ बाल-प्रश्न किएक प्रभावी अछि?

- (A) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (B) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (C) यथार्थकेँ कृत्रिम न बनाकऽ जीवित आवाज दैत अछि।
- (D) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।

११८०. “भाग रौ” पुनरावलोकनक निष्कर्ष की अछि?

- (A) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (B) सड़क-बालकक कथा समाजक न्याय-बोधक परीक्षा अछि।
- (C) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

खण्ड ६२३ : विदेह-सदेह १ — मानक भाषा आ रचना-संसार: पुनरावलोकन

११८१. मानक मैथिली चर्चा रचनात्मक पाठक बाद की स्मरण करबैत अछि?

- (A) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (B) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (C) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (D) भाषा-सृजनक संग लेखन-शैलीक जिम्मेदारी सेहो जरूरी अछि।

११८२. पंचमाक्षर-अनुस्वार नियमक व्यावहारिक लाभ की अछि?

- (A) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (B) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (C) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (D) अर्थ, उच्चारण आ मुद्रणक स्पष्टता।

११८३. ढ/ढ़ भेद पर निर्देश कोन पक्ष देखबैत अछि?

- (A) ध्वनि आ अक्षरक संबंध।
- (B) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

११८४. कयल/कएल, जाय/जाए विकल्प की सूचित करैत अछि?

- (A) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (B) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (D) एकरूपताक संग व्यवहारिक वैकल्पिकता।

११८५. कारक-चिह्न सटा लिखबाक निर्देश की करैत अछि?

- (A) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (B) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (C) शब्द-रचना आ विभक्ति संबंध स्पष्ट करैत अछि।
- (D) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।

११८६. चन्द्रबिन्दु/अनुस्वार विकल्प कोन व्यावहारिक संकट मानैत अछि?

- (A) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (B) मुद्रणक जटिल मात्रा आ पठनीयता।
- (C) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (D) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।

११८७. देवनागरी अंकक आग्रह कोन दिशा देखबैत अछि?

- (A) मैथिली लेखनक स्वलिपि-संगति आ स्थानीय रूप।
- (B) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (C) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

११८८. समस्त पद सटा वा हाइफेनसँ लिखबाक निर्देश किएक महत्वपूर्ण अछि?

- (A) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (B) शब्द-सम्बन्ध अस्पष्ट न हो।
- (C) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (D) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।

११८९. मानक मैथिलीक निर्देश रचनाकार लेल कोन जिम्मेदारी बनबैत अछि?

- (A) विधा-स्वतंत्रता संग भाषिक सावधानी।
- (B) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (C) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (D) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।

११९०. मानक-भाषा अंशक सार की अछि?

- (A) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (B) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (C) मैथिलीक साहित्यिक विस्तारकें टिकेबाक लेल साझा लेखन-नीति जरूरी अछि।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

खण्ड ६२४ : विदेह-सदेह १ — अन्तिम बैच ६०५-६२३ पुनरावलोकन

११९१. एहि बैचमे विभा रानीक योगदान की रूपमे आयल?

- (A) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (B) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (C) सामाजिक रंगमंच, लोक-संस्कृति आ हाशियाक जीवनक मंचन।
- (D) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।

११९२. “भाग रौ” कोन मुख्य सामाजिक प्रश्न खोलैत अछि?

- (A) बाल-भूख, सड़क, शिक्षा, पुलिस आ नागरिकता।
- (B) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (C) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (D) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।

११९३. “सृष्टि चक्र” कोन व्यापक यात्रा दैत अछि?

- (A) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (B) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (C) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (D) शून्यसँ समाजक भूख-लोभ आ सत्ता-विकृति धरि।

११९४. “ककर गलती” स्त्री-विमर्शमे कोन प्रश्न दैत अछि?

- (A) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (B) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (C) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (D) विधवा पर लादल दोषक असल जिम्मेदार समाज/व्यवस्था अछि।

११९५. “समर्पण” कला-विमर्शक कोन रूप दैत अछि?

- (A) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (B) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (C) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (D) नृत्यकेँ देह, राग, आत्मा आ पूर्ण समर्पणक साधना।

११९६. देवांशु वत्सक कॉमिक्स मैथिलीमे कोन आयाम जोड़ैत अछि?

- (A) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (B) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (C) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (D) दृश्य-हास्य, बाल-बुद्धि आ संवाद-आधारित चित्र-कथा।

११९७. नवीन नाथ झा आ रामजी चौधरीक पाठ कोन भावधारा जोड़ैत अछि?

- (A) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (B) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (C) भक्ति, शरणागति, करुणा आ नैतिक जगार।
- (D) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।

११९८. मानक मैथिली अंश बैचकेँ कोना समाप्त करैत अछि?

- (A) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (B) भाषाक ध्वनि, वर्तनी, विभक्ति, अंक आ विरामक नियम सामने राखि।
- (C) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (D) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।

११९९. एहि बैचक विधागत विस्तार कोना अछि?

- (A) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (B) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (C) जीवनी, नाटक, कविता, कॉमिक्स, भजन आ भाषा-मानक।
- (D) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।

१२००. सदेह १क अन्तिम बैच पढ़ि निष्कर्ष की बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प एहि प्रसंगमे गौण अथवा असंबद्ध अछि।
- (B) ई व्याख्या स्रोतक उलट दिशा मे जाइत अछि।
- (C) ई उत्तर एहि स्रोत-अंशक मूल बातसँ मेल नहि खाइत।
- (D) मैथिली साहित्य समाजक जख्म, कला, करुणा आ भाषा-नीति सभकेँ एक मंचपर रखैत अछि।

खण्ड 5034 : विदेह-सदेह 1 — गजेन्द्र ठाकुर — (प्रारम्भिक)

१२०१. '(प्रारम्भिक)'क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

- (A) प्रथम अंकक संपादकीय
- (B) केवल क्रमांक-सूची
- (C) बाहरी सजावट
- (D) असम्बद्ध सूचना

१२०२. '(प्रारम्भिक)'मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

- (A) प्रथम अंकक संपादकीय
- (B) कागजक आकार
- (C) सिरिफ तिथि
- (D) प्रचारात्मक वाक्य

१२०३. '(प्रारम्भिक)'कें संपादकीय रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

- (A) प्रथम अंकक संपादकीय
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन
- (C) स्रोत-बाह्य घटना
- (D) यादृच्छिक अनुमान

१२०४. '(प्रारम्भिक)'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

- (A) शीर्षक प्रथम अंकक संपादकीय दिस संकेत करैत अछि
- (B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
- (C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
- (D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

१२०५. '(प्रारम्भिक)'मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

- (A) प्रथम अंकक संपादकीय
- (B) सूचीगणना मात्र
- (C) असम्बद्ध हास्य
- (D) बाहरी विज्ञापन

१२०६. '(प्रारम्भिक)'क गलत पठन कोन होएत?

- (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
- (B) प्रथम अंकक संपादकीय
- (C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
- (D) अर्थाधारित पठन करब

१२०७. '(प्रारम्भिक)'मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

- (A) प्रथम अंकक संपादकीय
- (B) निजी लाभक हिसाब
- (C) सैनिक आदेश
- (D) खेलक परिणाम

१२०८. '(प्रारम्भिक)' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

- (A) प्रथम अंकक संपादकीयक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
- (B) क्रमांकक गिनती पूछब
- (C) कागजक आकार पूछब
- (D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

१२०९. 'प्रारम्भिक' में संपादकीयक रूप कथ्य के कोना सहारा दैत अछि?

- (A) संपादकीयक रूप प्रथम अंकक संपादकीय के स्पष्ट करैत अछि
- (B) रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
- (C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
- (D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

१२१०. 'प्रारम्भिक' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

- (A) उत्तरकेँ प्रथम अंकक संपादकीय धरि सीमित राखब
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
- (C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
- (D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5035 : विदेह-सदेह 1 — -- — विस्मृत कवि- पं. रामजी चौधरी

१२११. 'विस्मृत कवि- पं. रामजी चौधरी'क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

- (A) अंक १ केर शोध-लेख
- (B) केवल क्रमांक-सूची
- (C) बाहरी सजावट
- (D) असम्बद्ध सूचना

१२१२. 'विस्मृत कवि- पं. रामजी चौधरी'मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

- (A) अंक १ केर शोध-लेख
- (B) कागजक आकार
- (C) सिरिफ तिथि
- (D) प्रचारात्मक वाक्य

१२१३. 'विस्मृत कवि- पं. रामजी चौधरी'केँ शोध-लेख रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

- (A) अंक १ केर शोध-लेख
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन
- (C) स्रोत-बाह्य घटना
- (D) यादृच्छिक अनुमान

१२१४. 'विस्मृत कवि- पं. रामजी चौधरी'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

- (A) शीर्षक अंक १ केर शोध-लेख दिस संकेत करैत अछि
- (B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
- (C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
- (D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

१२१५. 'विस्मृत कवि- पं. रामजी चौधरी'मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

- (A) अंक १ केर शोध-लेख
- (B) सूचीगणना मात्र
- (C) असम्बद्ध हास्य
- (D) बाहरी विज्ञापन

१२१६. 'विस्मृत कवि- पं. रामजी चौधरी'क गलत पठन कोन होएत?

- (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
- (B) अंक १ केर शोध-लेख
- (C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
- (D) अर्थाधारित पठन करब

१२१७. 'विस्मृत कवि- पं. रामजी चौधरी'मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

- (A) अंक १ केर शोध-लेख
- (B) निजी लाभक हिसाब
- (C) सैनिक आदेश
- (D) खेलक परिणाम

१२१८. 'विस्मृत कवि- पं. रामजी चौधरी' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

- (A) अंक १ केर शोध-लेखक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
- (B) क्रमांकक गिनती पूछब
- (C) कागजक आकार पूछब
- (D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

१२१९. 'विस्मृत कवि- पं. रामजी चौधरी'मे शोध-लेखक रूप कथ्य केँ कोना सहारा दैत अछि?

- (A) शोध-लेखक रूप अंक १ केर शोध-लेख केँ स्पष्ट करैत अछि
- (B) रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
- (C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
- (D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

१२२०. 'विस्मृत कवि- पं. रामजी चौधरी' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

- (A) उत्तरकेँ अंक १ केर शोध-लेख धरि सीमित राखब
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
- (C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
- (D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5036 : विदेह-सदेह 1 — गजेन्द्र ठाकुर — सहस्रबाढ़नि (अंक १)

१२२१. 'सहस्रबाढ़नि (अंक १)'क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

- (A) धारावाहिक – प्रथम किस्त
- (B) केवल क्रमांक-सूची
- (C) बाहरी सजावट
- (D) असम्बद्ध सूचना

१२२२. 'सहस्रबाढ़नि (अंक १)'मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

- (A) धारावाहिक – प्रथम किस्त
- (B) कागजक आकार
- (C) सिरिफ तिथि
- (D) प्रचारात्मक वाक्य

१२२३. 'सहस्रबाढ़नि (अंक १)'केँ उपन्यास रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

- (A) धारावाहिक – प्रथम किस्त
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन
- (C) स्रोत-बाह्य घटना
- (D) यादृच्छिक अनुमान

१२२४. 'सहस्रबाढ़नि (अंक १)'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

- (A) शीर्षक धारावाहिक – प्रथम किस्त दिस संकेत करैत अछि
- (B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
- (C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
- (D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

१२२५. 'सहस्रबाढ़नि (अंक १)'मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

- (A) धारावाहिक – प्रथम किस्त
- (B) सूचीगणना मात्र
- (C) असम्बद्ध हास्य
- (D) बाहरी विज्ञापन

१२२६. 'सहस्रबाढ़नि (अंक १)'क गलत पठन कोन होएत?

- (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
- (B) धारावाहिक – प्रथम किस्त
- (C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
- (D) अर्थाधारित पठन करब

१२२७. 'सहस्रबाढ़नि (अंक १)'मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

- (A) धारावाहिक – प्रथम किस्त
- (B) निजी लाभक हिसाब
- (C) सैनिक आदेश
- (D) खेलक परिणाम

१२२८. 'सहस्रबाढ़नि (अंक १)' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

- (A) धारावाहिक – प्रथम किस्तक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
- (B) क्रमांकक गिनती पूछब
- (C) कागजक आकार पूछब
- (D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

१२२९. 'सहस्रबाढ़नि (अंक १)'मे उपन्यासक रूप कथ्य केँ कोना सहारा दैत अछि?

- (A) उपन्यासक रूप धारावाहिक – प्रथम किस्त केँ स्पष्ट करैत अछि
- (B) रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
- (C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
- (D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

१२३०. 'सहस्रबाढ़नि (अंक १)' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

- (A) उत्तरकेँ धारावाहिक – प्रथम किस्त धरि सीमित राखब
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
- (C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
- (D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5037 : विदेह-सदेह 1 — गजेन्द्र ठाकुर — महाभारत (अंक १)

१२३१. 'महाभारत (अंक १)'क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

- (A) धारावाहिक – प्रथम किस्त
- (B) केवल क्रमांक-सूची
- (C) बाहरी सजावट
- (D) असम्बद्ध सूचना

१२३२. 'महाभारत (अंक १)'मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

- (A) धारावाहिक – प्रथम किस्त
- (B) कागजक आकार
- (C) सिरिफ तिथि
- (D) प्रचारात्मक वाक्य

१२३३. 'महाभारत (अंक १)'के महाकाव्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

- (A) धारावाहिक – प्रथम किस्त
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन
- (C) स्रोत-बाह्य घटना
- (D) यादृच्छिक अनुमान

१२३४. 'महाभारत (अंक १)'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

- (A) शीर्षक धारावाहिक – प्रथम किस्त दिस संकेत करैत अछि
- (B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
- (C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
- (D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

१२३५. 'महाभारत (अंक १)'मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

- (A) धारावाहिक – प्रथम किस्त
- (B) सूचीगणना मात्र
- (C) असम्बद्ध हास्य
- (D) बाहरी विज्ञापन

१२३६. 'महाभारत (अंक १)'क गलत पठन कोन होएत?

- (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
- (B) धारावाहिक – प्रथम किस्त
- (C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
- (D) अर्थाधारित पठन करब

१२३७. 'महाभारत (अंक १)'मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

- (A) धारावाहिक – प्रथम किस्त
- (B) निजी लाभक हिसाब
- (C) सैनिक आदेश
- (D) खेलक परिणाम

१२३८. 'महाभारत (अंक १)' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

- (A) धारावाहिक – प्रथम किस्तक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
- (B) क्रमांकक गिनती पूछब
- (C) कागजक आकार पूछब
- (D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

१२३९. 'महाभारत (अंक १)'मे महाकाव्यक रूप कथ्य केँ कोना सहारा दैत अछि?

- (A) महाकाव्यक रूप धारावाहिक – प्रथम किस्त केँ स्पष्ट करैत अछि
- (B) रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
- (C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
- (D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

१२४०. 'महाभारत (अंक १)' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

- (A) उत्तरकेँ धारावाहिक – प्रथम किस्त धरि सीमित राखब
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
- (C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
- (D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5038 : विदेह-सदेह 1 — गजेन्द्र ठाकुर — शनैः-शनैः

१२४१. 'शनैः-शनैः'क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

- (A) अंक १ केर पूर्ण कथा
- (B) केवल क्रमांक-सूची
- (C) बाहरी सजावट
- (D) असम्बद्ध सूचना

१२४२. 'शनैः-शनैः'मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

- (A) अंक १ केर पूर्ण कथा
- (B) कागजक आकार
- (C) सिरिफ तिथि
- (D) प्रचारात्मक वाक्य

१२४३. 'शनैः-शनैः'कै कथा रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

- (A) अंक १ केर पूर्ण कथा
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन
- (C) स्रोत-बाह्य घटना
- (D) यादृच्छिक अनुमान

१२४४. 'शनैः-शनैः'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

- (A) शीर्षक अंक १ केर पूर्ण कथा दिस संकेत करैत अछि
- (B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
- (C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
- (D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

१२४५. 'शनैः-शनैः'मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

- (A) अंक १ केर पूर्ण कथा
- (B) सूचीगणना मात्र
- (C) असम्बद्ध हास्य
- (D) बाहरी विज्ञापन

१२४६. 'शनैः-शनैः'क गलत पठन कोन होएत?

- (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
- (B) अंक १ केर पूर्ण कथा
- (C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
- (D) अर्थाधारित पठन करब

१२४७. 'शनैः-शनैः'मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

- (A) अंक १ केर पूर्ण कथा
- (B) निजी लाभक हिसाब
- (C) सैनिक आदेश
- (D) खेलक परिणाम

१२४८. 'शनैः-शनैः' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

- (A) अंक १ केर पूर्ण कथाक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
- (B) क्रमांकक गिनती पूछब
- (C) कागजक आकार पूछब
- (D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

१२४९. 'शनैः-शनैः' मे कथाक रूप कथ्य केँ कोना सहारा दैत अछि?

- (A) कथाक रूप अंक १ केर पूर्ण कथा केँ स्पष्ट करैत अछि
- (B) रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
- (C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
- (D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

१२५०. 'शनैः-शनैः' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

- (A) उत्तरकेँ अंक १ केर पूर्ण कथा धरि सीमित राखब
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
- (C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
- (D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5039 : विदेह-सदेह 1 — गजेन्द्र ठाकुर — (अंक १ केर पद्य भाग)

१२५१. '(अंक १ केर पद्य भाग)'क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

- (A) विविध व्यंग्य-दार्शनिक पद्य
- (B) केवल क्रमांक-सूची
- (C) बाहरी सजावट
- (D) असम्बद्ध सूचना

१२५२. '(अंक १ केर पद्य भाग)'मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

- (A) विविध व्यंग्य-दार्शनिक पद्य
- (B) कागजक आकार
- (C) सिरिफ तिथि
- (D) प्रचारात्मक वाक्य

१२५३. '(अंक १ केर पद्य भाग)'केँ पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

- (A) विविध व्यंग्य-दार्शनिक पद्य
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन
- (C) स्रोत-बाह्य घटना
- (D) यादृच्छिक अनुमान

१२५४. '(अंक १ केर पद्य भाग)'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

- (A) शीर्षक विविध व्यंग्य-दार्शनिक पद्य दिस संकेत करैत अछि
- (B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
- (C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
- (D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

१२५५. '(अंक १ केर पद्य भाग)'मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

- (A) विविध व्यंग्य-दार्शनिक पद्य
- (B) सूचीगणना मात्र
- (C) असम्बद्ध हास्य
- (D) बाहरी विज्ञापन

१२५६. '(अंक १ केर पद्य भाग)'क गलत पठन कोन होएत?

- (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
- (B) विविध व्यंग्य-दार्शनिक पद्य
- (C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
- (D) अर्थाधारित पठन करब

१२५७. ‘(अंक १ केर पद्य भाग)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

- (A) विविध व्यंग्य-दार्शनिक पद्य
- (B) निजी लाभक हिसाब
- (C) सैनिक आदेश
- (D) खेलक परिणाम

१२५८. ‘(अंक १ केर पद्य भाग)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

- (A) विविध व्यंग्य-दार्शनिक पद्यक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
- (B) क्रमांकक गिनती पूछब
- (C) कागजक आकार पूछब
- (D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

१२५९. ‘(अंक १ केर पद्य भाग)’मे पद्यक रूप कथ्य केँ कोना सहारा दैत अछि?

- (A) पद्यक रूप विविध व्यंग्य-दार्शनिक पद्य केँ स्पष्ट करैत अछि
- (B) रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
- (C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
- (D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

१२६०. ‘(अंक १ केर पद्य भाग)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

- (A) उत्तरकेँ विविध व्यंग्य-दार्शनिक पद्य धरि सीमित राखब
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
- (C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
- (D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5040 : विदेह-सदेह 1 — -- — VIDEHA MITHILA TIRBHUKTI TIRHUT (भाग १)

१२६१. ‘VIDEHA MITHILA TIRBHUKTI TIRHUT (भाग १)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

- (A) प्रवासी मैथिल स्तंभ, धारावाहिक
- (B) केवल क्रमांक-सूची
- (C) बाहरी सजावट
- (D) असम्बद्ध सूचना

१२६२. ‘VIDEHA MITHILA TIRBHUKTI TIRHUT (भाग १)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

- (A) प्रवासी मैथिल स्तंभ, धारावाहिक
- (B) कागजक आकार
- (C) सिरिफ तिथि
- (D) प्रचारात्मक वाक्य

१२६३. ‘VIDEHA MITHILA TIRBHUKTI TIRHUT (भाग १)’केँ अंग्रेजी-गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

- (A) प्रवासी मैथिल स्तंभ, धारावाहिक
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन
- (C) स्रोत-बाह्य घटना
- (D) यादृच्छिक अनुमान

१२६४. ‘VIDEHA MITHILA TIRBHUKTI TIRHUT (भाग १)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

- (A) शीर्षक प्रवासी मैथिल स्तंभ, धारावाहिक दिस संकेत करैत अछि
- (B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
- (C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
- (D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

१२६५. 'VIDEHA MITHILA TIRBHUKTI TIRHUT (भाग १)' मे पाठक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

- (A) प्रवासी मैथिल स्तंभ, धारावाहिक
- (B) सूचीगणना मात्र
- (C) असम्बद्ध हास्य
- (D) बाहरी विज्ञापन

१२६६. 'VIDEHA MITHILA TIRBHUKTI TIRHUT (भाग १)' क गलत पठन कोन होएत?

- (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
- (B) प्रवासी मैथिल स्तंभ, धारावाहिक
- (C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
- (D) अर्थाधारित पठन करब

१२६७. 'VIDEHA MITHILA TIRBHUKTI TIRHUT (भाग १)' मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

- (A) प्रवासी मैथिल स्तंभ, धारावाहिक
- (B) निजी लाभक हिसाब
- (C) सैनिक आदेश
- (D) खेलक परिणाम

१२६८. 'VIDEHA MITHILA TIRBHUKTI TIRHUT (भाग १)' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

- (A) प्रवासी मैथिल स्तंभ, धारावाहिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
- (B) क्रमांकक गिनती पूछब
- (C) कागजक आकार पूछब
- (D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

१२६९. 'VIDEHA MITHILA TIRBHUKTI TIRHUT (भाग १)' मे अंग्रेजी-गद्यक रूप कथ्य केँ कोना सहारा दैत अछि?

- (A) अंग्रेजी-गद्यक रूप प्रवासी मैथिल स्तंभ, धारावाहिक केँ स्पष्ट करैत अछि
- (B) रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
- (C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
- (D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

१२७०. 'VIDEHA MITHILA TIRBHUKTI TIRHUT (भाग १)' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

- (A) उत्तरकेँ प्रवासी मैथिल स्तंभ, धारावाहिक धरि सीमित राखब
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
- (C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
- (D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5041 : विदेह-सदेह 1 — ज्योति झा चौधरी — A Moonless Summer Night Of My Village

१२७१. 'A Moonless Summer Night Of My Village' क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

- (A) प्रवासी स्तंभक कविता
- (B) केवल क्रमांक-सूची
- (C) बाहरी सजावट
- (D) असम्बद्ध सूचना

१२७२. 'A Moonless Summer Night Of My Village' मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

- (A) प्रवासी स्तंभक कविता
- (B) कागजक आकार
- (C) सिरिफ तिथि
- (D) प्रचारात्मक वाक्य

१२७३. 'A Moonless Summer Night Of My Village' के अंग्रेजी-पद्य रूप में पढ़ाक समय कोन बात ध्यान में राखब उचित?

- (A) प्रवासी स्तंभक कविता
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन
- (C) स्रोत-बाह्य घटना
- (D) यादृच्छिक अनुमान

१२७४. 'A Moonless Summer Night Of My Village' के शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

- (A) शीर्षक प्रवासी स्तंभक कविता दिस संकेत करैत अछि
- (B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
- (C) शीर्षक में कोनो अर्थ-सूत्र नहि
- (D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

१२७५. 'A Moonless Summer Night Of My Village' में पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

- (A) प्रवासी स्तंभक कविता
- (B) सूचीगणना मात्र
- (C) असम्बद्ध हास्य
- (D) बाहरी विज्ञापन

१२७६. 'A Moonless Summer Night Of My Village' के गलत पठन कोन होएत?

- (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
- (B) प्रवासी स्तंभक कविता
- (C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
- (D) अर्थाधारित पठन करब

१२७७. 'A Moonless Summer Night Of My Village' में सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूप में भेटैत अछि?

- (A) प्रवासी स्तंभक कविता
- (B) निजी लाभक हिसाब
- (C) सैनिक आदेश
- (D) खेलक परिणाम

१२७८. 'A Moonless Summer Night Of My Village' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

- (A) प्रवासी स्तंभक कविताक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
- (B) क्रमांकक गिनती पूछब
- (C) कागजक आकार पूछब
- (D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

१२७९. 'A Moonless Summer Night Of My Village' में अंग्रेजी-पद्यक रूप कथ्य केँ कोना सहारा दैत अछि?

- (A) अंग्रेजी-पद्यक रूप प्रवासी स्तंभक कविता केँ स्पष्ट करैत अछि
- (B) रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
- (C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
- (D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

१२८०. 'A Moonless Summer Night Of My Village' सँ बनल उत्तर में कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

- (A) उत्तरकेँ प्रवासी स्तंभक कविता धरि सीमित राखब
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
- (C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
- (D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

१. (A) संतानहीनता — कथामे जनक संतानहीन रहबाक पीड़ा सँ जुड़ल छथि।
२. (A) स्वर्ण-कलशसँ प्रकट दिव्य बालिका — सीताक अवतरण खेत, हर आ कलशक प्रसंगमे राखल गेल अछि।
३. (A) हरसँ बनल रेखा/सीता सँ — सीता नाम खेती-हर आ भूमिसँ जुड़ल प्रतीक बनैत अछि।
४. (A) विष्णु देव केँ — लेख वेदवतीक विष्णुभक्ति आ संकल्प केँ सीताक पुनर्जन्म-कथासँ जोड़ैत अछि।
५. (A) किएक तँ ओ विष्णु प्रति समर्पित छलीह — अस्वीकारक मूल कारण हुनक आध्यात्मिक निष्ठा अछि।
६. (A) पुनर्जन्ममे रावणक विनाशक कारण बनबाक — कथा सीताक जन्म केँ रावण-विनाशक नियति सँ जोड़ैत अछि।
७. (A) मंदोदरी अपन संतानक आश्रय जनकक मार्गमे नुकाबैत छथि — लेख कथान्तर रूपेँ मंदोदरीक भय आ जनकक संतानहीनता केँ जोड़ैत अछि।
८. (A) ऋषि-मुनिक शोणित — एहि कथामे सीता अत्याचारित तपस्वी समाजक पीड़ाक उत्तर बनैत छथि।
९. (A) स्त्री-सम्मान रहित समाज देवत्व आ मंगल पबैत अछि — लेख स्त्री-सम्मान केँ कथा-निष्कर्षक नैतिक आधार बनबैत अछि।
१०. (A) स्त्रीक अपमान करनिहारक अंत दुःखद होइत अछि — सीताक कथा स्त्री-मर्यादा आ अन्याय-विरोधक संदेश दैत अछि।
११. (A) गोवामे अन्तरराष्ट्रीय मैथिली परिषदक सम्मेलन कभर करबाक अनुभवसँ — लेखक पत्रकारिता-प्रसंगसँ मैथिल प्रवास आ भाषा पर विचार खोलैत छथि।
१२. (A) अपन समाचार-संस्थासँ — लेखक अपन मीडिया-कर्मक कारण एहि आयोजनमे पहुँचल छथि।
१३. (A) बहुत पीढ़ी बाद भाषा हराएल, मुदा मिथिलासँ स्नेह बचल — लेख भाषा-विस्मृतिक बीच सांस्कृतिक लगावक जटिलता देखबैत अछि।
१४. (A) जीवन-यापन लेल मैथिलक विभिन्न व्यवसाय आ बिखरल बसाहट — लेख प्रवासी मैथिलक श्रम, बसाहट आ सामाजिक रूपांतरणक चित्र दैत अछि।
१५. (A) गोवा बसाबयमे मैथिल ब्राह्मणक भूमिका — लेख गोवा-मिथिला सम्बन्धक पुरातन संकेत रूपेँ एहि दावाक चर्चा करैत अछि।
१६. (A) भाषिक-सांस्कृतिक निकटता देखेबाक लेल — अदहन, पाहुन, मधुर आदि उदाहरणसँ भाषिक स्मृतिक सूत्र बनाओल गेल अछि।
१७. (A) मैथिली आयोजनक सीमा भारतसँ बाहर धरि फैलल छल — लेख अन्तरक्षेत्रीय मैथिली उपस्थिति देखबैत अछि।
१८. (A) ओ सभ निकट रहितहुँ कार्यक्रम कवर करबामे सक्रिय नहि भेलाह — लेख मैथिल अस्मिता प्रति उदासीनता पर चोट करैत अछि।
१९. (A) सम्पन्न रहितहुँ कर्ज लेबाक प्रवृत्तिसँ — ई तुलना आत्महीन आधुनिकताक व्यंग्यात्मक चित्र बनबैत अछि।
२०. (A) प्रवासमे मैथिल पहचान रहि गेल अछि, मुदा भाषा-संस्कृति बिसरबाक संकट अछि — लेख प्रवासी लगाव आ भाषा-विस्मृतिक बीच अस्मिताक प्रश्न उठबैत अछि।
२१. (A) समकालीन घटनापर मीडिया प्रस्तुति पर प्रश्न उठेबाक लेल — लेख समाचार-वस्तुक चयन आ प्रस्तुति पर आलोचनात्मक दृष्टि राखैत अछि।
२२. (A) मीडिया जे परोसैत अछि, दर्शक-पाठक ओकरा ग्रहण करबाक लेल बाध्य होइत छथि — लेख सूचना-बाजारमे दर्शकक असहायता पर टिप्पणी करैत अछि।
२३. (A) भोग करनिहारक स्वाद आ पीड़ितक जीवनक बीचक असमानता — कहावत मीडिया उपभोगक निर्दयता स्पष्ट करैत अछि।
२४. (A) भीतरक नैतिक पतन आ दोहरापन पर कठोर टिप्पणी — लेख बाहरी चमकक भीतरक भ्रष्ट-संरचना पर प्रश्न करैत अछि।
२५. (A) दोसरक स्टिंग करनिहार मीडिया पर सेहो नजरदारी किएक नहि? — लेख आत्म-जांचक अभाव केँ मीडिया नैतिकताक समस्या मानैत अछि।
२६. (A) अस्मिता-बोधक बावजूद सत्य बाजयमे संकोच — लेख सामुदायिक स्थान प्राप्त करितहुँ मौन रहबाक प्रवृत्ति पर चोट करैत अछि।
२७. (A) आत्मालोचनात्मक ईमानदारी — लेख दूसर पर दोष देबामात्र नहि, स्वयंकेँ सेहो प्रश्नमे राखैत अछि।
२८. (A) पूर्वजक नैतिक-बौद्धिक परम्परा सँ वर्तमानक दूरी देखेबाक लेल — पूर्वज-स्मरण वर्तमान नैतिक प्रश्न केँ पैघ बनबैत अछि।
२९. (A) दिग्भ्रमित आ मार्गदर्शन-विहीन — लेख नवयुवकक सांस्कृतिक दिशाहीनता पर चिन्ता करैत अछि।
३०. (A) भाषा-संस्कृति बचएब लेल आत्मालोचना, सत्यवादिता आ सामूहिक जिम्मेदारी चाही — दू लेख मिलि आधुनिकता, मीडिया आ अस्मिता पर सजग हस्तक्षेप करैत अछि।

३१. (A) गामक सांस्कृतिक कार्यक्रम आ सामुदायिक चेतना जाँचबाक अवसर — दुर्गा-पूजा आदि अवसर पर गामक संस्कृति कोना बदलल अछि, लेख ई देखैत अछि।
३२. (A) नाटक आ रामलीला खेलायब — पूर्वकालमे युवकक रंगमंचीय सक्रियता सामुदायिक संस्कृति सँ जुड़ल छल।
३३. (A) किएक तँ ओ स्थानीय कला आ नैतिक वातावरणक स्थान घेरि रहल अछि — लेख बाहरी मनोरंजनक नाम पर सांस्कृतिक क्षरण देखबैत अछि।
३४. (A) आस्था-स्थल पर अनुशासन आ संवेदनहीनता घटबाक — लेख धार्मिक आयोजनक बाहरीपन आ भीतरक अव्यवस्था उघारैत अछि।
३५. (A) सामूहिक रुचिक पतन आ अनियंत्रित उपभोगक — एहि चित्रसँ लेखक सांस्कृतिक प्राथमिकताक बदलल रूप देखबैत छथि।
३६. (A) भोजन-आश्रयक माध्यमे समाजक कलाकार प्रति जिम्मेदारी — लेख बतबैत अछि जे पहिले अल्प साधनमे लोक कला चलैत छल।
३७. (A) जे समाज बाहर रामलीला पर खर्च करैत अछि, मुदा अपन गामक टोलीक पेट नहि भरैत — ई तुलना स्थानीय उपेक्षा आ बाहरी आकर्षणक विरोधाभास देखबैत अछि।
३८. (A) लोकक रुचि, जिम्मेदारी आ सामूहिक सहयोग घटल — लेख सांस्कृतिक क्षय कें सामुदायिक चयनक फल मानैत अछि।
३९. (A) दस गोटेक भोजन धरि कठिन बुझबाक उदाहरणसँ — छोट उदाहरणसँ सामुदायिक उदारता घटबाक चिन्ता उभरैत अछि।
४०. (A) स्थानीय कला, नाटक, रामलीला आ सामुदायिक सहयोग फेरि जीवित करब जरूरी अछि — लेख अस्मिता-बचाव कें व्यवहारिक सांस्कृतिक पुनरुद्धारसँ जोड़ैत अछि।
४१. (A) मैथिलीमे बच्चा लेल गीतमय रचनाक कमी — प्रस्तावना बाल-साहित्यक उपेक्षा कें मुख्य प्रश्न बनबैत अछि।
४२. (A) बच्चा रटि, गाबि, गुनगुना कऽ मानसिक विकास पाउ — कवितासभ लय, स्मृति आ आनन्दक माध्यमे बाल-विकास चाहैत अछि।
४३. (A) बाघक मौसी कहल गेल — बाल-कविता पारिवारिक हास्यक सम्बन्धसँ पशु-चित्र बनबैत अछि।
४४. (A) जंगलक राजा — कविता छोट पंक्तिमे बाघक राजसी छवि बनबैत अछि।
४५. (A) हमर सभहक मैया — दूध देनिहार गाय कें मातृ-स्नेहक प्रतीक बनाओल गेल अछि।
४६. (A) राति जगि चोर भगायब — कविता घरेलू सुरक्षा आ पालतू व्यवहार कें बाल-भाषामे कहैत अछि।
४७. (A) लम्बा सूँढ़ आ सूप सन कान — बालक लेल हाथीक पहिचान दृश्य विशेषतासँ बनाओल गेल अछि।
४८. (A) सुग्गा-मेना-कौआ-बगरा आ गैया-बरद-बिलाड़ि-कुतबा — कविता नाम-स्मृतिक माध्यमे बालक संसार बढबैत अछि।
४९. (A) पशु-पक्षी आ प्रकृतिक आवाजसँ बच्चाक लय-बोध बनैत अछि — म्याऊँ, भौँ, कौव आदि ध्वनि बाल-रुचिक आधार अछि।
५०. (A) मिथिलाक बाल-लोक कें मैथिली लयमे अपन परिवेश देब — कवितासभ बाल-साहित्यक अभाव भरबाक आरम्भिक प्रयास जकाँ देखाइत अछि।
५१. (A) कारी देह आ कौव-कौव आवाज — कविता कौआक सहज लोक-छवि कें ध्वनि सहित रखैत अछि।
५२. (A) बौआ/बच्चा लेल — बाल-कवितामे छोट घटना बाल-हास्य बनि जाइत अछि।
५३. (A) पिंजरामे — पिंजराक सुग्गा लोकपालित पक्षीक बाल-चित्र अछि।
५४. (A) राम-राम — तोता-रटंत ध्वनि बाल-कविताक सहज तत्व अछि।
५५. (A) मिरचाई — मिरचाई खेबाक सुग्गाक लोक-छवि कवितामे आबैत अछि।
५६. (A) कारी-कारि — मेघक कारी रूप बरखा-पूर्व दृश्य बनबैत अछि।
५७. (A) झर-झर, झमझम, टपटप — ध्वनि-पुनरावृत्ति बाल-लय आ मौसमक अनुभव देत अछि।
५८. (A) सूप पिटैत छथि — दीयाबाती लोक-रीति आ घरक स्त्री-उपस्थिति संग जुड़ल अछि।
५९. (A) मामा-मौसीक माँ आ किस्सा सुनाबयवाली आत्मीय बुजुर्ग — कविता नानी कें परिवारक कथा-स्रोत रूपमे प्रस्तुत करैत अछि।
६०. (A) घाट जाएब, सूरजकें अर्ध देखब आ ठेकुआ-मधुर खेब — छैठक बाल-दृष्टि अनुष्ठान, प्रसाद आ घाटक अनुभव सँ बनैत अछि।
६१. (A) मैथिली बजबामे — कविता मैथिली बोलबाक स्वाभिमान सँ आरम्भ होइत अछि।
६२. (A) जनक पिता, सीता बहिन, राम बहनोई — मिथिला-पहिचान पौराणिक आत्मीयतासँ जुड़ैत अछि।
६३. (A) मिथिला-धामक चरण पखारयवाली नदी-मातृभूमि — नदीसभ मिथिला-भूमिक पवित्रता आ भौगोलिकता बनबैत अछि।

६४. (A) मिथिलाक ज्ञान-साहित्य परम्परा — कविता महापुरुषसभसँ सांस्कृतिक गौरव ग्रहण करैत अछि।
६५. (A) मिथिलाक जीवन-संस्कृति आ इतिहास — स्थानीय वस्तुसभ मिथिलाक पहचानक सांस्कृतिक चिह्न अछि।
६६. (A) ग्रामीण सादगी आ अपनापन — कविता साधारण भोजनमे मातृभूमिक स्वाद खोजैत अछि।
६७. (A) ग्रामीण मिथिलाक दृश्य-संसार — कविता इन्द्रिय-बोधसँ गामक स्मृति रचैत अछि।
६८. (A) आँगन-बारीक जीवित ग्रामीणता — लत्ती-पसरल दृश्य गामक घर-परिवारक स्वाभाविक सौन्दर्य अछि।
६९. (A) नजर न लगबाक बचाव-चिन्ह — कविता लोकविश्वासकें मिथिलाक रोजमर्रा दृश्य रूपमे रखैत अछि।
७०. (A) मैथिली, मिथिला-स्मृति, प्रकृति, लोक-जीवन आ गौरवक रक्षा — कविता छोट सनेसक रूपमे मातृभूमि-प्रेम व्यक्त करैत अछि।
७१. (A) विवाह — लेख विवाहक सामाजिक मान्यता आ लैंगिक असमानता पर विचार करैत अछि।
७२. (A) महिला केँ वर चुनबाक आजादीक स्मरण लेल — स्वयंवरक उल्लेख स्त्री-अधिकारक ऐतिहासिक पृष्ठभूमि दैत अछि।
७३. (A) पुरुषक पक्षमे अधिक उदार — लेख लिंगाधारित दोहरा मापदण्डक आलोचना करैत अछि।
७४. (A) कारण बुझबा योग्य भऽ सकैत अछि — लेख अंध विरोध नहि, परिस्थिति-बोध राखैत अछि।
७५. (A) अक्षम्य अपराध — लेख स्वार्थी दोसर विवाहक कठोर निन्दा करैत अछि।
७६. (A) समाज आ स्वयं पुरुषक — सुधारक लक्ष्य सामाजिक मानसिकता आ पुरुष-केन्द्रित अधिकारबोध अछि।
७७. (A) समय बदलल, मुदा महिला सम्बन्धी सोच अभी पूर्ण बदलेल नहि — लेख बदलाव आ जड़ता दूनूक तुलना करैत अछि।
७८. (A) समान अधिकारक प्रश्न उठेबाक लेल — लेख पूछैत अछि जे जे पुरुषकें मान्य अछि से परित्यक्ता/विधवा स्त्रीकें किएक नहि।
७९. (A) ओकरा अनिवार्य बना देल जाय आ बाकीकें इच्छा पर छोड़ल जाय — लेख उपेक्षित स्त्रीक जीवन पुनः मुख्यधारासँ जोड़बाक पक्षमे अछि।
८०. (A) पुनर्विवाह स्त्रीक नैराश्य हटबैत समाजक मुख्यधारामे पुनः प्रवेश दऽ सकैत अछि — लेख पुनर्विवाह केँ मानवीय गरिमा आ समानताक उपाय मानैत अछि।
८१. (A) आश्विन शुक्ल पूर्णिमा — लेख कोजागरा केँ आश्विन पूर्णिमाक पाबनि कहैत अछि।
८२. (A) नवविवाहित बर लेल — लेखमे कोजागरा नवका बरक पावनि रूपमे देखाओल गेल अछि।
८३. (A) कोजागरा बर लेल, मधुश्रावणी नवकन्या लेल; कोजागरा एक दिनक, मधुश्रावणी लम्बा — तुलना लिंग-विशेष अनुष्ठानक भिन्नता देखबैत अछि।
८४. (A) सासुर सँ आयल नव वस्त्र — सासुरक भार-दोर आ नव वस्त्र पाबनिक विशेष भाग अछि।
८५. (A) मखान — मखान बरक सासुरक सनेस रूपमे गाम-समाजमे बाँटल जाइत अछि।
८६. (A) दोआरीसँ भगवतीक चिनवारि धरि — कोजागरा घरक पवित्रता आ देवी-पूजाक आँगन-रीति सँ जुड़ल अछि।
८७. (A) समृद्धि, पवित्रता आ देवी-आह्वानक — पूजा-विधान वस्तु-प्रतीकसँ गृह-मंगलक भाव बनबैत अछि।
८८. (A) आँगनमे अष्टदल अरिपन, डाला, कलश आ पूर्वमुख बैसल बरक साथ — लेख चुमाओनक सूक्ष्म घरेलू-विधान देत अछि।
८९. (A) मखान, नारियल, केरा, दहीक छाछ, पान, सुपारी, मखानक माला आदि — वस्तुसभ समृद्धि, सनेस आ शुभता सँ जुड़ल अछि।
९०. (A) नवविवाहित सम्बन्ध, सासुर-सनेस, लक्ष्मी-पूजा आ मखान-बाँटबाक सामुदायिक पाबनि — कोजागरा घर, सासुर, समाज आ अनुष्ठान केँ जोड़ैत अछि।
९१. (A) कम पढ़ल-लिखल मुदा संघर्षसँ आत्मविश्वासी बनल युवक — कथा नायकक साधारण पृष्ठभूमि आ जीवन-संघर्ष सँ आरम्भ होइत अछि।
९२. (A) लगभग छह वर्ष पहिने — कथा अनुसार ओ संघर्षरत जीवन बितबैत धीरे-धीरे ठीक स्थिति पाबैत छथि।
९३. (A) कम पढ़ल-लिखल रहितहुँ फरटिसँ अंग्रेजी बजैत छलाह — ई विवरण सामाजिक आ आत्मनिर्माणक विरोधाभास बनबैत अछि।
९४. (A) ट्रेवल एजेण्टक काज करयवाली निजी कम्पनी — कथामे दिल्लीक निजी नौकरी आ सम्बन्ध-व्यवस्था सामाजिक पृष्ठभूमि अछि।
९५. (A) पिता बूढ़ापामे प्रवेश कए लेने छलाह आ छोट भाई सेहो छल — कथा विवाह-दबाव केँ पारिवारिक उत्तरदायित्वसँ जोड़ैत अछि।
९६. (A) पैसाक आदान-प्रदान नहि; आदर्श विवाह — कथाक आरम्भ मे आदर्श-विवाहक आकांक्षा स्पष्ट अछि।
९७. (A) पढ़ल-लिखल आ अंग्रेजी बजयवाली कन्या — पी.सी. मिश्र भावी बच्चाक शिक्षा लेल एहि शर्त केँ आवश्यक मानैत छथि।

१८. (A) जल्दी दिरागमनसँ विध-विधानमे कम खर्च होय — कथा खर्च-नियंत्रणक व्यावहारिक सोच देखबैत अछि।
१९. (A) अपनासँ गरीब घर, जँ सम्मान बेसी भेटत — एहि शर्तमे आत्मसम्मान, वर्ग-बोध आ विडम्बना तीनू उपस्थित अछि।
१००. (A) आदर्श-विवाहक इच्छा आगे चलि व्यवहारिक लेन-देन सँ टकराएत अछि — आरम्भिक शर्तसभ पछिला घटनाक नैतिक कसौटी बनैत अछि।
१०१. (A) महारानी मिश्रक छोट बहिन अनीता झाक ननद रूपमे — कथा पारिवारिक नेटवर्क मार्फत विवाह-प्रस्ताव बनबैत अछि।
१०२. (A) दिलीप झा आ विनय झा पर — कथा पितृ-अभावक बाद भाइसभक दायित्व देखबैत अछि।
१०३. (A) देरी नहि करबाक आ अवसर केँ लक्ष्मी आवि गेल जकाँ देखबाक — संवादमे विवाह-प्रस्तावक आकर्षण आ तत्परता प्रकट अछि।
१०४. (A) जयपुर — जयपुरमे प्रस्तावक अगिला चरणक बातचीत शुरू होइत अछि।
१०५. (A) होलीक बहाना बना कऽ — कथा सामाजिक गोपनीयता आ विवाह-योजना केँ हल्का हास्यसँ देखबैत अछि।
१०६. (A) विवाह कखन करब? — ई प्रश्न प्रस्ताव केँ प्रत्यक्ष दिशा दैत अछि।
१०७. (A) एखन विवाह करि लेब — कथा नायकक आदर्शवादी परन्तु विवाह-इच्छुक रूप देखबैत अछि।
१०८. (A) कतेक पैसा लेताह? — बातचीतमे समाजक दहेज-मानसिकता प्रत्यक्ष होइत अछि।
१०९. (A) लड़की नीक भेटत तँ पाई-रुपैयाक बात नहि — रंजीत आदर्श-विवाहक सूत्रकेँ बचाबय चाहैत छथि।
११०. (A) दूटा जिनगीक प्रश्न अछि; शर्त पर चिन्तन चाही — कथा विवाह-निर्णय केँ गंभीर नैतिक-सामाजिक निर्णय मानैत अछि।
१११. (A) फोटो आकर्षक अछि, मुदा शिक्षाक शर्त मुख्य अछि — नायक सौन्दर्यसँ प्रभावित भेलहुँ मूल शर्त शिक्षाकेँ मानैत छथि।
११२. (A) अहाँ नहि करब तँ हमही दोसर विवाह कए लेब — ई मजाक प्रस्तावक सहजता आ फोटो-पसंदक संकेत दैत अछि।
११३. (A) ई हमर शर्तमे नहि; लड़की पढ़ल-लिखल चाही — ई संवाद नायकक प्राथमिकता शिक्षा आ विचार पर राखैत अछि।
११४. (A) रंजीत ६५-७५ कहैत छथि, कण्यागत छूट माँगैत छथि — बैरियाती संख्या सामाजिक खर्चक दबाव बनैत अछि।
११५. (A) गरीबी कारण ७५ कठिन, छूट चाही — संवाद गरीब कन्यापक्षक असमर्थता सामने आनैत अछि।
११६. (A) अंगूठी, सोनाक चैन, कन्याक नामे जमा, कपड़ा आदि — कथा आदर्श-विवाहक भीतर लेन-देनक वापसी देखबैत अछि।
११७. (A) लगभग इक्यावन अथवा पैंसठक बीच समझौता-सूत्र — संवादमे संख्या घटैत-बढैत विवाह-सौदाक रूप लैत अछि।
११८. (A) विवाहक बाद वर्षभरि लड़की पक्षक काज रहैत अछि, खर्च महँग पड़त — कथा विवाहोत्तर रीतिसभक आर्थिक भार देखबैत अछि।
११९. (A) गामक बाबूजी/परिवारक निर्णय पर — कथा शहरी बातचीतक बाद गाम-परिवारक स्वीकृति आवश्यक मानैत अछि।
१२०. (A) दहेज-विरोधी शर्तक बीच लेन-देन, सम्मान आ खर्चक सूची लौटि अबैत अछि — कथा आदर्श आ सामाजिक दबावक टकरावक सूक्ष्म चित्रण करैत अछि।
१२१. (A) एक्काइस अप्रैल — कथा पतराक अनुसार ठहरल दिनक तैयारीक प्रसंग आनैत अछि।
१२२. (A) समयसँ पहुँचना आ दू आदमी हाथ धरैक लेल आबय — समय आ संख्या पर पूर्व सहमति बादक तनावक आधार बनैत अछि।
१२३. (A) चहल-पहल, दाय-मायक दौड़धूप आ बाराती तैयारी — दिनक विवाहक कारण सब जल्दी तैयार होमय चाहैत छल।
१२४. (A) उत्साह घटए लगल — प्रतीक्षा सामाजिक बेचैनीक वातावरण बनबैत अछि।
१२५. (A) राजू, दिलीप झाक जेठ सार — राजू विलम्बक क्षमायाचना सहित सूचना आनैत अछि।
१२६. (A) चौटा सज्जन आ एक बच्चा, कुल पाँच — पूर्व सहमतिसँ अधिक लोक आगमन दाय-माय बीच फुसफुसाहट करबैत अछि।
१२७. (A) विश्वनथवा — एहि विवरणसँ पारम्परिक अतिथि-विधानक वातावरण बनैत अछि।
१२८. (A) गोसाउनि आ ब्राह्मणक गीत — गीत विवाह-वातावरणक मंगल पक्ष निर्मित करैत अछि।
१२९. (A) ओहिमे राखल सामान देखबासँ विवाद उठैत अछि — सामानक गुण-दोष सम्बन्धक विश्वास-संकट जगबैत अछि।
१३०. (A) मंगल गीतक स्थान पर तनाव आ असन्तोष — छोट वस्तु विवाहक सम्मान, विश्वास आ वर्ग-बोधक प्रश्न बनि जाइत अछि।
१३१. (A) हम विवाह नहि करब — विवाद छोट सामानसँ आरम्भ भऽ विवाह-निरस्तीकरण धरि पहुँचैत अछि।
१३२. (A) क्रोध शान्त करू, बाहर लोक की कहताह — विभाक संवाद सामाजिक प्रतिष्ठा बचेबाक प्रयास अछि।

१३३. (A) सन्नाटा — गीत-बन्दक क्षण विवाहक तनावकें तीव्र बनबैत अछि।
१३४. (A) कहैत छथि जे बाजारसँ चाही त वैह मँगवा देब — बुजुर्ग व्यावहारिक समाधान देबाक चेष्टा करैत छथि।
१३५. (A) विश्वास आ वचनक पालन — नायकक आक्रोश वस्तु पर नहि, ठकल जाएबाक भय पर केन्द्रित अछि।
१३६. (A) कन्यागत गलत काज कएने छथि; पी.सी.क बात सही अछि — महारानी पुष्टि करैत छथि जे पूर्व शर्तक अनुसार सामान नहि छल।
१३७. (A) जे सामानमे ठकबाक संकेत अछि, लड़की विषयमे सेहो ठकबाक डर — विश्वास-संकट विवाहक मूल भावनात्मक मोड़ अछि।
१३८. (A) दूटा जिनगीक प्रश्न बनाम सामाजिक प्रतिष्ठा — कथा व्यक्तिगत भविष्य आ सामूहिक लाजक टकराव रखैत अछि।
१३९. (A) भूतकें बेसी महत्त्व दऽ भविष्यक गला दबा देब — कथा मान-मर्यादाक अति-भार पर सामाजिक आलोचना करैत अछि।
१४०. (A) सामानक बहाना बनि विवाह-संस्था, विश्वास आ सामाजिक प्रतिष्ठाक त्रासदी खुलैत अछि — कथा छोट घरेलू प्रसंगसँ पैघ सामाजिक प्रश्न उठबैत अछि।
१४१. (A) विवाह नहि करब तँ हम आत्महत्या कए लेब — पिताक कथन मान-मर्यादा आ दबावक चरम रूप बनैत अछि।
१४२. (A) या विवाह करब, या हमर दाह-संस्कार करब — ई कथन पुत्र पर नैतिक-अस्तित्वगत दबाव बना दैत अछि।
१४३. (A) पुरुखाक इज्जत जीवित रहते नहि गँवाबय चाहब — पिता पुरुखाक पाग आ प्रतिष्ठाक भारक प्रतिनिधि छथि।
१४४. (A) माफ करू; पिताक लेल अपन भविष्यक बलिदान दैत छी — कथा पुत्रधर्मक करुण मोड़ पर पहुँचैत अछि।
१४५. (A) माता-पिताक लेल प्राण-त्यागक आदर्श देखेबाक लेल — पी.सी. मिश्र अपन निर्णय कें पितृभक्ति-संस्कारसँ जोड़ैत छथि।
१४६. (A) कन्यागतक समान नहि लेब — ओ सामान-विवादक प्रतिरोध रूपेँ वस्तु अस्वीकार करैत छथि।
१४७. (A) कन्यागतक गाड़ीपर नहि जाएब — गाड़ी अस्वीकार करब सम्मान-रक्षा आ असहमति संकेत करैत अछि।
१४८. (A) देल गोरलगाइक रुपैया नहि लेब — नायक लेन-देनक प्रतीकात्मक लाभ त्यागबाक शर्त रखैत अछि।
१४९. (A) पी.सी.क त्याग, पितृभक्ति आ दबावक त्रासदी देखिकय — कथा सामूहिक भावनाकें करुणा दिस मोड़ैत अछि।
१५०. (A) मान-मर्यादाक रक्षा लेल व्यक्ति अपन भविष्यक बलिदान करबाकें विवश होइत अछि — कथा व्यक्तिगत इच्छा आ कुल-प्रतिष्ठाक मार्मिक टकराव देखबैत अछि।
१५१. (A) आधुनिकता बीच पहचान आ न्याय कोना बचत — दू लेखक अलग प्रसंगसँ सामाजिक आत्मालोचन करैत छथि।
१५२. (A) बाहरी चमकक भीतर विश्वास आ नैतिकता कमजोर होयब — मीडिया आ विवाह दूनमे मुखौटा बनाम सचक प्रश्न उठैत अछि।
१५३. (A) लैंगिक/सामाजिक दोहरा मापदण्डक — दूनू पाठ समाजक असमान नियमक आलोचना करैत अछि।
१५४. (A) विवाहमे अपव्यय आ आर्थिक दबाव घटेबाक आग्रह — दू पाठ मिथिलाक विवाह-संस्कारमे सुधारक स्वर रखैत अछि।
१५५. (A) बाल/युवा पीढ़ी कें मिथिला-परिवेशसँ जोड़ब — दू पाठ स्थानीय पशु, प्रकृति, लोकजीवन आ मातृभूमिक भाषा देत अछि।
१५६. (A) स्त्री, गृह-मंगल आ पवित्र अनुष्ठानक मिथिला-परम्परा — दूनू पाबनि घर, देवी-आस्था आ सामाजिक सम्बन्धक प्रतीक अछि।
१५७. (A) पहिल कविता चेतना भरबाक आह्वान, दोसर लेख सांस्कृतिक क्षयक विश्लेषण — कविता आ लेख मिलि अस्मिता-संघर्षक भाव आ तर्क दैत अछि।
१५८. (A) मिथिलाक सांस्कृतिक-भाषिक गौरवक केन्द्र रूपमे — विद्यापति मिथिला-गौरव, स्मृति आ भाषा-रक्षा सँ जुड़ैत छथि।
१५९. (A) प्रवास, आधुनिकता आ उदासीनता कारण मैथिली-बोलचाल घटब — विभिन्न लेखसभ मैथिली-बोलबाक स्वाभिमान आ विस्मृति-दुख पर केन्द्रित छथि।
१६०. (A) मिथिलाक अस्मिता बचएब लेल भाषा, नैतिकता, स्त्री-सम्मान, विवाह-सुधार आ लोक-संस्कृति पर पुनर्विचार जरूरी अछि — बैचक पाठसभ अलग-अलग मोर्चासँ समाज-सुधारक प्रश्न उठबैत अछि।
१६१. (A) स्त्रीक गरिमा आ अधिकार कें केन्द्रमे राखब — दूनू पाठ स्त्रीक सम्मान कें नैतिक आधार बनबैत अछि।
१६२. (A) दूनू अन्यायपूर्ण स्त्री-दृष्टि पर चोट करैत अछि — मिथिला-परम्परामे स्त्री-सम्मानक आध्यात्मिक आ सामाजिक रूप देखाइत अछि।
१६३. (A) नवविवाहित सम्बन्ध आ समुदायिक सहभागिता — पाबनि घर, सासुर आ गामक सम्बन्धक धागा बनैत अछि।
१६४. (A) सनेस आ सम्मानक नाम पर लेन-देनक तनाव — कथा अनुष्ठानक भीतर छिपल आर्थिक-मानसिक दबाव देखबैत अछि।

१६५. (A) आडंबर, खर्च आ प्रतिष्ठा-दबाव — दू पाठ विवाह-संस्कारमे सुधारक जरूरत देखबैत अछि।
१६६. (A) उपेक्षा आ नैराश्यक — लेख पुनर्विवाह केँ सामाजिक पुनर्स्थापनक माध्यम मानैत अछि।
१६७. (A) अन्याय सहनक बाद स्त्री न्यायक कारण बनि सकैत अछि — कथा नारी-शक्ति आ अन्याय-विरोधक प्रतीकात्मक पाठ दैत अछि।
१६८. (A) सम्बन्ध सार्वजनिक करब आ समुदाय केँ सहभागी बनाब — मिथिला-पाबनि निजी विवाहकेँ सामुदायिक प्रसंग बनबैत अछि।
१६९. (A) जखन ओ व्यक्ति-भविष्य आ न्याय पर भारी पड़ैत अछि — अनाम कथा मान-मर्यादाक करुण अतिरेकी रूप उधारैत अछि।
१७०. (A) परम्परा तखन सार्थक जखन ओ सम्मान, समानता आ संवेदनाक संग हो — जानकी, कोजागरा, पुनर्विवाह आ विवाह-कथा मिलि सुधारक दिशा देखबैत अछि।
१७१. (A) बाल्यावस्थासँ भाषा-राग नहि बनल तँ प्रवासमे भाषा छूटि सकैत अछि — बाल-साहित्य भाषा-स्मृतिक आरम्भिक आधार बनि सकैत अछि।
१७२. (A) आधुनिकता वा प्रवासक नाम पर मातृभाषा छिपेबाक — कविता भाषिक स्वाभिमानक स्पष्ट घोषण अछि।
१७३. (A) भाषिक सम्बन्धक खोज आ सांस्कृतिक स्मृति — उदाहरण भाषाक दूरगामी प्रसारक संकेत जकाँ पढ़ल गेल अछि।
१७४. (A) अपन परिवेश मैथिली शब्द-लयमे — परिवेश-आधारित कविता भाषिक आत्मीयता बनबैत अछि।
१७५. (A) मातृभूमिक ठोस अनुभूति देबाक लेल — पान-मखान, फूसक घर, बारी आदि स्मृति केँ मूर्त करैत अछि।
१७६. (A) किएक तँ अस्मिता-बचावक अवसर छूटि रहल अछि — मीडिया-मौन भाषा-संस्कृतिक उपेक्षाक रूपमे देखाओल गेल अछि।
१७७. (A) मातृभाषाक स्वाभिमान, सच बोलबाक साहस आ संस्कृति-भागीदारी — लेखसभ भाषा केँ नैतिक जिम्मेदारीसँ अलग नहि देखैत।
१७८. (A) भाषा अगिला पीढ़ी धरि पहुँचेबाक चिंता रूपमे — बच्चा आ प्रवासी पीढ़ी मिलि भाषा-सततता प्रश्न बनबैत अछि।
१७९. (A) मैथिली गौरवक ऐतिहासिक दीपक रूपमे — विद्यापति मिथिलाक भाषा-गौरवक दीर्घ परम्परा याद करबैत छथि।
१८०. (A) मैथिली बचएब बाल्य-गीत, मातृभूमि-स्मृति, प्रवासी संवाद आ मीडिया-सत्यवादिता सभसँ जुड़ल अछि — भाषा-रक्षा बहुस्तरीय सामाजिक कार्य रूपमे देखाइत अछि।
१८१. (A) लोक-संस्कृतिक मंचीय परम्परा कमजोर होयब — लेख गामक सांस्कृतिक मंचक क्षरण पर चिन्ता करैत अछि।
१८२. (A) बच्चा पाबनि-संस्कृति भाषा-लयमे सीखैत अछि — बालगीत पाबनिक लोक-अनुभव अगिला पीढ़ी धरि पहुँचबैत अछि।
१८३. (A) गृह, देवी-भक्ति, सनेस आ समुदायिक सहभागिता — पाबनि मिथिलाक संबंध-संरचना आ आस्था-रीति अछि।
१८४. (A) घर-गृहस्थी आ मिथिला-भोजन परम्पराक व्यवहारिक संरक्षण — पाक-विधि दैनिक जीवनक संस्कृति केँ लिखित रूप दैत अछि।
१८५. (A) कला-संरक्षण समाजक सामूहिक दायित्व छल — लोककलाक आधार केवल कलाकार नहि, गामक सहयोग सेहो छल।
१८६. (A) दूनू मिथिला केँ बाल/लोक-इन्द्रिय अनुभवमे उपस्थित करैत अछि — गामक दृश्य आ पशु-पक्षी स्थानीय जीवनक भाषा बनैत अछि।
१८७. (A) मूल सामाजिक-स्नेह आ नैतिक भाव खो जाए — लेखसभ बाहरी आडम्बर आ भीतरी क्षयक अन्तर देखबैत अछि।
१८८. (A) मिथिलाक खाद्य, पाबनि आ पहचानक साझा प्रतीक — मखान अनेक पाठमे जीवन-संस्कृति जोडनिहार चिह्न अछि।
१८९. (A) बचपनसँ भाषा, पाबनि, पशु-पक्षी आ घर-गामक स्मृति रोपब — बाल-साहित्य लोक-संस्कृति पुनर्जीवनक प्रथम पायदान अछि।
१९०. (A) जीवित परम्परा लेल पाबनि, गीत, नाटक, भोजन आ गाम-सहयोग फेर सक्रिय होयब चाही — साहित्यसभ जीवित लोक-जीवनक पुनर्स्थापनक मांग करैत अछि।
१९१. (A) पावनिक स्त्री-मर्यादा सँ आधुनिक विवाहक सामाजिक विडम्बना धरि — क्रम मिथिला-परम्परा आ आधुनिक सामाजिक यथार्थ केँ जोड़ैत अछि।
१९२. (A) समुदाय/मीडिया पर विश्वास आ विवाह-पक्ष पर विश्वास दूनू टूटैत देखाइत अछि — दू पाठ अलग क्षेत्रमे भरोसाक संकट देखबैत अछि।
१९३. (A) नीतिगत समानता आ घरेलू व्यवहारक संघर्ष — एक लेख सिद्धान्तक प्रश्न उठबैत अछि, दोसर कथा व्यवहारक उलझन देखबैत अछि।
१९४. (A) बालपीढ़ी केँ भाषा-संस्कृतिसँ जोड़ब अस्मिता-संघर्षक भाग अछि — अस्मिता केवल वयस्क विमर्श नहि, बाल-संस्कारो पर निर्भर अछि।
१९५. (A) आधुनिक/प्रवासी आत्महीनता — भाषा-संकोच अस्मिता-संकटक आधार रूपमे देखाओल गेल अछि।
१९६. (A) सामूहिक जिम्मेदारी बनाम औपचारिकता/आडम्बर — स्रोत-क्रम समाजक बाहरीपन आ भीतरक जिम्मेदारीक अन्तर पूछैत अछि।
१९७. (A) ओ विश्वास, सम्मान आ पूर्व-प्रतिज्ञाक कसौटी बनैत अछि — कथाक वस्तु-सूक्ष्मता पैघ सामाजिक अर्थ ग्रहण करैत अछि।

१९८. (A) समाज स्त्री, विवाह आ गरिमा केँ न्यायपूर्ण ढंगसँ कोना देखत? — त्रयी सामाजिक सुधारक केन्द्रमे स्त्री आ विवाह-संस्था केँ राखैत अछि।
१९९. (A) दूर पड़ल मैथिल केँ मातृभूमिक ठोस स्मृति सँ जोड़ैत अछि — दू पाठ विस्थापनक बीच मिथिला-स्मृति जाग्रत करैत अछि।
२००. (A) “अनाम कथा”क शेष विवाह-संकट आ ओकर सामाजिक परिणाम — बैच कथा केँ निर्णायक मोड़ पर छोड़ैत अछि; अगिला भाग ओहि संकटक परिणाम खोलेत।
२०१. (A) पूर्व-सहमति आ वास्तविक व्यवहारक बीच पहिल दरार — दू जन अएबाक बात छल, मुदा देरी आ अधिक लोकक आगमन अविश्वासक आरम्भ बनैत अछि।
२०२. (A) कारण ओ वस्तु छोट रहितहुँ विश्वासभंग आ अपमानक संकेत बनि गेल — कथा वस्तुक मूल्य नहि, वचन आ सम्मानक मूल्य पर केन्द्रित अछि।
२०३. (A) कन्यापक्ष पर भरोसा टूटबाक कारण — ओ वस्तु-सनेसकेँ भविष्यक वैवाहिक छलक पूर्वसूचना जकाँ पढ़ैत छथि।
२०४. (A) क्योंकि विवाह-समारोहमे सार्वजनिक अपमान टारब हुनका आवश्यक लगैत अछि — गृह-समाजक दृष्टिमे मान-मर्यादा तत्कालिक संकट अछि।
२०५. (A) ओ कहैत छथि जे बौआक बात सही अछि आ कन्यापक्ष गलती कयने अछि — महारानीक स्वीकार कथा मे प्रेमचन्दक आक्रोशक नैतिक आधार देखबैत अछि।
२०६. (A) विवाह-संस्था व्यक्ति-भविष्य पर कतेक भारी पड़ि सकैत अछि, से देखबैत अछि — कथा सामाजिक प्रतिष्ठा आ निजी जीवनक संघर्ष केँ करुण बनबैत अछि।
२०७. (A) एक छल वा उपेक्षा देखलापर प्रेमचन्दकेँ अन्य बातोमे धोखा सम्भव लगैत अछि — छोट व्यवहार सँ चरित्र/विश्वासक बड़ प्रश्न उठैत अछि।
२०८. (A) विवाह-उत्सव अचानक सामाजिक संकटमे बदलि गेल अछि — गीत रुकि जाएब आ वातावरण बदलि जाएब संकटक घनत्व देखबैत अछि।
२०९. (A) माँग नहि, मुदा स्वेच्छासँ देल वस्तुमे ईमान आ सम्मान चाही — कथा लोभ आ स्वाभिमानक भेद स्पष्ट करैत अछि।
२१०. (A) विवाहमे वस्तु, वचन, विश्वास आ प्रतिष्ठा गूढ़ रूपसँ जुड़ल रहैत अछि — अनाम कथा विवाहक भितरका नैतिक अर्थ केँ सूक्ष्म वस्तु-संकेत सँ खोलैत अछि।
२११. (A) पितृ-अधिकार आ कुल-मानक भावनात्मक दबाव — पिता अपन जीवित पुरुषाक इज्जत बचाबक नाम पर पुत्रकेँ बाध्य करैत छथि।
२१२. (A) व्यक्तिगत इच्छा आ पितृ-आज्ञाक बीच टूटैत मनस्थिति कारण — दृश्य करुण अछि, कारण निर्णय मनसँ नहि, दबावसँ बनैत अछि।
२१३. (A) पितृ-भक्ति केँ आत्म-बलिदानक नैतिक तर्क बनबैत अछि — ओ अपन भविष्य पिताक मान लेल अर्पित करबाक भाषा प्रयोग करैत छथि।
२१४. (A) अपन स्वाभिमान बचाबक अन्तिम प्रयास — सहमति बादो ओ लेन-देन आ औपचारिक लाभसँ अलग रहय चाहैत छथि।
२१५. (A) समाज देखैत अछि जे विवाहक निर्णय एक युवकक आन्तरिक पराजय बनि रहल अछि — करुण प्रतिक्रिया संकटक नैतिक गंभीरता देखबैत अछि।
२१६. (A) संकट केँ रस्मक वेगमे ढाकय चाहैत समाज — हड़बड़ी सामाजिक मर्यादा बचाबक युक्ति बनि जाइत अछि।
२१७. (A) घरक स्त्रीपक्षक करुण सहानुभूति — भौजीक देहभाषा दृश्यक दुःख केँ दृश्यात्मक बनबैत अछि।
२१८. (A) बाहरी विवाह-यात्रा भीतर शोक-यात्रा जकाँ अछि — कथा विवाहक उल्लास केँ करुण विडम्बनामे बदलैत अछि।
२१९. (A) निजी निर्णयक अधिकार परिवारिक प्रतिष्ठा लेल दबि जाइत अछि — समाजक मानक बली पर युवकक भविष्य राखल जाइत अछि।
२२०. (A) प्रेमचन्द निजी विरोध राखितहुँ पितृ-दबाव आ समाज-मर्यादा सँ विवाह स्वीकारैत छथि — सहमति संकल्प नहि, आहत आत्मसमर्पण अछि।
२२१. (A) बाहरी सजावट आ अन्तरंग सम्मानक अन्तर उजागर करैत अछि — कथा देखबैत अछि जे प्रदर्शन समृद्ध, मुदा सम्बन्धक संवेदना गरीब अछि।
२२२. (A) समारोहक बाहरी चमक भीतरक पीड़ा नहि ढाकि सकैत अछि — दृश्य सजल अछि, मुदा वरक मानस श्मशान-जकाँ अँधार अछि।
२२३. (A) अन्तरात्मा विवाहक रीतिमे सहभागी हेबाक लेल तैयार नहि अछि — देहक रुकावट मानसिक प्रतिरोधक संकेत बनैत अछि।
२२४. (A) ओ क्रोध रोकि मौन निभबैत छथि — कथामे वचन सामाजिक अनुशासनक रूपमे सक्रिय अछि।
२२५. (A) आगामी अपमान वा अविश्वास टारि नववधू केँ अपना संस्कारमे आनबाक सोचसँ — भीम मिश्र कन्याकेँ अपन घरक संस्कारमे रँगबाक भरोसा दैत छथि।
२२६. (A) असमर्थ, आहत आ भविष्यहीन मनोदशाक — विवाहक बादो ओ भावनात्मक रूपेँ स्वीकार नहि कए पबैत छथि।
२२७. (A) स्त्रीक विनम्र उपस्थिति आ संवादहीन वैवाहिक आरम्भ — मौन चरण-स्पर्श दाम्पत्यक असमंजसपूर्ण आरम्भ देखबैत अछि।

२२८. (A) आशीर्वाद, स्वीकृति आ संवादक प्रतीक्षा — ओ नव संबंधमे स्वीकारक शब्द चाहैत छथि।
२२९. (A) क्योंकि विवाह विधिपूर्वक भेल, मुदा भावनात्मक परिचय अबोधारि नहि भेल छल — कथा रसम आ परिचयक दूरी पर तीखा प्रश्न उठबैत अछि।
२३०. (A) रसम पूरा होएब दाम्पत्यक भावनात्मक आरम्भक गारंटी नहि अछि — कोबर प्रसंग विवाहक भीतरक मौन संकट केँ खोलैत अछि।
२३१. (A) प्रेमचन्दक पूर्व शर्त टूटैत अछि, मुदा सोनीक सत्यवादिता उभरैत अछि — शर्त भंग अछि, पर सोनी स्वयं छलक स्रोत नहि, से कथा देखबैत अछि।
२३२. (A) ओ अपन भरोसा, सपना आ शर्तसभ टूटल देखैत छथि — शिक्षा-संबंधी आशा ओकर जीवन-दृष्टि सँ जुड़ल छल।
२३३. (A) स्वयं दोषी नहि, सत्यप्रिय आ आहत पात्र छथि — सोनीक सच्चाई कथा मे करुण नैतिक संतुलन बनबैत अछि।
२३४. (A) विवाहक धोखाक बीच वास्तविक व्यक्ति केँ बुझबाक प्रयास — ओ संबंधक आधारभूत सचाई जाँचि रहल छथि।
२३५. (A) उसक आत्मसमर्पित दाम्पत्य-धारणा आ सहानुभूति — सोनी प्रेमचन्दक दुख केँ अपन केन्द्र बनबैत छथि।
२३६. (A) व्यक्ति आ समाज/परिवारक छल बीच भेद करैत छथि — ओ नववधू केँ दोषमुक्त करैत सामाजिक व्यवस्था पर प्रश्न राखैत छथि।
२३७. (A) ओ नियति-समर्पण नहि, परिश्रम आ स्वनिर्णयक पक्षधर छथि — प्रेमचन्दक स्वभाव कर्मकेन्द्रित अछि, तँ छिपाओल तथ्य हुनका तोड़ैत अछि।
२३८. (A) दाम्पत्यक विचार-दूरीक आरम्भिक संकेत — कथा केवल शिक्षा नहि, जीवन-दर्शनक असंगति सेहो देखबैत अछि।
२३९. (A) बाहरी जीवन चलैत अछि, मुदा भीतरक लक्ष्य नष्ट भऽ गेल अछि — कथा सामाजिक घावक दीर्घ मानसिक परिणाम देखबैत अछि।
२४०. (A) व्यक्तिगत कथा समाजक व्यापक वैवाहिक अन्याय पर टिप्पणी बनि जाइत अछि — अन्तिम विचार कथा केँ सामाजिक आलोचना मे परिणत करैत अछि।
२४१. (A) सृजनशील चिन्तक, समालोचक, नाटक-रंगमंच गवेषक आ अनुवादक — परिचय हुनकर बहुआयामी साहित्यिक साधना पर बल दैत अछि।
२४२. (A) गद्य-लेखन आ आलोचना मे रूपगत नवता — हुनका नव गद्य-दृष्टि आ आलोचनात्मक लेखनक साधक रूपमे चिन्हल गेल अछि।
२४३. (A) मैथिली नाट्य-अध्ययन आ रंगमंचक आधारग्रन्थीय योगदानक कारण — प्रेमशंकर सिंह रंगमंचीय अध्ययनक विशेष विद्वान रूपमे उभरैत छथि।
२४४. (A) मैथिली विषय पर हिन्दी माध्यमे सेहो व्यापक आलोचना-कर्म — विद्यापति अनुशीलन द्विभाषिक विद्वत्ता आ परम्परा-परीक्षण देखबैत अछि।
२४५. (A) भारतीय भाषिक-सांस्कृतिक संवादक क्षमता — अनुवादक रूप हुनका व्यापक साहित्य-सम्पर्कक वाहक बनबैत अछि।
२४६. (A) साहित्यिक धरोहर-संरक्षक आ पाठ-निर्माता — सम्पादन पुरान/नव पाठकेँ पाठक समाज धरि पहुँचबैत अछि।
२४७. (A) हुनक दीर्घ साहित्य-सेवा केँ सार्वजनिक मान्यता भेटल — सम्मान कृतिक सामाजिक स्वीकृति प्रमाणित करैत अछि।
२४८. (A) सारस्वत कर्म आजीवन जारी रहल — परिचय सेवा आ लेखनक निरन्तरता पर बल दैत अछि।
२४९. (A) तुलनात्मक आ बहुभाषिक साहित्य-दृष्टि केर आधार — बहुभाषिक अध्ययन आलोचकक दायरा विस्तृत करैत अछि।
२५०. (A) डॉ. प्रेमशंकर सिंह मैथिली अध्ययनक शोध, आलोचना, रंगमंच, अनुवाद आ सम्पादनक केन्द्रीय व्यक्तित्व छथि — परिचय हुनका बहुआयामी साहित्य-पुरुषक रूपमे स्थापित करैत अछि।
२५१. (A) साहित्य अतीतक अनुभव आ भविष्यक चेतनाकेँ वर्तमानमे जोड़ैत अछि — लेख आरम्भे साहित्यक ऐतिहासिक चेतना पर बल दैत अछि।
२५२. (A) साहित्य संस्कृति-इतिहास, मानव-मन आ सभ्यताक संरक्षित चेतना सँ जुड़ल अछि — लेख साहित्य-इतिहासक व्यापक सांस्कृतिक अर्थ प्रस्तुत करैत अछि।
२५३. (A) विश्व-मानवक विराट जीवन साहित्य द्वारा आत्मप्रकाश करैत अछि, से आधार देबाक लेल — उद्घरण साहित्यक विश्वमानवीय अर्थ केँ सुदृढ़ करैत अछि।
२५४. (A) साहित्य स्मृति आ संभावना दुनू सँ ऊर्जा पबैत अछि — लेख साहित्य केँ गतिशील समय-चेतना मानैत अछि।
२५५. (A) साहित्य मानव-जीवनक विकास-संकल्प केँ सौन्दर्य आ मूल्य सँ बाँधैत अछि — रूपक साहित्यक नैतिक-सांस्कृतिक भूमिका व्यक्त करैत अछि।
२५६. (A) सामाजिक-सांस्कृतिक आलोचना — लेख साहित्य अध्ययनकेँ समाज-संस्कृति-संवेदना संग जोड़ैत अछि।
२५७. (A) साहित्य अतीतक जीवन-धाराक दर्शन करएबाक झरोखा अछि — गवाक्ष अतीत-दर्शनक सौन्दर्यपूर्ण प्रतीक अछि।
२५८. (A) मानवक आत्म-संशोधक यात्रा — साहित्य मानव विकासक प्रयोगशाला जकाँ देखल गेल अछि।
२५९. (A) साहित्य-इतिहास केँ सांस्कृतिक युग-चेतनाक रूपमे पढ़बाक आधार — लेख इतिहासक कालविभाजन केँ मूल्य-आधारित बनबैत अछि।

२६०. (A) साहित्य समय, संस्कृति, मानव-मन आ भविष्य-संकल्पक समन्वय अछि — प्रेमशंकर सिंह साहित्यक व्यापक दार्शनिक अर्थ सँ लेख आरम्भ करैत छथि।
२६१. (A) मिथिलावासी प्राचीन परम्परा आ संस्कृत शिक्षामे अधिक रत रहलाह — लेख परम्परापोषक प्रवृत्ति केँ नवजागरणक विलम्बक कारण मानैत अछि।
२६२. (A) नव सामाजिक-सांस्कृतिक बदलाव अपेक्षाकृत देर सँ आयल — लेख आधुनिक चेतनाक प्रवेशक विलम्ब पर संकेत करैत अछि।
२६३. (A) पश्चिमक स्पर्श अनुभूति पहिल बेर व्यापक रूपमे भेल — प्रशासनिक परिवर्तन बाहरी प्रभावक माध्यम बनल।
२६४. (A) स्थानीय भाषा-सांस्कृतिक संस्थागत उपेक्षा — लेख उर्दू-फारसी आ देवनागरीद्वारा स्थानापन्न करबाक बात कहैत अछि।
२६५. (A) सामाजिक, सांस्कृतिक आ साहित्यिक जीवनमे नव चेतना आयल — हुनक व्यक्तित्व साहित्य-सर्जक केँ आकृष्ट करैत अछि।
२६६. (A) विद्या-व्यसन, दानशीलता, देशभक्ति आ कृपापूर्ण व्यवहार — लेख राजाश्रय आ व्यक्तित्वक सकारात्मक प्रभाव मानैत अछि।
२६७. (A) लक्ष्मीश्वर सिंहक साहित्य-पोषक परम्परा — उत्तराधिकारी सेहो परम्परा कायम रखलनि, से कहल गेल।
२६८. (A) बौद्धिक आ साहित्यिक प्रगति — लेख नव प्रवृत्ति पर पुरान छाया आ संघर्ष दुनू देखबैत अछि।
२६९. (A) मैथिली साहित्यक नव रूप आ नव प्रवृत्ति — प्रकाशन सुविधा साहित्यिक नवोत्थानक साधन बनल।
२७०. (A) मिथिलाक आधुनिक साहित्य नवजागरण, परम्परा, राजाश्रय आ भाषा-संघर्षक जटिल संयोग सँ बनल — लेख आधुनिक मैथिली साहित्यक उगमक मिश्रित ऐतिहासिक स्थितिक विवेचन करैत अछि।
२७१. (A) आधुनिक मैथिली साहित्यक नव प्रवृत्तिक अग्रगामी परम्परा देखाबय लेल — लेख व्यक्तित्वसभक माध्यमे युग-परिवर्तनक धारा रेखांकित करैत अछि।
२७२. (A) आधुनिक मैथिली साहित्यक विधा-विस्तार — लेख शताब्दी केँ रचनात्मक विस्तारक काल मानैत अछि।
२७३. (A) साहित्य, समाज, राजनीति, विज्ञान आ विचारमे नव स्फूर्ति आ पुनर्संस्कार — लेख अंग्रेजी राज्यक व्यापक प्रभाव केँ जीवन-शैली परिवर्तनसँ जोड़ैत अछि।
२७४. (A) मातृभाषा-सृजनक आन्तरिक शक्ति प्रबल छल — अभावक बावजूद सृजन परम्परा जोगेलक, ई लेखन-संस्कृतिक दृढ़ता देखबैत अछि।
२७५. (A) पुरान परम्पराक प्रभाव गहिर छल, मुदा धीरे-धीरे स्वतंत्र नवता आयल — लेख परम्परा सँ आधुनिकता धरि संक्रमण देखबैत अछि।
२७६. (A) मैथिली साहित्यक सर्वांगीण समुद्धारक चेतना — एहि कालक लेखनमे नव मनोदशा आ विधागत परिवर्तन देखल गेल।
२७७. (A) साहित्यक आधुनिक विस्तार आ प्रयोगशीलता — विधागत परिवर्तन स्वर्णिम युगक आधार बनैत अछि।
२७८. (A) नामसभ मिलि साहित्यिक आन्दोलनक सामाजिक-सांस्कृतिक पंक्ति बनबैत अछि — लेख व्यक्तित्वक सामूहिक योगदान पर बल दैत अछि।
२७९. (A) संस्कृत-प्रभावित आधार पर नव विधा, प्रकाशन आ मातृभाषा-चेतना विकसित भेल — लेख संक्रमणक संतुलित व्याख्या करैत अछि।
२८०. (A) बीसम शताब्दीक मैथिली साहित्य पूर्व परम्परा सँ निकलि आधुनिक विधा-विस्तार आ नव चेतनाक युग बनल — स्वर्णिम युगक रूपरेखा साहित्यिक नवोत्थानसँ निर्मित अछि।
२८१. (A) मनुष्यक पकड़, कर्म, स्मृति आ जड़-खोजक प्रतीक — कविता हाथकेँ जैविक अंगसँ अधिक अस्तित्वक संकेत बनबैत अछि।
२८२. (A) मूलाधारहीनता आ अस्तित्वगत अपूर्णता — कविता आधार टूटबाक अनुभव सँ आरम्भ होइत अछि।
२८३. (A) मानवीय सम्बन्ध, उलझन आ अंतहीन विस्तार — हाथक जाल सामाजिक आ मानसिक उलझनक बिम्ब बनैत अछि।
२८४. (A) पीढ़ी-स्मृति आ दैनिक जीवनक स्पर्श-चित्र — कविता हाथक माध्यमे स्मृति आ अनुभव जोड़ैत अछि।
२८५. (A) खेती, श्रम आ भाग्य एक प्रतीक-व्यवस्थामे मिलैत अछि — मिट्टीक रेखा आ हथेली रेखा एक-दोसराक प्रतिध्वनि बनैत अछि।
२८६. (A) पहचानक मूल कारण/आधार तक पहुँचबाक बेचैनी — कविता जड़-खोजक दार्शनिक छवि बनबैत अछि।
२८७. (A) लेखन, स्मृति आ अस्तित्वक निशान बनबैत हाथ — कविता लिखित चिह्न आ शारीरिक अनुभूति केँ जोड़ैत अछि।
२८८. (A) हाथक बिम्ब चेतना आ अवचेतन धरि पैठि गेल अछि — कविता बाह्य अंगकेँ मानसिक संरचना बनबैत अछि।
२८९. (A) गुजराती सँ अंग्रेजी आ अंग्रेजी सँ मैथिली आनि भाषा-पार संवेदना जोड़ैत अछि — कविता भाषिक पुलक उदाहरण अछि।
२९०. (A) हाथक बिम्ब सँ मनुष्य, धरती, स्मृति, श्रम आ जड़-चेतना खोजल गेल अछि — कविता प्रतीक-प्रधान आधुनिक संवेदना प्रस्तुत करैत अछि।

२९१. (A) मानवीय संवेदना, कथा, समालोचना, गीत-गजल आ बहुभाषिक लेखनक कारण — परिचय हुनकर व्यापक साहित्यिक प्रभाव केँ रेखांकित करैत अछि।
२९२. (A) सीमापार बहुभाषिक साहित्यिक संवाद — विमल नेपाल-जनकपुरक बहुभाषिक साहित्य-संसारक प्रतिनिधि छथि।
२९३. (A) पाठकक हृदयमे सहज प्रवेश करबाक शक्ति — परिचय शैलीगत सजीवता पर विशेष बल दैत अछि।
२९४. (A) रचना-गुण मात्रा सँ अधिक महत्त्वपूर्ण अछि — लेखनक प्रभावक मूल्यांकन मात्र संख्यासँ नहि होइत।
२९५. (A) हृदयगत पीड़ा, प्रेम आ करुणा केँ गहिर रूपे व्यक्त करबाक क्षमता — विमलक रचना-संसार भाव-संवेदनाक कारण विशेष मानल गेल।
२९६. (A) साहित्यकारक अकादमिक गुरु-भूमिका — उन्हर साहित्यिक जीवन शिक्षण-संस्कारसँ सेहो जुड़ल अछि।
२९७. (A) साहित्यिक संवादक खुला केन्द्र बनब — विमलक व्यक्तित्व साहित्यिक पीढ़ी-निर्माणसँ सम्बद्ध अछि।
२९८. (A) गुरु-शिष्य, प्रेरणा आ साहित्यिक पीढ़ी-सततता — परिचय साहित्यिक नेतृत्वक सामाजिक रूप दिखबैत अछि।
२९९. (A) लेखक-नाम आ साहित्यिक नामक सम्बन्ध स्पष्ट करैत अछि — परिचय लेखकक पहिचान केँ विस्तृत करैत अछि।
३००. (A) राजेन्द्र विमल संवेदना, शैली, आलोचना, गीत-गजल आ साहित्यिक मार्गदर्शनक बहुआयामी व्यक्तित्व छथि — परिचय हुनका मैथिली साहित्यक केन्द्रीय साधक रूपमे रेखांकित करैत अछि।
३०१. (A) अधूरा आकांक्षा आ समयपूर्व विफलता — गजल आरम्भे नष्ट होइत स्वप्नक करुण भाव रचैत अछि।
३०२. (A) रचनात्मक संभावनाक असमय मृत्यु — रचना जन्म लेबासँ पूर्व टूटि जाएब गजलकेँ करुण बनबैत अछि।
३०३. (A) अँधार, प्रतीक्षा आ उजियारक अस्थिर संघर्ष — प्रकृति-बिम्ब मनोदशाक सहगामी बनैत अछि।
३०४. (A) उत्कट जीवनधारा अन्ततः शुष्कता वा थम्हाव मे बदलि सकैत अछि — गजल परिवर्तन आ क्षरणक अनिवार्यता स्वीकारैत अछि।
३०५. (A) प्रेम-चेतना जागल बिनु बाहरी उत्सव अधूरा अछि — दिवाली भीतरक प्रेम-प्रकाशसँ सार्थक कहल गेल।
३०६. (A) नव चेतना लेल पुरान जड़ता हटाबयक — गजल नवीकरणक लोक-उत्सवी बिम्ब प्रयोग करैत अछि।
३०७. (A) प्रेम आ करुणाक सामूहिक प्रकाश — दिवालीक अर्थ संबंधक उजियारसँ जुड़ल अछि।
३०८. (A) अधर्म पर नैतिक शक्तिक विजय — दिवालीक पारम्परिक प्रतीक सामाजिक-नैतिक अर्थ पबैत अछि।
३०९. (A) करुण स्वप्न-भंग आ प्रेमपूर्ण नव-प्रकाशक द्वंद्व — विमल अँधार आ उजियार दुनू संवेदनाकेँ साधैत छथि।
३१०. (A) सपना, क्षरण, प्रेम, उजियार आ नवजीवनक मूल्य गजलमे घनिष्ठ अछि — विमलक गजल जीवन-संवेदनाक गहिर बिम्ब रचैत अछि।
३११. (A) दुनू स्त्री अपन-अपन पति सँ असंतुष्ट आ दोसरक जीवनक प्रति आकर्षित अछि — कथा तृष्णा केँ अभाव आ तुलना सँ उत्पन्न देखबैत अछि।
३१२. (A) कमाऊ, गंभीर, घर चलाबयवाला मुदा भाव-स्पर्शमे रूख पात्र — सोनावती ओकरा चाहैत कारण स्थिरता देखैत अछि, सिकिलिया ओकरा नीरस मानैत अछि।
३१३. (A) चंचल, आकर्षक, ढोलकिया, परन्तु मद्यपी आ अस्थिर पात्र — सिकिलिया ओकर लय-रंगसँ आकृष्ट, सोनावती ओकर अव्यवस्था सँ पीड़ित अछि।
३१४. (A) रंग, शरीर, बाँसुरी/ढोलक आ कल्पित रसमय जीवन — ओ अपन पति राजदेबाक नीरसता सँ विपरीत छवि खोजैत अछि।
३१५. (A) ओ गंभीर, कमाऊ, घर-परिवार निभेनिहार अछि — सोनावती अपन अस्थिर पति सँ त्रस्त अछि आ स्थिरता चाहैत अछि।
३१६. (A) लोग अपन उपलब्ध जीवनक अच्छाई कम, अभाव अधिक देखैत अछि — कथा इच्छा आ असंतोषक मनोविज्ञान पर आधारित अछि।
३१७. (A) कोनो व्यक्ति पूर्ण नहि, आकर्षण चयनात्मक देखाइत अछि — पात्र दोसरक पति मे गुण देखैत, दोष नहि देखैत।
३१८. (A) इच्छा, देह, दाम्पत्य आ समाज-बंधनक टकराव — कथा लोक-समाजक भीतर दबी इच्छाक असुविधाजनक चित्रण अछि।
३१९. (A) कल्पित आकर्षण व्यवहारिक जीवनमे स्थायी समाधान नहि भेल — तृष्णा क्षणिक समाधानक भ्रम खोलैत अछि।
३२०. (A) इच्छा, अभाव आ तुलनाक बुझि न सकल प्यास कथा चलबैत अछि — कथा कामना आ असंतोषक गोलचक्कर रचैत अछि।
३२१. (A) देह, गरीबी, हिंसा आ पुरुष-स्वामित्वक क्रूरता देखबैत अछि — कथा आरम्भे देह-इच्छा आ हिंसा केँ यथार्थ रूपमे रखैत अछि।
३२२. (A) विधवा माय, पत्नी, बेटा आ मृत बहिन बाद घर सँधारबाक आर्थिक दायित्व — राजदेबा नीरस भए सकैत, मुदा जिम्मेदार पात्र अछि।
३२३. (A) गरीबीक भीतर देहिक-सांस्कृतिक चाह आ उपभोग-आकांक्षा — कथा अभावग्रस्त स्त्रीक इच्छाक उपेक्षित जगत देखबैत अछि।

३२४. (A) रोजमर्रा नीरसता सँ अलग रसभर जीवनक स्वप्न जगबैत अछि — संगीतिक देहभाषा आकर्षणक माध्यम बनैत अछि।
३२५. (A) दारू, गरीबी, वैवाहिक हिंसा आ स्त्री-अपमान — कथा स्त्रीक शरीर पर लिखल घरेलू हिंसा देखबैत अछि।
३२६. (A) परिवार-समाजक नैतिक बंधन आ स्त्री-नियंत्रणक लोक-स्वर — ओ लोक-नैतिकता आ परिवार-बंधनक पक्ष सँ प्रतिक्रिया दैत अछि।
३२७. (A) उपभोग-लालसा, अभाव आ चमकदार संसारक दूरस्थ आकर्षण — गरीब संसारमे फेकल डिब्बो चाहक प्रतीक बनैत अछि।
३२८. (A) ओहि प्रस्तावमे उपेक्षित इच्छा, मनोरंजन आ मानोचित देखभालक वादा अछि — सिकिलिया अपन नीरस गृहस्थी सँ अलग अनुभव चाहैत अछि।
३२९. (A) पात्रक जातीय, वर्गीय, देहिक आ भावनात्मक यथार्थ केँ सीधा स्वर दैत अछि — लोकवाणी कथा केँ जीवित आ निर्भीक बनबैत अछि।
३३०. (A) “तृष्णा” इच्छा केँ नैतिक उपदेश नहि, गरीबी, देह, हिंसा आ लोक-समाजक जटिलता मे पढ़ैत अछि — कथाक यथार्थवादी शक्ति ओकर लोक-भाषिक जीवन-चित्रणमे अछि।
३३१. (A) इच्छा सामाजिक सीमा तोड़ि व्यवहारिक प्रयोग बनि गेल — स्त्री-द्वय कल्पना सँ बाहर निकलि जीवन-बदलावक प्रयोग करैत अछि।
३३२. (A) कारण असंतोष मात्र क्षणिक नहि, गहिर वैवाहिक अनुभवसँ जुड़ल छल — कथा विवाहक भीतर दबा असंतोषक शक्ति देखबैत अछि।
३३३. (A) तृष्णा आ यथार्थक टकरावसँ उपजल पछतावा/स्वीकार — घुरब सुखी समाधान नहि, अनुभवक बादक विडम्बनापूर्ण स्वीकार अछि।
३३४. (A) दोष दोसरमे देखबाक आ अपन चयनसँ बचबाक प्रवृत्ति — वापसी बादो तुलना समाप्त नहि होइत।
३३५. (A) स्थिरता भेटलाक बाद ओकर नीरसता खलैत अछि — जे गुण चाहल छल, ओही व्यावहारिक जीवनमे कमी बनि गेल।
३३६. (A) आकर्षणक पीछे छिपल दोष व्यवहारिक जीवनमे असह्य भेल — कथा बाहरी आकर्षणक सीमाक उद्घाटन करैत अछि।
३३७. (A) मनोवैज्ञानिक/सैद्धान्तिक व्याख्याक आवाज — ओ पात्रक घटनाकेँ सामान्य मानवीय प्रवृत्ति सँ जोड़ैत छथि।
३३८. (A) मानवीय असंतोषक चिरन्तन चक्र — कथा चाह आ उपलब्धिक उलटबाँस बनबैत अछि।
३३९. (A) व्यक्ति-इच्छा से सामाजिक व्यवस्था अस्थिर होयबाक भय — लोक-समाज व्यवस्था-बंधनक टूटनसँ भयभीत अछि।
३४०. (A) “तृष्णा” दाम्पत्यक असंतोष केँ इच्छा, प्रयोग, पछतावा आ सामाजिक बंधनक चक्रमे देखबैत अछि — कहानी मानवीय अधूरापनक जटिल लोकमनोविज्ञान रचैत अछि।
३४१. (A) समीक्षा, सम्पादन, अनुवाद आ कथा-विमर्श — परिचय हुनका आलोचक-संपादक आ साहित्य-संगठक रूपमे स्थापित करैत अछि।
३४२. (A) मैथिली साहित्य, कविता, राजनीति आ आलोचना पर दीर्घ कार्य — सूची हुनक आलोचनात्मक सक्रियताक विस्तार देखबैत अछि।
३४३. (A) साहित्य सँ आगे सामाजिक-वैश्विक पाठक मैथिलीकरण — अनुवाद मैथिली केँ विश्व-पाठसँ जोड़ैत अछि।
३४४. (A) कथा-परम्परा शहरसँ गाम दिस फेरि आयल — लेख आयोजनक ग्रामीण पुनरागमन पर प्रसन्नता व्यक्त करैत अछि।
३४५. (A) सगर रातिक ऐतिहासिक निरन्तरता देखाबय लेल — पूर्व घटनासभ वर्तमान आयोजनक परम्परा बनबैत अछि।
३४६. (A) साहित्यिक यात्रा शहर केन्द्रितता छोड़ि ग्रामांचलमे प्रवेश करैत अछि — वाक्य साहित्यिक आन्दोलनक स्थल-परिवर्तन देखबैत अछि।
३४७. (A) ग्रामांचलमे आयोजन सम्भव बनेबाक भूमिकालेल — ओ ग्राम-आधारित आयोजनक प्रेरक मानल गेलाह।
३४८. (A) कथाकार आ मातृभाषा अनुरागीक दृढ़ सामूहिकता — विरोध/निराशाक बावजूद कार्यक्रम चलैत रहल।
३४९. (A) सगर रातिक भौगोलिक विस्तार आ साहित्यिक नेटवर्क — कार्यक्रम अनेक नगर-क्षेत्रमे फैलल।
३५०. (A) रमणजी सगर राति केँ मैथिली कथा-जागरणक जीवित आन्दोलन रूपमे देखैत छथि — लेख कथा-पाठ आन्दोलनक इतिहास आ मूल्य प्रस्तुत करैत अछि।
३५१. (A) किरण जयंतीक अवसर पर लोहनामे साहित्यकारसभक बीच — लेख अवधारणाक उत्पत्ति साहित्यकार सभाक निर्णयसँ जोड़ैत अछि।
३५२. (A) प्रभास कुमार चौधरी — रमणजी प्रभास कुमार चौधरीकेँ आरम्भिक मूर्तिकार मानैत छथि।
३५३. (A) भरिक रात कथा-पाठ, घुमि-घुमि विभिन्न स्थान पर — सगर राति मूलतः कथा-पाठक रात्रिकालीन साहित्यिक आयोजन अछि।
३५४. (A) एक दुखद घटनाक कारण — लेख प्रारम्भिक बाधाक संकेत करैत अछि।
३५५. (A) नव लिखल कथा आ ओहि पर विशेष चर्चा — नव रचना आ आलोचनात्मक संवाद कार्यक्रमक मूल बनल।
३५६. (A) सामूहिक, जीवित आ सतत आयोजन-प्रक्रिया — सगर राति अपन अगिला डेग सामूहिक सहमति सँ तय करैत अछि।

३५७. (A) गृह-सहभागिता आ साहित्यिक आतिथ्यक जीवित रूप — आयोजनमे परिवार आ गृह-पत्नी भूमिकाक महत्त्व स्वीकारल गेल।
३५८. (A) साहित्यिक आतिथ्यक स्त्री-सहभागिता दोहरायल गेल — लेख सगर राति मे घर-समुदायक साझा श्रम दर्ज करैत अछि।
३५९. (A) जिम्मेदारी, आत्मीयता आ साहित्यिक स्वाभिमान बचबैत अछि — सगर राति निमंत्रण केँ व्यक्तिगत साहित्यिक प्रतिबद्धता बनबैत अछि।
३६०. (A) सगर राति व्यक्तिगत आतिथ्य, नव कथा-पाठ आ प्रत्यक्ष संवादक सामुदायिक विधि अछि — कार्यक्रम नियम आ आत्मीयता सँ अलग पहचान बनबैत अछि।
३६१. (A) आरम्भे अनेक रचनाकार एक मंच पर नव कथा संग आएलाह — सूची कार्यक्रमक सामूहिक रचनात्मकता देखबैत अछि।
३६२. (A) मैथिली आयोजनमे भाषा-पार साहित्यिक संवादक अवकाश — सगर राति संवादशील मंच रूपमे उभरैत अछि।
३६३. (A) कथा-पाठ मात्र नहि, समालोचनात्मक विमर्श सेहो केन्द्रमे छल — चर्चा आयोजनक आलोचनात्मक चरित्र बनबैत अछि।
३६४. (A) साहित्यकारक स्वाभिमान आ आयोजकीय जिम्मेदारी सुरक्षित करैत अछि — व्यक्तिगत उपस्थिति केँ नैतिक शर्त बनाओल गेल।
३६५. (A) जीवकान्तक अनुरोध पर तीन मास बाद आयोजन तय भेल — कार्यक्रमक क्रम सहभागी अनुरोधसँ आगे बढ़ैत अछि।
३६६. (A) नव रचना पढ़ब आ टीका-विश्लेषण द्वारा कथाक गति देब — पत्र सर्जनात्मक उपलब्धि लेल सामूहिक प्रयत्नक आग्रह करैत अछि।
३६७. (A) सगर राति अवसर पर पोथीक लोकार्पण शुरू भेल — दर्भंगा आयोजन कथा-पाठ संग पुस्तक-प्रकाशनक नूतन परम्परा जोड़लक।
३६८. (A) कथा आन्दोलन पुस्तक-संस्कृतिसँ जुड़ल — सगर राति केवल मौखिक मंच नहि रहल, प्रकाशनक अवसर बनल।
३६९. (A) आयोजनक लक्ष्य आ परिस्थिति प्रत्यक्ष स्रोतसँ स्पष्ट करबाक लेल — रमणजी इतिहास लेखनमे दस्तावेजी आधार प्रयोग करैत छथि।
३७०. (A) सगर राति कथा-पाठ, टीका-विश्लेषण, आयोजकीय शर्त आ पोथी-लोकार्पणक बहुआयामी मंच बनल — प्रारम्भिक आयोजनसभ आन्दोलनक रूपरेखा निर्मित करैत अछि।
३७१. (A) दमनकान्त झाक आवास पर गोविन्द झाक संयोजकत्वमे — सगर राति परिस्थिति अनुसार स्थान बदलि निरन्तर रहल।
३७२. (A) वरिष्ठ कथाकारक सक्रिय नेतृत्व — वरिष्ठ सहभागिता आयोजनक गरिमा बढ़बैत अछि।
३७३. (A) एक आयोजन सँ दोसर आयोजनक जिम्मेदारी जन्म लैत अछि — सगर राति उत्तरदायित्व हस्तांतरणक जीवित शृंखला अछि।
३७४. (A) मैथिली कथा-जगतक विस्तृत भौगोलिक नेटवर्क — कार्यक्रम अनेक भूभागमे मैथिली कथा जोड़ैत अछि।
३७५. (A) पठित कथाकेँ लिखित दस्तावेज आ संकलनमे बदलबाक हेतु — सगर राति मौखिक पाठ सँ पुस्तक-संस्कृति धरि बढ़ैत अछि।
३७६. (A) सगर राति पाठमे सँ बीछल कथाक प्रतिनिधि संकलन बनल — आन्दोलनक साहित्यिक परिणाम पुस्तक रूपमे सामने आयल।
३७७. (A) अस्वास्थ्य, प्रतिक्रिया सँ आहत होयब, हतोत्साह, कार्यालयीय व्यस्तता — लेख आंदोलनक अंतर्विरोध ईमानदारी सँ लिखैत अछि।
३७८. (A) कठोर आलोचना सँ साहित्यिक सम्बन्ध आ सहभागिता प्रभावित भऽ सकैत अछि — सगर राति मे संवाद तीखो भऽ सकैत अछि।
३७९. (A) वरिष्ठ/नियामक आलोचना जँ नव आगन्तुक केँ दबा दे तकर — लेख रचनात्मक आलोचना आ दमनकारी आलोचना बीच भेद सुझबैत अछि।
३८०. (A) सगर राति विस्तार पेलक, मुदा वृद्धि संग मतभेद, आलोचना-तनाव आ सहभागिता-संकट सेहो आयल — रमणजी आन्दोलनक उपलब्धि आ कमजोरी दुनू चिन्हैत छथि।
३८१. (A) रचनात्मक सक्रियता बढ़बैत अछि — नव कथा अनिवार्यता लेखककेँ सतत लिखबाक प्रेरणा दैत अछि।
३८२. (A) शिल्प-सुधार, सहनशीलता आ रचनात्मक आत्मपरीक्षण — रमणजी तीन सकारात्मक प्रभाव स्पष्ट करैत छथि।
३८३. (A) आन्दोलनक रचनात्मक आकर्षण बढ़ल — लेख सगर रातिक विकास मापैत अछि।
३८४. (A) ग्रामांचल/स्थानीयता सहित आयोजनक व्यापक स्वीकार्यता — सगर राति विभिन्न ठाम पर लेखकीय समुदाय जुटबैत गेल।
३८५. (A) मंच प्रकाशित साहित्यक जनक बनि रहल छल — मौखिक-आलोचनात्मक प्रक्रिया पुस्तकाकार उपलब्धि बनल।
३८६. (A) आयोजन लेखकक रचनात्मक अनुशासन बढ़बैत अछि — सगर राति लेखक केँ निरन्तर सृजन लेल प्रेरित करैत अछि।
३८७. (A) मनोरंजनमुखी मंच बनाम रचनात्मक कथामुखी मंचक भेद देखाबय लेल — सगर राति रचनात्मक प्रतिस्पर्धा आ आलोचना पर टिकैत अछि।
३८८. (A) व्यावसायिकता सँ मुक्त मातृभाषा-प्रेमक सहभागिता — साहित्यकार पूजा-हकार जकाँ प्रेम सँ अबैत छथि, से भाव व्यक्त अछि।
३८९. (A) परिचय, अनुभव, विचार-आदानप्रदान आ भावात्मक सम्बद्धता बढ़बैत अछि — आन्दोलन साहित्यिक समुदाय निर्माण करैत अछि।

३९०. (A) मैथिली कथा लेखनमे निरन्तर, अहिंसक, रचनात्मक बदलाव आयल — सगर राति कथा क्षेत्रमे निस्तब्ध पर गहिर परिवर्तनक नाम अछि।
३९१. (A) आन्दोलनक परिमाणात्मक विकास — लोकार्पण-संख्या वृद्धि साहित्यिक ऊर्जा बढ़बाक सूचक अछि।
३९२. (A) मैथिली कथामंचक वैश्विक/परभाषी आकर्षण — सगर राति मैथिलीकें व्यापक सांस्कृतिक संवादमे आनैत अछि।
३९३. (A) मैथिली कथा-आन्दोलन प्रवासी/क्षेत्रीय केन्द्रसभमे फैलल — सगर राति बहुस्थलीय मैथिली जागरणक रूप लेलक।
३९४. (A) लोकप्रियता दुरुपयोग होयबाक खतरा अछि — रमणजी सगर रातिक मूल कथा-पाठ/चर्चा धुरी बचाबय चाहैत छथि।
३९५. (A) आयोजनमे साहित्यिक मिलन सेहो महत्त्वपूर्ण तत्व अछि — सगर राति संवाद, परिचय आ संबंधक मंच सेहो अछि।
३९६. (A) मान्यता बाद संस्थागत अहंकार, सुविधा-लालसा वा लेखकीय शिथिलता बढ़बाक भय — टिप्पणी साहित्यिक स्वाधीनता आ सतर्कता पर जोर दैत अछि।
३९७. (A) नियमित नव लेखन, खुला प्रतिक्रिया आ मातृभाषा-प्रेमक अभ्यास — आन्दोलन जीवित रचनात्मकता कें औपचारिकता पर भारी करैत अछि।
३९८. (A) मंचीय आलोचना सँ मान्य पुस्तक तक पहुँचल रचना-प्रक्रिया — सगर राति प्रकाशित साहित्यिक गुणवत्ता निर्माणमे सहायक देखाइत अछि।
३९९. (A) मैथिली कथा-जागरणक निरन्तरता लेल — रमणजी आन्दोलनक सृजनात्मक परम्परा जारी रहय चाहैत छथि।
४००. (A) सगर राति लेखक बाद रामाश्रय झा “रामरंग”क संगीत-रचना/राग-विषयक खण्ड — स्रोत-क्रम रमानन्द झाक लेखसँ आगे संगीत-आधारित रामरंग खण्ड दिस बढ़ैत अछि।
४०१. (A) विद्वान, वाग्गेयकार, शिक्षक आ मंच-सम्पादक — स्रोत हुनका संगीत, शिक्षा आ मंच-संयोजनसँ जुड़ल बहुआयामी रचनाकार रूपमे रखैत अछि।
४०२. (A) विद्यापतिक गुणक स्तुति — स्थाई “कतेक कहब गुण अहाँकें” सँ विद्यापतिक विद्या-गुणक वंदना करैत अछि।
४०३. (A) मिथिला-कोकिल, कीर्ति-पताका आ शिव-भक्त — अन्तरा विद्यापतिक सांस्कृतिक, काव्यिक आ भक्तिपरक महत्त्व कें संक्षेपमे राखैत अछि।
४०४. (A) गंधार कोमल, मध्यम तीव्र, निषाद आ आन स्वर शुद्ध — रचनामे स्वर-विन्यास स्पष्ट देल अछि, जे ओकर शास्त्रीयता देखबैत अछि।
४०५. (A) विद्यापतिक भक्ति सँ शिवक चाकर रूप धारण करब — स्थाईमे “भगति वश भेला शिव” कहि विद्यापति-भक्तिक लोककथा-स्मृति जोड़ल गेल अछि।
४०६. (A) शिव अपन दिव्य चिह्न छोड़ि सेवक-रूपमे अबैत छथि — भक्ति एतय देवता कें भक्त-सेवामे झुकयबला शक्ति बनि जाइत अछि।
४०७. (A) विद्यापति मिथिलाक गौरव बढ़बैत छथि — विद्यापति जन्म सँ मिथिलाक सांस्कृतिक मान बढ़ल, ई भाव अन्तरामे अछि।
४०८. (A) गीतकें पाठ आ गायन, दुनू रूपमे व्यवस्थित करबाक लेल — स्वर-चिह्न आ बोलक संयोजन वाग्गेयकारक व्यावहारिक संगीत-बोध देखबैत अछि।
४०९. (A) विद्यापतिक स्मृति कें शास्त्रीय राग-रचनामे प्रतिष्ठित करब — राग-शीर्षक मैथिली गौरव आ संगीत-परम्पराक मिलन करैत अछि।
४१०. (A) रामरंग विद्यापति-भक्ति कें शास्त्रीय संगीत-विन्यासमे रूपान्तरित करैत छथि — रचना साहित्यिक महाकवि कें राग, ताल आ वंदना मार्फत जीवित करैत अछि।
४११. (A) राग बिलावल, त्रिताल, मध्य लय — शीर्षकहि मे बिलावल आ त्रितालक उल्लेख अछि।
४१२. (A) विघ्नहरण गजबदन दयाकर रूप — गणेश कें दुःख-ताप हरयबला देवता रूपेँ सम्बोधित कएल गेल अछि।
४१३. (A) भक्तक विनय आ शरणागति — कवि अपन अवगुण स्वीकारि देवी आश्रय मांगैत छथि।
४१४. (A) राग तीरभुक्ति, झपताल — शीर्षक मे मिथिला-वंदना राग तीरभुक्ति झपताल कहल अछि।
४१५. (A) गंगा, बागमती आ कोशी — स्थाई मिथिला-भूमि कें नदी-धारासँ पवित्र बतबैत अछि।
४१६. (A) मिथिलाक संत-विद्वान परम्परा — जनक-याज्ञवल्क्य मिथिलाक दार्शनिक-सांस्कृतिक गौरवक प्रतीक छथि।
४१७. (A) राग भूपाली, त्रिताल, मध्य लय — शिव-वंदनाक शीर्षक भूपाली त्रितालक सूचना दैत अछि।
४१८. (A) दुःख, चिन्ता, व्याधि आ असाध्य संकटक बीच शिवसँ करुण पुकार — स्थाई-अन्तरा दुःख-ताप आ व्याधिसँ मुक्ति लेल शिवकें संबोधित करैत अछि।
४१९. (A) गणेश, मिथिला-भूमि आ शिवक संग पंचदेवोपासक भावभूमि कें जोड़ैत अछि — वंदना-रचना मिथिला, देवता आ संगीत कें एक सूत्रमे रखैत अछि।

४२०. (A) सरगम-संकेत के प्रश्नक यांत्रिक तथ्य नहि, भाव-संगीतक संरचना रूपमे पढ़ब — एहि सामग्रीमे साहित्यिक अर्थ आ शास्त्रीय प्रस्तुति दुनू साथ अछि।
४२१. (A) वरिष्ठ कवि, रंगकर्मी, सम्पादक, समीक्षक आ भाषाई आन्दोलनक सहभागी — परिचय हुनक साहित्य, रंगमंच आ भाषा-आन्दोलनक सक्रियता बतबैत अछि।
४२२. (A) उत्तर-पुस्तिका देखबाक बाद शिक्षिकासँ संवाद — कविता विद्यालयी मूल्यांकनक प्रसंगमे व्यंग्य रचैत अछि।
४२३. (A) एक पत्रमे पचासी आ दोसरमे पचीस अंकक असंगति सोचबाक विषय अछि — कवि मूल्यांकनक असमानता आ गाइड-शिक्षण पर सवाल करैत अछि।
४२४. (A) पाठ्य-पुस्तकक आधुनिक संकुचित परिवार-दृष्टि — कवि परम्परागत संस्कार आ पाठ्य-विचारक टकराव देखबैत अछि।
४२५. (A) बच्चाक संस्कार व्यापक परिवार-बोधसँ बनल अछि — कवि कहैत छथि जे एहन संस्कारमे पलल नेना छोट परिवार श्रेष्ठ कोना लिखत।
४२६. (A) शिक्षा प्रणाली पास करबाक नाम पर संस्कार-विरुद्ध पाठ थोपैत अछि — कविता परीक्षा-केन्द्रित शिक्षा पर व्यंग्य अछि।
४२७. (A) लोक-संबंध, आतिथ्य आ पूर्णिमा-जकाँ उजासक संक्षिप्त बिम्ब — तीन पंक्तिमे सामाजिक-सौंदर्यात्मक संकेत अछि।
४२८. (A) दूरी, स्वामित्व आ भरोसाक अनिश्चितता — क्षणिका लोक-अनुभवक संशय केँ लघु रूपमे रखैत अछि।
४२९. (A) छोट बिम्बमे सामाजिक कटाक्ष आ लोक-उदाहरण आबैत अछि — हाथीक कान, नटुआक बतान, दादुर-गान आदि बिम्ब लोक-व्यंग्यक साधन बनैत अछि।
४३०. (A) रामलोचन ठाकुर शिक्षा-संस्कृति आ लोकानुभव पर तीक्ष्ण, संक्षिप्त आ व्यंग्यपूर्ण दृष्टि रखैत छथि — कविता आ क्षणिका दुनू सामाजिक सोचक आलोचना करैत अछि।
४३१. (A) अधिकार आ मिथिला राज्यक मांग — कविता जन-जनक आवाज केँ मिथिला राज्य आ अधिकारसँ जोड़ैत अछि।
४३२. (A) सांस्कृतिक स्वायत्तता आ पहिचानक — कविता राजनीतिक मांगकेँ भाषा-संस्कृतिक अधिकारसँ जोड़ैत अछि।
४३३. (A) सांस्कृतिक मांगसँ आगे आर्थिक-राजनीतिक स्वनिर्णय — अधिकारक अर्थ शासन, संसाधन आ प्रतिनिधित्व धरिक अछि।
४३४. (A) नेपालक राजनीतिक परिवर्तनक पृष्ठभूमि — कविता निरंकुश राजतंत्र हटि लोकतांत्रिक पुनर्संरचनाक समयक स्वर अछि।
४३५. (A) समावेशी लोकतंत्र आ समानुपातिक कल्पना लेल — कविता राज्य-व्यवस्था मे सहभागिता आ प्रतिनिधित्व चाहैत अछि।
४३६. (A) राजनीतिक अधिकारक संग रोजगार आ विकासक चिंता जोड़ैत अछि — कविता पहिचान आ आर्थिक समस्या दुनू रखैत अछि।
४३७. (A) आन्तरिक झगड़ा छोड़ि विकासपर केन्द्रित होबाक आग्रह — कविता संघर्षकेँ विकास-दिशा दैत अछि।
४३८. (A) सामंती सत्ता-विरोध आ गणतांत्रिक आकांक्षा — कविता लोकतांत्रिक परिवर्तनक उग्र लोकस्वर अछि।
४३९. (A) सामूहिक नारा आ आंदोलनकारी लय — दोहराव सामूहिकता केँ स्वर-बल दैत अछि।
४४०. (A) कविता मधेशी अधिकार, मिथिला राज्य, भाषा-संस्कृति, लोकतंत्र आ विकासक आंदोलनकारी पाठ अछि — राम नारायण देवक स्वर राजनीतिक-सांस्कृतिक अधिकारक माग करैत अछि।
४४१. (A) मिथिला-विभूति आ अत्यन्त सम्मानित पंजीकार — लेख पंजीशास्त्रमे हुनक विद्वत्ता आ सामाजिक प्रतिष्ठा पर केन्द्रित अछि।
४४२. (A) आधुनिक कसौटीपर अनुदार, पारम्परिक कसौटीपर उदार — लेख हुनक व्यक्तित्वक द्वैत सूक्ष्म रूपमे बतबैत अछि।
४४३. (A) सदैव समाधान लेल तत्पर — हुनक विद्वत्ता सुलभ आ उपयोगी रूपमे प्रस्तुत अछि।
४४४. (A) पूर्णिया जिलाक पंजीकार परिवार — लेख हुनका पंजीकार कुल-परम्परासँ जोड़ैत अछि।
४४५. (A) रसाढ़ मूल निवास आ बादमे शिवनगरमे बसोबासक सूचना लेल — दुनू स्थान हुनक पारिवारिक-सामाजिक भूगोल बतबैत अछि।
४४६. (A) पंजीकारी करैत छलाह, मुदा नीक कृषक सेहो रहथि — पिता पारिवारिक पेशा आ कृषि दुनूसँ जुड़ल छलाह।
४४७. (A) माता-पिता, काका-काकी आ कुटुम्बक प्रचुर स्नेह — लेख बाल्य-संस्मरणमे अपनत्वक वातावरण देखबैत अछि।
४४८. (A) बाल्यावस्थाक बीमारी आ अंचलक कठिन स्वास्थ्य-परिस्थिति — “माहुर खाउ...” कहबी सँ क्षेत्रक रोग-भय स्पष्ट अछि।
४४९. (A) मातृ-चिन्ता, आर्थिक क्षमता आ पुत्र-रक्षा लेल चरम प्रयास — मोदानन्दक रोगावस्था परिवारक भावनात्मक लगाव उजागर करैत अछि।

४५०. (A) मोदानन्द झाक पंजीकार-व्यक्तित्व पारिवारिक परम्परा, कठोर अध्ययन आ सामाजिक विश्वाससँ बनल — लेख हुनक जीवनक आधारभूमि विस्तारसँ रखैत अछि।
४५१. (A) सौराठमे विद्याध्ययन लेल — लेख कहैत अछि जे सौराठ पंजीशास्त्र-अध्ययनक केन्द्र बनल।
४५२. (A) पं. विश्वनाथ प्रसिद्ध निरसू झा — निरसू झा ख्यातनाम पंजीकार आ आश्रयदाता रूपमे उल्लिखित छथि।
४५३. (A) पन्द्रह वर्षक कालावधि — लेख पंजीशास्त्रक कठिनता आ दीर्घ अध्ययन-प्रक्रिया बतबैत अछि।
४५४. (A) दस-एगारह वर्षमे गुरु-कृपासँ — हुनकर प्रतिभा सामान्य कालावधिसँ जल्दी परिपक्व भेल।
४५५. (A) वार्षिक वैवाहिक सभाक अवसरपर आजीवन अबैत-जाइत रहलाह — शिक्षा समाप्त भेलाक बादो परम्परा आ कार्यसँ सम्बन्ध बनल रहल।
४५६. (A) सर्वोच्च स्थान प्राप्त कयलनि — राज-दरभंगा द्वारा आयोजित परीक्षामे हुनक उत्कृष्टता स्थापित भेल।
४५७. (A) धोतीक संग दोशाला — तीन उत्तीर्णकें धोती, मुदा सर्वोच्चता लेल मोदानन्द झाकें दोशाला सेहो।
४५८. (A) उत्तीर्ण होयब बड़ सम्मान, सर्वोच्चता अनुपम मानल जाइत छल — लेख धौत परीक्षाकें पारम्परिक मिथिलामे प्रतिष्ठित बतबैत अछि।
४५९. (A) गुरुक ऋण अदाय करबाक भावसँ सौराठमे सेवा आ निर्णय-लेखन — ओ अपन नाम बढ़यबासँ बेसी गुरु-घरक काम सँघारैत रहलाह।
४६०. (A) गुरु रूपें श्रद्धा — मोदानन्द झा निरसू बाबूक पुत्रसभकें पंजीज्ञान देलथि, तँ गुरुभाव बनल।
४६१. (A) पंजीकारी, सिद्धान्त-लेखन, विदाइ आ खेत-पथारसँ संतोषजनक आय होइत छल — लेख कहैत अछि जे आय पर्याप्त छल, मुदा रुचि ज्ञान-विस्तारमे अधिक छल।
४६२. (A) ज्ञान-विस्तार आ पंजी-संबन्धी शोधमे — मिश्रजी मोदानन्दक शोधपरक प्रवृत्ति पर जोर दैत छथि।
४६३. (A) विभिन्न मूलक प्रसिद्ध व्यक्ति, विद्वान आ राजवंशक वंश-परिचय तैयार करब — पंजी-सूचना कें ऐतिहासिक-सामाजिक शोधमे बदलबाक प्रयास छल।
४६४. (A) अलयी कुल प्रकाश — लेख एहि पुस्तककें हुनक शोध-प्रवृत्तिक परिणाम रूपमे देखबैत अछि।
४६५. (A) ग्राम-वंशावलीक गहन सामाजिक इतिहास-लेखन — मोदानन्द पंजीसँ समाज-इतिहास रचबाक चाह रखैत छलाह।
४६६. (A) एहन ग्राम-परिचयात्मक परियोजनाक प्रथम प्रयास रूपमे — ओ कोइलख विषयक अंश लेखककें सुनौलनि, मुदा प्रकाशन नहि भऽ सकल।
४६७. (A) एहि विवरणमे परिवार-विशेषक अशोभनीय/अप्रकाश्य बात रहैत छल — पंजीकारी समाजक मर्यादा आ शोध-पारदर्शिताक बीच तनाव छल।
४६८. (A) क्योंकि पंजी-पोथी नष्ट भऽ रहल छल आ पेशा चलाबयवाला नहियो रहथि — मोदानन्द झा लुप्त होइत स्रोत-सामग्री बचाबय चाहैत छलाह।
४६९. (A) दरभंगा-संपर्क घटल आ समय पूर्णिया प्रबंधनमे लगल — लेख बतबैत अछि जे परिस्थिति हुनक परियोजनासभ पूर्ण नहि होमय देलक।
४७०. (A) मोदानन्द झा पंजीकार मात्र नहि, पंजी-सूचना कें सामाजिक इतिहासमे बदलय चाहनिहार शोध-दृष्टा छलाह — हुनक अधूरी परियोजनासभ मिथिलाक सामाजिक इतिहास लेल बहुमूल्य संकेत अछि।
४७१. (A) पूर्व मुख्यमंत्री विनोदानन्द झाक वंश-परिचय खोजबाक समय — मिश्रजी जीवनी-लेखन लेल प्रमाणिक वंश-सूचना ताकैत छलाह।
४७२. (A) गंगाक दक्षिण बसल मैथिल ब्राह्मण आ पंडासभक वंशावलीक सम्भावित स्रोत रूपमे — मोदानन्द बाबू एक संभावित पंजी-स्रोतक दिशा बतौलनि।
४७३. (A) महत्त्वपूर्ण पूर्वज-सूचना लुप्त भऽ सकैत छल — लेख पंजी-संरक्षणक तात्कालिक आवश्यकता देखबैत अछि।
४७४. (A) प्रो. जगदीश चन्द्र झाक “माइग्रेशन एंड अचीवमेंट्स ऑफ मैथिल पंडित्स” — पुस्तक मिथिलाक प्रव्रजित पंडितसभ पर आधारित छल।
४७५. (A) क्षणभर ध्यानस्थ भऽ क्रमशः मूल बतौलनि — हुनक स्मृति आ पंजीज्ञान तत्काल उपयोगी सिद्ध भेल।
४७६. (A) स्रोत-पुस्तकक तथ्य-संशोधन धरि हुनक ज्ञान पहुँचैत छल — ओ नाम-संशोधन आ विद्वान-परम्पराक सूक्ष्म जानकारी दैत छलाह।
४७७. (A) बंगालमे पंजी-सूचनाक संशोधन-संवर्द्धन आ जटिल सामाजिक पंजीकरणक ज्ञान — मोदानन्द बाबू पंजीक ऐतिहासिक जटिलता बुझैत छलाह।
४७८. (A) ओ जिज्ञासुकें सूचना सहजता सँ देइत छलाह — ज्ञान केवल भंडार नहि, संवादक माध्यम छल।
४७९. (A) मोदानन्द झाक स्मृति, पंजी-प्रामाणिकता आ शोध-सहयोगक — प्रसंगसभ हुनक विद्वत्ता कें घटना-आधारित प्रमाण दैत अछि।
४८०. (A) मोदानन्द झा पंजी-स्रोतक जीवित कोश जकाँ जिज्ञासु सभक मदति करैत छलाह — लेख हुनका चलैत-फिरैत अभिलेखीय प्रामाणिकता रूपमे देखबैत अछि।

४८१. (A) ओ सभक छुड़ल भोजन नहि करैत, प्रायः अपन पाक करैत छलाह — लेख पारम्परिक आचार-पालनक एक पक्ष रखैत अछि।
४८२. (A) परिवारक गहन सम्मान आ विश्वासक — समादृत ओकील स्वयं पाक करथि, ई मोदानन्दक प्रतिष्ठा देखबैत अछि।
४८३. (A) दूरस्थ मैथिल समाजमे पंजीकारक अतिशय आदर — बांग्लादेश स्थित मैथिल ब्राह्मण-बहुल गाममे हुनका पूज्य भाव भेटल।
४८४. (A) पंजीकारक संस्थाकें जीवित बनाबय आ समाजकें दिशा देबाक इच्छा — ओ वृत्तिक प्रतिष्ठा आ सामूहिक संस्था-सुधार चाहैत छलाह।
४८५. (A) ई हुनका नीक नहि लगैत छल — लेख हुनक समन्वयी दृष्टि बतबैत अछि।
४८६. (A) प्रजातंत्रीकरणक पक्षमे रहथि — ओ प्रतिनिधि-आधारित परिवर्तनक पक्षधर बताओल गेलाह।
४८७. (A) विहित रीति सँ नीक वैवाहिक सम्बन्ध करनिहार परिवारक स्तरोन्नयन सम्भव मानथि — ओ परम्परा भीतर सुधारक संभावना देखैत छलाह।
४८८. (A) पंजीकारक स्थिति आ परम्परागत संरक्षणक क्षति भेल — जमींदार परम्परा-संस्कृतिक पोषक छलाह, हुनक अंत सँ पंजीकार प्रभावित भेल।
४८९. (A) शोध-परियोजना, पंजी-पांडुलिपि-संग्रह आ मूल-ग्राम अभिज्ञान पर काम — लेख स्मृति कें सक्रिय अभिलेखीय-शोधक कार्यक्रम बनाबय चाहैत अछि।
४९०. (A) मोदानन्द झाक विरासत पंजी-विद्वत्ता, सामाजिक सम्मान, सुधार-दृष्टि आ स्रोत-संरक्षणक आह्वानमे अछि — मिश्रजी हुनक जीवनसँ मिथिलाक सामाजिक-सांस्कृतिक इतिहास बचाबक आग्रह करैत छथि।
४९१. (A) साओन, घन, मलय पवन, दामिनी आ जल-थलक बिम्बसँ — कविता मधुश्रावनी पाबनि कें वर्षाक सौंदर्यसँ जोड़ैत अछि।
४९२. (A) स्त्री-सौंदर्य, पाबनि-सज्जा आ हर्षक दृश्य — मधुश्रावनी स्त्री-उत्सवक भावभूमि मे देखाओल गेल अछि।
४९३. (A) मेघ-वर्षाकें विरहक भावनात्मक आँसू बना दैत अछि — प्रकृति बिम्ब मानवीय विरहसँ भरि जाइत अछि।
४९४. (A) समकालीन सामाजिक-राजनीतिक भयक लय बनबैत अछि — हर पंक्ति डरक अलग रूप खोलैत अछि।
४९५. (A) समाजक मृत्यु-जैसी भयावह स्थिति — कविता शहरी-सामाजिक विघटन कें मृत्यु-बिम्बसँ देखबैत अछि।
४९६. (A) जनबलसँ उठल प्रतिनिधिक जनविरोधी दूरी — कविता सत्तामे गेल लोकक जनपर उपदेशी रवैया पर प्रश्न उठबैत अछि।
४९७. (A) घरेलू आ सामाजिक शोक-चिन्ता — डर निजी घर धरि पसरल अछि।
४९८. (A) समकालीन लेखन/समाचार हिंसा आ कटुता सँ भरल देखबैत अछि — कविता आजुक पोथी/समाचारक भयावह सामग्री पर कटाक्ष करैत अछि।
४९९. (A) डर-संस्कृति पार करि सामूहिक प्रगति — कवि डर व्यक्त करितहुँ आगे बढ़बाक आह्वान करैत छथि।
५००. (A) रेवतीरमण लाल प्रकृति-पाबनि सौंदर्य आ सामाजिक भय, दुनू स्वर लिखैत छथि — एक कविता उत्सवी, दोसर सामाजिक-सतर्कता भरल अछि।
५०१. (A) कविता, अनुवाद, संगीत-संबंधी कृति, संपादन आ पाठ्य-पुस्तक सहयोग — परिचय हुनका साहित्य, संगीत आ संपादनमे सक्रिय देखबैत अछि।
५०२. (A) प्रथम प्रकाशित रचना/कविता-संदर्भ — परिचय आरम्भिक साहित्यिक उपस्थिति बतबैत अछि।
५०३. (A) संगीत-संबंधी मैथिली कृतिसँ जुड़ाव — रूपा धीरू संगीतात्मक मैथिली सांस्कृतिक उत्पादकता सँ जुड़ल छथि।
५०४. (A) बिहिना/बहिनकें आत्मीय संवाद रूपमे — कविता “बिहना” सम्बोधनसँ निजी स्त्री-सम्वाद बनबैत अछि।
५०५. (A) सुंदर जीवन-सपना संग दुख-चोट कें स्वीकारब — काँट जीवनक पीड़ा, गुलाब सुगंधित सम्भावना बनि जाइत अछि।
५०६. (A) कटु-सच पूछबवाली आत्मीय आलोचक — बहिनक प्रश्न कवयित्री कें भीतरक उत्तर दिस धकेलैत अछि।
५०७. (A) बचपनक खेल आ जीवनक हारक तुलना लेल — कविता बचपनक जीत आ जीवनक पराजयक विरोधाभास रचैत अछि।
५०८. (A) आत्मस्वीकार, पीड़ा आ संघर्षक — कवयित्री जीवनक आंतरिक हार खुलि कहैत छथि।
५०९. (A) पीड़ा स्वीकारल्यासँहि जीवनक सुगंध सम्भव अछि — कविता दुख कें रचनात्मक स्वीकृतिक स्तर पर लैत अछि।
५१०. (A) रूपा धीरूक कविता बहिन-संवादमे स्त्री-अनुभव, चोट आ स्वीकारक मार्मिक रूपक रचैत अछि — “अंगेजल काँट” जीवन-दुःखक सुगंधमय स्वीकार अछि।
५११. (A) कोलकातामे स्नातक-स्तरक विद्यार्थी आ साहित्यिक गतिविधिमे सक्रिय युवा — परिचय युवा साहित्यिक सक्रियता बतबैत अछि।
५१२. (A) मोनक बात मानि, अवकाश कठिन रहितहुँ गामवास करबाक लेल — आरम्भमे शहर-नोकरीसँ अवकाश कठिन, मुदा गाम-फेरब प्रस्तुत अछि।
५१३. (A) चुनाव, स्वार्थ आ सामाजिक विकृतिसँ वातावरण खराब भेल अछि — कविता ग्रामीण राजनीति पर व्यंग्य करैत अछि।

५१४. (A) सेवाक अवसर मानि मुखियाक प्रतिनिधि बनबाक — प्रारम्भिक भाव सेवा-आदर्शक अछि।
५१५. (A) मारामारी, लाठी-लठौवल, नोट बाँटि वोट पड़ब — कविता लोकतांत्रिक प्रक्रिया केँ अपराधीकरणमे बदलैत देखबैत अछि।
५१६. (A) ईमानदार आदर्श बनाम धन-गुंडागर्दीक चुनावी हार — कविता ईमानदार राजनीति केँ व्यंग्यात्मक पराजय दैत अछि।
५१७. (A) अब गुंडा पोसि बूथ कैचरिंग करबाक संकल्प करैत अछि — व्यंग्य ई अछि जे भ्रष्ट व्यवस्था आदर्शी मनुष्योकेँ दूषित करैत अछि।
५१८. (A) सज्जनता सँ हिंसक राजनीतिक सीख दिस झुकाव — हास्य-व्यंग्य मार्फत नैतिक पतन व्यक्त अछि।
५१९. (A) चुनावी लोकतंत्रक अपराधी कब्जा — शीर्षक सीधा भ्रष्ट राजनीतिक व्यवहारक संकेत अछि।
५२०. (A) कविता चुनावी भ्रष्टाचार देखबैत अछि जे आदर्शवादी ग्राम-सेवा केँ गुंडागर्दीमे धकेलैत अछि — रूपेश कुमार झा युवा व्यंग्य-स्वर सँ ग्रामीण राजनीति पर प्रहार करैत छथि।
५२१. (A) चौबटियापर नहि, बल्कि जीवनक एक निर्णायक बाट पर — कविता कहैत अछि बाट एकटा अछि आ ओकरा रोकय पड़त जे एतय आनलक।
५२२. (A) दर्शकक नजरमे वस्तु बनि ठाढ़ रहबाक अनुभव — पुतरा सभदिन नव पिहरनमे ठाढ़, देखनिहार उलट-पुलट करैत अछि।
५२३. (A) चयन सीमित, मुदा रोकबाक जिम्मेदारीक आग्रह — कविता अस्तित्वगत ठहराव आ प्रतिरोधक भाषा बनबैत अछि।
५२४. (A) एक स्त्रीक सेवा, निकटता, डाँट, दूरी आ प्रेम-भावक जटिल सम्बन्ध — पूरी कविता “मुदा एना किए?” आवृत्ति सँ सम्बन्धक उलझन खोलैत अछि।
५२५. (A) निकट घरेलू सहचर्य आ भावनात्मक निर्भरता — वक्ता ओकर उपस्थिति जीवनक जरूरतसँ जोड़ैत अछि।
५२६. (A) प्रेम, अधिकार, क्रोध आ देखभालक मिश्रित भाव — कविता प्रेमक सरल परिभाषा टारि जटिल अनुभूति रचैत अछि।
५२७. (A) वक्ता अपन अनुभवक नाम खोजि रहल अछि — कविता प्रश्नात्मक आत्म-संवाद अछि।
५२८. (A) मौनमे व्यक्त होइत प्रेम आ विश्वास — वाणी बन्द होइतहुँ आँख भाव कहैत अछि।
५२९. (A) संबंधमे रूठब-मनाबक चक्र आ अस्थिर निकटता — कविता स्नेहक चंचल मनोदशा पकड़ैत अछि।
५३०. (A) दू कवितामे ठाढ़ होएबाक अस्तित्व-बोध आ प्रेम-सम्बन्धक प्रश्नात्मक उलझन व्यक्त अछि — सच्चिदानन्द आ संतोष दुनू प्रश्नक माध्यमे मनःस्थिति खोलैत छथि।
५३१. (A) दर्शनशास्त्रमे एम.ए., व्याख्याता आ एन.जी.ओ. संचालनसँ जुड़ल — परिचय सामाजिक-शैक्षिक सक्रियता बतबैत अछि।
५३२. (A) निन्न पड़ल निःशब्द रातिमे — आरम्भे “निन्न पड़ल निःशब्द राति”क बिम्ब अछि।
५३३. (A) कविताक आवेग नियंत्रित करब कठिन अछि — शब्द स्वयं उग्र आ स्वतंत्र शक्ति बनि आबैत अछि।
५३४. (A) हृदयक वेदना उतरि अबैत अछि — भीतरक पीड़ा शब्द बनि दबायल नहि जा सकैत।
५३५. (A) बिखरल शब्द आपस मे जुड़ि कविता बनैत अछि — कविता स्वतः संयोजनक जीवित प्रक्रिया जकाँ रचल अछि।
५३६. (A) स्वाभाविक, अबोध, अनगढ़ काव्य-ऊर्जाक — कवि नियमसँ पहिने अनुभूतिक सत्य पर जोर दैत छथि।
५३७. (A) कविताक नग्न, निष्कपट आ असुरक्षित प्रकृति देखबैत अछि — बिम्ब शब्दक निरपराधता आ नंगी सच्चाई बतबैत अछि।
५३८. (A) कविता पीड़ा आ स्नेह दुनू उत्पन्न करैत अछि — शब्द भावक तापमान बदलाबयवाली शक्ति अछि।
५३९. (A) दोष शब्दक नहि, कवि-अज्ञानक होइ सकैत अछि — कवि विनम्रतासँ पाठकसँ क्षमा मांगैत छथि।
५४०. (A) सतीश चन्द्र झा शब्दकेँ आध्यात्मिक, वेदनात्मक आ स्वतः-कविता बनयवाली शक्ति मानैत छथि — रातिक निःशब्दतामे शब्द ब्रह्म-ऊर्जा बनि उठैत अछि।
५४१. (A) हास्य-परम्परासँ आत्मीय जुड़ाव बताबय लेल — लेखक स्वयं हास्यशिरोमणि गोनू झाक गामसँ छथि, ई हास्य-कथा पूर्वपीठिका बनैत अछि।
५४२. (A) गलफ्रेंड नहि होएब पर मित्रसभक चुटकी — मित्रसभ कहैत छथिन जे छौरी फँसाबय तखन खिलाड़ी मानल जाएब।
५४३. (A) ओ भारतमे पढ़य-लिखयक समय मानैत आ छौरीसँ डरैत छथि — हास्य डर, संस्कार आ मित्र-दबावक टकरावसँ बनैत अछि।
५४४. (A) प्रेम-प्रयास केँ भक्तिपूर्ण मनोनीतिक हास्यमे बदलैत अछि — वक्ता सोलह हजार गोपी नहि, एकटा छौड़ी फँसबय मांगैत अछि।
५४५. (A) अनुभवहीन, फिल्मी आ हास्यास्पद प्रेम-रणनीति — कथा अगिला मारपीटक भूमिका बनबैत अछि।
५४६. (A) छौरी पीटलक आ वक्ता पहिल सपथ खेलक — हास्य अपेक्षा आ परिणामक तीव्र उलटबाँससँ बनैत अछि।

५४७. (A) बातचीत आ काव्यात्मक चापलूसीसँ छौरी पटेबाक कोशिश — ओ पोखरि-आँखि, मेघ-केश, फूल-ठोर कहि अतिशयोक्ति करैत अछि।
५४८. (A) हास्यकें सार्वजनिक अपमानमे बदलैत अछि — वक्ता निजी दुस्साहसक सामाजिक दंड पबैत अछि।
५४९. (A) फैशनदार प्रेम-नकल छोड़ि अपनी सांस्कृतिक पहचानक ओर लौटब — हास्य अनुभव सांस्कृतिक आत्मबोधमे पलटैत अछि।
५५०. (A) कथा युवा-प्रेमक फिल्मी नकलबाजी पर मैथिली हास्य-व्यंग्यक चुटीला प्रहार अछि — स्वयं-उपहास, मित्र-दबाव आ पिटाइ कथा केँ हास्यप्रद बनबैत अछि।
५५१. (A) दुपहरियामे सुतल वक्ता विवाहक सपना देखैत अछि — कविता स्वप्न-प्रसंगसँ हास्य-रोमांटिक दृश्य बनबैत अछि।
५५२. (A) चाँद-जकाँ सुन्दर — वक्ता भौजीसँ कहैत अछि जे किनियाँ चाँद जकाँ छल।
५५३. (A) हृदयक रानी बनि जाइत अछि — स्वप्नमे भेट प्रेमिक कल्पना बनि जाइत अछि।
५५४. (A) ऐश्वर्या, जूही चावला, नीलम, वैजयंतीमाला आदि छविसँ — कविता फिल्मी सौंदर्य-भाषासँ हास्य रचैत अछि।
५५५. (A) वक्ताक आत्म-मुग्धता पर हल्का व्यंग्य — वह संपूर्ण प्रशंसा नहि, बल्कि मिश्रित प्रतिक्रिया दैत अछि।
५५६. (A) वक्ताक बाल-कमजोरी पर हास्य — टिप्पणी सपनाक रोमांसमे आत्म-हँसी लबैत अछि।
५५७. (A) स्थानीय रोमांस आ सिनेमाई कल्पना — सपना मैथिली भूगोल, सिनेमा आ प्रेमक मिश्रण अछि।
५५८. (A) मैथिली सिनेमा-स्मृति आ स्थानीय लोकप्रियता — स्वप्न-प्रेम मैथिली फिल्म-लोकसँ जुड़ैत अछि।
५५९. (A) संपूर्ण प्रेम-संसार दुपहरियाक सपनाहि सिद्ध भऽ जाइत अछि — जगाबयवाला छोट भाई स्वप्न तोड़ि दैत अछि।
५६०. (A) “सपना” फिल्मी सौंदर्य, स्थानीय स्मृति आ आत्म-उपहाससँ बनल हलुक हास्य-कविता अछि — स्वप्नक टूटन हास्यक मुख्य बिंदु अछि।
५६१. (A) बिहारमे आएल बाढ़क संदर्भमे — लेखक बाढ़क भयावह स्थिति आ जनपीड़ा पर लिखैत छथि।
५६२. (A) लगभग हर साल बाढ़-संकट आबैत अछि, ताहि पर तिक्त व्यंग्य अछि — ई कथन बाढ़क नियमित त्रासदी पर व्यंग्यात्मक पीड़ा अछि।
५६३. (A) करीब पचास लाख लोक प्रभावित कहल गेल — संख्या त्रासदीक व्यापकता बतबैत अछि।
५६४. (A) बिहारक लोक बाढ़-भय सँ आतंकित होइत छथि — मौसमी चक्र लोकक मनमे वार्षिक डर बनि गेल अछि।
५६५. (A) ई बार-बार गाम, जमीन आ जीवन निगलैत अछि — लेखक प्राकृतिक आपदा आ प्रशासनिक असफलताक संयुक्त भय दिखबैत अछि।
५६६. (A) जानकारी रहितहुँ कारगर कदम नहि उठबैत अछि — लेख प्रशासनिक निष्क्रियता पर तीखा प्रश्न उठबैत अछि।
५६७. (A) पीड़ित धरि सहायता नहि पहुँचि, बीचमे लूट-घोटाला होय सकैत अछि — लेख राहत-राजनीति आ भ्रष्टाचारक आलोचना करैत अछि।
५६८. (A) घोषणा पीड़ित लेल सात्वना मात्र, पहुँच व्यवस्था अस्पष्ट अछि — लेख कहैत अछि धन देनाइ पर्याप्त नहि, पहुँच सुनिश्चित चाही।
५६९. (A) नेता सभ दोषारोपण आ सीट-सुरक्षा मे लगैत छथि, पीड़ित पिसाइत छथि — लेख बाढ़क बीच राजनीतिक स्वार्थ पर प्रहार करैत अछि।
५७०. (A) एकजुट भऽ बाढ़-पीड़ितक मदति करब — लेख कर्तव्यनिष्ठ नागरिकता केँ मदतिक सक्रियता सँ जोड़ैत अछि।
५७१. (A) इलेक्ट्रॉनिक चैनल, स्टिंग ऑपरेशन आ सत्य-दावा — लेख मीडिया-भाषा आ चैनल-संस्कृतिक आलोचना करैत अछि।
५७२. (A) राजा हरिश्चन्द्रक सत्य-नीति पर आधारित बतबैत अछि — लेख ई दावा व्यंग्यपूर्वक उठबैत अछि।
५७३. (A) सत्य उजागर करबाक हथकंडा रूपमे, मुदा मीडिया-प्रतिस्पर्धाक साधन सेहो — लेख मीडिया-प्रयोग आ बाजारू ऊँचाइ पाबक चाह पर प्रश्न करैत अछि।
५७४. (A) पत्रकारिता, विशेषतः इलेक्ट्रॉनिक मीडिया मे प्रवेश आ टिकबाक व्यवस्था — लेख पत्रकारिता-क्षेत्रमे संपर्क/सिफारिसक बोलबाला बतबैत अछि।
५७५. (A) एक दिन मीडिया क्षेत्रमे नाम रौशन करबाक आशासँ — लेख युवा आकांक्षा आ वास्तविक प्रवेश-समस्या बीच फर्क बतबैत अछि।
५७६. (A) साधारण वर्गक युवासभ लेल काम पाबय पहाड़ खोदनाजेकाँ कठिन भऽ जाइत अछि — संस्थान अपन विद्यार्थीक प्राथमिकता देत, बाहरी युवाक अवसर घटैत अछि।
५७७. (A) बेरोजगारी पर बात करैतहुँ अंदर जोगार-मंत्रसँ काज देल जाइत अछि — लेख मीडिया-नैतिकता आ भर्ती व्यवहारक विरोधाभास देखबैत अछि।
५७८. (A) व्यवस्थागत पक्षपात आ संपर्क-राजक आलोचना — लेख अनुमानक रूपमे भीतरी संरचनाक दूषितता देखबैत अछि।
५७९. (A) लोकतांत्रिक निगरानी संस्थाहि भीतर अनौपचारिक सिफारिस-तंत्र मजबूत अछि — लेख मीडिया-नैतिक दावाक विरुद्ध व्यवहारक आलोचना अछि।

५८०. (A) “जोगार” मीडिया-शिक्षा, भर्ती, संपर्क-तंत्र आ नैतिक दावे पर तीखा प्रश्न उठबैत अछि — शक्ति शेखर मीडिया-संरचनाक अंदरूनी असमानता पर लिखैत छथि।
५८१. (A) सहरसा जिलाक महिषी प्रखंडक लहुआर गाम — परिचय जन्मस्थल स्पष्ट करैत अछि।
५८२. (A) एम.ए. मैथिलीमे स्वर्णपदक प्राप्त — परिचय एम.ए. मैथिली मे स्वर्णपदक आ शोधयोग्यता बतबैत अछि।
५८३. (A) मैथिली नाटकक सामाजिक विवर्तन — हुनक शोध मैथिली नाटकक सामाजिक विकास पर अछि।
५८४. (A) राष्ट्रीय अनुवाद मिशन, केन्द्रीय भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर मे शैक्षिक सलाहकार — परिचय संस्थागत भाषा-काज सँ हुनक जुड़ाव बतबैत अछि।
५८५. (A) गाम गेल लेखक साँझमे स्कूलक प्रांगणमे सुस्ताय चाहैत छथि — कथा-जैसी रचना बाल्य-स्कूल-स्मृति सँ शुरू होइत अछि।
५८६. (A) दूभि-रूपिणी स्त्रीक — लेखक एक स्त्री रूपमे दूभिसँ संवाद करैत छथि।
५८७. (A) स्कूल हाता मे पसरल दूभिक प्रतीकात्मक देह — दूभि स्वयं कहैत अछि जे शरीर हरियर अछि कारण ओ दूभिक प्रतीक अछि।
५८८. (A) विद्यालय परिसरक गंदगी, उपेक्षा आ छात्र-समाजक कुकर्म — दूभि अपना शरीर पर पसरल गंदगी केँ मानवीय असभ्यता रूपमे पढ़बैत अछि।
५८९. (A) उपेक्षित पर्यावरण/विद्यालय-जीवनक पीड़ा सार्वजनिक करबाक लेल — ओ साहित्य-शिक्षित लेखककेँ साक्षी आ संवाहक बनय चाहैत अछि।
५९०. (A) “दूभि” प्रकृति/विद्यालय-परिसरकेँ मानवीकृत करि सामाजिक गंदगी आ असंवेदनशीलता पर प्रश्न उठबैत अछि — दूभिक मानवीकरण पर्यावरणीय नैतिकता जगबैत अछि।
५९१. (A) संगीत-रचना, व्यंग्य, राजनीतिक कविता, पंजी-लेख, प्रेम/हास्य, मीडिया-आलोचना आ रूपक-कथा साथ अछि — एहि अंशमे सादेहक बहुधा साहित्यिक संसार खुलैत अछि।
५९२. (A) उच्च शास्त्रीयता आ लोक-सामाजिक आलोचना एकहि मंचपर उपस्थित अछि — रामरंग आ रामलोचनक सामग्री अत्यन्त भिन्न रहितहुँ समान सांस्कृतिक मंच पबैत अछि।
५९३. (A) सत्ता, प्रतिनिधित्व, प्रशासन आ जनहितक प्रश्न — राम नारायण देव आ शक्ति शेखरक स्वर समाज-राजनीतिक चेतना खोलैत अछि।
५९४. (A) ओ पंजी, वंश, शोध-स्रोत आ मिथिलाक सामाजिक इतिहासक अभिलेखीय आयाम दैत अछि — रत्नेश्वर मिश्रक लेख स्रोत-संरक्षणक गंभीर पाठ अछि।
५९५. (A) पीड़ा, प्रेम, प्रश्न, शब्द आ आत्मस्वीकारक मार्फत — ई रचनासभ निजी अनुभवक संवेदनशील परत खोलैत अछि।
५९६. (A) स्वयं-उपहास, युवा-कल्पना आ मैथिली हास्यक हलुक किंतु तीक्ष्ण स्वर — हास्य भी सामाजिक-सांस्कृतिक आत्मबोधक माध्यम बनैत अछि।
५९७. (A) पर्यावरण, विद्यालयी अनुशासन आ सार्वजनिक स्थानक उपेक्षा पर नैतिक दृष्टि — दूभि वस्तु नहि, पीड़ित जीवित साक्षी बनि बोलैत अछि।
५९८. (A) राग-संगीत, पाबनि, ग्राम्य-हास्य, मीडिया आ लोकतंत्र सभ एकत्र आबैत अछि — स्रोत मैथिली लेखनक बहुभाषी/बहुसांस्कृतिक ऊर्जा देखबैत अछि।
५९९. (A) पृष्ठ-संख्या वा बाहरी अनुमान नहि, पाठक भाव, पात्र, विचार आ विधा पर प्रश्न — सामग्री स्रोताधारित अर्थ-प्रश्नमे बदलब आवश्यक छल।
६००. (A) सादेह १ मे मैथिली समाजक संगीत, स्मृति, संघर्ष, हास्य, प्रेम, शोध आ जनचेतना समान रूपेँ सक्रिय अछि — विविधता ई पत्रिकाक सांस्कृतिक-लोकतांत्रिक विस्तार प्रमाणित करैत अछि।
६०१. (A) ओ विद्यालयक मैदानमे पसरल दूभिक मानवीकृत रूप छथि। — कथा दूभिकेँ एक घायल नारीक रूपमे उपस्थित करैत अछि, जाहिसँ मैदान आ प्रकृतिक दुर्दशा प्रत्यक्ष बनैत अछि।
६०२. (A) विद्यालय परिसरक उपेक्षा आ विद्यार्थी-समाजक गंदगी देखेबाक लेल। — दूभि अपन देहपर पड़ल कूड़ाक व्याख्या कऽ विद्यालयक नैतिक आ भौतिक पतन देखबैत अछि।
६०३. (A) लापरवाही, अस्वच्छता आ सार्वजनिक स्थानक हिंसक दुरुपयोगक। — जड़ल सिगरेट, छिलल हाथ आ फोका सार्वजनिक संपत्तिपर होइत हिंसाक प्रतीक बनैत अछि।
६०४. (A) ओ विद्यालयक प्रांगणमे, जतय नेनपनमे पढ़ैत छलाह। — पुरान विद्यालयक मैदान कथामे स्मृति आ वर्तमान दुर्दशाक तुलनाक केन्द्र बनैत अछि।
६०५. (A) ताकि समाज विद्यालय-परिसरक वास्तविक हालत देखय। — दूभिक विनती कथाकेँ आत्म-साक्ष्यक रूप दैत अछि; ओ चुपचाप सहैत वस्तु नहि रहि, गवाही दैत पात्र बनैत अछि।

६०६. (A) विद्यालय-मैदानमे जीवित, हरियर दूभिक प्रतीक। — हरियर देह प्रकृतिक जीवनशक्ति छैक, मुदा ओहि देहपर घाव आ मैल समाजक उपेक्षा प्रकट करैत अछि।
६०७. (A) परिसरक शारीरिक गंदगी संगे नैतिक सड़नक। — दुर्गन्ध केवल सफाई-समस्या नहि, बल्कि शैक्षिक-सांस्कृतिक वातावरणक बिगाड़क रूपमे पढ़ल जाइत अछि।
६०८. (A) ई बतबैत अछि जे विद्यालयक हाता अनुशासन आ संरक्षणसँ वंचित अछि। — गाय, बकरी, सूअर आदि द्वारा दूषित मैदान विद्यालय-व्यवस्थाक असुरक्षित रूप देखबैत अछि।
६०९. (A) पाठककें चौंका कऽ पर्यावरणीय-शैक्षिक संकट दिस नेब। — लेखक भयावह देह-चित्रसँ साधारण दूभिक पीड़ा कें सामाजिक प्रश्नमे बदलैत छथि।
६१०. (A) ओ स्त्रीक देह-दशासँ विद्यालयक पतनक कारण बुझय चाहैत छथि। — आरम्भिक आश्चर्य धीरे-धीरे प्रश्न, संवाद आ आत्मचिन्तनमे बदलैत अछि।
६११. (A) पहिने विद्यालयमे अनुशासन, सामूहिकता आ संस्कार छल, से देखेबाक लेल। — पुरान सरस्वती-वंदना वर्तमान शोर-गुलक विरोधी सांस्कृतिक स्मृति बनैत अछि।
६१२. (A) पुरान शिक्षक अनुशासन आ सफाईक संस्कार दैत छलाह। — बच्चासभसँ कागद-गंदगी चुनवेनाइ विद्यालयक साझा जिम्मेदारीक शिक्षा छल।
६१३. (A) नाममे सांस्कृतिक अर्थ आ आत्मीयता देखेबाक लेल। — दूभि कहैत अछि जे ओहि नामसभक मधुरता सुनि मोन तृप्त होइत छल।
६१४. (A) ओ वात्सल्य अनुभव करैत छल, कारण गिरला पर बच्चा सभकें चोट कम लगैत छल। — मैदान बच्चासभक खेलक सुरक्षा-स्थान छल, वस्तु नहि बल्कि सहभागी मातृ-भूमि जकाँ।
६१५. (A) विद्यालयी जीवनमे सामुदायिक खाद्य-स्मृति आ आत्मीय उत्सव छल। — दूभि गुर-चाउरक प्रतीक्षा करैत छल, जे पुरान विद्यालयक स्नेहिल सांस्कृतिक देखबैत अछि।
६१६. (A) गीत, भक्ति आ सामूहिक अभ्यासक सांस्कृतिक स्तर देखबैत अछि। — जगदंबा आ भोला बाबा सन गीतसभ पुरान सांस्कृतिक धरातलक चिन्ह बनैत अछि।
६१७. (A) अनुशासनक हास्यपूर्ण मुदा गंभीर स्मृति उपस्थित करब। — चलताऊ फिल्मी गीतपर दंडक प्रसंग बतबैत अछि जे शिक्षक सांस्कृतिक मर्यादा पर नजर रखैत छलाह।
६१८. (A) कविताक पंक्ति, कंठस्थ पाठ आ साहित्यिक स्मृतिकेँ। — पुरान अन्त्याक्षरी फिल्मी शोर नहि, कविता-स्मरण आ भाषिक अभ्यासक माध्यम छल।
६१९. (A) विद्यालयक अनुशासन आ दुर्व्यसन-विरोधक पुरान सतर्कता देखेबाक लेल। — छोट दोषपर सेहो दंड देखबैत अछि जे विद्यालय-परिसरक मर्यादा संरक्षित छल।
६२०. (A) वर्तमान पतन बुझाबय लेल अतीतक स्वच्छ, संस्कारित रूपक तुलना। — कथा अतीतकें केवल भावुकता नहि बनबैत, बल्कि वर्तमानक आलोचनात्मक दर्पण बनबैत अछि।
६२१. (A) भवन रहितहुँ शिक्षा, अनुशासन आ व्यवहारक स्थिति बिगड़ल अछि। — कथा बतबैत अछि जे बाहरी ढाँचा मात्र सुधार नहि, वास्तविक शैक्षिक जीवन आवश्यक अछि।
६२२. (A) संरचना आ छात्रसंख्याक बीच असंतुलन देखेबाक लेल। — अनेक बच्चा कक्षासँ बाहर मैदानमे रहैत अछि; ई अव्यवस्था विद्यालयक मूल कमजोरी अछि।
६२३. (A) सुविधाक नामपर कागजी व्यवस्था आ वास्तविक गंदगीक प्रश्न। — दूभि कहैत अछि जे पल्ला नहि, दुर्गन्ध अछि; ई विकासक खोखलापन देखबैत अछि।
६२४. (A) बिना तैयारी नियुक्ति आ शिक्षाक गुणवत्ता-हासक। — दूभि शिक्षक-प्रणालीक अवनतिपर चोट करैत अछि, जतय नामधरि स्पष्ट नहि होइत।
६२५. (A) विद्यार्थी-संस्कार आ भाषा-अभ्यासक गिरावट। — चारि सयमे थोड़े विद्यार्थी स्पष्ट बोलि पबैत छथि; ई सामूहिक शिक्षणक कमजोरी अछि।
६२६. (A) विद्यालयी सांस्कृतिक कार्यक्रमक अश्लील आ बाजारू दिशा देखेबाक लेल। — पुरान भक्ति-साहित्यिक गीतक विपरीत वर्तमान गीत सांस्कृतिक अवनति संकेत करैत अछि।
६२७. (A) सकारात्मक नैतिक व्याख्या देनिहार शिक्षकक उपहास। — ओ फिल्मी पंक्तिक अर्थ बदलि “माँ”क गरिमा बुझबैत छथि, मुदा सहकर्मी हुनक उपहास करैत अछि।
६२८. (A) कथा कें यथार्थ आ भ्रमक बीच अनिश्चित बना दैत अछि। — दूभि अदृश्य भऽ गेलाक बाद कथाकार सोचैत छथि जे ई अनुभव कथा बनि सकैत अछि।

६२९. (A) कारण पूरा अनुभव विद्यालय-मैदानक दूभिक पीड़ा पर केन्द्रित अछि। — शीर्षक साधारण घासकें सामाजिक स्मृति आ प्रतिरोधक प्रतीक बनबैत अछि।
६३०. (A) विद्यालय, प्रकृति, भाषा-संस्कार आ सामाजिक उपेक्षाक संयुक्त आलोचना। — कथा स्कूल-मैदानक क्षति द्वारा व्यापक समाजक शिक्षा-संकट उजागर करैत अछि।
६३१. (A) धर्म, शिक्षा, साहित्य आ संस्कृति लेल अनादिकालसँ विशिष्ट भूमि। — लेख समाजक विघटनक चर्चा करबा अघि मिथिलाक गौरव-भूमिका स्थापित करैत अछि।
६३२. (A) भूख, भय, भ्रष्टाचार, राजनीतिक अपराध आ बेरोजगारीसँ भरल संकट। — धर्मदिस भागब सामाजिक बेचैनीक परिणाम बनैत अछि।
६३३. (A) लोकक बेचैनीकें उपयोग कऽ नयका धार्मिक कारोबारक फैलाव। — लेख धर्मक नामपर त्वरित समाधान बेचबा बला प्रवृत्तिक व्यंग्य करैत अछि।
६३४. (A) एहि द्वारा सभ समस्या तुरन्त मिटबाक दावा पर कटाक्ष अछि। — लेखक चमत्कारवादी मानसिकतापर प्रश्न उठबैत अछि।
६३५. (A) संवादात्मक व्यंग्य आ आत्मालोचनात्मक कथा-रूप। — कथाकार ध्यानावस्थामे प्रश्न करैत छथि आ महादेव समाजक उलटबाँसी खोलैत छथि।
६३६. (A) भद्रा आ दृष्टिकोणक भीतरू परिवर्तनपर जोर। — महादेव कहैत छथि जे बाहरी चमत्कारसँ पहिने मनक भाव बदलय पड़ैत अछि।
६३७. (A) संस्कार, संस्कृति, लोकाचार, भाषा-साहित्य आ धर्माचरण बुझबाक आग्रहसँ। — कथामे सत्य-सुंदर-शिव अमूर्त न रहि सांस्कृतिक आत्मबोधसँ जुड़ैत अछि।
६३८. (A) ज्ञान आ व्यवहारक विरोधाभास देखेबाक लेल। — गुटखा-सिगरेट चेतावनी पढ़ि सेहो सेवन करब शिक्षित समाजक आत्मविरोध देखबैत अछि।
६३९. (A) लोक भक्ति लेल नहि, लाभक सौदाक लेल देवता लग अबैत अछि। — महादेवक कथन समाजक उपयोगवादी धार्मिकता पर तीखा व्यंग्य अछि।
६४०. (A) धर्म, शिक्षा, राजनीति आ भाषा-संकटमे पसरल स्वार्थ आ पाखंड। — लेखक धार्मिक संवादक माध्यमसँ समूचा समाजक आत्मनिरीक्षण करबैत अछि।
६४१. (A) मेहनत बिना परीक्षा पास करएबाक इच्छाक। — बालक पढ़बाक बजाय खेलल, आब देवतासँ परिणाम चाहैत अछि; ई कर्महीन अपेक्षा अछि।
६४२. (A) धर्मयात्राकें रोमानी स्वार्थसँ जोड़बाक प्रवृत्ति। — देवघर प्रसंग भक्तिकें निजी इच्छा-पूर्ति बनबैत अछि।
६४३. (A) रूप-गुण रहितहुँ विवाह न होयबाक सामाजिक बाधा। — ई माँग व्यंग्यमे रहितहुँ दहेज-व्यवस्थाक क्रूरता उजागर करैत अछि।
६४४. (A) अपन दुराचरणक परिणामसँ देवताक माध्यमे बचि जाएबाक चाह। — कथा जिम्मेदारीसँ पला कऽ चमत्कार चाहनिहार मनोवृत्ति देखबैत अछि।
६४५. (A) बेरोजगारीक हताशा आ हिंसक दिशामे भटकबाक भय। — लेख बेरोजगार युवा-मनक विकृत विकल्पपर कटाक्ष करैत अछि।
६४६. (A) संपन्न बेटा-पुतोहुँ रहितहुँ माता-पिताक बोझ बनि जेबाक पीड़ा। — ई परिवारिक विघटन आ बुजुर्गक उपेक्षा उजागर करैत अछि।
६४७. (A) सत्ताक सौदा, विधायकी खरीद आ लोकतंत्रक भ्रष्ट रूप। — कथा धर्मस्थलपर सेहो राजनीति-केंद्रित लेन-देन देखबैत अछि।
६४८. (A) चोरी-जोगाड़सँ बढल करियर आ छात्र-राजनीतिक अवरोधक स्वार्थ। — ओ पढ़ाई नहि, ताला लटकत रहे ताहि हेतु आशीर्वाद चाहैत अछि।
६४९. (A) अपनहि घरमे उपेक्षित अबला भाषा, जे नवजागरण चाहैत अछि। — मैथिली देवतासँ सौदा नहि करैत, कारण ओकरा देबाक लेल धन नहि; ओ सम्मानक याचना करैत अछि।
६५०. (A) महादेव संगे समाजकें सेहो जागबाक आह्वान। — मैथिलीक करुण पुकार धार्मिक व्यंग्यकें भाषा-संस्कृति जागरणमे बदलि दैत अछि।
६५१. (A) भारतभूमिक नवयुवक-नवयुवती पीढ़ीकें। — कविता नवतुरियासँ कान खोलि भारतीक विवश पुकार सुनबाक आग्रह करैत अछि।
६५२. (A) शोणित-रंजित, जखम-भरल, अमन-चैन लुटल मातृभूमि। — कविता राष्ट्रक पीड़ाकें देहधारी भारतीक रूपमे देखबैत अछि।
६५३. (A) पावन, हरियर सौन्दर्यक स्थानपर गोली आ रक्तक वर्तमान। — कवि शीतल समीर आ निशातक छवि सँ हिंसक वर्तमानक तुलना करैत अछि।
६५४. (A) ई मानवताकें लड़बैत सत्ता-स्वार्थक साधन अछि। — कविता उन्माद भड़कबेनिहारक कुर्सी-स्वार्थकें पहचानबाक कहैत अछि।
६५५. (A) मानवीय सम्बन्ध रोकयबला बाधा आ संवेदनाहीन फैलाव। — कविता शहर आ मन, दुनूकें काँटसँ भरल क्षेत्र बनबैत अछि।
६५६. (A) स्नेह, मित्रता आ खुलापन लोप भए गेल। — कवि पूछैत अछि जे आमंत्रित करैत फूल आ लता-कुंज कतए गेल।
६५७. (A) ऊँचाइ सँ नीचे देखैत अलगाव आ अहंकारक संकेत। — ई वृक्ष सभ आकाशमे हाथ पसारैत अछि, मुदा नीचाँ जगतकें तुच्छ देखैत अछि।
६५८. (A) पीड़ा केवल पाँव धरि नहि, दृष्टि आ चेतना धरि पहुँचि गेल। — काँट आ मोथा आंतरिक संवेदनाकें सेहो घायल करैत अछि।
६५९. (A) लोक खुला ठाममे सेहो मानवीय सम्पर्कसँ घृणा करए लागल। — कविता आधुनिक नगरक असामाजिकता पर आलोचनात्मक दृष्टि दैत अछि।

६६०. (A) समाज, राष्ट्र आ मानवीय सम्बन्धक विघटनक प्रश्न। — दूनू रचना अलग धरातलपर रहितहुँ हिंसा, अलगाव आ संवेदनाहीनता पर चोट करैत अछि।
६६१. (A) राजनीतिक भूक्षेत्र जे आर्थिक, प्रशासनिक अधिकारसँ युक्त हो। — लेख राज्यकेँ केवल भूमि नहि, अधिकार-संपन्न राजनीतिक इकाई मानैत अछि।
६६२. (A) राज्यसभ मिलि केन्द्रीय सत्ता केँ अधिकार दैत अछि। — आंशिक सार्वभौमिकता आ आत्मनिर्णयक अधिकारसँ युक्त राज्यसभक समूह संघ बनैत अछि।
६६३. (A) नेपाल बहुजाति, बहुभाषा, बहुसंस्कृति देश अछि। — लेख विविध समुदायकेँ मूलधारमे अनबाक लेल संघीय संरचना आवश्यक मानैत अछि।
६६४. (A) ओहि राज्यक जनता जल, जमीन, जंगल, खनिजक उपयोग करैत। — लेख स्थानीय संसाधनपर स्थानीय जनताक अधिकारक पक्षमे अछि।
६६५. (A) राज्यक प्रमुख भाषा प्रशासन आ न्यायमे स्वतंत्र रूपेँ चलि सकैत अछि। — एहि सँ जनता सामाजिक न्याय आ विकाससँ वंचित नहि रहत, से तर्क अछि।
६६६. (A) इतिहास, भूखंड, जातीय बहुलता, संस्कृति, भाषा आ प्राकृतिक सम्पदा। — लेख राज्य-निर्माणकेँ बहुआधारी प्रक्रिया मानैत अछि।
६६७. (A) ओ पूर्णतः असफल भेल, तँ संघीय संरचना आवश्यक। — लेख केंद्रीकृत व्यवस्थाकेँ विविध समाज लेल अनुपयुक्त मानैत अछि।
६६८. (A) संघीयता पृथक्तावादी प्रवृत्तिक स्थायी समाधान बनि सकैत अछि। — अधिकार देलासँ दमन घटैत आ अलगावक कारण कम होइत अछि।
६६९. (A) कारण सत्ता आ प्रशासनमे समानुपातिक प्रतिनिधित्वक बाट खुलैत अछि। — लेख विविध समाजक न्यायपूर्ण भागीदारी केँ संघीय ढाँचासँ जोड़ैत अछि।
६७०. (A) अधिकार, पहचान, स्थानीय संसाधन आ लोकतांत्रिक भागीदारीक पक्षधरता। — लेख सिद्धांतकेँ सामाजिक न्याय आ भाषा-संस्कृति रक्षासँ जोड़ैत अछि।
६७१. (A) लिम्बुवान, किरांत, नेवा, तमुवान, थरुहट, अवध, भोजपुरी, मिथिला आदि। — सूची विविध ऐतिहासिक-भाषिक समुदायकेँ राज्य-ढाँचामे मान्यता देबाक सोच देखबैत अछि।
६७२. (A) नव तथ्यपूर्ण जनगणना आ सामूहिक निर्णयक आधार। — लेख मनमाना नामकरण नहि, ऐतिहासिक बसावट आ समुदाय-निर्णय चाहैत अछि।
६७३. (A) मिथिला प्रागैतिहासिक आ पुराणवर्णित भूमि अछि। — लेख मिथिलाक ऐतिहासिकता केँ राज्य-अधिकारक आधार बनबैत अछि।
६७४. (A) आर्यजाति आ आर्य-संस्कृतिक निर्माण-भूमि रूपमे। — लेख मिथिलाक सांस्कृतिक स्रोतत्वक दावा करैत अछि।
६७५. (A) कोशी, गंडक, गंगा आ हिमालयक बीचक भूखंड। — भौगोलिक निश्चितता राज्य-दावाक महत्त्वपूर्ण आधार बनैत अछि।
६७६. (A) राजनीतिक परंपरा आ सामूहिक पहचान प्रमाणित करबाक लेल। — लेख इतिहासकेँ वर्तमान राज्य-अधिकारक समर्थनमे प्रयोग करैत अछि।
६७७. (A) उद्योग, कृषि, पर्यटन, जंगल, जल आदिसँ स्थानीय जनताक अधिकतम लाभ। — राज्य-दावा केवल संस्कृति नहि, आर्थिक उन्नयनसँ सेहो संबंधित अछि।
६७८. (A) सांस्कृतिक जीवनकेँ प्रशासनिक मान्यता देबाक आग्रह। — लेख स्थानीय संस्कृतिकेँ राजकीय व्यवहारमे प्रतिष्ठित देखय चाहैत अछि।
६७९. (A) सांस्कृतिक पहचान आ परंपरा संरक्षित राखबाक लेल। — सहलेश, लोरिक आदि लोक परंपरा राज्यक सांस्कृतिक आधार मानल गेल अछि।
६८०. (A) इतिहास, भूगोल, भाषा, संस्कृति, अर्थव्यवस्था आ सामूहिक मनोभावना। — लेख मिथिलाकेँ मात्र भाषिक क्षेत्र नहि, पूर्ण सांस्कृतिक-राजनीतिक इकाई मानैत अछि।
६८१. (A) उत्तरमे हिमालय, दक्षिणमे गंगा, पूबमे कोशी, पश्चिममे गंडक। — लेख परंपरागत भूगोलक आधारपर मिथिला-सीमाक स्मरण करैत अछि।
६८२. (A) मिथिला खंडित भेल, मुदा जीवित भूगोल-संस्कृति रहल। — राजनीतिक सीमा बदलल, पर भाषा-संस्कृति आ मनोभावना समाप्त नहि भेल।
६८३. (A) मधेश राजनीतिक दमनक साझा क्षेत्र, मिथिला सांस्कृतिक-जातीय आधार सहित आन्दोलनी केन्द्र। — लेख दूनू आन्दोलनकेँ रणनीतिक रूपेँ जोड़बाक सुझाव दैत अछि।
६८४. (A) खस प्रभुत्ववादी सत्ता-विरोधी राजनीतिक आन्दोलन। — लेख मधेशी अनुभवकेँ शोषण आ उपेक्षाक साझा मनोविज्ञानसँ जोड़ैत अछि।
६८५. (A) सांस्कृतिक, जातीय आ राजनीतिक अधिकारक संयुक्त स्वर। — मिथिला आन्दोलन मात्र भावुक सांस्कृतिक आग्रह नहि, संघीय अधिकारक प्रश्न बनैत अछि।
६८६. (A) जन्माधारित विशेषाधिकार बिनु, जनप्रतिनिधि द्वारा राष्ट्र-प्रमुखक व्यवस्था। — लेख राजतंत्रविहीन शासन-पद्धति केँ गणतंत्र मानैत अछि।
६८७. (A) निरंकुश, दमनकारी आ जनअधिकार-विरोधी व्यवस्था। — लेख राजतंत्रक ऐतिहासिक चरित्रकेँ संघीय लोकतंत्रक बाधा मानैत अछि।

६८८. (A) ई निरंकुश एकात्मक सोचक रूप अछि। — लेख विविधता-दमनकारी केन्द्रीकृत राष्ट्रवादक आलोचना करैत अछि।
६८९. (A) राज्याधिकार आ स्थानीय पहचान बिना मुक्ति सम्भव नहि। — लेख गणतंत्र, लोकतंत्र आ संघीयता केँ परस्पर अनिवार्य कड़ी मानैत अछि।
६९०. (A) मिथिलाक अधिकारकेँ व्यापक लोकतांत्रिक पुनर्संरचनासँ जोड़ब। — लेख भूगोल, जनाधिकार आ शासन-व्यवस्था केँ अलग नहि, एकसंग पढ़ैत अछि।
६९१. (A) ई भ्रम अछि; अधिकार-आन्दोलन वर्गीय शोषणक रूप सेहो लैत अछि। — लेख संघीय आन्दोलनकेँ सामाजिक-आर्थिक दमनविरुद्ध संघर्षसँ जोड़ैत अछि।
६९२. (A) एक समृद्ध भाषा-संस्कृति आ समाज शोषण-दमनक शिकार अछि। — लेख मिथिलाक प्रश्नकेँ केवल पहचान नहि, शक्ति-संबंधक प्रश्न बनबैत अछि।
६९३. (A) जातिक स्वरूप, इतिहास आ ओहि पर होइत शोषण-दमनक मात्रापर। — लेख जातीय आन्दोलनकेँ सामाजिक संरचना आ मुख्य विरोधाभाससँ जोड़ैत अछि।
६९४. (A) ओ मुख्य द्वन्द्वक समाधानमे बाधा बनल तँ राजनीतिक-वैचारिक आन्दोलनसँ हटाओल जा सकैत अछि। — लेख आंतरिक अन्तरविरोधकेँ मुख्य मुक्ति-संघर्षक अधीन मानैत अछि।
६९५. (A) जनजातिसभकेँ विश्वासमे लैत समानुपातिक अधिकार देब। — लेख पहाड़ आ मधेश दुनू ठामक जनजातिसभक भरोसा अर्जित करबाक बात करैत अछि।
६९६. (A) थारू समुदायकेँ मधेश-विरोधी प्रयोगसँ बचा कऽ अधिकार-संघर्षसँ जोड़ब। — लेख मानैत अछि जे सत्ता थारू अस्मिताकेँ मधेशी आन्दोलनविरुद्ध प्रयोग करि सकैत अछि।
६९७. (A) ओ अलग पहचान रखैत अछि, मुदा क्षेत्रक भाषासँ जुड़ल अछि। — लेख थारूकेँ स्वतंत्र पहचान सहित व्यापक मधेश-मिथिला विमर्शमे जोड़ैत अछि।
६९८. (A) समान अधिकारक व्यापक मोर्चा बनेबाक लेल। — जनजाति बिना मुक्ति-संघर्ष अधूरा रहत, ई लेखकीय संकेत अछि।
६९९. (A) अलग-अलग अधिकार-संघर्षकेँ साझा लोकतांत्रिक आन्दोलनमे जोड़ब। — लेख पृथक संघर्षसभकेँ प्रतिस्पर्धी नहि, परस्पर पूरक मानैत अछि।
७००. (A) भाषिक-सांस्कृतिक संग राजनीतिक, वर्गीय आ सामाजिक न्यायक आन्दोलन। — लेख मिथिलाक मांगकेँ बहुस्तरीय मुक्ति-परियोजना बनबैत अछि।
७०१. (A) राजनीतिक सीमा अलग, मुदा भाषा-संस्कृति-साहित्यिक सम्बन्ध जीवित। — सुगौली सन्धि सीमा बाँटि सकल, सांस्कृतिक बन्धन नहि तोड़ि सकल।
७०२. (A) भावनात्मक आ नैतिक समर्थनक सम्बन्ध। — लेख दूनू राजनीतिक स्वतंत्रताक सम्मान करैत सांस्कृतिक निकटता मानैत अछि।
७०३. (A) राजनीतिक-प्रशासनिक निर्णय आ आर्थिक जीवन अपन शैलीमे चलाबयक अधिकार। — लेख आत्मनिर्णयकेँ दमनमुक्त अनुशासित स्वतंत्रता मानैत अछि।
७०४. (A) मिथिला सीमित स्वायत्तता नहि, पूर्ण राज्याधिकार चाहैत अछि। — लेख केन्द्रीय सत्ता द्वारा सीमित अधिकारक घेरा अस्वीकार करैत अछि।
७०५. (A) दलित मुक्ति आन्दोलनक समर्थन, सहयोग आ अगुवाई। — मिथिला स्वयं उपेक्षित अछि, तँ दलित न्यायसँ अपन संघर्ष जोड़बाक बात अछि।
७०६. (A) संघीय संरचनापर स्पष्ट धारणा आ ईमानदार नीति बाहर नहि आएल। — लेख दलसभक कपटपूर्ण संघीय भाषा आ मधेश-मिथिला प्रश्नक अनिश्चितता पर आलोचना करैत अछि।
७०७. (A) लोकतांत्रिक मिथिला राज्य निर्माणमे अधिकारसंपन्न महिलाक भूमिका आवश्यक। — लेख नारी-सम्मानक परंपरा केँ आधुनिक सशक्तिकरणसँ जोड़ैत अछि।
७०८. (A) मिथिला कोनो एक जाति, विशेषतः उच्च जातिक राज्य नहि। — राज्यक प्रत्येक अंगमे समानुपातिक समावेशी उपस्थिति आधार मानल गेल अछि।
७०९. (A) कोनो एक बोलीकेँ उच्चवर्गीय नियन्त्रणक आधारपर मानक मानब उचित नहि। — लेख बहुभाषिक नीति आ सभ बोलीक सम्मानक पक्षमे अछि।
७१०. (A) सभ जाति, भाषा, वर्ग, महिला, दलित, जनजाति आ बोलीक सम्मानित सहभागिता। — लेख मिथिला राज्यकेँ समता आ बहुलता पर आधारित कल्पना करैत अछि।
७११. (A) राजतंत्र-विरोधी लोकतांत्रिक आ मानवाधिकारवादी शक्तिसँ मिलि संघर्ष। — लेख जनताक मित्र शक्तिसँ संगठित गणतांत्रिक संघर्षक आवश्यकता देखबैत अछि।

७१२. (A) जाति, जनजाति, आदिवासी, दलित, पिछड़ा, अल्पसंख्यक आ मानवाधिकारवादी समूहसभसँ। — लेख संघीयता केँ बहुजन अधिकार-संघर्षक साझा मंच मानैत अछि।
७१३. (A) मुक्त मधेश बिना मिथिला राज्यक कल्पना अधूरी, संघीयता बिना मुक्त मधेश असम्भव। — कायरदिशा तीनू अवधारणा — संघीयता, मधेश मुक्ति, मिथिला राज्य — केँ एक-दोसरसँ जोड़ैत अछि।
७१४. (A) संघीय शासन देशकेँ विखंडनसँ बचबैत अछि। — लेख संघीयता केँ विखंडनवादक स्थायी समाधान कहैत अछि।
७१५. (A) राजनीतिक संगठन, एकीकृत सांस्कृतिक संगठन आ स्थापित नेतृत्वक अभाव। — लेख मिथिलाक भीतर संगठनहीनता केँ बड़ा अवरोध मानैत अछि।
७१६. (A) स्वाभिमान कम, अहंकार बेसी; संयोजन कम, फुट बेसी। — लेख केवल बौद्धिकता नहि, संगठित जन-क्षमता चाहैत अछि।
७१७. (A) खस प्रभुत्ववादी सोच संघीयता-विरोधी अछि। — लेख केन्द्रीय सत्ताधारी मानसिकताकेँ संघीय अधिकारक बाधा मानैत अछि।
७१८. (A) मातृभाषा-प्रेमी समुदाय आ खसवादी दुनूकेँ संशय होइत अछि। — लेख मातृभाषा-आधारित आन्दोलनमे भाषिक अस्पष्टता केँ कमजोर बिन्दु मानैत अछि।
७१९. (A) अधिकार-प्राप्तिक नयका मोड़पर ठाढ़ समाज, जतय वंचित वर्ग आन्दोलनमे अछि। — लेख वर्तमान संकटकेँ संघीय लोकतांत्रिक गणतंत्रक अवसर मानैत अछि।
७२०. (A) समाजक सभ वर्ग आन्दोलनमे भाग लऽ नैसर्गिक अधिकार स्थापित करू। — निष्कर्ष संघर्षकेँ व्यापक, सामूहिक आ अधिकार-केन्द्रित दिशा दैत अछि।
७२१. (A) अम्मी आ पुत्रक प्रेम, डर आ धार्मिक स्मृति। — कथा बम-विस्फोटक पृष्ठभूमिमे मातृ-चिन्ता आ पुत्रक आस्था-संघर्ष देखबैत अछि।
७२२. (A) मक्का मस्जिद विस्फोटक खबरि बाद पुत्रक सुरक्षा लेल भय प्रकट करैत अछि। — फोन वार्ता भय, प्रेम आ धर्मक बदलैत अर्थक आरम्भिक बिन्दु अछि।
७२३. (A) धार्मिक कर्तव्यक आग्रह आ पुत्र-सुरक्षाक डर दुनू एकसंग अछि। — पहिने ओ नमाजक महत्व कहैत छलीह, बादमे मक्का मस्जिदसँ दूर रहबाक कहैत छलीह।
७२४. (A) बेटाक पैघ नगरमे स्वतंत्र जीवन देखिकए। — ओ बाल्यकालमे हाथ पकड़ि बस चढ़ेबाक स्मृति आ वर्तमान उलट सम्बन्ध याद करैत छलीह।
७२५. (A) मुस्लिम रूपमे कमसँ कम सप्ताहमे एक दिन नमाज आवश्यक मानैत छलीह। — ओ नमाजकेँ धनी-गरीबकेँ संग अनयबला आशीषक अवसर कहैत छलीह।
७२६. (A) धनी, गरीब, व्यापारी, मजदूर सभ एकसंग काँध मिलाबैत अछि। — नमाजक सामूहिकता अम्मीक लागि धार्मिक समता आ आशीर्वादक स्थल अछि।
७२७. (A) मस्जिद-यात्राक संग शहर-दर्शनक स्मृति बनैत अछि। — अम्मी चारमीनार बादमे देखबाक कहि पहिने मस्जिद देखय चाहैत छलीह।
७२८. (A) स्त्रीक सामुदायिक पहचान, संकोच आ पुत्रक आधुनिक दृष्टिक द्वन्द्व। — बुरका बिना अम्मी अपनाकेँ असुरक्षित अनुभव करैत छलीह, पुत्र पछताइत अछि।
७२९. (A) विस्फोटक हिंसासँ विपरीत पवित्रता आ शान्तिक स्मृति बनेबाक लेल। — कथा पहिने मस्जिदकेँ सुखकारी, विस्तृत आ पवित्र देखबैत अछि।
७३०. (A) जाहि नमाजक लेल अम्मी आग्रह करैत छलीह, ओहिसँ विस्फोट बाद ओ पुत्रकेँ दूर रहबाक कहैत छलीह। — कथा आतंकक कारण धार्मिक स्मृति आ मातृ-प्रेमक टकराहट देखबैत अछि।
७३१. (A) शान्त, आह्लादकारी, जीवित धार्मिक परिसरक छवि। — परबा, दाना आ पानीक दृश्य बादक रक्तपातसँ तीव्र विरोध रचैत अछि।
७३२. (A) अम्मीक श्रद्धा आ मस्जिदक पवित्र वातावरणसँ प्रभावित भऽ। — ओ कहैत अछि जे अगिला सप्ताह एतय नमाज पढ़ब।
७३३. (A) सामान्य जीवनमे लौटि ओ मस्जिद-प्रणकेँ कात राखि दैत अछि। — दू जुम्मा बीति जाइत अछि, मानो ओ जुम्मा रहलहि नहि।
७३४. (A) कोन मस्जिदमे बम फूटल, से जानैत छलीह की नहि। — ओ अम्मीकेँ बतबैत अछि जे ओही मक्का मस्जिदमे रक्तपात भेल।
७३५. (A) पूर्व शान्त छविक हिंसक विखंडन। — कथा पवित्र परिसरक जीवित स्मृति केँ रक्तरंजित त्रासदीमे बदलैत अछि।
७३६. (A) मातृ-भय बेटाकेँ महानगरीय खतरा सँ दूर रखय चाहैत अछि। — विस्फोट बाद धार्मिक आग्रहसँ पहिने सुरक्षा आ घर-फिरबाक ममता बोलैत अछि।
७३७. (A) मातृ-प्रेम धार्मिक आदर्शपर सेहो भारी पड़ि सकैत अछि। — पहिने मस्जिदक महिमा कहनिहार अम्मी आब पुत्रकेँ ओहि जगहसँ दूर रहबाक कहैत छलीह।

७३८. (A) भय, प्रेम आ आस्था बीचक नैतिक उलझन। — ओ सोचैत अछि जे बच्चाक प्रेमक आगाँ धार्मिक धारणाक अर्थ बदलि गेल।
७३९. (A) आन जुम्माकेँ रक्तहीन राखबाक विनती। — कथा आतंकविरुद्ध प्रार्थना आ मातृ-पीड़ित समुदायकेँ समर्पणमे समाप्त होइत अछि।
७४०. (A) आस्था, स्मृति, आतंक आ मातृत्वक बीच संवेदनशील कथा रचना। — कथा घटना-केंद्रित वर्णनसँ बेसी, डरलेल अम्मीसभक अंतःकरणक बदलाव देखबैत अछि।
७४१. (A) मधुबनी जिला मुख्यालयसँ उत्तर-पूर्व दिशामे, खोजपुर लग। — लेख लेखकक गाम खोजपुरसँ नजदीक स्थित बलिराजपुरक किला पर केन्द्रित अछि।
७४२. (A) भारत सरकारक पुरातत्व विभाग। — लेख किलाक सरकारी पुरातात्विक महत्व बतबैत अछि।
७४३. (A) मृद्गांड, विभिन्न वस्तु आ सोनाक सिक्का। — लेख उत्खननक आधारपर प्राचीनताक संकेत दैत अछि।
७४४. (A) मौर्यकालीन। — लेख सरकारी संकेतक आधारपर किलाकेँ मौर्यकालसँ जोड़ैत अछि।
७४५. (A) ई राक्षस राजा बलिक राजधानी छल। — गामक जनविश्वास आ इतिहासक सम्भावना, दूनू लेखमे साथ-साथ चलैत अछि।
७४६. (A) राजा बलि आ भयक किंवदन्ती कारण। — लेख लोक-भयकेँ सरकारी पहरेदारक सुविधा-संबंधी अफवाह सम्भावनासँ सेहो जोड़ैत अछि।
७४७. (A) अत्यन्त चाकर आ विशाल प्राचीन निर्माणक क्षमता। — लेख देवारपर रथ निकलि सकबाक कल्पनासँ ओकर भव्यता बतबैत अछि।
७४८. (A) ओ राक्षसक कोरल मानल जाइत अछि, आ सुरंगक कथा सेहो अछि। — पोखरि आ सुरंगक कथा किलाक रहस्यात्मकता बढ़बैत अछि।
७४९. (A) फुलबरिया, गढ़ी/गरही, रमणीपट्टी, भूपट्टी आदि नाम ऐतिहासिकता सूचित करैत अछि। — लेख स्थलनामक इतिहास-संकेतकेँ किलाक पुरातनता संग जोड़ैत अछि।
७५०. (A) ई केवल लोककथा-स्थल अछि कि मिथिलाक प्राचीन राजधानीक सम्भावित अवशेष। — लेख पुरातत्व, लोकस्मृति आ इतिहास-संदेहक बीच प्रश्न उठबैत अछि।
७५१. (A) जनकपुरक ऐतिहासिकता पर संदेह आ हेनसांग-संबंधी दूरी-तर्क। — लेख कहैत अछि जे वर्तमान जनकपुर नव स्थल मानल जाइत अछि, तँ बलिराजपुरक दावा उठैत अछि।
७५२. (A) मिथिलाक प्राचीन राजधानीक सम्भावना बलिराजपुर दिस संकेत करैत अछि, से रूपमे। — लेख निर्णायक दावा नहि, बल्कि सम्भावना आ अनुसंधानक आग्रह करैत अछि।
७५३. (A) दक्षिण भारतक महाबलीपुरम। — लेख अनेक मत रखैत अछि, एकमात्र निष्कर्ष थोपैत नहि।
७५४. (A) बलिराज गढ़क प्राचीन राजधानी-दावाकेँ बल भेटैत अछि। — लेख पुरातात्विक अभाव-उपस्थिति तुलना द्वारा महत्व रेखांकित करैत अछि।
७५५. (A) राजमहल वा निर्माणक धरती भीतर धँसल रहबाक संकेत। — लेख स्थल-आकृतिकेँ दबी संरचना सम्भावनासँ जोड़ैत अछि।
७५६. (A) कतेक रहस्यसँ आवरण उठि सकैत अछि। — लेख पुरातात्विक अनुसंधानकेँ आवश्यक मानैत अछि।
७५७. (A) एखन धरि ठोस प्रयास नहि भेल। — कामचलाऊ सड़क जोड़ब पर्याप्त नहि, से लेखकीय आलोचना अछि।
७५८. (A) पुरातात्विक सामग्री आ इतिहासकेँ व्यवस्थित रूपमे देखेबाक लेल। — संग्रहालय स्थलकेँ शोध आ पर्यटन दुनू लेल उपयोगी बना सकैत अछि।
७५९. (A) स्थानीय सांस्कृतिक पूंजीकेँ पर्यटन-विकाससँ जोड़ब। — लेख पुरातत्व आ लोककला केँ एकीकृत विकास योजना मानैत अछि।
७६०. (A) बलिराज गढ़केँ व्यापक तीर्थ-पर्यटन मानचित्रपर आनब। — लेख गरीबी घटेबा आ क्षेत्रीय विकास लेल सांस्कृतिक पर्यटनक सम्भावना देखैत अछि।
७६१. (A) प्रति व्यक्ति आय, साक्षरता आ प्रसवकालीन मातृ-शिशु मृत्यु। — लेख विकासक प्रश्नकेँ सांस्कृतिक गौरवसँ आगाँ बढ़ा आर्थिक-सामाजिक आँकड़ा पर लैत अछि।
७६२. (A) भौगोलिक बनावट आ नीक नेतृत्वक अभाव। — लेख प्राकृतिक कठिनाई आ राजनीतिक नेतृत्व, दुनूकेँ जिम्मेदार मानैत अछि।
७६३. (A) क्षेत्रीय आर्थिक असमानता देखेबाक लेल। — लेख प्रतिव्यक्ति आयक अन्तरसँ विकास-संकटक तीव्रता बतबैत अछि।
७६४. (A) बाढ़ विकासक मूल संरचनात्मक बाधा अछि। — लेख बाढ़केँ केवल आपदा नहि, दीर्घकालीन विकास-अवरोध मानैत अछि।
७६५. (A) केंद्र सरकारक सहयोग आवश्यक मानल गेल अछि। — कोसी आपदा आ बाढ़-प्रबंधनक विफलता राष्ट्रीय-क्षेत्रीय समन्वय चाहैत अछि।
७६६. (A) सड़क, रेल, पुल सन आधारभूत ढाँचा नष्ट करैत अछि। — आधारभूत ढाँचा टूटल रहितहुँ उद्योग लगेनाइ दिनमे सपना सदृश कहल गेल।
७६७. (A) सड़क-बिजलीक अभाव आ खाली जमीनक कमी। — लेख उद्योग-आधारित विकासक सीमाकेँ स्पष्ट करैत अछि।

७६८. (A) शहर सरकारी नौकरीपर टिकले अछि, उद्योगक बलपर नहि। — लेख मिथिलाक शहरकेँ विकसित गाँव वा बड़ा चौक सन बतबैत अछि।
७६९. (A) मिथिलाक श्रम अपन घरक आधारभूत निर्माणमे नहि, बाहरक विकासमे लगैत अछि। — लेख प्रवासकेँ आर्थिक विडम्बना मानैत अछि।
७७०. (A) बाढ़, अवसंरचना, शिक्षा, उद्योग आ क्षेत्रीय असमानता बीच वास्तविक विकास-दिशा खोजब। — लेख भावुक राज्यवाद नहि, व्यावहारिक आर्थिक मॉडल पर बल दैत अछि।
७७१. (A) आर्थिक विकासक कारण सेहो। — लेख राज्य-मांगकेँ केवल सांस्कृतिक अस्मिता नहि, विकास-न्यायक प्रश्न बनबैत अछि।
७७२. (A) फोरलेन हाईवे आ रेलवे रेफ्रिजरेटर डिब्बा। — लेख उपजाऊ जमीनक लाभ बाजार धरि पहुँचाबय लेल परिवहन-संग्रहण चाहैत अछि।
७७३. (A) बहुत इंजीनियरिंग कालेज, मेडिकल कालेज आ महिला विश्वविद्यालय। — लेख शिक्षा-संरचनाकेँ विकासक रीढ़ मानैत अछि।
७७४. (A) छोट उद्योग आ स्थानीय रोजगार लेल। — लेख मानैत अछि जे बिजली भेटत तँ बाहर पलायन घटि सकैत अछि।
७७५. (A) घर लग कालेज नहि, सामाजिक दबाव आ विवाह-दहेजक बाधा। — लेख प्रतिभाशाली लड़कीक पढ़ाई अधूरा रहबाक संरचनात्मक कारण खोजैत अछि।
७७६. (A) दू प्रतीभाशाली, मुदा अवसरक अन्तरसँ प्रवीण आगे, पूनम रुकि गेल। — कथा-प्रसंग विकास-निबंधमे लैंगिक-असमानता केँ जीवित उदाहरण बनबैत अछि।
७७७. (A) राउरकेला सँ इंजीनियरिंग कऽ कम्पनी द्वारा शिकागो पठाओल गेल। — प्रवीण अवसर पाबि वैश्विक रोजगार धरि पहुँचैत अछि।
७७८. (A) दहेज, विवाह-चिन्ता आ उच्च शिक्षा-संरचना अभावसँ। — कक्षा मे पहिल अबैवाली पूनम जीवन-दौड़मे पीछे छोड़ल गेल।
७७९. (A) कालेज-सुविधा आ क्षेत्रीय शिक्षा-अभाव सेहो कारण अछि। — ओ पूछैत छथि जे दहेज नहि रहितहुँ घर लग नीक कालेज भेटितैक की नहि।
७८०. (A) प्रतिभाक भविष्य समाज, लिंग, क्षेत्रीय सुविधा आ अवसरसँ निर्धारित होइत अछि। — “मिथिला मंथन” व्यक्तिगत कहानीसँ विकास-असमानताक ठोस चेहरा देखबैत अछि।
७८१. (A) एकमे विद्यालयक नैतिक-भौतिक पतन, दोसरमे उच्च शिक्षाक अभाव। — दू पाठ शिक्षा-सुविधा मात्र नहि, गुणवत्ता आ अवसरक समता माँगैत अछि।
७८२. (A) एकमे धर्म-व्यापार पर व्यंग्य, दोसरमे भयग्रस्त मातृ-आस्था। — धर्म कहीं सौदाबाजीक विषय बनैत अछि, कहीं प्रेम आ डरक संवेदनशील क्षेत्र।
७८३. (A) अधिकार आ विकासक प्रश्नकेँ स्थानीय संरचना सँ जोड़ब। — एक राजनीतिक राज्याधिकार पर, दोसर आर्थिक विकास-मॉडल पर बल दैत अछि।
७८४. (A) सार्वजनिक स्थल आ विरासतक संरक्षण। — विद्यालयक हाता आ प्राचीन किला दू उपेक्षा सँ पीड़ित सामुदायिक स्मृति-स्थान अछि।
७८५. (A) दू समाजकेँ निष्क्रियता छोड़ि अधिकार आ न्याय लेल जागबाक कहैत अछि। — कविता राष्ट्रक पुकार दैत अछि, लेख आन्दोलनक कार्यक्रम।
७८६. (A) शिक्षा-व्यवस्था कमजोर भेल तँ भविष्य असमान आ अधूरा रहैत अछि। — दू स्रोत भविष्य-पीढ़ीक क्षति पर केन्द्रित अछि।
७८७. (A) मानव जीवनक असुरक्षा आ रक्तपातक विरुद्ध करुण प्रतिरोध। — एक मस्जिद-विस्फोटक पीड़ा अछि, दोसर राष्ट्रव्यापी हिंसाक पुकार।
७८८. (A) सम्बन्धक अवरोध, स्वार्थ आ संवेदनाहीनता। — काँट सम्बन्ध रोकैत अछि; डील-धर्म भक्ति केँ स्वार्थमे बदलैत अछि।
७८९. (A) वर्तमान अधिकार आ पहचानक समर्थन लेल अतीतक पुनर्पाठ। — पुरातत्व आ राजनीतिक इतिहास दुनू मिथिला-स्मृतिकें सक्रिय बनबैत अछि।
७९०. (A) साहित्य शिक्षा, धर्म, राजनीति, इतिहास आ विकासक प्रश्नकेँ एक-दोसरसँ जोड़ि पढ़बैत अछि। — सदेह शक एहि अंशसभमे रचना समाजक बहुआयामी आत्मपरीक्षण बनैत अछि।
७९१. (A) विद्यालय-पर्यावरणक दुर्दशाकेँ जीवित पात्रक रूपमे बोलबेनाइ। — दूभि घास नहि रहि स्मृति, पीड़ा आ प्रतिरोधक आवाज बनैत अछि।
७९२. (A) भक्ति केँ लाभक सौदामे बदलयबला प्रवृत्तिपर। — लेख दिखबैत अछि जे देवतासँ संवाद असलमे समाजक स्वार्थक खुलासा अछि।
७९३. (A) संघीयता, मिथिला राज्य, समावेशन आ आत्मनिर्णयक क्रमबद्ध तर्क। — निबंध सूचीबद्ध बिन्दुसभ द्वारा राजनीतिक कार्यक्रमक रूप लैत अछि।
७९४. (A) माँक आवाजमे आस्था, भय आ प्रेमक बदलैत स्वर पकड़ब। — कथा विस्फोटक बाहरी घटना केँ अंतरंग मातृ-हृदयमे दर्ज करैत अछि।
७९५. (A) ठोस पुरातात्विक खुदाई, संग्रहालय आ सांस्कृतिक पर्यटन। — लेख मिथिलाक प्राचीनताकेँ प्रमाणित करबाक वैज्ञानिक प्रयास चाहैत अछि।
७९६. (A) आर्थिक असमानता, बाढ़, अवसंरचना आ नेतृत्व-अभाव सँ। — लेख विकासक प्रश्नकेँ भावनात्मक नारा नहि, कठोर सामाजिक-आर्थिक यथार्थ मानैत अछि।
७९७. (A) मिथिलाक महिला-शिक्षा आ अवसर-अभावक मानवीय उदाहरण। — पूनमक प्रतिभा दहेज आ शिक्षा-संरचनाक अभावमे दबि जाइत अछि।

७९८. (A) कहीं मैथिली अबला रूपमे पुकारैत अछि, कहीं राज्यक अधिकार-आधार बनैत अछि। — भाषा भावुक प्रतीक मात्र नहि, राजनीतिक-सांस्कृतिक जीवनक केन्द्र अछि।
७९९. (A) समाजकें अपन उपेक्षा, पाखंड, हिंसा आ विकास-अभाव पहिचानब। — रचना आ निबंध दूनू जागरणक उपकरण बनैत अछि।
८००. (A) सदेह १ सामाजिक यथार्थ, मिथिला-अस्मिता आ आत्मसुधारक बहुस्तरीय मंच बनैत अछि। — एहि २० खण्डमे कथा, कविता, निबंध आ आलोचना सभ समाजक अलग-अलग घाव खोलैत अछि।
८०१. (A) प्रतिभाशाली लड़कीक शिक्षा सामाजिक-ढाँचा आ सुविधा-अभाव सँ रुकि जाइत अछि। — लेखक पूनमक उदाहरणसँ देखबैत छथि जे प्रतिभा रहितहुँ लड़कीकें अवसर नहि भेटल।
८०२. (A) लड़का आगे बढ़ि विदेश पहुँचि गेल, लड़की घरेलू सीमा मे रोकाइ गेल। — प्रवीण एल एंड टी प्रोजेक्टपर शिकागो गेल, जखनकि पूनम आगू पढ़ि नहि सकली।
८०३. (A) अधिक पढ़ल लड़कीक विवाह कठिन होएबाक डर। — पूनमक घरमे पढ़ाईक विषय पर घअँघाउज होइत छल, विवाह आ दहेजक चिंता जुड़ल छल।
८०४. (A) घर लग नीक कॉलेजक अभाव सेहो लड़कीक शिक्षा रोकेत अछि। — लेखक पूछैत छथि जे दहेज नहि रहितो की पूनमकें निकटमे नीक कॉलेज भेटित।
८०५. (A) ई देखेबाक लेल जे अनुकूल शिक्षा-संरचना रहलासँ पूनम सेहो इंजीनियर बनि सकैत छलीह। — लेखक स्थान-विशेषक सुविधा-अंतरकें अवसर-अंतरक कारण मानैत छथि।
८०६. (A) सिलाई-कढ़ाई आ स्वेटरक नब डिजाइन सीखबामे। — लेखक प्रतिभाक घरेलू खपतकें सामाजिक अन्यायक चिन्ह रूपमे देखबैत छथि।
८०७. (A) पाँच किलोमीटर दूर पढ़ए जाएब लड़की लेल व्यवहारिक बाधा बनैत अछि। — ई बात शिक्षा-सुलभताक प्रश्न बनि उठैत अछि।
८०८. (A) साइकिलसँ केवल हाईस्कूल-स्तरक समस्या हल होइत अछि, उच्च शिक्षा नहि। — लेखक पूछैत छथि जे केवल हाईस्कूल धरिक पढ़ाई पर्याप्त अछि की।
८०९. (A) संस्थागत पिछड़ापनक उदाहरण रूपमे। — लेखक कहैत छथि जे राज्यक उच्च/तकनीकी शिक्षा-ढाँचा कमजोर अछि।
८१०. (A) आगामी समयमे सेहो बेटीक उच्च तकनीकी शिक्षा अनिश्चित रहबाक चिंता। — लेखक भविष्यक अवसर-वंचनाक संभावना पर प्रश्न उठबैत छथि।
८११. (A) पेट भरबाक लेल गाम छोड़लाक पीड़ा। — गीतक ध्रुव-पंक्ति गाम छोड़बाक मजबूरी आ भूखक निरंतरता पर टिकैत अछि।
८१२. (A) रोजगार भेटितहुँ सामाजिक आत्मीयता खोएबाक अनुभव। — गीतमे नौकरी प्रवासक समाधान नहि, बल्कि अपनापन-संकट बनि प्रकट होइत अछि।
८१३. (A) गाम जाएबाक इच्छा आ घर/परिवारक व्यवहारिक रोक। — गीतक पात्र पावनि पर गाम जाए चाहैत अछि मुदा परिस्थिति फटकार आ ठेलमठेल रेलक रूपमे अबैत अछि।
८१४. (A) परदेसक घर सुरक्षा नहि, बंदिश आ अलगावक ठाम बनि गेल अछि। — गीतक वक्ता घरमे रहितहुँ कैद-जकाँ अनुभव करैत अछि।
८१५. (A) विपरीत परिस्थिति बीच रास्ता खोजबाक जिद्द। — गीत पूर्ण निराशा पर नहि रुकैत, बल्कि संघर्षक संकेत दैत अछि।
८१६. (A) नौकरी, लेखन, गीत-गजल, रेडियो/टीवी आ मंच-संचालनक संयोजन। — संपादकीय परिचय लेखकक साहित्यिक आ लोक-माध्यम गतिविधि दुनूकें जोड़ैत अछि।
८१७. (A) रोजगारक बीचोबीच अपन गाम, नेह आ अस्मिताक कमी। — गीतमे पेट भरबाक लेल गाम छोड़लाक बादो भूख/प्यास रहि जाइत अछि।
८१८. (A) ध्रुव-पंक्ति आ छोटे-छोटे प्रवासी प्रसंगक दोहराव। — एके पंक्ति लौटि-लौटि गीतक दुखकें सघन बनबैत अछि।
८१९. (A) प्रवासमे पुरान सामाजिक गोत्र टूटि जाइत अछि। — गीतक वक्ता नव लोक बीच पुरान संबंधक अभाव अनुभव करैत अछि।
८२०. (A) आर्थिक प्रवास केवल आयक प्रश्न नहि, भावनात्मक विस्थापनक प्रश्न सेहो अछि। — गीत श्रम-प्रवासक भीतरक मनोवैज्ञानिक रिक्तता देखबैत अछि।
८२१. (A) कतारक दोहा आ नेपाली दूतावासक परिवेश। — कथा दोहाक गरमी, दूतावास आ प्रवासी जीवनक दृश्य सँ आरम्भ होइत अछि।
८२२. (A) अपन प्रेमिका रेशमासँ भेटबाक लेल। — रेशमा एक सप्ताहसँ दूतावासमे शरणागत छलीह, तँ लक्ष्मण ओतए पहुँचैत अछि।
८२३. (A) प्रवासी श्रमिकक कठोर जीवनक बाह्य वातावरण रचैत अछि। — गरमी, अलकरा, रौद आ मरुभूमि कथा-विश्वकें कठोर बनबैत अछि।
८२४. (A) ओ मरुभूमिमे श्रम करैत रहल अपन जीवनकें बोझा ढोइत बैलसँ तुलना करैत अछि। — प्रेमिका समक्ष ओ श्रम-पीड़ा आ असहायता एक वाक्यमे कहैत अछि।

८२५. (A) प्रवासी स्त्रीक असुरक्षा आ आश्रय-खोज। — रेशमा दूतावासमे शरणागत अछि, जे निजी संबंधक पार सामाजिक संकट खोलैत अछि।
८२६. (A) दूर-प्रवासमे पुनर्भटक संवेदनशील क्षण। — नायक-नायिका बीच गाछ साक्षी बनैत अछि आ आँसू सँ संवाद होइत अछि।
८२७. (A) लंबा बिछोह आ अनकहल संबंध-संकट। — लक्ष्मण आ रेशमा आँखि आ छोट संवादसँ लंबा अंतरालक भार व्यक्त करैत छथि।
८२८. (A) शहरक चमक प्रवासी श्रमिकक अंधकारमय श्रम-संसार ढाँपि दैत अछि। — दोहाक रोशनी देखाइत अछि, मुदा श्रमिकक वास्तविक ठाम दूर मरुभूमि अछि।
८२९. (A) पुरुषत्व, श्रम-दासता आ प्रवासी अस्मिताक प्रश्न। — लक्ष्मण अपनाकेँ बैल-जकाँ कहि मनुष्य आ श्रम-पशु बीचक रेखा पर प्रश्न उठबैत अछि।
८३०. (A) ओ प्रवास, श्रम, दूतावास, असुरक्षा आ परिवारक प्रश्नसँ जुड़ि जाइत अछि। — लक्ष्मण-रेशमा संबंध व्यापक प्रवासी पीड़ा खोलबाक माध्यम बनैत अछि।
८३१. (A) नेपालक सिरहा जिलाक कमलाकात भेड़िया गामसँ। — लेखक ओकर मूल-स्थान स्पष्ट करैत छथि।
८३२. (A) भेड़ा-बकरी चरबैत आ गोहियाक देखभाल करैत अछि। — ओ मरुभूमिमे भेड़ा-बकरीक संग दिन बितबैत अछि।
८३३. (A) बगैचाक काज आ कमाइ सँ घर बनएबाक आशा। — दलाल ओकरा बगैचाक काज कहलने रहैक, मुदा वास्तविकता भेड़ा-चरवाही भेल।
८३४. (A) दलालक ७५ हजार रुपैयाक कर्ज। — एहि ऋणक कारण ओकर एक वर्षक श्रम सेहो स्वतंत्रता नहि देलक।
८३५. (A) बोर्डिंग स्कूलमे पढ़एबाक सपना। — प्रवासक लक्ष्य मात्र कमाइ नहि, नेनाक शिक्षा आ घर बनएब सेहो छल।
८३६. (A) खुला आकाशक नीचाँ तरेगन गनैत। — लेखक ओकर दैनिक जीवनक निःसंगता देखबैत छथि।
८३७. (A) गामक माए-बाउ सेहो एही चान देखैत हेताह — ई स्मृति आ दूरीक पीड़ा। — एके चान प्रवासी आ घरक संबंध जोड़ि दैत अछि।
८३८. (A) मालिकक बिरयानी आ मजदूरक सस्ता भोजन बीचक अंतर। — लेखक पोसल खस्सीक बिरयानी मालिक खाइत, चरवाहा खुबुज-प्याज खाइत — ई विषमता देखबैत छथि।
८३९. (A) एकाकी, कठोर आ सुविधा-विहीन श्रम-स्थितिक प्रतीक। — सड़क, पानी, स्वास्थ्य आ बिजलीसँ दूर श्रम-जीवन कथा मे उभरैत अछि।
८४०. (A) चमकैत विदेशक भीतर श्रमिकक ऋण, छल आ एकांत लुकायल रहैत अछि। — दोहाक चमक ओ मरुभूमिक श्रम-संसारक बीच कथा तीखा विरोध रचैत अछि।
८४१. (A) ओ मजदूरकेँ एक काज कहि दोसर कठोर काजमे धकेलि दैत अछि। — महेन्द्र बगैचाक काजक आशासँ गेल, मुदा भेड़ा-चरवाह बनि गेल।
८४२. (A) शहरक चमक मजदूरक वास्तविक पहुँचसँ बाहर अछि। — प्रवासी मजदूर दोहा देखैत अछि, मुदा ओकर जीवन मरुभूमि मे रहैत अछि।
८४३. (A) कपड़ा लपेटल पानीक बोतल। — ई व्यंग्यात्मक विवरण सुविधा-अभावक तीखा बोध करबैत अछि।
८४४. (A) अभावमे सेहो अपनपन आ पानी देबाक सहजता। — ओ बातचीतमे प्यासो पुछबा भूलि गेल कहि बोतल आगाँ बढ़बैत अछि।
८४५. (A) न्यूनतम जीवन-निर्वाह आ आर्थिक असमानता। — एहि भोजनक सामने मालिकक बिरयानीक दृश्य रखल गेल अछि।
८४६. (A) कठोर भूगोलकेँ जीवित रखनिहार जीव आ श्रमिकक साझी सहनशीलता। — लेखक कहैत छथि जे ई सभ मिलि ओ भूभागकेँ धरती बनबैत अछि।
८४७. (A) एक वर्ष बादो कर्ज नहि चुकल, आओर दू वर्ष रहबाक बाध्यता बचल। — ऋण-चक्र प्रवासक अवधि लम्बा करैत अछि।
८४८. (A) अपन भाषा/अपन लोक भेटलासँ ओकर अकेलापन टूटैत अछि। — मजदूरक खुशी बाहरी आगंतुकमे अपनपन पाबि उभरैत अछि।
८४९. (A) मानवीय संवादक अभाव सँ आत्म-अवमूल्यनक अनुभव। — महेन्द्र अपन स्थितिक तुलना जानवर-संगतिसँ करैत अछि।
८५०. (A) प्रवासी कमाइकेँ चमकदार सपना मानबाक भ्रम। — कथा देखबैत अछि जे विदेश-प्रवास कतेक बेर कर्ज, छल आ श्रम-एकांतमे बदलि जाइत अछि।
८५१. (A) कारी मड़रक दुआर पर। — कथा पंचायतक दृश्य सँ खुलैत अछि, जतय चटाई बिछाओल गेल अछि।
८५२. (A) रामअधीन नेताक। — बिना रामअधीन नेताक पंचैती शुरू नहि भऽ सकैए — ई सत्ता-संकेत अछि।
८५३. (A) दलित पार्टीक प्रखंड अध्यक्ष आ स्थानीय सत्ता-बिचौलिया। — ओ अधिकारी, कागज-पत्तर आ पेंशनक प्रक्रिया पर प्रभाव रखैत अछि।
८५४. (A) न्यायकेँ व्यापक बनएबाक इच्छा सँ। — मुदा रामअधीन जातिनामा पंचैती जातिमे होएबाक बात कहि ओकरा रोकलक।
८५५. (A) सीलिंगमे भेटल दसकठबा खेत। — खेत पँचू सदाय केँ भेटल छल आ ओही पर विवाद अछि।
८५६. (A) सरकारक देल जमीन जोगा कऽ राखब। — ओ खेत बेचबाक/भरना देबाक विरुद्ध सतर्क करैत अछि।

८५७. (A) दसकठबा खेत ओकर खेतक आड़ि लग अछि आ ओकर नजर ओहि पर अछि। — कथा सत्ता आ जमीन-लालसाक संबंध खोलैत अछि।
८५८. (A) दियादिनी सभक झगड़ा जमीन-विवादकें हिंसक दिशा दैत अछि। — महारैलवाली आ रेवाड़ीवालीक झगड़ा पंचैतीक तात्कालिक कारण बनैत अछि।
८५९. (A) जाति-आधारित न्यायक सीमित आ सत्ता-नियंत्रित रूप। — रामअधीन नेता बाहरी पंच हटाए अपने नियंत्रणक दायरा बनबैत अछि।
८६०. (A) परिवारक बँटवारा, जमीन, जातीय सत्ता आ स्थानीय राजनीति एक संग गुंथल अछि। — कथा घरेलू झगड़ासँ बढ़ि सामुदायिक सत्ता-नाटक बनैत अछि।
८६१. (A) सरकारक देल सीलिंग जमीन रूपमे। — कथा स्पष्ट करैत अछि जे जमीन महंथसँ छीनि सरकारक मार्फत भेटल छल।
८६२. (A) सोमन खेती करैत आ फसलक आधा डोमनक बहुकें देत। — एहि बँटवारा व्यवस्थामे धीरे-धीरे तनाव बढ़ैत गेल।
८६३. (A) ओ सोचैत छल जे मेहनत ओकर साँय करै, बखरा दोसर ले जाए। — ई श्रम आ अधिकारक घरेलू विवाद बनि उठैत अछि।
८६४. (A) गहूमक बँटवारा करबाक समय। — सोमन नहाय गेल, आ रेवाड़ीवाली अपन हिस्सा उठबए लगलीह, ओतए विवाद भड़कैत अछि।
८६५. (A) महारैलवालीक आक्रोश तेज भऽ झोंटा-पकड़ाइ आरम्भ होइत अछि। — अपमानजनक शब्द विवादकें शारीरिक लड़ाइमे बदलि दैत अछि।
८६६. (A) ओ रेवाड़ीवालीकें पेट ताक मारए लगैत अछि। — झगड़ामे माइ-पुत मिलि रेवाड़ीवाली पर भारी पड़ैत छथि।
८६७. (A) चार मासक गर्भ नोकसान भऽ गेल। — कथा घरेलू हिंसाकें अत्यन्त गंभीर परिणाम धरि लऽ जाइत अछि।
८६८. (A) रामअधीन नेताक द्वारा। — नेता समाजमे पंचैतीक नाम पर कानूनी रास्ता रोकैत अछि।
८६९. (A) मर्डर केस बनि जेल आ जमानत-संकट होएबाक डर। — रामअधीन नेता कानूनक भय देखाकऽ पंचायत पर नियंत्रण राखैत अछि।
८७०. (A) नुकसान स्त्रीक देहपर अछि, मुदा निर्णय पुरुष-सत्ता आ नेता करैत अछि। — कथा स्त्री-पीड़ाकें पंचायत-सत्ता द्वारा दबाओल रूपमे देखबैत अछि।
८७१. (A) दुनू कें पाँच-पाँच हजार जुर्माना देबाक। — नेताक निर्णय दोष-विचारसँ बेसी “जातिनाम खाता” लेल धन उगाही जकाँ देखाइत अछि।
८७२. (A) जातिनाम खाता। — ई सामुदायिक धर्म/जाति नाम पर आर्थिक नियंत्रणक साधन बनैत अछि।
८७३. (A) दीना-भदरीक गहबर। — सार्वजनिक कामक नाम पर जुर्मानाकें वैध बनाओल जाइत अछि।
८७४. (A) दस सालसँ गहबर बनबाक नाम सुनितहुँ ठोस परिणाम नहि। — उन्हर मौन अनुभव पंचायती दावाक खोखलापन खोलैत अछि।
८७५. (A) ठेकादारी आ कार्यालयी दबदबा। — ओ सीओ-बीडीओक कमरेमे मनमाना दस्तखत करएबैत अछि — ई सत्ता-संरचना देखबैत अछि।
८७६. (A) मोहन सदायक। — मोहन हरदम रामअधीन संग रहैत आ निर्णयकें आगे बढ़बैत अछि।
८७७. (A) पंचक स्वतंत्र निर्णय-क्षमता नहि, मात्र हॉ-मे-हॉ मिलब। — कथा पंच सभक निष्क्रियता आ भयक आलोचना करैत अछि।
८७८. (A) दसकठबा खेत भरना राखबाक। — जुर्माना देबाक नाम पर जमीन पर कब्जाक रास्ता बनेबाक षड्यंत्र अछि।
८७९. (A) जमीन पर नियंत्रण। — आरम्भसँ ओकर नजर ओहि खेत पर रहैत अछि, पंचैती ओकर अवसर बनैत अछि।
८८०. (A) स्थानीय नेता, जाति, धर्म-नाम आ गरीबक जमीन हड़पबाक गठजोड़। — कथा न्यायक मंचकें संसाधन-लूटक यंत्र बनि जाइत देखबैत अछि।
८८१. (A) जुर्माना भरबाक उपाय नहि अछि, तँ सझिया खेत ताबत कोनो ले ले — एहन तर्कसँ। — धन-अभावकें जमीन-हड़पबाक माध्यम बनाओल जाइत अछि।
८८२. (A) नेताजी टोलक इज्जति बचए लेल खेत ले सकैत छथि। — ई पूर्वनियोजित कब्जाक संकेत दैत अछि।
८८३. (A) ओ बुझैत अछि जे गहबरक नामे गरीबक जमीन हड़पल जा रहल अछि। — ओ खुलि कहैत अछि जे मुँछवला सभ बेहरी दऽकऽ बनेता, हमरे जमीन किएको।
८८४. (A) ओकर मौन समर्थन करैत अछि। — पहिने झगड़ा रहितहुँ जमीनक मुद्दापर दुनू स्त्रीक हित एक भऽ जाइत अछि।
८८५. (A) लैंगिक गारि आ धमकीसँ। — ओ स्त्री-प्रतिरोधकें अपमान आ हिंसक भाषा सँ दबाबए चाहैत अछि।
८८६. (A) मायक दूध पीने छी तँ मारि कऽ देख — निर्भीक प्रतिरोध। — स्त्री-पात्र खुल्लमखुल्ला नेताक सत्ता कें चुनौती दैत अछि।
८८७. (A) धर्म/देवता नामे गरीबक संसाधन छिनेबाक विडंबना। — महारैलवाली देवताक नाम पर जमीन-लूटक विरोध करैत अछि।
८८८. (A) न्याय बोलबाक जगह सभक मुँहमे जाबी लागल अछि। — ई पंचायतक नैतिक पतनक तीखा रूपक अछि।
८८९. (A) सोमनक पक्ष कमजोर होइत अछि, मुदा नेता-साजिश उजागर भऽ जाइत अछि। — स्त्री-सत्य सत्ता-सुविधाक योजना बिगाड़ि दैत अछि।

८९०. (A) गरीबक न्याय-व्यवस्था मे बोलबाक अधिकार आ जमीन-सुरक्षाक प्रश्न। — कथा पंचायतक नाम पर चलैत दबाव, धन-उगाही आ जमीन-हड़पबाक कथा अछि।
८९१. (A) चार-अंकीय मैथिली नाटक। — स्रोतमे एकरा “चाइ-अंकीय मैथिली नाटक” रूपमे प्रस्तुत कएल गेल अछि।
८९२. (A) दीर्घ मौनक बाद हुनक टटका नाटक पाठकक सामने आयल। — भूमिका मे कहल गेल जे २५ वर्षक मौनभंगक बाद ई नाटक प्रस्तुत अछि।
८९३. (A) बीचमे बड़का दरबज्जा आ अदृश्य मजबूत देवाल। — मंच-संरचनामे दरबज्जा, देवाल आ अस्पष्ट प्रकाशक महत्व अछि।
८९४. (A) चोर, उचक्का, भद्र व्यक्ति, प्रेमी-प्रेमिका, बीमा एजेंट, रद्दीवाला, भिखमंगनी आदि। — नाटक मृत पात्र सभकेँ दरबज्जा लग कतारमे ठाढ़ देखबैत अछि।
८९५. (A) विष-पान कऽ आत्महत्या। — दृश्य-विवरणमे ओ सभ विष-पान कऽ एतए आबि विमूढ़ भेल बताओल गेल।
८९६. (A) ओ शायद पथ-दुर्घटनाक शिकार भेल अछि। — झोरा लऽ कऽ आबि गेल पात्रक मृत्यु दुर्घटना सँ जोड़ल बुझाईत अछि।
८९७. (A) ओ सभ शांत, अविकृत आ हड़बड़ीहीन अछि। — तीन-चार मृत सैनिक सबसँ पाछाँ ठाढ़ छथि मुदा बेचैनी नहि देखबैत छथि।
८९८. (A) दिन-रातक भेद साफ नहि रहैत। — मंच पर आलोक मद्धिम अछि आ समयक निश्चित संकेत नहि।
८९९. (A) यमालय/परलोकक प्रवेश-द्वार, जतय मनुष्य अपन स्वभाव सहित पहुँचल अछि। — पात्र सभ मृत्यु पछातियो अपन सामाजिक वासनाक संग उपस्थित छथि।
९००. (A) प्रवेश-द्वार लग पहुँचियो प्रवेश स्थगित आ अस्थिर अछि। — कतार, दरबज्जा आ बंद प्रवेश नाटकक केंद्रीय परिस्थिति बनबैत अछि।
९०१. (A) किछु पात्र दोसरकेँ लाँघि आगाँ जाए चाहैत अछि। — नाटक स्वर्ग/नरकक द्वारपर सेहो सामाजिक हड़बड़ी देखबैत अछि।
९०२. (A) कॉलर पकड़ि पाछाँ चतुर्थ-पंचम स्थानपर घसीटि आनैत अछि। — ओ कतारक अनुशासन बचए चाहैत अछि।
९०३. (A) रामपुरी चाकू। — चाकू निकालि ओ हिंसक धाक जमबैत अछि।
९०४. (A) दूटा आँगुर कैची जकाँ चला कऽ। — ओ डरें नहि बाजि पबैत, हाथक इशारासँ पॉकेटमारी बतबैत अछि।
९०५. (A) गिरहथ जागि गेल, बालक आ कुकुर सभ हल्ला मचा ओकरा पिटि एतए पठा देलक। — कथा चोरक अकुशलता पर हँसी पैदा करैत अछि।
९०६. (A) अपराध-व्यवसायक साझा पहचान सँ। — चोर, उचक्का, पॉकेटमार परलोकक कतारमे अपराधी बिरादरी बनबैत छथि।
९०७. (A) यदि चोर-उचक्का स्वर्गमे जेताह तँ स्वर्गक स्वरूप बिगड़त। — ओ नैतिक अव्यवस्था पर चिंता जतबैत अछि।
९०८. (A) ककरहु नहि; स्वर्ग सभक लेल होइत अछि। — ई कथन अपराधी पात्रक व्यंग्यात्मक समानतावाद देखबैत अछि।
९०९. (A) जखन अपराधी नैतिकता/गुणक भाषा बोलए लागैत अछि। — नाटक उलट संसार रचैत अछि जतय चोर नीति-भाषण देत अछि।
९१०. (A) झगड़ा, चाकू, हँसी, गीत-जकाँ फकरा आ कतारक उलटफेर। — दृश्य सामाजिक व्यंग्यकेँ नाटकीय चेष्टा आ संवादसँ जीवंत बनबैत अछि।
९११. (A) तस्कर-राज/हाथक सफाई वाला रूपमे। — ओ चोरक असफलताक बरक्स अपन कौशलक प्रदर्शन करैत अछि।
९१२. (A) बुद्धि-शंकर महाराज तस्कर सम्राट आबि रहल छथि। — ई आत्म-नाट्य हास्य-व्यंग्यक रूप अछि।
९१३. (A) ओ अपन पिटाईक याद आ अपमान सँ दुखी होइत अछि। — हास्यक बीच अपमानित चोरक मानवीय क्षण देखाइत अछि।
९१४. (A) बाजारीक जेब टटोलिते पॉकेट फाटल/खाली बुझाईत अछि। — ओ वार्तालापक बीचोबीच जेबक कारीगरी कयने अछि।
९१५. (A) बीमा बाबू आ आन पात्र सभक। — बाजारी जे दूसराकेँ सँभालैत छल, स्वयं लुटाइ गेल।
९१६. (A) पाइ अथवा बटुआ गायब। — पॉकेटमारक हाथक सफाई सामूहिक चोरीमे बदलि गेल अछि।
९१७. (A) जकर किछु नहि, ओकरा चोरी/उचक्कागिरीसँ डर किएक। — ई दारिद्र्य आ निर्भयताक व्यंग्यात्मक कथन अछि।
९१८. (A) हास्य, अव्यवस्था आ नैतिक उलटबाँसी। — गीत अपराधी पात्र सभकेँ सामूहिक रंगमंचीय ऊर्जा दैत अछि।
९१९. (A) तमाशा, हताशा, निराशा — एहन ध्वनि-खेल। — नाटक भाषा-क्रीड़ा सँ दृश्यक व्यंग्य तेज करैत अछि।
९२०. (A) बटुआ फेंकिते सभकेँ उलझा कऽ कतारक आगाँ पहुँचना। — एहि अवसरक लाभ उठाकऽ अपराधी पात्र सभ सबसे आगाँ ठाढ़ भऽ जाइत अछि।
९२१. (A) किएक तँ यमालयक द्वारपर पैसा-बटुआक उपयोग नहि। — ओ कहैत अछि जे भीतर गेलापर धन कोनो काज नहि करत।
९२२. (A) यमालयक बंद दरबज्जाक सामने। — एहि उद्घाटनसँ कतारक वास्तविकता स्पष्ट होइत अछि।

१२३. (A) दोसर देशमे अपन रुपैया नहि चलबाक। — मृत्यु-पारक ठाम सांसारिक मुद्रा अनुपयोगी अछि।
१२४. (A) बटुआ आ पाइसँ स्वामित्व बचल अछि, मुदा ओ काजक नहि। — ई सांसारिक स्वामित्वक अर्थहीनता देखबैत अछि।
१२५. (A) प्रवेश-पहलाक झगड़ा, जखन भीतर सांसारिक लाभ नहि। — मनुष्य मृत्यु पछातियो स्थान, धन, क्रम पर लड़ैत अछि।
१२६. (A) रुपैया सँ रूपा/रमणीक ओर अर्थ-खेल करैत अछि। — ओ हर प्रसंगकें स्त्री-लोलुप दृष्टिसँ मोड़ि दैत अछि।
१२७. (A) ओ धनक बातमे रूप/रमणीक बात जोड़ि दैत अछि। — बीमा बाबूक व्यवहार व्यावसायिक, रमणी-मोहनक वासनात्मक अछि।
१२८. (A) ओ ओकर स्त्री-विषयक भाषा आ शरीरगत दृष्टि पकड़ि लैत अछि। — दृश्य भिखमंगनीकें निष्क्रिय नहि, सक्रिय संवादक पात्र बनबैत अछि।
१२९. (A) कोनो देवत्व नहि, अप्सरा, बीमा, धन, रूपक कल्पना उभरैत अछि। — स्वर्ग-कल्पना मनुष्यमे बचल लोभ-वासनाकें उघारैत अछि।
१३०. (A) मृत्यु पछातियो मनुष्य अपन लोभ, भय, वासना आ पेशागत स्वभाव छोड़ि पबैत अछि की नहि। — नाटकक परलोक-द्वार समाजक मनोविज्ञानक परीक्षण-स्थल बनैत अछि।
१३१. (A) उर्वशी, मेनका, रंभा सन सुर-नारी भेटबाक। — ओ परलोककें सेहो स्त्री-विलासक कल्पनासँ देखैत अछि।
१३२. (A) ईर्ष्या/क्रोधसँ “बज्जर खसौ” सन प्रतिक्रिया। — ओ रंभा-मेनका नाम सुनि व्यंग्यपूर्ण प्रतिरोध करैत अछि।
१३३. (A) जीवन-बीमा चलाएबाक। — स्वर्गमे जीवन-बीमा असंभव/हास्यास्पद विचार रूपमे प्रस्तुत अछि।
१३४. (A) देवी वस्तु पर बाजारू बीमा-नीलामी। — धार्मिक मिथक आ आधुनिक बीमा-बाजार एक-दूसर पर चढ़ि व्यंग्य रचैत अछि।
१३५. (A) उचक्का, चोर, पॉकेटमार, बीमा बाबू, रमणी-मोहन आ भिखमंगनी। — विभिन्न पात्र अपनी-अपनी भाषा मे बोली लगबैत छथि।
१३६. (A) चोर, भिखमंगनी आ पॉकेटमार स्वर्गीय वज्रक बीमा-मोल लगा रहल छथि। — असंगत पात्र आ असंगत वस्तु — ई हास्यक मूल अछि।
१३७. (A) अपराधी पात्र आर्थिक-नैतिक उपदेशक जकाँ बोलैत अछि। — गीत नाटकक व्यंग्यात्मक संसारकें दोहरबैत अछि।
१३८. (A) अनुपयुक्त पात्र उच्च भूमिका निभएबाक विडंबना। — गीतक रूपक सामाजिक भूमिका-उलट के संकेत करैत अछि।
१३९. (A) नाटकक अंश आगू जारी रहबाक। — एहि अंशमे प्रथम कल्लोलक क्रम अधूरा छोड़ल गेल अछि।
१४०. (A) बाजारीकरण, लोभ आ धार्मिक-दैवी प्रतीकक व्यापारिकरण। — वज्रक बीमा बोली आधुनिक लाभ-भाषा पर व्यंग्य अछि।
१४१. (A) समाजक भ्रष्टाचार, छल आ सर्वव्यापी बेईमानी पर व्यंग्य। — गीत हर दिशा मे पनि सोखा उगबाक छवि सँ धोखाक संसार रचैत अछि।
१४२. (A) सार्वजनिक जीवनमे अनाचार आ भ्रष्टाचारक शोर। — माध्यम सभ समाजक विकृति उजागर करैत अछि।
१४३. (A) कमीशनखोरी आ गरीब-हितक योजनामे लूट। — गीत कहैत अछि जे हर ठाम कमीशन खाओल जा रहल अछि।
१४४. (A) नैतिक पतनक व्यापकता। — गीतमे चोरी केवल अन्हरियामे नहि, इजोरियामे सेहो होइत अछि।
१४५. (A) गुप्त अपराध आ खुल्लमखुल्ला लूट दुनू चलैत अछि। — ई पंक्ति सामाजिक अपराधक दू रूप देखबैत अछि।
१४६. (A) ईमानदारी दरिद्र/अस्थिर, पापक महल समृद्ध। — गीतमे नैतिकता आ वैभवक उलट संबंध देखाओल गेल।
१४७. (A) ग्रामीण-सार्वजनिक जीवनक सूक्ष्म स्तर धरि लूटक प्रसार। — गीत जनजीवनक साधारण प्रसंगसँ बड़ी सामाजिक बीमारी देखबैत अछि।
१४८. (A) दिखावा, अभिमान आ खोखल सामाजिक प्रतिष्ठा। — गीत बाहरी शोभाक भीतरक धोखाकें खोलैत अछि।
१४९. (A) मैथिली, हिन्दी आ अंग्रेजीमे गीत, नाटक, उपन्यास/कहानी लेखन। — संपादकीय परिचय हुनक विस्तृत लेखन-क्षेत्र बतबैत अछि।
१५०. (A) लोकजीवनमे नैतिक मूल्य उलटि गेल अछि आ छल व्यवस्था बनि गेल अछि। — गीत व्यंग्यात्मक दोहरावसँ सामाजिक पतनक चित्र खींचैत अछि।
१५१. (A) पत्र, नोर आ विरहक मिलल भाव। — गीत लिखल पंक्ति आ नोरक खाली जगहक बिंब सँ विरह रचैत अछि।
१५२. (A) पत्रमे अनकहल पीड़ा आ आँसू लेल रिक्त स्थान। — कवि लिखनाइकें रोदनक संग जोड़ैत छथि।
१५३. (A) प्रकृति-वर्षा आ अंतर-विरहक संगति। — सावन बाहर बरसैत अछि, नोर भीतरक पीड़ा बनि बहैत अछि।
१५४. (A) प्रेममे विरह नियति-जकाँ स्वीकार कएल गेल अछि। — गीत यक्ष-विरह आ वनवासक उदाहरणसँ प्रेम-दुखकें व्यापक बनबैत अछि।
१५५. (A) व्यक्तिगत पीड़ाकें साहित्यिक/पुराण-प्रसिद्ध विरहसँ जोड़ैत अछि। — यक्ष-विरहक स्मृति प्रेम-दुखक काल-व्याप्ति देखबैत अछि।
१५६. (A) प्रवासी पाहुनक बिछोहमे स्त्री-विरहक दृश्य। — गीतमे नायिका परदेश गेल पाहुनकें संबोधित करैत अछि।
१५७. (A) बाहरी रोशनी रहितो मन/घरक अंधकार। — प्रवासी अनुपस्थितिक कारण घरक उजास निष्प्रभ अछि।

१५८. (A) स्वामी परदेश गेल, घर-परिवारक भार ओकरा पर छोड़ि देल। — गीतमे बच्चा, बूढ़ि माए, बाजार, बाढ़ सभ जिम्मेदारी एकठाम अबैत अछि।
१५९. (A) प्रवासी अनुपस्थितिमे बाढ़ि आ घर-आँगनक संकट। — गीत निजी विरहकें मिथिलाक बाढ़ि-संकटसँ जोड़ैत अछि।
१६०. (A) प्रेम, नोर, परदेश, घरेलू भार आ सामाजिक विडंबना। — गीत सभ निजी विरहक माध्यमे व्यापक ग्रामीण-प्रवासी जीवन देखबैत अछि।
१६१. (A) श्रमिक द्वारा मालिकसँ थोड़े विश्रामक अनुमति माँगब। — कविता “हमरा अनुमति अछि श्रीमान” शैलीमे विनम्र पर तीखा स्वर बनबैत अछि।
१६२. (A) छाह बाहर देनाइ, बत्तूकें खुआओनाइ, नाला साफ करनाइ। — ई श्रमक अदृश्य घरेलू/निम्न कामक सूची अछि।
१६३. (A) लगातार श्रम सँ हाथ-देहक विश्राम चाह। — कवि श्रमिकक देह-थकानकें सूक्ष्म रूपमे रखैत छथि।
१६४. (A) व्यक्तिगत श्रमकें पीढ़ीगत श्रम-दासता सँ जोड़ैत अछि। — कविता श्रमिकक शरीरमे पुरखाक पसीना अनुभव करबैत अछि।
१६५. (A) बाहरी सम्मानक भीतर वर्गीय दूरी आ व्यंग्य। — वक्ता विनम्र भाषा बरतैत अछि, मुदा कविता सत्ता-अंतर खोलैत अछि।
१६६. (A) मानवीय अधिकारक न्यूनतम दावा। — आरामक छोट मांग श्रम-व्यवस्थाक कठोरता उजागर करैत अछि।
१६७. (A) श्रमिक जीवनक अपमानित, अस्वस्थ आ अवमाननापूर्ण दशा। — कविता सुगंधित भाषा नहि, श्रमक दूषित यथार्थ रखैत अछि।
१६८. (A) उपकार/अनुमतिक इंतजार स्वयं श्रम-जकाँ थकबैत अछि। — श्रमिकक थकान केवल कामसँ नहि, आश्रित प्रतीक्षासँ सेहो अछि।
१६९. (A) विनम्र याचना प्रतिरोधमे बदलि जाइत अछि। — कविता अंतमे श्रमिकक आत्म-जागरण सूचित करैत अछि।
१७०. (A) सेवा-काम करनिहार श्रमिकक मानवीय विश्राम आ प्रतिरोधक अधिकार। — कविता श्रम, थकान, अपमान आ छोटे विद्रोहकें एक सूत्रमे बाँधैत अछि।
१७१. (A) अवसरक असमान वितरण। — एकठाम शिक्षा-अवसर रोकाइत अछि, दोसर ठाम श्रम-प्रवास छल-ऋणमे बदलैत अछि।
१७२. (A) घर-समाजक संरचना व्यक्ति-सपना सीमित करैत अछि। — पूनम शिक्षा नहि पाबैत छथि, महेन्द्र परिवार लेल विदेश गेलो ऋणमे अटकल अछि।
१७३. (A) रोजगारक मजबूरी, अपनापनक कमी आ मनुष्यता-कटाव रूपमे। — दुनू पाठमे परदेश आर्थिक उपाय होइतहुँ भावनात्मक/मानवीय संकट बनैत अछि।
१७४. (A) श्रमिकक थकान, निर्भरता आ न्यून अधिकार। — दुनू मे श्रम देह पर बसल अछि आ विश्राम/सम्मान दुर्लभ अछि।
१७५. (A) सुविधा-अभाव गाम छोड़बाक मजबूरी बनैत अछि। — विकास-विमर्श ढाँचा बतबैत अछि; गीत ओहि ढाँचाक मानवीय पीड़ा सुनबैत अछि।
१७६. (A) निकट उच्च शिक्षा, महिला विश्वविद्यालय, तकनीकी संस्थान। — लेखक विद्यालयसँ आगू कॉलेज/विश्वविद्यालय संरचनाक जरूरत बतबैत छथि।
१७७. (A) दलालक झूठ, ऋण आ रोजगार-छल। — कहा गेल बगैचाक काज, भेटल भेड़ा-चरवाही।
१७८. (A) व्यवस्था, राजनीति, श्रम आ जीवनमे छलक व्यापक उपस्थिति। — बैकुंठ झाक गीत सामाजिक धोखाकें व्यापक रूपमे नाम दैत अछि।
१७९. (A) न्याय/व्यवस्था/क्रमक मंच पर लोभ आ छलक प्रवेश। — एकमे पंचायत जमीन-लूटक यंत्र बनैत अछि, दोसरमे परलोक-द्वारपर जेबक सफाई।
१८०. (A) व्यक्ति-पीड़ा मार्फत समाजक संरचनात्मक अन्यायकें देखब। — शिक्षा, श्रम, प्रवास, पंचायत, परलोक-व्यंग्य सभ एकहि सामाजिक आलोचनाक कड़ी बनैत अछि।
१८१. (A) अनुशासनक नाम पर असल शक्ति-क्रीड़ा। — पंचायतमे नेता नियंत्रण करैत अछि, यमालय-कतारमे चोर-उचक्का क्रम बिगाड़ैत अछि।
१८२. (A) मौका पाबि संसाधन/स्थान हथियाएब। — नेता जमीनक ओर, पॉकेटमार कतारक आगाँ आ जेबक ओर देखैत अछि।
१८३. (A) धनक सामाजिक उपयोग बनाम धनक निरर्थकता। — एक ठाम धनक नामे गरीबक जमीन फँसैत अछि, दोसर ठाम मृत्यु-पार धन व्यर्थ अछि।
१८४. (A) हाशिये पर रहल स्त्री-पात्र अचानक सत्ता/वासना-भाषाकें चुनौती दैत अछि। — दुनू दृश्य स्त्रीकें बोलबाक सक्रिय शक्ति देत अछि।
१८५. (A) धर्म/देवी नामक आर्थिक उपयोग। — गहबरक नामे जुमाना-जमीन, वज्रक नामे बीमा-नीलामी — दुनू लोभ उघारैत अछि।
१८६. (A) व्यक्तिगत चोरक मंच व्यापक सामाजिक चोरिएल संसारक रूपक बनैत अछि। — गीत आ नाटक दुनू चोरीकें सामाजिक सामान्यता जकाँ देखबैत अछि।
१८७. (A) कानूनक भय देखाकऽ गरीबकें सामुदायिक निर्णयमे कैद करब। — थाना/मुकदमा रोकि पंचायतमे जमीनक बात बढ़ाओल जाइत अछि।
१८८. (A) मृत्यु नैतिक रूपांतरण आपसँ नहि करैत। — लोभ, वासना, पेशा, भय सब दरबज्जा लग सेहो विद्यमान अछि।
१८९. (A) धोखा केवल बाजारमे नहि, धर्म, न्याय, राजनीति आ परलोक कल्पना धरि पसरल अछि। — गीतक व्यापक कथन कथा-नाटकक दृश्य सभमे मूर्त होइत अछि।

१९०. (A) व्यवस्था बदलल बिना न्यायक मंचो शोषणक मंच बनि सकैत अछि। — पंचायत, कतार, स्वर्ग-द्वार — सभ ठाम सत्ता-लोभ प्रवेश करैत अछि।
१९१. (A) लड़कीक प्रतिभा सुविधा-अभाव आ विवाह-दबावसँ नष्ट भऽ सकैत अछि। — पूनमक जीवन कथा संरचनात्मक शिक्षा-अन्यायक उदाहरण अछि।
१९२. (A) गाम छोड़लाक बादो भूख, नेहक कमी आ मनक प्यास। — गीत आर्थिक प्रवासक भीतर भावनात्मक रिक्तता रखैत अछि।
१९३. (A) विदेशी चमकक पाछाँ ऋणग्रस्त, अकेल श्रमिकक कठोर जीवन। — महेन्द्रक भेड़ा-चरवाही, कर्ज आ खुबुज-प्याजक भोजन ई सार बनबैत अछि।
१९४. (A) जाति-पंचायत आ स्थानीय नेता द्वारा न्यायक नाम पर गरीबक जमीन पर नजर। — रामअधीन-मोहनक निर्णय-संरचना यही दिशा खोलैत अछि।
१९५. (A) मानवीय लोभ, पेशागत चालाकी, वासना आ हास्य-व्यंग्यक। — मृत पात्रो अपन-अपन आदत छोड़ि नहि पबैत छथि।
१९६. (A) दुनियाँ छल-धोखासँ भरल अछि। — गीत समाजक अनेक स्तरपर बेईमानीक भाषा बनैत अछि।
१९७. (A) थोड़ा विश्राम माँगैत श्रमिकक स्वर प्रतिरोधमे बदलैत अछि। — विनम्र “श्रीमान”क भीतर वर्गीय व्यंग्य आ विद्रोह दूनू अछि।
१९८. (A) हाशिये पर रहल लोकक पीड़ा आ सीमित विकल्प। — स्त्री, प्रवासी, श्रमिक आ गरीब परिवार सभ व्यवस्था-संकट सँ घेरल छथि।
१९९. (A) व्यंग्यक माध्यमे गम्भीर सामाजिक सङ्घर्ष खोलबाक लेल। — नो एंट्री, दुनियाँ धोखा, फानी — सभमे हँसीक भीतर आलोचना अछि।
१०००. (A) स्रोतक प्रत्येक रचना केँ सामाजिक-सांस्कृतिक गहराईसँ पढ़ब। — एहि बैचमे विविध विधा एकहि कार्य करैत अछि — मिथिला/समाजक जटिल सच खोलब।
१००१. (D) लेखिका, अनुवादक, रंगकर्मी, पत्रकार आ सामाजिक कार्यकर्ता रूपमे। — परिचय हुनका बहुआयामी सर्जक आ रंग-सामाजिक हस्तक्षेपकर्मी रूपमे रखैत अछि।
१००२. (D) मैथिलीक प्रमुख अकादमी-पुरस्कृत लेखकक कृति हुनका द्वारा हिन्दीमे पहुँचल। — अनुवाद हुनकर साहित्यिक पुलक कार्य अछि।
१००३. (A) समकालीन विषय, फिल्म, महिला, बाल-विषय आ लोक-संस्कृति। — परिचय हुनका सामाजिक आ सांस्कृतिक प्रश्नक लेखिका बतबैत अछि।
१००४. (D) लोककथा, रीति-रिवाज, लोकगीत आ खान-पानक संकलन-संवर्धनसँ। — ई काज मिथिलाक जीवित लोक-संस्कृति सँ जुड़ल अछि।
१००५. (B) मैथिलीमे लिखल हुनकर नाटक सभमे एक प्रमुख नाटक। — ई हुनकर मैथिली रंग-लेखनक उदाहरण अछि।
१००६. (D) कला केँ सामाजिक सहभागिता आ परिवर्तनक माध्यम मानल गेल अछि। — हुनकर रंग-दृष्टि समावेशी आ हस्तक्षेपकारी अछि।
१००७. (D) जेल-बन्दी, वृद्धाश्रम, अनाथालय, विशेष बच्चा आ मुख्यधाराक लोक सभ संग। — कला-कर्म हाशियाक समूह धरि पहुँचैत अछि।
१००८. (C) स्वर, दृश्य आ मंचीय संवेदनाक संयुक्त अनुभव। — विविध माध्यम नाटकक श्रव्य-दृश्य ताकत बढ़बैत अछि।
१००९. (D) कला-संस्कृतिक माध्यमे सामाजिक विकासक सक्रिय योजना। — संस्था हुनकर सामाजिक रंगकर्मक आधार देखाइत अछि।
१०१०. (A) सामाजिक प्रश्नकेँ रंगमंचीय रूप देबाक प्रवृत्ति। — जीवनी आ नाटक दुनू समाजक कठिन दृश्य मंचपर आनैत अछि।
१०११. (B) भिखारी बच्चा, पुलिस, यात्री, पत्रकार, गुंडा, हिजड़ा, परिवार आ दर्शक सभकेँ संग रखि। — पात्र-सूची सार्वजनिक जीवनक अनेक तह केँ एक मंचपर आनैत अछि।
१०१२. (C) भीख, सड़क-जीवन आ वंचनाक संसार। — मंगतू असुरक्षित जीविकाक केंद्र बनैत अछि।
१०१३. (A) ओ सभ व्यक्तिगत संगहि वर्ग-प्रतिनिधि बनि जाइत अछि। — संख्या-बद्ध नाम बाल-वंचनाक सामूहिकता देखबैत अछि।
१०१४. (A) सड़कपर रहनिहार गरीब बच्चा आ राज्य-बल बीच टकराव। — पुलिस आगे हिंसक नियंत्रणक संकेत अछि।
१०१५. (C) सड़क-यथार्थकेँ देखब, लिखब वा रिपोर्ट करबाक संभावना। — पत्रकार पात्र दृश्य आ सार्वजनिक विमर्श बीच पुल बनैत अछि।
१०१६. (D) असुरक्षा, दबंगई आ हिंसक सत्ता। — सड़क-समाजमे गैर-कानूनी शक्ति सेहो मौजूद अछि।
१०१७. (A) हाशियाक लैंगिक समुदायकेँ मंचीय समाजमे जगह दैत अछि। — नाटक विविध पहचानकेँ मंचपर आनैत अछि।
१०१८. (D) विशेष व्यक्ति सँ आगू बढ़ि सामाजिक प्रकार बनबैत अछि। — सामान्य नाम प्रतिनिधि पात्र बनबैत अछि।
१०१९. (D) दृश्य कोनो एक स्थान नहि, व्यापक सार्वजनिक स्थल-यथार्थ अछि। — मंच-निर्देश दृश्यकेँ चलायमान समाजक रूप दैत अछि।
१०२०. (B) सड़कक भय, भगदड़, जीविका आ बचबाक संघर्ष। — शीर्षक पात्र-संसारक अस्थिरता संग जुड़ैत अछि।
१०२१. (C) हारमोनियम, पत्थरक खपटा आ खँजड़ी। — भीख संगीत-प्रदर्शन आ देहगत श्रमक मिश्रण बनैत अछि।
१०२२. (D) बाल-दरिद्रताक तीख संकेत। — कपड़ा मंचपर वंचना देखेबाक पहिल भाषा अछि।

१०२३. (D) छोट, भूखसँ पीड़ित आ भोला प्रश्न करैत बाल-स्वर। — ओ बाल-दुखकें निर्मम रूपमे सामने आनैत अछि।
१०२४. (A) मेहनत बहुत, कमाई अपर्याप्त। — भीखो श्रम अछि, मुदा पेट भरबाक सामर्थ्य नहि दैत।
१०२५. (C) दया पाबय लेल गरीबीक अभिनय सेहो करय पड़ैत अछि। — सड़कक अर्थव्यवस्था दया केँ दृश्य-निर्माण बनबैत अछि।
१०२६. (D) नाम बदललासँ गरीबक भूख नहि बदलैत। — भूख प्रतीकात्मक नाम-राजनीति पर तंज करैत अछि।
१०२७. (A) राजनीतिक शब्द भूखल बच्चा लेल भोजनक प्रश्नमे बदलि जाइत अछि। — भूख सत्ता-शब्द सभकेँ अपने ढंगसँ पढ़ैत अछि।
१०२८. (C) हास्य/संवादक बीच असली पीड़ा निरंतर जीवित राखैत अछि। — भूख एहि दृश्यक नैतिक केंद्र अछि।
१०२९. (C) मीडिया-सूचना अबैत अछि, मुदा पेट नहि भरैत। — सूचना आ भोजनक दूरी नाटकक व्यंग्य बनैत अछि।
१०३०. (C) बचपनक स्थान पर जीविका, भूख आ अपमान आ गेल अछि। — नाटक बाल-जीवनकेँ सड़कक संघर्षमे बदलल देखबैत अछि।
१०३१. (D) ओ पढ़ल-लिखल भिखारी जकाँ देखाइत अछि। — बच्चा सभक दृष्टिमे पढ़ल भिखारी असामान्य घटना अछि।
१०३२. (D) प्रेसक बाहर बैसि चौकीदारसँ पुरान अखबार पबैत अछि। — अखबार पढ़ब हुनकर ज्ञानक आधार अछि।
१०३३. (D) अमूर्त शिक्षा ओकर अनुभव-संसारसँ बाहर अछि। — बाल-दृष्टि शिक्षा केँ परिचित भौतिक स्थानसँ जोड़ि बुझैत अछि।
१०३४. (A) पढ़ल-पढ़ि लोक पैघ बनैत अछि, मुदा अपन भाग्य मे नहि। — नाटक शिक्षा-मूल्य मानैत अछि, मुदा अवसर-वंचना देखबैत अछि।
१०३५. (C) भूखक बीचो शिक्षा-कामना जीवित अछि। — ई वाक्य आशा आ विडम्बना दुनू अछि।
१०३६. (A) शिक्षा सेहो पेटक रणनीति बनि बुझाइत अछि। — भूखल बच्चा शिक्षा केँ तुरन्त जीविका-बढ़ोत्तरी रूपमे देखैत अछि।
१०३७. (D) सड़कक रोजी-रोटी-व्यवस्था रूपमे। — भिक्षा पेशा-जकाँ कठोर यथार्थ बनैत अछि।
१०३८. (B) एकर लेल हरियाली, ओहिर लेल भीख बन्द करनिहार विपत्ति। — प्रकृति पर दृष्टि पेटक स्थितिसँ बदलैत अछि।
१०३९. (A) भिखारी बच्चा सभक असल घर-सुरक्षा टूटल अछि। — घरक अभाव सड़क-जीवनक मूल असुरक्षा अछि।
१०४०. (C) अखबार, पढ़ाई आ भूखक संबंध सड़कक स्तरपर खुलैत अछि। — ज्ञान आ भिक्षा असहज संगम बनैत अछि।
१०४१. (B) लोक घर/दुकान/कार्यालयमे बन्द होइत अछि, तँ भीख घटैत अछि। — बरखा गरीब जीविका लेल संकट बनैत अछि।
१०४२. (B) भवनक नीचे सेहो गरीबकेँ आसरा नहि भेटैत अछि। — दृश्य शहरक दयाहीनता पर चोट करैत अछि।
१०४३. (C) संवादसँ हिंसा आ भगदड़ दिस। — डंडा घुमबैत पुलिस राज्य-बलक डर लऽ अबैत अछि।
१०४४. (C) गरीबीकेँ अपराध मानबाक प्रवृत्ति। — सड़कक बाल-जीवन कानूनक नजरमे संदिग्ध बनि जाइत अछि।
१०४५. (A) बच्चा सभक रक्षा-प्रयासमे स्वयं सेहो चोट खाइत अछि। — मंगतू हाशियाक भीतर नैतिक सहायक अछि।
१०४६. (D) पीड़ाकेँ मौज कहि उपहास करब। — हिंसक सत्ता पीड़ाकेँ अमानवीय बनबैत अछि।
१०४७. (D) बच्चा सभ डंडासँ बचबाक लेल गली दिस भागैत अछि। — शीर्षक सार्वजनिक हिंसाक तात्कालिक ध्वनि बनैत अछि।
१०४८. (D) भूखल आ बेघर बच्चा अपराधी नहि, संरक्षणक अधिकारी छथि। — दृश्य अधिकार-वंचना उघारैत अछि।
१०४९. (A) प्रकृति, पेट आ सत्ता—तीनू दबावक त्रिकोण। — गरीब बच्चा पर संकट अनेक दिशासँ अबैत अछि।
१०५०. (A) सार्वजनिक स्थलमे कोन लोक सुरक्षित, कोन लोक लगातार हाँकल जाइत अछि। — भागबाक मजबूरी असमान नागरिकता पर प्रश्न करैत अछि।
१०५१. (D) कथा केँ व्यापक सार्वजनिक स्थलपर लागू करैत अछि। — दृश्य स्थान-विशेषसँ आगू समाजक रूप बनैत अछि।
१०५२. (B) मनोरंजनक भेषमे दैन्य आ भूख देखबैत अछि। — गीत-वादन पेटक खातिर प्रदर्शनकारी श्रम बनि जाइत अछि।
१०५३. (A) वयस्क समाजक शब्द आ व्यवस्था पर बाल-भूखक आईना। — ओ प्रश्न करैत समाजक असंगति उघारि दैत अछि।
१०५४. (C) ज्ञान मात्रसँ संरचनात्मक गरीबी नहि टूटैत। — ई शिक्षा आ वंचनाक सह-अस्तित्व देखबैत अछि।
१०५५. (C) प्रतीकात्मक राजनीति बनाम पेटक यथार्थक टकराव। — नामकरणक खोखलापन पर व्यंग्य अछि।
१०५६. (B) एकहि प्रकृति अलग सामाजिक स्थिति मे अलग अनुभव बनैत अछि। — गरीबी प्रकृति-सुखकेँ जीविका-संकटमे बदलि सकैत अछि।
१०५७. (D) राज्य-बलक सामने बाल-गरीबीक असुरक्षा देखबैत। — डंडा लगैत दृश्य सामाजिक क्रूरता स्पष्ट करैत अछि।

१०५८. (C) सड़क-बोलचाल, व्यंग्य, बाल-भोलापन आ सत्ता-भाषा। — विविध भाषा-स्तर सामाजिक तनाव बनबैत अछि।
१०५९. (B) हाशियाक जीवनक लगातार भगाइल जाएबाक अनुभव। — शीर्षक असुरक्षित नागरिकताक ध्वनि अछि।
१०६०. (C) भूखल बच्चा दया, ज्ञान, राज्य आ सार्वजनिक स्थानसँ कोना टकराइत अछि। — नाटक बाल-वंचनाक माध्यमे सामाजिक संरचना पर प्रश्न करैत अछि।
१०६१. (D) पंजीकार मोहनजी रूपमे। — परिचय हुनका पंजी-परंपरा सँ जोड़ैत अछि।
१०६२. (C) पंजीशास्त्रक विद्वत् पारिवारिक पृष्ठभूमि। — पिताक पंजीशास्त्रीय उपाधि वंशागत विद्या-संसार देखबैत अछि।
१०६३. (C) शून्यसँ सृष्टि आ शान्तिक आरम्भ। — कविता शून्यकें आदिम अवस्था बनबैत अछि।
१०६४. (D) सत्ता, शान्ति, आरम्भ आ विरामक आधार। — शून्य कविताक दार्शनिक केंद्र अछि।
१०६५. (A) खेत, पथार, पोखरि, जीव-संचार आ संसार-विस्तार। — कविता भौतिक आ जैविक विस्तारक क्रम रखैत अछि।
१०६६. (B) पुराण-सांस्कृतिक आधारसँ सृष्टि-विस्तारक कल्पना। — मिथकीय संकेत बहुलता बनबैत अछि।
१०६७. (A) जीवनक विविध कर्मफल-संरचना सृष्टिसँ जुड़ल अछि। — कविता सृष्टि आ नैतिकता कें संग राखैत अछि।
१०६८. (D) शून्यक विखंडनसँ रूप, भूगोल आ जीवनक विस्तार। — शून्यसँ संसार बनबाक दृश्यात्मक क्रम अछि।
१०६९. (C) जलचर, थलचर, नभचर, भेष-भाषा आ गोत्रक बहुलता। — सृष्टि बहुरूपी अछि।
१०७०. (C) वंश-विस्तार आ सृष्टि-विस्तार दुनू क्रम-स्मृति सँ जुड़ैत अछि। — पंजी सामाजिक क्रम, कविता ब्रह्मांडीय क्रम राखैत अछि।
१०७१. (B) सृष्टिमे शुभ-अशुभ, सुख-दुख संगहि जन्मैत अछि। — कविता संसारक द्वन्द्वात्मक बनावट देखबैत अछि।
१०७२. (D) संबंधक मिठास आ चोट दूनु। — जीवनक भाव-जगत प्रेम आ पीड़ा दुनू सँ बनैत अछि।
१०७३. (B) नैतिक विरोधी रूप एकहि सृष्टिक अंश अछि। — कविता संसारक नैतिक मिश्रण स्वीकार करैत अछि।
१०७४. (B) पहिचानक बहुलता सृष्टिक स्वाभाविक अंग अछि। — कविता एकरूपता नहि, बहुरूपता देखबैत अछि।
१०७५. (D) ब्रह्मांडीय रचना सँ मानवीय देह-आवश्यकता दिस। — कविता जीवनक देह-सत्य धरि उतरैत अछि।
१०७६. (D) देह, धन, वासना, मान, दान सभमे। — भूख जैविकसँ सामाजिक लोभ धरि विस्तार पबैत अछि।
१०७७. (C) शासन, नीति, नियंत्रण आ कुशासन। — सत्ता-तंत्र सृष्टि-चक्रक सामाजिक हिस्सा बनैत अछि।
१०७८. (C) मानवीय दोष आ अंतःसंघर्षक भाषा। — कविता नैतिक-दार्शनिक शब्दावली प्रयोग करैत अछि।
१०७९. (B) सत्ता आ धर्मक विकृतिक आलोचना। — कविता समकालीन सामाजिक आलोचना धरि पहुँचैत अछि।
१०८०. (D) शून्यसँ संसार, संसारसँ समाज, समाजसँ नैतिक विघटन धरि। — कविता ब्रह्मांडीय आरम्भकें सामाजिक व्यंग्य धरि जोड़ैत अछि।
१०८१. (A) गणित, जनसंचार, पत्रकारिता आ रचनात्मक लेखनक बहु-विषयक पृष्ठभूमि। — परिचय आधुनिक प्रशिक्षण-संसार बतबैत अछि।
१०८२. (A) आकाशवाणी भागलपुरसँ कविता-पाठ आ परिचर्चा। — रेडियो-प्रसारण हुनकर सार्वजनिक साहित्यिक उपस्थिति देखबैत अछि।
१०८३. (B) अनेक पत्र-पत्रिका आ समाचार-संस्थामे। — परिचय हुनकर मीडिया-संस्थागत अनुभव देखबैत अछि।
१०८४. (C) गौरी दायक विधवा जीवन। — गाम-प्रवेशक दृश्य सामाजिक दुखक स्मृति बनैत अछि।
१०८५. (C) नवयुवती विधवाक सामाजिक चिह्न आ वंचना। — वस्त्र आ मांग विधवापनक सामाजिक अनुशासन देखबैत अछि।
१०८६. (D) संस्कृतिक नाम पर स्त्री-जीवनक दमन। — प्रश्न संस्कृति आ अन्याय बीच संबंध खोलैत अछि।
१०८७. (B) बीमारीक कारण मृत्यु; स्त्रीक दोष नहि। — कविता विधवा पर दोषारोपण अन्याय बतबैत अछि।
१०८८. (D) घटक/द्वितीकारक सूचना आ वरक बीमारी लुकाएल होएबाक जिम्मेदारी। — कविता मध्यस्थ निर्णायक सजा स्त्री पर पड़ल देखबैत अछि।
१०८९. (B) विधवा कें अशुभ मानि सामाजिक अलगाव। — कविता विधवाक बहिष्कारक पीड़ा उधारैत अछि।
१०९०. (B) गलती स्त्रीक नहि, सामाजिक विवाह-संरचना आ रूढ़िक अछि। — शीर्षक दोष पीड़ितसँ हटाकऽ व्यवस्था पर राखैत अछि।
१०९१. (A) कथक नृत्यांगना पुनीता शर्मा लेल। — शीर्षकक बाद नृत्यांगना कें संबोधन अछि।
१०९२. (A) मन, भाव आ समर्पणक अवस्था संग। — नृत्य भीतरक भाव-समर्पणसँ बुझल गेल अछि।

१०९३. (A) शास्त्रीय संगीत, प्रकाश आ देह-अभिव्यक्तिक गहन मंच। — राग-मंचन नर्तकीक संपूर्ण प्रतिभा देखेबाक प्रसंग अछि।
१०९४. (D) कला-क्षणमे कलाकार निजी देह पार कऽ ऊर्ध्व अनुभव दैत अछि। — कविता समर्पणकें आध्यात्मिक तीव्रता धरि लऽ जाइत अछि।
१०९५. (C) शब्द नृत्य-अनुभवक पूर्णता पकड़ि नहि पबैत। — नृत्य देहगत कला अछि, पूरा अनुभव भाषा सँ परे रहि सकैत अछि।
१०९६. (B) नर्तकीक पूर्ण समर्पणसँ ओकर प्रिय/परिजन सेहो भाग्यशाली मानल जाइत अछि। — कविता कलाकारक पूर्णता कें संबंध-जीवन धरि फैलाबैत अछि।
१०९७. (A) कलाक प्रति पूर्ण देह-मन समर्पण। — समर्पण तकनीक नहि, आत्म-निवेश अछि।
१०९८. (A) एक सामाजिक रूढ़ि पर प्रश्न, दोसर कला-देहक उत्सव। — कवि स्त्री-अनुभवक दुख आ गरिमा दुनू देखबैत छथि।
१०९९. (B) राग, रोशनी, देह, भाव आ आत्मा-केंद्रित दृश्य। — नृत्य बहु-इन्द्रिय अनुभवक रूपमे गढ़ल अछि।
११००. (D) कला पूर्ण समर्पणमे देहसँ देवत्व-जकाँ उजास पबैत अछि। — कविता नृत्यकें आत्मा, भाव आ देहक साधना मानैत अछि।
११०१. (B) कॉमिक्स/चित्र-कथा माध्यमे मैथिली अभिव्यक्ति। — परिचय हुनका कॉमिक्स आ चित्र-कथाक सर्जक रूपमे रखैत अछि।
११०२. (C) कथा, लघुकथा, विज्ञान-कथा, चित्र-कथा, कार्टून आ चित्र-पहेली। — परिचय विविध दृश्य-आख्यान विधा बतबैत अछि।
११०३. (A) बाल-भाषा आ शिक्षक/बुजुर्गक शब्दार्थ-भ्रमसँ। — कॉमिक्स बोलचाल भाषा सँ हास्य उठबैत अछि।
११०४. (D) पाँचटा बच्चा एकटा बूढ़ि माय कें। — दृश्य बाल-तर्कक उलटफेर पर चलैत अछि।
११०५. (B) सहायता-भाव आ बाल-अतिशयोक्ति एक संग अबैत अछि। — छोट क्रियाकें बच्चा विजयी घटना बना दैत अछि।
११०६. (A) शब्दार्थकें शाब्दिक पकड़ि हास्य बनबैत अछि। — चित्र-शृंखला दोहरे अर्थसँ हास्य बनबैत अछि।
११०७. (B) इलाज/फीसक व्यावहारिकता पर बाल-संदेह। — नताशा वयस्क व्यवस्था कें बाल-दृष्टिसँ देखैत अछि।
११०८. (C) डॉक्टर/बच्चा संवादमे भय, गलतफहमी आ हास्यक झटका। — छोट संवाद चौक आ हँसी दुनू देइत अछि।
११०९. (A) बाल/किशोर विज्ञान-कथाक प्रकाशन-दिशा। — परिचय विद्यालयी पाठ्य-पुस्तक मंडल द्वारा प्रकाशनक उल्लेख करैत अछि।
१११०. (A) चित्र, हास्य, बाल-दृष्टि आ मैथिली संवादकें मिलाकऽ आधुनिक दृश्य-आख्यान बनबैत अछि। — कॉमिक्स मैथिलीमे दृश्य-कथनक विस्तारक उदाहरण अछि।
११११. (B) भक्ति, शरणागति आ विश्व-कल्याणक प्रार्थना। — गीत मायक चरणमे शरण आ दया-याचना सँ आरम्भ होइत अछि।
१११२. (A) भक्त अपन दुःखक समाधान मातृ-देवी करुणामे ताकैत अछि। — शरणागति एहि गीतक मूल धुरी अछि।
१११३. (D) माया-जाल, स्वार्थ, आतंक, अज्ञान आ अनुशासन-अभावसँ भरल। — कवि माँसँ जगत-संकट दूर करबाक विनती करैत छथि।
१११४. (B) नैतिक सामाजिक सुधारक आकांक्षा। — भक्ति गीत सामूहिक नैतिकता चाहैत अछि।
१११५. (A) सत्य, मंगल/शिवत्व आ सौंदर्य। — गीत आध्यात्मिक मूल्यकें सामाजिक उपचार बनबैत अछि।
१११६. (C) विश्व-परिवारक व्यापक मानवीय दृष्टि। — भक्ति, मानवता आ विश्व-कल्याण एकसंग आबैत अछि।
१११७. (A) जगतक व्यवहार करुणा सँ दूर भऽ गेल अछि। — दया-याचना स्वार्थ-विरोधी नैतिकता बनैत अछि।
१११८. (C) भक्ति निजी दुखसँ आगू बढ़ि सामूहिक पीड़ा धरि जाइत अछि। — कवि माँक करुणाकें दुखिया समाज धरि चाहैत छथि।
१११९. (D) वंचना आ व्यंग्यक बीच करुणामय प्रार्थना। — गीत सामाजिक पाठमे भक्ति-करुणाक स्वर दैत अछि।
११२०. (A) माँक करुणासँ व्यक्ति, समाज आ विश्वक अंधकार दूर हो। — गीत दया, ज्ञान, सत्कर्म आ विश्व-कल्याणक प्रार्थना अछि।
११२१. (D) हरि चरणमे अनुराग आ वासना-दंभ-कपट त्याग। — भजन आंतरिक शुद्धि आ भक्ति-आसक्ति पर केन्द्रित अछि।
११२२. (A) भक्ति-पथमे सांसारिक संबंध अंतिम सहारा नहि। — भजन विरक्ति आ हरि-समर्पणक राग छूड़त अछि।
११२३. (A) भजन बिना जीवन-दिन व्यर्थ जकाँ बीतैत अछि। — गीत जीवनक सार भक्ति-स्मरणमे देखैत अछि।
११२४. (B) अहिल्या, गजेन्द्र आ द्रौपदीक प्रसंग। — पद ईश्वरक करुणा आ उद्धार-शक्ति उदाहरणद्वारा कहैत अछि।
११२५. (C) ईश्वर-आश्रयक विशिष्ट भक्ति-सिद्धान्त। — राग विहाग राम-भक्ति कें केंद्रमे राखैत अछि।
११२६. (D) ऋतुराज बीच विरह, बेचैनी आ प्रतीक्षा। — चैत, कोयल, फूल आ नींद-अभाव मिलि विरह बनबैत अछि।

११२७. (D) बाहरी ऋतु-सौंदर्य आ भीतरी विरहक टकराव। — ऋतु फुलैत अछि, मुदा मन पियाक अभावमे घबरायल अछि।
११२८. (C) भक्ति, उद्धार-स्मरण आ विरह-ठुमरी। — भैरवी, विहाग आ चैतक ठुमरी विविधता देखबैत अछि।
११२९. (A) दुनू दैवी करुणा आ नैतिक जागरण दिस लौटैत अछि। — दुनू रचना भक्ति-धाराक स्वर अछि।
११३०. (A) विस्मृत मैथिली भक्ति-संगीत परंपरा केँ फेर सुनाएब। — सदेह अंश विस्मृत कविक रचना सुरक्षित करैत अछि।
११३१. (A) नेपालक भाषा-वैज्ञानिक मानक आ मैथिली अकादमी पटना लेखन-शैली। — अंश उच्चारण-लेखनक दू संस्थागत मानक प्रस्तुत करैत अछि।
११३२. (C) ड, ज, ण, न, म। — पंचमाक्षर पाँच वर्ग-नासिक ध्वनिक समूह अछि।
११३३. (A) ओहि वर्गक पंचमाक्षर। — नियम वर्गीय नासिक ध्वनि जोड़ैत अछि।
११३४. (D) अनुस्वारक प्रयोग। — अनेक ठाम अनुस्वार अधिक देखाइत अछि।
११३५. (A) अनुस्वार। — एहि वर्ग सभसँ पूर्व अनुस्वारक सुझाव देल अछि।
११३६. (C) पंचमाक्षर। — उदाहरणरूपेँ अन्त, कम्पन आदि रूप सुझाओल गेल।
११३७. (C) अर्थक अनर्थ आ उच्चारण-दोषक सम्भावना। — बिन्दु अस्पष्टता भाषा-बोध बिगाड़ि सकैत अछि।
११३८. (B) स्पष्ट लेखन आ उच्चारण-सुरक्षा। — अंश अनुस्वार-दोष सँ बचेबाक लेल पंचमाक्षर उचित कहैत अछि।
११३९. (D) एहि क्षेत्रमे विवाद नहि देखल जाइत। — नियम वर्गीय नासिक ध्वनिसँ आगू क्षेत्र अलग रखैत अछि।
११४०. (A) लेखन, उच्चारण आ अर्थक स्थिरता। — मानक लेखनक उद्देश्य स्पष्टता आ पाठ-सुविधा अछि।
११४१. (B) “रू ह” जकाँ। — अंश ढ/ढ़ भेदकेँ उच्चारण-आधारित ढंगसँ बुझबैत अछि।
११४२. (C) ढ। — मानक अंश उच्चारणानुसार ढ/ढ़ प्रयोग स्पष्ट करैत अछि।
११४३. (C) “न”। — कहलनि/कहलन्हि सन रूप विकल्प रूपमे मानल गेल।
११४४. (B) जतय स्पष्टतः “अइ” वा “अउ” सदृश उच्चारण चाही। — देखैत, छलैक, बौआ, छौक सन उदाहरण आधार अछि।
११४५. (B) मैथिलीमे विशिष्ट रूपे प्रयोग योग्य मानक शब्द। — अंश एहि शब्द सभकेँ एही रूपे प्रयुक्त करबाक निर्देश दैत अछि।
११४६. (B) सामान्यतः अग्राह्य। — उदाहरणमे “देखि आबह” आ “मालिनि गेलि” सन रूप दैछ।
११४७. (D) यथावत। — प्राचीन उद्धरणक ऐतिहासिक रूप सुरक्षित राखबाक निर्देश अछि।
११४८. (D) वैकल्पिक रूपे स्वीकार्य। — अंश आधुनिक प्रयोगमे ए/य विकल्प दैत अछि।
११४९. (C) वैकल्पिक रूपे स्थान देल जा सकैत अछि। — धीआ/धीया, विवाह/बियाह सन उदाहरण देल गेल।
११५०. (B) यथासंभव ज अथवा सानुनासिक स्वर-चिह्न। — मैजा/मैआँ, कनिजा/कनिआँ सन विकल्प एहि नियमक उदाहरण अछि।
११५१. (A) हाथकेँ, हाथसँ, हाथेँ, हाथक, हाथमे। — अंश विभक्तिक सटल रूप आ “मे”मे अनुस्वार त्याज्य कहैत अछि।
११५२. (D) सर्वथा त्याज्य। — मानक अंश “मे” रूप केँ बिन्दु बिना लिखबाक पक्षमे अछि।
११५३. (C) “केर”। — कारक-चिह्न चर्चा मे “क”क विकल्प “केर” देल गेल अछि।
११५४. (D) कय वा कए। — उदाहरण “देखि कय” वा “देखि कए” देल गेल।
११५५. (C) माड, भाड। — नासिक ध्वनि-लेखनक मानक रूप एहि निर्देशमे देल अछि।
११५६. (A) अनुसार बदलल नहि जाय। — अंश अर्द्ध न/मक विषय अलग रखैत अछि।
११५७. (C) नियमतः लगाओल जाय, मुदा विभक्तिसँग अकारान्त प्रयोग। — उदाहरण “श्रीमान्” मुदा “श्रीमानक” देल गेल अछि।
११५८. (A) शब्दमे सटा कऽ। — अंश एकल कारक-चिह्न सटा लिखबाक निर्देश दैत अछि।
११५९. (D) फराक लिखल जाय, जस्तै घर परक। — एकल आ संयुक्त विभक्ति बीच लेखन-भेद स्पष्ट अछि।
११६०. (D) पूर्ण विराम पासीसँ “।” आ अंक देवनागरी रूपमे। — अंश विराम आ अंक दुनूमे देवनागरी-मैथिली लेखनशैलीक आग्रह रखैत अछि।
११६१. (B) बाल-दृष्टि मार्फत समाजक विसंगति उजागर करब। — एकमे भूखल बच्चा, दोसरमे बाल-तर्कक हास्य अछि।
११६२. (B) एक संसारक क्रम, दोसर भाषाक क्रम खोजैत अछि। — कविता ब्रह्मांडीय क्रम, मानक लेखन भाषिक क्रम व्यवस्थित करैत अछि।

११६३. (B) समाज पीड़ितक दोष लगबैत अछि कि व्यवस्था बदलबाक? — गौरी दाय आ सड़क-बच्चा अन्यायक बोझ झेलैत छथि।
११६४. (B) सामाजिक अंधकारक बीच भक्ति आ नैतिक जागरण। — दुनू रचना करुणा, शरणागति आ नैतिकता पुकारैत अछि।
११६५. (B) एक कला-देहमे, दोसर भक्ति-शरणागति मे। — एक नृत्यक आत्मनिवेश, दोसर दैवी करुणाक याचना।
११६६. (A) रचनात्मक बहुलता बाद भाषा-लेखनक अनुशासन सामने राखैत अछि। — भाषा-मानकीकरण स्वाभाविक समापन बनैत अछि।
११६७. (D) दुनू समाजक साझा प्रयोगक्षेत्र पर केन्द्रित अछि। — एक सड़क/ट्रेनक जीवन, दोसर लेखनक सार्वजनिक नियम।
११६८. (D) दृश्य, संवाद आ मंच/चित्रक आधुनिक रूपमे। — दुनू आँखि आ कान दुनू मार्फत संवाद करैत अछि।
११६९. (A) एक विधवा/नर्तकी, दोसर सामाजिक हाशियाक पात्र-समाज। — दुनू स्त्रीक सामाजिक/कलात्मक उपस्थिति पर दृष्टि दैत अछि।
११७०. (A) मैथिली साहित्य समाज, भाषा, दृश्यता, भक्ति, व्यंग्य आ न्याय-प्रश्नक व्यापक मंच अछि। — सदेह १क अन्तिम भाग विविध विधाकें संवादमे जोड़ैत अछि।
११७१. (D) अभाव, भूख आ जीविका-संघर्ष। — हास्य सतह अछि; गहिराइ मे बाल-दरिद्रता अछि।
११७२. (D) प्रत्येक चर्चा फेर पेटक प्रश्न पर लौटैत अछि। — नाम, शिक्षा, समाचार, बरखा सभ पर भूखक छाया अछि।
११७३. (B) शिक्षा-सूचना मात्र पर्याप्त नहि, सामाजिक ढाँचा चाही। — मंगतू ज्ञान आ बेघरपनक संयुक्त रूप अछि।
११७४. (B) सार्वजनिक स्थानसँ भगाइल, अपराधीकरण भेल अस्तित्व। — डंडा सत्ता आ बाल-वंचनाक दूरी नापैत अछि।
११७५. (D) आश्रय-विहीनक लेल प्रकृति-सुख सेहो संकट अछि। — घर-विहीनता बरखाकें विपत्ति बना दैत अछि।
११७६. (B) प्रतीकात्मक बदलाव गरीबक जीवन नहि बदलैत। — पटना/साहेब संवाद सत्ता-भाषा पर बाल-व्यंग्य अछि।
११७७. (D) जे बच्चा सभकें दया, शिक्षा, सुरक्षा चाही, तिनका मारि/डॉटि भगाओल जाइत अछि। — नाटक पीड़ितकें अपराधी बनाबयवला दृष्टि पर चोट करैत अछि।
११७८. (C) एके बिरादरीक भीतर अनुभव, ज्ञान आ सहानुभूतिक संवाद। — मंगतू बच्चा सभकें पहचानैत आ बात करैत अछि।
११७९. (C) यथार्थकें कृत्रिम न बनाकऽ जीवित आवाज दैत अछि। — भाषिक विविधता मंचक सामाजिक सच्चाई बनैत अछि।
११८०. (B) सड़क-बालकक कथा समाजक न्याय-बोधक परीक्षा अछि। — नाटक पूछैत अछि जे हम भूखल बच्चा कें नागरिक मानैत छी कि बाधा।
११८१. (D) भाषा-सृजनक संग लेखन-शैलीक जिम्मेदारी सेहो जरूरी अछि। — विविध साहित्यक बाद वर्तनी-विचार भाषा-सम्पादनक आधार बनैत अछि।
११८२. (D) अर्थ, उच्चारण आ मुद्रणक स्पष्टता। — स्पष्ट ध्वनि-लेखन भाषा-मानकक लक्ष्य अछि।
११८३. (A) ध्वनि आ अक्षरक संबंध। — मानक लेखन उच्चारणानुकूल अक्षर-चयन चाहैत अछि।
११८४. (D) एकरूपताक संग व्यवहारिक वैकल्पिकता। — मानकता व्यवहारक संतुलन अछि।
११८५. (C) शब्द-रचना आ विभक्ति संबंध स्पष्ट करैत अछि। — हाथकें, हाथसँ सन रूप व्याकरणिक संबंध देखबैत अछि।
११८६. (B) मुद्रणक जटिल मात्रा आ पठनीयता। — मानक अंश चिह्न-स्पष्टता आ छपाईक सुविधा देखैत अछि।
११८७. (A) मैथिली लेखनक स्वलिपि-संगति आ स्थानीय रूप। — अंक-नियम लेखनक दृश्य-स्वरूप निश्चित करैत अछि।
११८८. (B) शब्द-सम्बन्ध अस्पष्ट न हो। — समस्त पदक रचना-स्पष्टता वाक्य-बोधमे सहायक अछि।
११८९. (A) विधा-स्वतंत्रता संग भाषिक सावधानी। — कथा, कविता, नाटक, कॉमिक्स सभकें स्पष्ट लेखन चाही।
११९०. (C) मैथिलीक साहित्यिक विस्तारकें टिकेबाक लेल साझा लेखन-नीति जरूरी अछि। — मानकता सृजनक संप्रेषण-सहयोगी अछि।
११९१. (C) सामाजिक रंगमंच, लोक-संस्कृति आ हाशियाक जीवनक मंचन। — परिचय आ “भाग रौ” समाज-केंद्रित रंगकर्म देखबैत अछि।
११९२. (A) बाल-भूख, सड़क, शिक्षा, पुलिस आ नागरिकता। — नाटक हाशियाक बाल-जीवनकें केंद्रमे राखैत अछि।
११९३. (D) शून्यसँ समाजक भूख-लोभ आ सत्ता-विकृति धरि। — कविता ब्रह्मांडीय आरम्भसँ सामाजिक आलोचना धरि पसरैत अछि।
११९४. (D) विधवा पर लादल दोषक असल जिम्मेदार समाज/व्यवस्था अछि। — गौरी दायक पीड़ा सामाजिक रूढ़िक आलोचना बनैत अछि।
११९५. (D) नृत्यकें देह, राग, आत्मा आ पूर्ण समर्पणक साधना। — कविता मंचीय कला कें आध्यात्मिक तीव्रता धरि लऽ जाइत अछि।
११९६. (D) दृश्य-हास्य, बाल-बुद्धि आ संवाद-आधारित चित्र-कथा। — नताशा मैथिली दृश्य-कथाक आधुनिक रूप अछि।

११९७. (C) भक्ति, शरणागति, करुणा आ नैतिक जगार। — दया करू माँ आ भजन-राग आध्यात्मिक स्वर अछि।
११९८. (B) भाषाक ध्वनि, वर्तनी, विभक्ति, अंक आ विरामक नियम सामने राखि। — अन्तिम अंश भाषिक आधार सुरक्षित करबाक आग्रह अछि।
११९९. (C) जीवनी, नाटक, कविता, कॉमिक्स, भजन आ भाषा-मानक। — बैच विधागत रूपेँ अत्यन्त विविध अछि।
१२००. (D) मैथिली साहित्य समाजक जखम, कला, करुणा आ भाषा-नीति सभकेँ एक मंचपर रखैत अछि। — अन्तिम बैच सदेह १क बहुविध स्वर समेटैत अछि।
१२०१. (A) प्रथम अंकक संपादकीय — स्रोत-सूत्र एहि खण्ड केँ प्रथम अंकक संपादकीय सँ जोड़ैत अछि।
१२०२. (A) प्रथम अंकक संपादकीय — एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।
१२०३. (A) प्रथम अंकक संपादकीय — सुरक्षित पठन स्रोत-सार प्रथम अंकक संपादकीय धरि सीमित रहैत अछि।
१२०४. (A) शीर्षक प्रथम अंकक संपादकीय दिस संकेत करैत अछि — शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।
१२०५. (A) प्रथम अंकक संपादकीय — एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल प्रथम अंकक संपादकीय सँ बनैत अछि।
१२०६. (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब — एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।
१२०७. (A) प्रथम अंकक संपादकीय — सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ प्रथम अंकक संपादकीयक आधार पर ग्रहणीय अछि।
१२०८. (A) प्रथम अंकक संपादकीयक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब — दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।
१२०९. (A) संपादकीयक रूप प्रथम अंकक संपादकीय केँ स्पष्ट करैत अछि — रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।
१२१०. (A) उत्तरकेँ प्रथम अंकक संपादकीय धरि सीमित राखब — विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।
१२११. (A) अंक १ केर शोध-लेख — स्रोत-सूत्र एहि खण्ड केँ अंक १ केर शोध-लेख सँ जोड़ैत अछि।
१२१२. (A) अंक १ केर शोध-लेख — एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।
१२१३. (A) अंक १ केर शोध-लेख — सुरक्षित पठन स्रोत-सार अंक १ केर शोध-लेख धरि सीमित रहैत अछि।
१२१४. (A) शीर्षक अंक १ केर शोध-लेख दिस संकेत करैत अछि — शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।
१२१५. (A) अंक १ केर शोध-लेख — एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल अंक १ केर शोध-लेख सँ बनैत अछि।
१२१६. (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब — एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।
१२१७. (A) अंक १ केर शोध-लेख — सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ अंक १ केर शोध-लेखक आधार पर ग्रहणीय अछि।
१२१८. (A) अंक १ केर शोध-लेखक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब — दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।
१२१९. (A) शोध-लेखक रूप अंक १ केर शोध-लेख केँ स्पष्ट करैत अछि — रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।
१२२०. (A) उत्तरकेँ अंक १ केर शोध-लेख धरि सीमित राखब — विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।
१२२१. (A) धारावाहिक – प्रथम किस्त — स्रोत-सूत्र एहि खण्ड केँ धारावाहिक – प्रथम किस्त सँ जोड़ैत अछि।
१२२२. (A) धारावाहिक – प्रथम किस्त — एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।
१२२३. (A) धारावाहिक – प्रथम किस्त — सुरक्षित पठन स्रोत-सार धारावाहिक – प्रथम किस्त धरि सीमित रहैत अछि।
१२२४. (A) शीर्षक धारावाहिक – प्रथम किस्त दिस संकेत करैत अछि — शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।
१२२५. (A) धारावाहिक – प्रथम किस्त — एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल धारावाहिक – प्रथम किस्त सँ बनैत अछि।
१२२६. (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब — एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।
१२२७. (A) धारावाहिक – प्रथम किस्त — सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ धारावाहिक – प्रथम किस्तक आधार पर ग्रहणीय अछि।
१२२८. (A) धारावाहिक – प्रथम किस्तक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब — दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।
१२२९. (A) उपन्यासक रूप धारावाहिक – प्रथम किस्त केँ स्पष्ट करैत अछि — रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।
१२३०. (A) उत्तरकेँ धारावाहिक – प्रथम किस्त धरि सीमित राखब — विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।
१२३१. (A) धारावाहिक – प्रथम किस्त — स्रोत-सूत्र एहि खण्ड केँ धारावाहिक – प्रथम किस्त सँ जोड़ैत अछि।

- [illegible]

१२६८. (A) प्रवासी मैथिल स्तंभ, धारावाहिक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब — दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्वपूर्ण अछि।
१२६९. (A) अंग्रेजी-गद्यक रूप प्रवासी मैथिल स्तंभ, धारावाहिक केँ स्पष्ट करैत अछि — रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।
१२७०. (A) उत्तरकेँ प्रवासी मैथिल स्तंभ, धारावाहिक धरि सीमित राखब — विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।
१२७१. (A) प्रवासी स्तंभक कविता — स्रोत-सूत्र एहि खण्ड केँ प्रवासी स्तंभक कविता सँ जोड़ैत अछि।
१२७२. (A) प्रवासी स्तंभक कविता — एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।
१२७३. (A) प्रवासी स्तंभक कविता — सुरक्षित पठन स्रोत-सार प्रवासी स्तंभक कविता धरि सीमित रहैत अछि।
१२७४. (A) शीर्षक प्रवासी स्तंभक कविता दिस संकेत करैत अछि — शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।
१२७५. (A) प्रवासी स्तंभक कविता — एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल प्रवासी स्तंभक कविता सँ बनैत अछि।
१२७६. (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब — एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।
१२७७. (A) प्रवासी स्तंभक कविता — सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ प्रवासी स्तंभक कविताक आधार पर ग्रहणीय अछि।
१२७८. (A) प्रवासी स्तंभक कविताक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब — दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्वपूर्ण अछि।
१२७९. (A) अंग्रेजी-पद्यक रूप प्रवासी स्तंभक कविता केँ स्पष्ट करैत अछि — रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।
१२८०. (A) उत्तरकेँ प्रवासी स्तंभक कविता धरि सीमित राखब — विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

अध्याय २ : विदेह-सदेह २ — विस्तृत अध्ययन

खण्ड ६२५ : विदेह-सदेह २ — प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना: आरम्भिक परिप्रेक्ष्य

१. विदेह-सदेह २ क मुख्य स्वरूप की रूपमे प्रस्तुत अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) २००९-१० क मैथिली प्रबन्ध, निबन्ध आ समालोचना संकलन रूपमे।
- (C) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

२. ई संकलन विदेह ई-पत्रिकाक कोन अंक-परिसर सँ बीछल सामग्री पर आधारित अछि?

- (A) २६म सँ ५०म अंकक चुनल रचना पर।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

३. प्रिंट वर्सनक चयन-नीति स्रोतमे कोना कहल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) लगभग दस प्रतिशत चुनल रचना संग प्रस्तुत।

४. विदेह-सदेह २ मे कोन विधा सभक समावेश बताओल गेल अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) साक्षात्कार, सम्पादकीय, संदेश-आलोचना, प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना।

५. “प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना” शीर्षक संकलनक बौद्धिक चरित्र कोना बनबैत अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) रचनात्मक साहित्यक साथ विचार, विवेचन आ संवाद केँ केन्द्रमे राखि।

६. विदेह-सदेह २ मे “पाखलो” अलग पुस्तकाकार होएबाक उल्लेख कोन बात देखबैत अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई संकलन सामग्री-विभाजन आ पुस्तक-योजना दुनू सँ जुड़ल अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

७. ज्योति झा चौधरीक “अर्चिस्” अलग प्रकाशित होएबाक बात की सूचित करैत अछि?

- (A) कविता-संग्रहकेँ स्वतंत्र पुस्तक रूपमे प्रतिष्ठित करबाक योजना।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

८. देवांशु वत्सक “नताशा” अलग पुस्तकाकार होएबाक उल्लेख की बतबैत अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) मैथिली चित्र-शृंखलाकेँ स्वतंत्र दृश्य-पुस्तक रूपमे देखल गेल।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

९. संकलनक आरम्भिक वक्तव्य पाठक संग कोन संबंध बनबैत अछि?

- (A) पाक्षिक ई-प्रकाशन आ प्रिंट चयन बीच सेतु बनबैत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

१०. विदेह-सदेह २ क आरम्भिक भूमिका संकलनकें कोन तरहक परियोजना बनबैत अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई-पत्रिका, प्रिंट-संकलन, आलोचना आ साहित्य-इतिहासक संयुक्त परियोजना।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

खण्ड ६२६ : विदेह-सदेह २ — विदेह आन्दोलन आ डिजिटल-साहित्यिक उपलब्धि

११. भूमिका मे विदेह द्वारा प्रारम्भ साहित्य आन्दोलन कोन लिपि-द्वय सँ जोड़ल अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) तिरहुता आ देवनागरी।
- (C) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

१२. विदेह आन्दोलनमे लेखक-समुदायबारे की दावा अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) २०० सँ बेसी लेखक जुड़ि चुकल छथि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

१३. विदेहक ५० अंक कोन-कोन रूपमे ई-प्रकाशित भेल बताओल गेल?

- (A) देवनागरी, तिरहुता आ ब्रेल तीनू रूपमे।
- (B) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

१४. दू टा सदेह अंकक उल्लेख कोन बात प्रमाणित करैत अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई-पत्रिका सँ मुद्रित सदेह शृंखला धरि यात्रा।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

१५. ६००० पृष्ठक नूतन मैथिली साहित्यिक उल्लेख की सूचित करैत अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) विदेहक व्यापक डिजिटल साहित्य-संग्रह।
- (D) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

१६. ५० लाख शब्दक मैथिली कॉर्पोरा कोन दृष्टिसँ महत्वपूर्ण अछि?

- (A) भाषिक संसाधन आ शोध-सामग्री रूपमे।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

१७. ११०० पृष्ठक पाण्डुलिपि-अंकणक कार्य कोन सांस्कृतिक दिशा देखबैत अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) भोजपत्र, तालपत्र आदि पाण्डुलिपिक मिथिलाक्षर अंकण आ देवनागरी लिप्यंतरण।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

१८. विदेह आर्काइवक प्रकृति भूमिका मे कोना विस्तृत अछि?

- (A) शब्द, ऑडियो, वीडियो, चित्रकला, छायाचित्र, पोथी आ बाल-साहित्यक भंडार।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

१९. मैथिलीक पहिल ब्रेल पोथी उल्लेख किएक महत्त्वपूर्ण अछि?

- (A) मैथिली साहित्यक दृष्टिबाधित पाठक-समावेशनक दिशा देखबैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

२०. भूमिका मे “ई तँ मात्र प्रारम्भ अछि” कथनक आशय की अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) उपलब्धि सभकेँ अन्तिम नहि, विस्तृत भविष्य-कार्यक आरम्भ मानल गेल।

खण्ड ६२७ : विदेह-सदेह २ — भाषा-सम्पादन, संस्कार-संग्रह आ मिथिलाक्षर

२१. भाषा-सम्पादन पाठ्यक्रमक अंतिम रूप कोना देल गेल बताओल अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) विदेहक ३००० सँ बेसी अन्तर्जाल सदस्यक सहभागितासँ।
- (C) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

२२. मिथिलाक्षरक यूनिकोड आवेदनमे विदेहक भूमिका कोना संकेतित अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) आवेदनकर्ता द्वारा आवेदनमे विदेहक योगदान वर्णित।

२३. मिथिलाक जाति आ धर्मक संस्कार-संग्रहक उल्लेख कोन बात देखबैत अछि?

- (A) मैथिलीमे विधि-व्यवहार आ श्रमगीतक ऑडियो-वीडियो संरक्षण।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

२४. विदेह आर्काइवमे १०० सँ बेसी मैथिली ऑडियो फाइलक उल्लेख किएक महत्त्वपूर्ण?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) मौखिक-संगीतिक मैथिली संस्कृति सुरक्षित करबाक दृष्टिसँ।
- (C) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

२५. १०० घण्टासँ बेसी वीडियो फाइलमे सम्पूर्ण नाटकक उल्लेख की जोड़ैत अछि?

- (A) रंगमंच आ दृश्य-संस्कृति केँ आर्काइवमे स्थान।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

२६. सएसँ बेसी मैथिली पोथी उपलब्ध कराओल गेल — एकर प्रभाव की अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) पठन, डाउनलोड आ शोध लेल विशाल सार्वजनिक पुस्तक-संसाधन।
- (C) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

२७. बच्चा सभक साहित्य आ कार्टून प्रदर्शित/उपलब्ध कराओल गेल — अर्थ की?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) बाल-पाठककेँ मैथिली साहित्य-संसारमे सक्रिय जगह।

२८. आधुनिक कला, चित्रकला आ मिथिला चित्रकलाक फोटो-संग्रह की संकेत करैत अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) साहित्यिक आ दृश्य-कला धरोहरक संयुक्त संरक्षण।

२९. भोजपत्र-तालपत्रक पाण्डुलिपि-कार्य कोन ऐतिहासिक सेतु बनबैत अछि?

- (A) प्राचीन अभिलेख आ आधुनिक डिजिटल पाठ बीच।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

३०. विदेह-सदेह २ भूमिका भाषिक-सांस्कृतिक कार्यकेँ कोना समेटैत अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) लिपि, भाषा, संस्कार, ध्वनि, दृश्य, पोथी आ बाल-साहित्य सभकेँ एकसंग।

खण्ड ६२८ : विदेह-सदेह २ — सम्पादकीय संरचना आ प्रकाशन-दृष्टि

३१. विदेह-सदेह २ क सम्पादक रूपमे के उल्लेखित छथि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) गजेन्द्र ठाकुर।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

३२. सहायक सम्पादक रूपमे के सभक नाम अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) रश्मि रेखा सिन्हा आ उमेश मंडल।

३३. भाषा सम्पादनक उत्तरदायित्व के सभ सँ जुड़ल अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) विद्यानन्द झा आ नागेन्द्र कुमार झा।
- (D) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

३४. रचनाकार सभसँ संक्षिप्त परिचय आ फोटो पठेबाक आग्रह की देखबैत अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई-पत्रिका मे लेखक-संदर्भ सहित प्रकाशनक संपादकीय पद्धति।
- (D) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

३५. मौलिकता संबंधी निर्देश कोन मूल्यक रक्षा करैत अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) रचनाक मौलिकता आ प्रकाशन-उत्तरदायित्व।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

३६. विदेहमे मिथिला आ मैथिलीसँ संबंधित रचना कोन भाषामे प्रकाशित होइत कहल गेल?

- (A) मैथिली, संस्कृत आ अंग्रेजीमे।
- (B) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

३७. पाक्षिक ई-प्रकाशनक तिथि-संरचना की अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) मासक ०१ आ १५ तिथिकेँ ई-प्रकाशन।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

३८. सर्वाधिकार लेखकाधीन कहबाक अर्थ की अछि?

- (A) रचनाक अधिकार मूल रचनाकार लग मानल गेल।
- (B) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

३९. रचनाक अनुवाद/पुनः प्रकाशनक अधिकार संबंधी बात की सूचित करैत अछि?

- (A) आर्काइव/रचनाक पुनः उपयोग लेल अनुमति-व्यवस्था आवश्यक।
- (B) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

४०. प्रकाशन-परिचयक साहित्येतर सूचना एहि क्विजमे कतेक उपयोगी अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) संपादकीय पद्धति बुझबाक सीमा धरि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

खण्ड ६२९ : विदेह-सदेह २ — जीवकान्त साक्षात्कार: जन्म, परिवार आ परिवेश

४१. जीवकान्तक जन्म-स्थानक रूपमे कोन ठाम उल्लेखित अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) मामाक गाम अभुआढ़, सुपौल जिला।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

४२. जीवकान्तक जन्म-तिथि स्रोतमे कोना देल अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) २७ जुलाई १९३६।

४३. जन्मक बाद हुनकर लालन-पालन कोना भेल?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) पहिने मामाक गाममे, बादमे अपन गाम मधुबनक डेओढ़मे।

४४. हुनकर पितृ-परिवारक आकार कोना बताओल गेल?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) चारि भाइक संयुक्त परिवार, १५-१६ बच्चा संग लालन-पालन।
- (C) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

४५. जीवकान्त अपन भाइ-बहिन संबंधी उत्तरमे की बतबैत छथि?

- (A) दू भाइ, बहिन सभक स्थिति आ परिवारक अलग-अलग ठामक जीवन।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

४६. पैघ बेटा अरुणक बारेमे की कहल गेल?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) चेन्नईमे बैंकमे कार्यरत।

४७. छोट बेटा वरुण कोन क्षेत्र/संस्थासँ जुड़ल बताओल गेल?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) लखीसरायमे एल.आई.सी. काज।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

४८. बेटी प्रेमक वैवाहिक ठाम के रूपमे कोन क्षेत्र उल्लेखित अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) नेपालक राजविराज।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

४९. साक्षात्कारक आरम्भ जीवकान्तक लेखनसँ पहिने की बनबैत अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) जीवन-परिवारक सामाजिक पृष्ठभूमि।

५०. जीवकान्तक संयुक्त परिवार स्मृति काव्य/कथा-लेखन लेल कोन आधार बना सकैत अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) सामूहिक ग्रामीण अनुभवक संवेदनात्मक आधार।

खण्ड ६३० : विदेह-सदेह २ — जीवकान्त: घर, पत्नी आ लेखन-सहयोग

५१. जीवकान्तक कथन अनुसार हुनकर घरमे आन लोक मैथिली लिखैत छलाह?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) नहि, भाइ वा बच्चा मैथिलीमे नहि लिखैत छल।

५२. शुरूमे पत्नी शचिक दृष्टि हुनकर लेखन पर कोना छल?

- (A) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ओ बहुत नहि बुझैत छलीह आ एकरा फालतू काज बुझैत छलीह।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

५३. पत्नीक अनिद्रा आ रातिक लेखन प्रसंग की देखबैत अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) घरक दिनचर्या आ लेखकक रात्रि-लेखन बीच तनाव।

५४. बादमे शचिक भूमिका कोना बदलल?

- (A) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ओ सहयोग करए लगलीह।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

५५. “ओ ज्यों विरोध करतीह तँ हम किछु नहि लिखि सकैत छी” कथनक भाव की अछि?

- (A) घरेलू समर्थन लेखकक रचनात्मक जीवन लेल निर्णायक।
- (B) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

५६. जीवकान्त पत्नीक प्रति कोन भाव व्यक्त करैत छथि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) आभार।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

५७. घरमे मैथिली लेखनक अनुपस्थिति हुनकर लेखकत्वकेँ कोना देखबैत अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) लेखन व्यक्तिगत संकल्पक परिणाम बनैत अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

५८. लेखन-जीवनक आरम्भिक घरेलू संघर्ष लेखकक व्यक्तित्वमे की जोड़ैत अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) दृढ़ता आ रचनात्मक धैर्य।

५९. पत्नी-सहयोगक प्रसंग मैथिली लेखकक सामाजिक यथार्थ की बतबैत अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) साहित्यक श्रम घर-परिवारक अदृश्य सहमति पर निर्भर रहैत अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

६०. जीवकान्तक उत्तरक केन्द्रीय बात की अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) लेखन निजी प्रतिभा मात्र नहि, सहनशील घरेलू सहयोगसँ बनैत अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

खण्ड ६३१ : विदेह-सदेह २ — जीवकान्त: आरम्भिक शिक्षा आ साहित्य-दिशा

६१. जीवकान्त अपन जन्मकालक शिक्षा-स्थिति कोना बतबैत छथि?

- (A) ओहि कालमे पढ़ैक महत्व बेसी नहि छल।
- (B) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

६२. स्कूलमे नाम लिखेबाक प्रसंगमे जीवकान्त की कहैत छथि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) कियो नहि गेल, ओ स्वयं गेलाह।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

६३. नेना-कालमे लिखबाक साधन की छल?

- (A) माटि पर लिखब।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

६४. गाममे कोन पाठ-परम्परा हुनका प्रभावित कएलक?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) तुलसीदासक रामायण पाठ आ तर्क-वितर्क।
- (C) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

६५. घरमे कोन तरहक रामायण रहबाक उल्लेख अछि?

- (A) बेंकटेश्वर स्टीम प्रेससँ छपल मोटका रामायण।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

६६. तुलसीदासक लिखल पर बहस देख जीवकान्तक मोनमे कोन प्रश्न उठल?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) हमहूँ किएक नहि लिखी।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

६७. शुरूमे ओ कोन विधा लिखलथि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) कविता।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

६८. हुनकर शुरूआती कविता कतए छपल?

- (A) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) आर्यावर्तमे।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

६९. १९६४ ई. मे ओ कोन शैक्षिक उपलब्धि पबैत छथि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) प्राइवेटसँ बी.ए.।
- (D) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

७०. हिंदी वा मैथिलीमे लिखबाक छह मासक अहापोहक अर्थ की अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) भाषा-चयन लेखकत्वक निर्णायक मोड़ छल।

खण्ड ६३२ : विदेह-सदेह २ — मिथिला मिहिर, टैगोर आ मैथिली-निर्णय

७१. जीवकान्तक अनुसार मिथिला मिहिर हुनका कोना प्रभावित कएलक?

- (A) ओहिसँ बेसी प्रभावित भेलाह।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

७२. रवीन्द्रनाथ टैगोरक साहित्यक प्रभाव कतेक स्वीकारल गेल?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ओ सेहो प्रभावक स्रोत छल।
- (C) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

७३. किछु काल बाद जीवकान्त कोन संकल्प लेलथि?

- (A) नित दिन लिखबाक।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

७४. गृह-जिला मधुबनीक नौकरी जीवनानुभवमे कोना सहायक भेल?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) खजौली, देहोल, पोखराम आदि गाममे रहि व्यापक अनुभव भेटल।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

७५. स्वतंत्रता-प्राप्ति कालक शिक्षा-परिस्थितिमे संस्कृतक स्थिति पर जीवकान्त की कहैत छथि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) इंगलिश मीडियम खुललासँ लोक संस्कृत बिसरि गेल।
- (D) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

७६. हिंदी स्कूलमे मैथिली पढ़ाओल जाइत छल — ई की सूचित करैत अछि?

- (A) शिक्षा-प्रणालीमे मैथिली उपस्थित छल।
- (B) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

७७. जीवकान्त स्वयंकेँ “गामक लोक” कहलासँ की बतबैत छथि?

- (A) ग्राम-जीवन हुनकर भाषा-संवेदना के मूल अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

७८. २४ जनवरी १९६५ मे मिथिला मिहिरमे कोन कविता छपल?

- (A) “इजोरिया आ टिटही”।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

७९. “इजोरिया आ टिटही” छपलासँ की परिणाम भेल?

- (A) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) हुनका लेखनक जोश भेटल।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

८०. मिथिला मिहिर आ आर्यावर्तक प्रकाशन अनुभवक भेद की अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) आर्यावर्त शुरुआती कविता छापलक, मिथिला मिहिर मैथिली दिशा दृढ़ कएलक।
- (C) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

खण्ड ६३३ : विदेह-सदेह २ — जीवकान्तक काव्य-दृष्टि आ रचनात्मक गंध

८१. जीवकान्तक प्रिय विधा कोन अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) कविता।

८२. कविता लिखबामे हुनका की अनुभव होइत अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) आनन्द अबैत अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

८३. “गंध” प्रतीकसँ जीवकान्त की बुझबैत छथि?

- (A) रचना/लेखनक अलग-अलग प्रभाव, जे साफ तुलना सँ परे अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

८४. ओ किएक कहैत छथि जे कोनो गप कवितामे नीकसँ कहल जा सकैत अछि?

- (A) कविता हुनकर विचार-प्रेषणक मूल माध्यम अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

८५. आलोचकक कथन “कथामे सब अलग-अलग नहि” पर जीवकान्तक संकेत की अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) पाठककेँ सूत्र जोड़ए पड़ैत अछि।

८६. “सबाहक गंध अपन-अपन” कथनक अर्थ की?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) प्रत्येक लेखक/रचनाक संवेदना विशिष्ट होइत अछि।

८७. जीवकान्तक लेखनक मूल के रूपमे की कहल गेल?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) कविता।

८८. कविताक संग गप प्रेषित करबाक रुचि की बतबैत अछि?

- (A) विचार सेहो काव्यात्मक ढंगसँ कहबाक प्रवृत्ति।
- (B) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

८९. जीवकान्तक रचना-पद्धति पाठकसँ कोन अपेक्षा करैत अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) सक्रिय अर्थ-निर्माण।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

९०. एहि खण्डमे जीवकान्तक साहित्यिक आत्म-परिचयक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ओ मूलतः काव्य-संवेदनासँ संचालित लेखक छथि।

खण्ड ६३४ : विदेह-सदेह २ — प्रोत्साहन, यात्रीजी आ धारावाहिक उपन्यास

९१. यात्रीजी जीवकान्तक बारेमे सोमदेव केँ की कहने छलाह?

- (A) जीवकान्तकेँ कहियौ ओ उपन्यास लिखताह।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

९२. मिथिला मिहिरसँ लिखबाक आमंत्रण जीवकान्त कोना लेलथि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) चुनौतीक रूपमे।
- (C) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

९३. फरमाइश पर लिखबाक प्रक्रिया कोना चलल?

- (A) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) जे लिखबैत रहल, फरमाइश करैत छल, से लिखैत रहलाह।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

९४. शिक्षक संघसँ जुड़ाव हुनका कोन साहित्यिक लाभ देलक?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) पटना जाएबाक आ लोकसँ भेटक अवसर।
- (D) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

९५. पटना-भेटघाट जीवकान्त लेल की बनल?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) प्रोत्साहनक स्रोत।
- (D) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

९६. तीनटा उपन्यास कोना लिखल गेल बताओल अछि?

- (A) फरमाइश पर।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

९७. ओ उपन्यास सभ कोन रूपमे छपल?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) धारावाहिक रूपमे।
- (D) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

९८. प्रोत्साहन-प्रसंग जीवकान्तक लेखकत्वमे कोन तत्त्व जोड़ैत अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) व्यक्तिगत प्रतिभा संग साहित्यिक समुदाय आ संपादकीय आग्रह।

९९. यात्रीजीक टिप्पणीक गूढ़ अर्थ की छल?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) कविताक भीतर कथाकारक संभावना देखल गेल।
- (C) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

१००. मिथिला मिहिरक भूमिका एहि प्रसंगमे की अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) लेखककें आमंत्रित, चुनौतीत आ प्रकाशित करनिहार मंच।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

खण्ड ६३५ : विदेह-सदेह २ — साहित्य अकादमी, पुरस्कार आ दूरी

१०१. साहित्य अकादमी पुरस्कारबारे जीवकान्तक दृष्टि कोना अछि?

- (A) लोक ओकरा संदेहक दृष्टिसँ देखैत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

१०२. जीवकान्त अकादमीक “पॉलिटिक्स”बारे की कहैत छथि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ओ नहि जनैत छथि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

१०३. “गाममे रहैत छी” कथन कोन आत्म-स्थिति बतबैत अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) साहित्यिक सत्ता-केंद्रसँ दूरी।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

१०४. “कोनो दोस्त नहि बनेलहुँ” कथनक पुरस्कार-संदर्भमे अर्थ की?

- (A) पुरस्कार-पहुँच लेल गुट/मित्र-मंडली नहि बनाएल।
- (B) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

१०५. मिथिला समाजकें ओ कोना वर्णित करैत छथि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) अनौपचारिक।

१०६. पुरस्कार विलंबसँ भेटल की नहि — एहि पर हुनकर रुख की अछि?

- (A) भऽ सकैत अछि, मुदा ओ एहि सभमे नहि पड़ैत।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

१०७. अकादमी प्रसंग जीवकान्तक व्यक्तित्वक कोन पक्ष देखबैत अछि?

- (A) स्वतंत्रता आ संस्थागत राजनीति सँ दूरी।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

१०८. “जाएज लोककें किनारा” कथनक आशय की अछि?

- (A) योग्य लेखकक उपेक्षा होइत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

१०९. साहित्यिक सम्मान आ रचना-मूल्य बीच हुनकर संकेत की अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) सम्मान पर संदेह हो सकैत, रचना स्वतंत्र रहैत अछि।

११०. एहि उत्तरक नैतिक धुरी की अछि?

- (A) लेखन पुरस्कार-समीकरणसँ ऊपर रहबाक चाही।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

खण्ड ६३६ : विदेह-सदेह २ — पत्रिका, अनुवाद आ कविता-संग्रह

१११. समकालीन भारतीय साहित्य शुरू भेलाक बाद जीवकान्त की कयलथि?

- (A) किछु अनुवाद कएलथि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

११२. मैथिलीमे पहिल कहानीक संबंधमे जीवकान्त की कहैत छथि?

- (A) पहिल कहानी हुनकर आएल।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

११३. पहिल मैथिली विशेषांकक प्रसंग की सूचित करैत अछि?

- (A) राष्ट्रीय/बृहत्तर पत्रिका संसारमे मैथिलीक प्रवेश।
- (B) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

११४. केदार काननक उल्लेख कोन कार्यसँ जुड़ल अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) एकटा अनुवाद।
- (D) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

११५. हिंदी संपादक आ पत्रिका सभ हुनकर रचना कोना लेत छल?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) आदरसँ छापैत छल।
- (C) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

११६. कोलकाता, मुंबई, दिल्लीक पत्रिका मे छपब की सूचित करैत अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) भौगोलिक रूपे विस्तृत प्रकाशन-पहुँच।
- (C) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

११७. पहिल कविता-संग्रहक नाम की बताओल गेल?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) “तकैत अछि चिड़ै”।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

११८. “तकैत अछि चिड़ै” पर कोन मान्यता भेटल?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) साहित्य अकादमी पुरस्कार।
- (D) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

११९. ओहि संग्रहक हिंदी अनुवादक नाम की छल?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) “निशांतक चिड़िया”।
- (C) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

१२०. विश्वविद्यालयी शोधक उल्लेख की बतबैत अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) हुनकर कृतित्व शैक्षिक अध्ययनक विषय बनल।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

खण्ड ६३७ : विदेह-सदेह २ — कविता, रहस्य आ पाठक-निर्माण

१२१. जीवकान्तक कविता “रहस्य” मे मूथल बुझाईत अछि — प्रश्न पर ओ की उत्तर दैत छथि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) कविता कतहुसँ शुरू भऽ तार्किक परिणति तक पहुँचैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

१२२. “आखिर मे टर्न” वाली धारणा कोन शिल्पक संकेत अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) कविता अंतमे अर्थ-वक्रता वा मोड़ लैत अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

१२३. लोककाल आ पाठक सामने नहि रहबाक परिणाम की बताओल गेल?

- (A) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) अलग-अलग पाठक अलग गप देखैत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

१२४. जीवकान्तक कविता पाठक केँ कोन भूमिका दैत अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) स्वयं अर्थ खोजबाक।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

१२५. तार्किक परिणति आ रहस्य एक साथ कोना सम्भव अछि?

- (A) आरम्भ खुला, पर अन्त अर्थ-संगत।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

१२६. “टर्न” काव्य-पठनक अनुभवमे की करैत अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) पूर्व अर्थकेँ पलटि वा गाढ़ करि दैत अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

१२७. जीवकान्तक कवितामे अर्थक बहुलता किएक बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) पाठक, काल आ अनुभव भिन्न-भिन्न होइत अछि।

१२८. रहस्य-प्रश्नक उत्तरमे जीवकान्त शिल्प-सजगता कोना देखबैत छथि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ओ आरम्भ, परिणति आ पाठकीय अर्थक संबंध पर बोलैत छथि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

१२९. एहि दृष्टि मे कविता कोन चीज नहि अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) सादा एकरेखीय सूचना।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

१३०. जीवकान्तक काव्य-दृष्टिक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) कविता खुलल आरम्भसँ अर्थपूर्ण मोड़ धरि पाठककेँ सक्रिय यात्रा करबैत अछि।

खण्ड ६३८ : विदेह-सदेह २ — समीक्षा-कर्म आ नव लेखक

१३१. जीवकान्त स्वयंकेँ समीक्षक रूपमे कोना देखैत छथि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ओते प्रोफेशनल नहि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

१३२. नव पोथी पढ़लाक बाद ओ की करैत छलाह?

- (A) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) छोट-छोट टिप्पणी।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

१३३. ४० सालमे ओ कतेक पोथीपर टिप्पणीक अनुमान दैत छथि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ६०-७० टा।
- (D) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

१३४. टिप्पणीक बाद “मन बहलबैत” बात की बतबैत अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) समीक्षा संग हास-परिहास आ चर्चा हुनकर स्वभाविक संवाद-क्षेत्र छल।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

१३५. नव लेखकबारे हुनकर मुख्य अवलोकन की अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) नव लेखक तेजी सँ आबि रहल छथि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

१३६. देहातसँ लेखक आबि रहल अछि — ई की सूचित करैत अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) लेखनक सामाजिक आधार विस्तृत भऽ रहल अछि।

१३७. बीच पीढ़ीबारे जीवकान्त की कहैत छथि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) अद्भुत लेखक भेल।
- (D) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

१३८. महाप्रकाश आ सुभाषचन्द्र यादवक रचना-बल कोना बताओल?

- (A) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लोक विवशता आ निर्धनताक विलक्षण चित्रण।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

१३९. मैथिली कविता बारे जीवकान्तक सकारात्मक टिप्पणी की अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) गंभीर भऽ रहल अछि, स्तर बढ़ल अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

१४०. नव लेखक आ कविता पर एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) मैथिलीमे नव स्वर, ग्रामीण विस्तार आ गंभीर काव्य-चेतना उभरि रहल अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

खण्ड ६३९ : विदेह-सदेह २ — समीक्षा-संकट: यूरोप, हिन्दी आ मैथिली

१४१. जीवकान्त समीक्षा-विधाक मूल केतय सँ आएल बतबैत छथि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) यूरोपसँ।

१४२. यूरोपक समीक्षा मे कोन गुण बताओल गेल?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) अन्वेषण आ समुचित परिप्रेक्ष्य।

१४३. भारत/हिन्दुस्तानक स्थिति ओ कोना देखैत छथि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) एहि विधामे पिछड़ल।
- (C) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

१४४. हिंदी समीक्षाबारे हुनकर टिप्पणी की अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) हिंदीमे सेहो नीक समीक्षा नहि भऽ रहल।

१४५. नामवर सिंह संदर्भमे “समीक्षा नहि, भाषण” कहबाक आशय की?

- (A) तटस्थ मूल्यांकनक स्थान पर वक्तव्य-प्रधानता।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

१४६. “नीक लेखककें परसँ दबा देल” कथन की कहैत अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) समीक्षा-व्यवस्था मे प्रतिभा-दमन होइत अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

१४७. विद्यापति पर मैथिलीमे नीक समीक्षा न भेल कहबाक अर्थ की?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) महान परंपरा पर पर्याप्त समालोचना-अन्वेषणक कमी।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

१४८. रामानाथ झा आ जयकान्त बाबू संदर्भ की सूचित करैत अछि?

- (A) प्रमुख कृतित्व/समालोचक पर पर्याप्त समीक्षा-अभाव।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

१४९. “सोनारक काज लोहारक हथौड़ीसँ नहि” रूपक की अर्थ रखैत अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) सूक्ष्म साहित्यिक काम लेल उपयुक्त आलोचनात्मक औजार चाही।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

१५०. एहि खण्डक केंद्रीय आलोचनात्मक शिकायत की अछि?

- (A) समीक्षा मे तटस्थता, पद्धति, योग्यता आ गहराई कम अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

खण्ड ६४० : विदेह-सदेह २ — जाति, गुटबाजी आ साहित्यिक नैतिकता

१५१. “अपन बट्टी भरि पनबट्टी” रूपक की बतबैत अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) छोट स्वार्थक भीतर फँसल आलोचना-संस्कृति।
- (D) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

१५२. जाति-पाति बेसी अछि — एहि टिप्पणीक आलोचनात्मक अर्थ की?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) साहित्यिक मूल्यांकन मे सामाजिक पक्षपात घुसल अछि।

१५३. लोक एक-दोसरकेँ छोट बुझैत अछि — ई की संकेत करैत अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) प्रतिस्पर्धा आ अहंकारक रोग।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

१५४. रचनाक मूल भावना मे कमी आएल — अर्थ की?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) साहित्यिक सृजनक नैतिक-संवेदनात्मक धरातल कमजोर भेल।

१५५. लगुआ-भगुआमे फँसल लोक — कोन समस्या?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) अपने समूहक रचना-प्रशंसा आ पक्षपात।
- (C) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

१५६. सब अपनाकेँ पैघ बुझैत अछि — ई कोन मनोवृत्ति अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) अहंकारी आत्म-महिमा।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

१५७. काजक क्रेडिट लेल मारि रहल — अर्थ की?

- (A) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) साहित्यिक श्रेय-लालसा।

१५८. एहि आलोचनाक सम्बन्ध समीक्षा-संकटसँ कोना अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) पक्षपात आ गुटबाजी तटस्थ समीक्षा रोकैत अछि।

१५९. जीवकान्तक साहित्यिक नैतिकता कोन दिशा माँगैत अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) निष्पक्षता, गुण-पहिचान आ स्वार्थ-नियंत्रण।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

१६०. एहि खण्डक कठोर भाषा किएक महत्वपूर्ण अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ओ मैथिली साहित्यिक समाजक अंदरूनी रोग केँ बेपर्दा करैत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

खण्ड ६४१ : विदेह-सदेह २ — अनुभव, प्रचार-प्रसार आ शिक्षा

१६१. जीवकान्त रचना मे अनुभवक भूमिका कोना बतबैत छथि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) सभ लेखक अपन अनुभवकेँ पुनर्जीवित करैत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

१६२. “लेखक शास्त्र बना दैत अछि” कथनक आशय की?

- (A) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) व्यक्तिगत अनुभव सँ व्यापक अर्थ/व्यवस्था बनबैत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

१६३. मैथिलीक प्रचार-प्रसार लेल शिक्षक स्तरक संबंध की बताओल?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) शिक्षक स्तर बढ़त त प्रचार-प्रसार बढ़त।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

१६४. मिथिलामे शिक्षकक कमी पर टिप्पणी की संकेत करैत अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) भाषा-विस्तारक शैक्षिक बाधा।
- (C) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

१६५. स्त्री-शिक्षा संबंधी बात की अछि?

- (A) एखनो बेसी नहि अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

१६६. साक्षरता आ आर्थिक स्थितिक संबंध कोना बताओल गेल?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) साक्षरता बढ़त त आर्थिक स्थिति नीक होएत।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

१६७. मैथिली इंटरनेट पर बढ़ि रहल अछि — ई कोन आधुनिक दिशा अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) डिजिटल माध्यम मैथिली प्रसारक नया आधार बनल।

१६८. गौरीनाथक काजबारे टिप्पणी की अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) नीक काज कए रहल छथि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

१६९. स्वस्ति फाउंडेशनक उल्लेख कोन प्रवृत्ति देखबैत अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) संस्थागत/सामुदायिक भाषा-काजक स्वीकृति।

१७०. अनुभव, शिक्षा आ इंटरनेटक संगमक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) मैथिली विकास लेल जीवन-अनुभव, शिक्षण-सुधार आ डिजिटल सक्रियता तीनू आवश्यक।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

खण्ड ६४२ : विदेह-सदेह २ — विद्रोह, मार्क्सवाद आ सामाजिक न्याय

१७१. जीवकान्त अपन रचनाकें विद्रोही किएक मानैत छथि?

- (A) अन्यायक खिलाफ आवाज उठबैत हुनकर मनोदशा अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

१७२. सरकार आ जनताक संबंध पर ओ की कहैत छथि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) जनताकें सुरक्षा आ सड़क चाही।

१७३. आजादी भेटल मुदा त्रुटि सेहो भेटल — अर्थ की?

- (A) राजनीतिक स्वतंत्रता संग सामाजिक समस्या समाप्त नहि भेल।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

१७४. कमजोर लोकक संग दुर्व्यवहारक उल्लेख की सूचित करैत अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) लेखन सामाजिक अन्यायसँ प्रेरित अछि।

१७५. मार्क्सवादक पहिने सेहो गरीबी छल — ओ कोन उदाहरण दैत छथि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) विद्यापति आ परंपरागत पद/श्लोकमे दरिद्रता-वर्णन।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

१७६. “कखन हरब दुख मोर” संदर्भ कोन बात देखबैत अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) भक्ति/काव्य परंपरामे दुख-दरिद्रताक स्वर।

१७७. जीवकान्त स्वयंकेँ कोन विचारधारा सभसँ प्रभावित मानैत छथि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) मार्क्सवाद आ लोहिया दुनूसँ।

१७८. मार्क्सवादबारे हुनकर आलोचनात्मक टिप्पणी की अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) उत्तम विचार, मुदा हिंसाक पक्षमे बेसी।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

१७९. भारतीय संस्कृतिबारे ओ कोन सूत्र दैत छथि?

- (A) “सर्वे भवन्तु सुखिनः” पर आधारित।
- (B) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

१८०. एहि खण्डक वैचारिक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखन अन्याय-विरोधी अछि, पर विचारधारा केँ भारतीय-सामाजिक संदर्भमे परखैत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

खण्ड ६४३ : विदेह-सदेह २ — सुमन, परिवर्तनशील कविता आ समाज

१८१. “सुमन” जी पर लिखल प्रशंसा जीवकान्त लेल किएक विवाद बनल?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) मार्क्सवादी छवि बावजूद आध्यात्मिक-सांस्कृतिक काव्यक प्रशंसा केलथि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

१८२. सुमन जीक लेखनबारे जीवकान्त की मानैत छथि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) अध्यात्म पर हुनकर लेखन अद्भुत आ काव्य उत्कृष्टता तक पहुँचेनिहार।

१८३. “हम वेद-पुराण केँ बिसरि जाइ” कथनक आशय की?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) मार्क्सवादी होएबाक अर्थ सांस्कृतिक परंपरा त्याग नहि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

१८४. कवितामे परिवर्तनबारे जीवकान्तक मुख्य विचार की अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) हर क्षेत्रमे परिवर्तन आवश्यक, परिवर्तन समर्थक कालजयी।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

१८५. ओ अपने विषय परिवर्तन कोना बतबैत छथि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) पाँच साल बाद विषय बदलैत गेलहुँ।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

१८६. असहमतिक कविता कोन क्षेत्रसँ आएल बताओल गेल?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) पंजाब आ बंगालसँ।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

१८७. सुभाष मुखोपाध्यायक उदाहरण किएक देल गेल?

- (A) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) कृष्णक कुरुक्षेत्र छोड़ि बाँसुरी बजाबक आह्वानक रूपमे।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

१८८. विद्यापति पर टिप्पणी मे कोन विषय-द्वय बताओल?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) शृंगार आ भक्ति।
- (C) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

१८९. राजनीतिपर कविता लिखब पर जीवकान्तक दृष्टि की?

- (A) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ओकरा बेवकूफी कहैत छथि, मुदा आदमी-मित्रता-सुख-दुख स्थायी विषय मानैत।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

१९०. बालकक छठियारक उदाहरण काव्य-परिवर्तन बुझबामे की करैत अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) जन्मक बाद निरंतर बदलैत जीवन जकाँ कविता बदलैत रहैत अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

खण्ड ६४४ : विदेह-सदेह २ — चेला-विवाद, समीक्षा-विवाद आ साहित्यिक ईमानदारी

१९१. “चेला” बनाबैक आरोप पर जीवकान्तक मूल उत्तर की अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) शिक्षक रहलहुँ, प्रभाव छोड़ब स्वाभाविक; कमांडो वा दलाल नहि बनेने छी।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

१९२. कुणाल, प्रदीप बिहारी आदि नामक उल्लेख की बतबैत अछि?

- (A) हुनकर लेखन/शिक्षकत्वसँ प्रभावित रचनाकर्मी सभ।
- (B) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

१९३. तारानंद वियोगीक कथन किएक महत्त्वपूर्ण?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) मिथिला मिहिरमे जीवकान्तक कविता पढ़ि लेखनधारा संग जुड़ल प्रेरणा।

१९४. जीवकान्त स्वयं केकर चेला होएबाक बात कहैत छथि?

- (A) यात्रीजी आ विद्यापतिक।
- (B) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

१९५. विवेकानन्द ठाकुरक कविता-संग्रह समीक्षा-विवादमे मुख्य आपत्ति की छल?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) एक समीक्षा सभटा समकालीन सम्भावना खारिज करैत छल।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

१९६. मोहन भारद्वाजक समीक्षा पर जीवकान्तक प्रतिक्रिया की भेल?

- (A) गौरीनाथकेँ पत्र पठेलथि आ कॉपी आन लोककेँ पठेलथि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

१९७. “गदगदी समीक्षा” प्रसंगमे जीवकान्तक कठोर टिप्पणी की अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) समीक्षक दारू, पैसा, मूर्खता पी कऽ विषवमन करैत अछि।

१९८. स्वयं-अनूदित पुस्तक पर पुरस्कारबारे प्रश्न पर ओ कोना बचैत छथि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) मुद्दा पर किछु नहि कहबाक, लेखक स्वयं कारण जनैत हेताह।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

१९९. लेखनमे ईमानदारीबारे जीवकान्त की कहैत छथि?

- (A) लोककेँ सभ ठाम ईमानदार हेबाक चाही।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

२००. राजकमल चौधरीक उदाहरण किएक देल गेल?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) समाजक सत्य लिखलाक कारण बदनाम भेल लेखकक रूपमे।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक मूल आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

खण्ड ६४५ : विदेह-सदेह २ — राजमोहन झा साक्षात्कार: साहित्यकार आ जनसमाज

२०१. गजेन्द्र ठाकुरक पहिल प्रश्नमे मैथिली साहित्यकार सभपर मुख्य आरोप की अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) साहित्य जनसामान्यसँ दूर भऽ प्रदर्शनक वस्तु बनि गेल।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

२०२. राजमोहन झा साहित्यकारकेँ दोष देबाक प्रश्नपर कोना प्रतिक्रिया दैत छथि?

- (A) ओ पूछैत छथि जे एहि लेल साहित्यकारकेँ दोषी कोना कहल जा सकैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

२०३. गजेन्द्रक अनुसार साहित्यकार सभक कार्यक्षेत्र कोना सीमित भेल?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) गोष्ठी, कवि सम्मेलन आ अपन लेखन धरि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

२०४. “फैशन जेकाँ साहित्य” कथनक आशय की अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) साहित्य जीवित सामाजिक सरोकारक बजाय प्रदर्शनात्मक व्यवहार बनल।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

२०५. राजमोहन पहिनुका साहित्यकारसभबारे की भेद बतबैत छथि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) पहिनुका साहित्यकार एना नहि करैत छलाह।

२०६. साक्षात्कारक आरम्भ मैथिली साहित्यक कोन संकटकेँ सामने आनैत अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) पाठक-वर्ग आ जनसमाजसँ विच्छेद।

२०७. राजमोहनक उत्तरमे रक्षात्मकता किएक देखाइत अछि?

- (A) ओ दोषक सामान्यीकरण पर प्रश्न उठबैत छथि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

२०८. गजेन्द्रक आलोचना कोन तरहक साहित्य-दृष्टि माँगैत अछि?

- (A) समाज आ राजनीति सँ संवाद रखनिहार साहित्य।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

२०९. एहि संवादमे “गाम-घर छोड़ि देब” की प्रतीक बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) जनजीवनसँ साहित्यिक दूरीक।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

२१०. खण्डक मुख्य वैचारिक टकराव की अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) साहित्यकारक दोष बनाम व्यापक सामाजिक-सांस्कृतिक परिस्थिति।

खण्ड ६४६ : विदेह-सदेह २ — हरिमोहन झा, लोकप्रियता आ पाठक-वर्ग

२११. गजेन्द्रक अनुसार गाममे कोन साहित्यकारक रचना विशेष रूपे परिचित रहल?

- (A) हरिमोहन झा।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

२१२. मिथिला मिहिरक उल्लेख किएक महत्त्वपूर्ण अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पत्रिका गाम-गाम जाइत छल आ साहित्यक पहुँच बनबैत छल।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

२१३. राजमोहन हरिमोहन झाक लोकप्रियता केँ कोना देखैत छथि?

- (A) ओकरा एकटा रहस्य जेकाँ मानैत छथि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

२१४. हरिमोहन झाक साहित्य पर कोन आलोचना राजमोहन याद करैत छथि?

- (A) ओ सम्पूर्ण समाज नहि, एक विशेष वर्ग केँ चित्रित करैत छथि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

२१५. दलित समाजक संदर्भमे राजमोहनक टिप्पणी की अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) हरिमोहनक साहित्यसँ दलित समाज लगभग वंचित रहल।

२१६. तकर बावजूद हरिमोहन झाक लोकप्रियता किएक जटिल प्रश्न बनैत अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) सीमा रहितहुँ पाठक-वर्ग निर्माणमे हुनकर असर असाधारण रहल।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

२१७. राजमोहनक अनुसार पाठक-वर्ग बनबाक संबंध केकर साहित्यसँ जोड़ल गेल?

- (A) हरिमोहन झाक साहित्यसँ।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

२१८. “रेडीमेड सोल्युशन नहि” कथनक अर्थ की?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) लोकप्रियता बुझबाक सरल सूत्र नहि भेटल।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

२१९. हरिमोहन प्रसंग मैथिली साहित्यक कोन प्रश्न खोलैत अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) केना साहित्य लोकधरि पहुँचैत अछि आ पाठक बनबैत अछि।

२२०. हरिमोहन झा प्रसंगक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) लोकप्रियता, सामाजिक सीमा आ पाठक-निर्माण एकसंग विचार योग्य अछि।

खण्ड ६४७ : विदेह-सदेह २ — साहित्यक उद्देश्य, मनोरंजन आ पाठकीय स्तर

२२१. गजेन्द्र साहित्यक उद्देश्यबारे कोन दृष्टि उठबैत छथि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) साहित्य उद्देश्यपूर्ण हो वा मात्र मनोरंजनक लेल।

२२२. राजमोहन मनोरंजनक भूमिका कोना मानैत छथि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) मनोरंजन रहबाक चाही, नहि तँ क्यो नहि पढ़त।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

२२३. राजमोहनक अनुसार साहित्यक अंतिम उद्देश्य की नहि होएबाक चाही?

- (A) मात्र मनोरंजन।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

२२४. “विभिन्न स्तरक लोक” कथनक साहित्यिक अर्थ की अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) अलग पाठक-वर्गक अलग आवश्यकता होइत अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

२२५. साहित्यिक उद्देश्य पर राजमोहनक संतुलन की अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) रुचिकरता संग उद्देश्यपूर्णता।

२२६. मनोरंजनकें पूर्णतः खारिज नहि करबाक कारण की?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) पठनक आरम्भिक आकर्षण ताहिसँ बनैत अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

२२७. एहि उत्तरमे साहित्यकारक दायित्व कोना परिभाषित अछि?

- (A) पाठकक आवश्यकता अनुसार अर्थपूर्ण सामग्री देब।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

२२८. “सेल्फ एनेलाइज” प्रकारक संकेत की बतबैत अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) साहित्यकारकें अपन लक्ष्य आत्मपरीक्षणसँ ठहरएबाक चाही।

२२९. साहित्यिक उद्देश्य-विवाद मैथिली जनाधारसँ कोना जुड़ैत अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) मनोरंजन बिना पाठक नहि, उद्देश्य बिना सामाजिक सार नहि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

२३०. एहि खण्डक निष्कर्ष की?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) साहित्य आनंददायी सेहो हो, आ समाजक जरूरतक पूर्ति सेहो करए।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

खण्ड ६४८ : विदेह-सदेह २ — माइग्रेसन, भाषा-प्रेम आ भारत-नेपाल स्थिति

२३१. गजेन्द्र माइग्रेसनक प्रभाव मैथिली पर कोना देखैत छथि?

- (A) बाहर जाइत पीढ़ी अंग्रेजी वा हिन्दी दिस झुकैत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

२३२. राजमोहन भाषा-प्रेमबारे मुख्य बात की कहैत छथि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) लोकमे भाषा-प्रेम घटल अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

२३३. “लोक मैथिली छोड़ि रहल अछि” कथन कोन चिन्ता देखबैत अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) स्वभाषा-त्यागक।

२३४. भारतक मैथिली प्रदेशबारे राजमोहनक आकलन की अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) स्थिति खराप अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

२३५. नेपालमे हिन्दी-विरोधक कारण मैथिली लाभान्वित भेल — ई विचार के द्वारा उठाओल गेल?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गजेन्द्र ठाकुर द्वारा।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

२३६. राजमोहन “पहिलुका समर्पण”बारे की कहैत छथि?

- (A) पहिनुका लोक जेकाँ समर्पण आब नहि अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

२३७. माइग्रेशनक प्रसंग भाषाक कोन सामाजिक आधारक खतरा देखबैत अछि?

- (A) घर-गामक निरन्तर बोलचाल आ पीढ़ीगत हस्तांतरण।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

२३८. नेपाल-भारत तुलना सँ कोन निष्कर्ष निकलैत अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) भाषा-राजनीति अलग-अलग भूभागमे अलग परिणाम देत अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

२३९. भाषा-प्रेम घटबाक अर्थ केवल भाषिक नहि किएक?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई सांस्कृतिक आत्मीयता आ सामुदायिक जिम्मेदारीक क्षय सेहो अछि।

२४०. एहि खण्डक मूल चिन्ता की अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) मैथिली बोलनिहार समाजक स्वभाषा प्रति ढील आ विस्थापन।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

खण्ड ६४९ : विदेह-सदेह २ — पुरस्कार-विवाद, अनुवाद आ जूरी-प्रश्न

२४१. बबुआजी झा “अज्ञात”क पुरस्कार प्रसंगमे राजमोहन अपना ऊपर लग आरोप केँ कोना स्पष्ट करैत छथि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ओ कहैत छथि जे स्वयं विरोध नहि कएने छलाह, दिल्लीमे आन लोक कएने छल।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

२४२. “आरम्भ” पत्रिका प्रसंगमे राजमोहन की कहैत छथि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) आरम्भ बन्द नहि, स्थगित अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

२४३. अनुवाद पुरस्कारबारे गजेन्द्रक मुख्य आपत्ति की अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) जूरी सभ कृति देखैत/पढ़ैत नहि, ताहिसँ चयन असंगत होइत अछि।

२४४. राजमोहन सोझे अनुवादक योग्यताबारे की कहैत छथि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) सोझे अनुवाद कएल पोथी पुरस्कारक पात्र अछि।

२४५. जूरीमे पुरान लोक रहबाक प्रश्न कोन समस्या उठबैत अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) पुरस्कार-निर्णयमे गुट, पुरान दावेदारी आ पठन-अभावक आशंका।

२४६. राजमोहनक अनुसार आइ-काल्हिक साहित्यकारमे की बदल अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) गुटबन्दी।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

२४७. अकादमी पुरस्कार-विवादक मूलभूत प्रश्न की अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) साहित्यिक न्याय, पठन-संस्कृति आ चयन-नैतिकता।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

२४८. अनुवाद-सन्दर्भ मैथिली साहित्य लेल किएक जरूरी बनैत अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) अन्य भाषिक साहित्य संग सम्बन्ध आ तुलना लेल।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

२४९. “लोक परवाह नहि करैत छथि” कथन कोन निराशा देखबैत अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) विरोध होइत रहैत अछि, मुदा असर सीमित रहैत अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

२५०. एहि खण्डक निचोड़ की?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) पुरस्कारक मूल्य पढ़ल-समझल चयन, अनुवाद-मान्यता आ गुटविहीनता पर निर्भर अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

खण्ड ६५० : विदेह-सदेह २ — आत्ममुग्धता, तुलनात्मक दृष्टि आ अनुवादक जरूरत

२५१. गजेन्द्र प्रेंच नोबेल-प्रसंगक माध्यमे कोन प्रश्न उठबैत छथि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) आत्ममुग्धता आ अनुवाद-अभाव साहित्यकें पाछू करैत अछि कि नहि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

२५२. राजमोहन अनुवादक आवश्यकता कोना बतबैत छथि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) अनुवाद बहुत जरूरी अछि, तखने तुलना सम्भव।

२५३. “जीवनानुभवसँ लोक लिखैत अछि” कथन अनुवादसँ कोना जुड़ैत अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) अनुवाद अनुभवकें व्यापक पाठकीय विस्तार दैत अछि।

२५४. आत्ममुग्धता मैथिली साहित्य लेल कोन खतरा बना सकैत अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) अन्य भाषासँ संवाद घटि जाएब।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

२५५. तुलनात्मक अध्ययन लेल अनुवाद किएक जरूरी अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) भाषा-भाषा बीच मूल्यांकन आ अनुभव-साझाक लेल।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

२५६. एहि उत्तरमे राजमोहनक विश्व-दृष्टि की अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) मैथिलीकें अन्य भाषिक अनुभवसँ जोड़बाक।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

२५७. अनुवाद रचनाकें की प्रदान करैत अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) आर विस्तार।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

२५८. नोबेल-प्रसंग मैथिली आलोचनामे की जोड़ैत अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) स्थानीय प्रश्नकें वैश्विक साहित्यिक विमर्शसँ जोड़ैत अछि।

२५९. आत्ममुग्धता आ पुरस्कार-विवाद बीच अप्रत्यक्ष सम्बन्ध की अछि?

- (A) बंद समूह-संस्कृति बाहरी मूल्यांकन आ पठनसँ दूरी बनबैत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

२६०. अनुवाद-तुलना प्रसंगक सार की अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) मैथिली साहित्यक विकास लेल अनुवाद, तुलना आ आत्मालोचन जरूरी अछि।

खण्ड ६५१ : विदेह-सदेह २ — रामरंगजी: संगीत-साधना आ मैथिली राग

२६१. रामाश्रय झा “रामरंग”क परिचय स्रोतमे कोना देल गेल?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) विद्वान, वाग्गेयकार, शिक्षक आ मंच-सम्पादक।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

२६२. गजेन्द्रक स्वास्थ्य-प्रश्न पर रामरंगजी की उत्तर दैत छथि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ८० बरख पार केलहुँ, संगीतमे बहटल रहैत छी।

२६३. रामरंगजी अपन मिथिलासँ सम्बन्धित कतेक रागक रचना बतबैत छथि?

- (A) तीन राग।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

२६४. तीनू मिथिला-सम्बद्ध रागक नाम की?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) तीरभुक्ती, विद्यापति कल्याण आ वैदेही भैरव।

२६५. तीरभुक्त्ति आ विद्यापति कल्याणमे कोन भाषा-संबंधी विशेषता अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) मैथिली भाषामे खयाल बनल अछि।

२६६. संगीत रामायणक बालकाण्डमे कोन रागसभमे मैथिली खयाल अछि?

- (A) भूपाली आ बिलावल।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

२६७. बिलावलमे श्री गणेशक वन्दना आ भूपालीमे शंकर वन्दना उल्लेख किएक महत्त्वपूर्ण?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) मैथिली संगीत-साधनाक शास्त्रीय-भक्ति आयाम देखबैत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

२६८. राग तीरभुक्त्तिमे कोन विषयक वन्दना बताओल गेल?

- (A) मिथिला प्रदेशक वन्दना।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

२६९. विद्यापति कल्याण रागक रचना कतेक स्तरपर बताओल गेल?

- (A) विलम्बित आ द्रुत खयाल रूपमे।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

२७०. एहि खण्डक मुख्य महत्त्व की अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) मैथिली भाषा आ मिथिला-भावनाकेँ शास्त्रीय संगीत-सृजनमे प्रतिष्ठित करब।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

खण्ड ६५२ : विदेह-सदेह २ — रामरंगजी: रागशास्त्र, स्मृति आ संरक्षण

२७१. गजेन्द्र रामरंगजीसँ कोन कमीक उल्लेख करैत छथि?

- (A) तीरभुक्त्ति, विद्यापति कल्याण आ वैदेही भैरवक पूर्ण रागशास्त्र उपलब्ध नहि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

२७२. रामरंगजी बहुत रचना मोन रहबाक बावजूद कठिनाई की बतबैत छथि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) हाथ थरथराइत अछि आ लिखब कठिन अछि।

२७३. गजेन्द्र हुनका की करबाक आग्रह करैत छथि?

- (A) तीनू रागक रचना-शास्त्र लिखि देबाक।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

२७४. रामरंगजी उपलब्ध रचना सभबारे की कहैत छथि?

- (A) जे रचना देने छी ओकरा छापि दिअ।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

२७५. तीनू रागक विस्तृत विवरणबारे रामरंगजीक आश्वासन की अछि?

- (A) ओ पठेबाक आ लिखबाक बात कहैत छथि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

२७६. गजेन्द्रक “प्रणाम” आ रामरंगजीक “निकेना रहू” संवाद कोन भाव रचैत अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) श्रद्धा आ आशीषक।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

२७७. रागशास्त्र लिखब किएक जरूरी कहल जा सकैत अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) नव पीढ़ी सीखि सकए आ रचना पुस्तकाकार सुरक्षित होए।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

२७८. रामरंगजीक प्रसंग मैथिली सांस्कृतिक धरोहरक कोन समस्या देखबैत अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) सृजन त अछि, मुदा दस्तावेजीकरण अधूरा अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

२७९. “के सीखत आ के लिखत” कथन कोन निराशा सूचित करैत अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) गुरु-शिष्य परम्परा आ लेखन-सहयोगक अभाव।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

२८०. रामरंगजीक रागशास्त्र-प्रसंगक सार की अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) रामरंगजीक राग-सृजनकें लिखित रूपमे सुरक्षित करब जरूरी अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

खण्ड ६५३ : विदेह-सदेह २ — जनकपुरक चक्काजाम कवि-गोष्ठी आ मिथिला राज्य

२८१. जनकपुरमे साहित्यकार आ रंगकर्मी कोन अनोखा कार्यक्रम कएलनि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) सड़कपर कवितावाचन करैत चक्काजाम कवि-गोष्ठी।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

२८२. चक्काजाम कवि-गोष्ठीक मुख्य मांग की छल?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) नव संविधानमे मिथिला राज्यक व्यवस्था।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

२८३. कार्यक्रम जनकपुरक कोन प्रवेश-द्वार पर भेल?

- (A) पिडारी चौक।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

२८४. नेपालक नव संविधान प्रक्रिया प्रसंग किएक उल्लेखित अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) विभिन्न समुदाय अपन अधिकारक लेल आवाज उठा रहल छल।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

२८५. रंगकर्मी रंजु झा कोन हक-प्रश्न जोड़ैत छथि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) मिथिला राज्य आ मधेशीक हक-अधिकार सुनिश्चित होएबाक चाही।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

२८६. कार्यक्रममे कोन-कोन वर्गक सहभागिता बताओल गेल?

- (A) साहित्यकार, रंगकर्मी आ मिथिला राज्य संघर्ष समिति।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

२८७. चक्काजामक प्रभाव यातायात पर की भेल?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) जनकपुर-महेन्द्रनगर सड़क खण्डमे सवारी साधन नहि चलि सकल।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

२८८. लेखक एहि गोष्ठीक प्रभाव कतेक मानैत अछि?

- (A) मिथिला राज्यक मांगकेँ थोड़ा-बहुत चर्चा भेटल।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

२८९. कविता आ चक्काजामक मेल की संकेत करैत अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) सृजनात्मकता आ प्रतिरोधक संयोजन।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

२९०. चक्काजाम कवि-गोष्ठीक निचोड़ की अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) जनकपुरक रचनात्मक चक्काजाम मिथिला राज्यक सांस्कृतिक-राजनीतिक हस्तक्षेप छल।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

खण्ड ६५४ : विदेह-सदेह २ — “प्रिय पाहुन” क्यासेट आ विवाह-गीत परम्परा

२९१. “प्रिय पाहुन” क्यासेट कोन गीत-परम्परा पर आधारित अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) पारम्परिक मैथिली विवाह गीत।

२९२. क्यासेटमे विवाहक कोन सीमा-क्रम धरि गीत संकलित अछि?

- (A) परिछनसँ विदाई धरि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

२९३. क्यासेटक एकल प्रस्तुति केकर बताओल गेल?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) अंशुमाला।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

२९४. जयमाल गीतक विशेषता की कहल गेल?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) मिथिलाक मौलिक गीत।

२९५. जीमनार गीतक उल्लेख किएक महत्वपूर्ण?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई गीत आब बहुत ठोरपर नहि चढ़ैत, ताहि लेल महत्व देल गेल।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

२९६. “प्रिय पाहुन” नव-पुरान दुनू पीढ़ीक लोक पसन्द करैत अछि — ई कथन की सूचित करैत अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) परम्परा आ आधुनिक श्रोता बीच सेतु।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

२९७. कन्या लगन, परिछन, सिन्दूरदान आ समदाओन गीत सभ किएक उल्लेखनीय?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) विवाहक अलग-अलग विधि-क्षणक गीत-स्मृति सुरक्षित करैत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

२९८. क्यासेटमे सीमाक भीतर हँसी-मजाक आ प्रेम देखेबाक प्रयास कोन सांस्कृतिक गुण देखबैत अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) विवाह गीतमे मर्यादित हास्य आ स्नेह।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

२९९. गीत-संकलन आ संगीतक अलग उल्लेख की बतबैत अछि?

- (A) लोक-संग्रह आ आधुनिक संगीत-प्रस्तुति दुनू मिलल अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

३००. प्रिय पाहुन प्रसंगक सार की अछि?

- (A) प्रिय पाहुन मैथिली विवाह-गीत परम्पराकेँ ऑडियो रूपमे सुरक्षित करबाक प्रयास अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

खण्ड ६५५ : विदेह-सदेह २ — “हाँ ई तँ कहियो नहि देखने रही”: चुनाव, स्मृति आ नागरिकता

३०१. लेखक खुशवन्त सिंहक चुनाव-टिप्पणीसँ कोन बात उठबैत छथि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) लोकक असाधारण चुनाव-रुचि आ बदलैत परिदृश्य।

३०२. आशुतोषक निबन्धक उद्धरणक मूल संकेत की अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) वोटर बुधियार भऽ रहल अछि आ नव नागरिक समाज ठाढ़ भऽ रहल अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

३०३. लेखक १९७१ क स्मृतिमे की देखैत छथि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) भारत-पाक युद्धक समय गामक बूढ़-पुरान लोकक सैनिक-गर्व।

३०४. १९७४ क जे.पी. आन्दोलनक स्मृति लेखक लेल कोना अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) युवा सभ न्यायवादी-आन्दोलनकारी बनि गेल।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

३०५. लेखक अपन बाल्य-क्रांतिकारी भावक उदाहरण की दैत छथि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) आपातकाल विरोधमे पहिल कविता लिखल, जे भाय फाड़ि देलक।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

३०६. १९७७ चुनावमे परिवारक कुलगुरु तक के भूमिका किएक रोचक अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) धर्मगुरु सेहो जनता पार्टीक पक्षमे कहए आएल।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

३०७. संताल परगनाक स्कूल-प्रसंग राजनीतिक स्मृतिमे की जोड़ैत अछि?

- (A) गरीबी, असुविधा आ ग्रामीण जीवनक यथार्थ।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

३०८. लेखक आजुक “विशिष्ट लोक” पर कोन व्यंग्य करैत छथि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) लिखबाक-छापबाक छूट भेटते विचारक बनबाक दंभ।

३०९. “टी.वी.मे आबि गेल छी” कथनक व्यंग्यात्मक अर्थ की?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) दृश्य-मीडिया उपस्थिति केँ विचारकता मानि लेबाक प्रवृत्ति।

३१०. चुनाव-स्मृति लेखक सार की अछि?

- (A) चुनाव-स्मृति, आन्दोलन, गरीबी आ आजुक मीडिया-बौद्धिकता पर आत्मव्यंग्यात्मक टिप्पणी।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

खण्ड ६५६ : विदेह-सदेह २ — विष्णु प्रभाकर: सादगी, कॉफी हाउस आ साहित्यिक संगति

३११. लेखक १९९० वर्षकेँ अपन लेल कोना देखैत छथि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) महत्त्वपूर्ण आ सकारात्मक ऊर्जा सँ भरल वर्ष।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

३१२. मोहन पैलेसक छतपरक कॉफी हाउस लेखक लेल की बनल?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) दिल्लीक लेखक-कलाकार मंडलीसँ जुड़बाक स्थल।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

३१३. विष्णु प्रभाकरजीक उपस्थिति कोना वर्णित अछि?

- (A) वयोवृद्ध, खादीधारी, गाँधी टोपी पहिरने सादगीमय व्यक्तित्व।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

३१४. शनिवारी गोष्ठीक सिलसिला कतय धरि चलल?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) १९९५ धरि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

३१५. लेखक अपन रूप-व्यवहारक कौन बात स्मरैत छथि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) दाढ़ी, पाइप, खादीक कुर्ता-पायजामा।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

३१६. कॉलेजक सहकर्मी हुनका कोना देखैत छलाह?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) बौद्धिक रूपसँ आतंकित करनिहार व्यक्तित्व।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

३१७. विष्णु प्रभाकरजीक महानता लेखक कोना अनुभव करैत छथि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ओ छोटपनक अहसास नहि होमए देलन्हि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

३१८. हाथ पकड़ि भीड़ भरल सड़क पार करबाक लेखक किएक स्मरणीय मानैत छथि?

- (A) स्नेहिल स्पर्श आ सान्निध्य प्राप्त करबाक अवसर रूपमे।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

३१९. कॉफी हाउस प्रसंगमे साहित्यिकता कोना बनैत अछि?

- (A) गोष्ठी, साहचर्य, संवाद आ वरिष्ठजनक सान्निध्य सँ।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

३२०. विष्णु प्रभाकर स्मरणक सार की अछि?

- (A) विष्णु प्रभाकरक सादगी लेखकक साहित्यिक जीवन-स्मृतिमे मृदुल आदर्श बनि रहल।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

खण्ड ६५७ : विदेह-सदेह २ — भाषा-आन्दोलन, जेल-स्मृति आ विष्णुजीक अनुपस्थिति

३२१. १९९४ मे लेखक कोन संघर्षक क्रममे गिरफ्तार भेलाह?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) भारतीय भाषाक लेल संघर्षक क्रममे।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

३२२. गिरफ्तारीक बाद लेखक आ साथी सभकेँ कतय पठाओल गेल?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) तिहाड़ जेल।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

३२३. केहन दबावक बाद केस हटाओल गेल?

- (A) नेता, साहित्यकार, पत्रकार, समाजसेवी आ आन्दोलनकारी सभक दबावसँ।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

३२४. बिना शर्त रिहाईक बाद कॉफी हाउसक वातावरण कोना बदलल?

- (A) साथी सभक आदर-भाव बढ़ि गेल।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

३२५. लेखक १९९५क बाद कॉफी हाउसक सिलसिला किएक जारी नहि राखि सकलाह?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) आवारा स्वभावक कारण।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

३२६. “आवारा मसीहा” लेखकक स्मरण किएक सूक्ष्म अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) विष्णु प्रभाकरजीकेँ लेखकक यायावरीक भान न भेल होएत, एहन आत्मीय कल्पना।

३२७. विष्णुजी नहि रहबाक बादो स्मृति कोना अनुभव होइत अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) मृदुल, जेना ओ अखनो कॉफी हाउसक मंडलीमे छथि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

३२८. भाषा-आन्दोलन प्रसंग विष्णुजी स्मरणसँ कोना जुड़ैत अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) कॉफी हाउसक साहित्यिक मंडली आ सार्वजनिक भाषा-संघर्ष एकहि जीवन-अवधि मे भेटैत अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

३२९. लेखकक स्मृति-स्वर केहन अछि?

- (A) आत्मकथात्मक, कृतज्ञ आ हल्का व्यंग्यमय।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

३३०. भाषा-आन्दोलन आ विष्णुजी स्मरणक निचोड़ की अछि?

- (A) साहित्यिक संगति, भाषा-संघर्ष आ विष्णु प्रभाकरक सादगी लेखकक स्मृतिमे एकसंग बसल अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

खण्ड ६५८ : विदेह-सदेह २ — तूलिका, स्वास्तिका आ नवपीढ़ी संकेत

३३१. तूलिकाबारे विदेह-सदेह १ संदर्भमे की कहल गेल?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) १४ वर्षीय तूलिका सँ ८८ वर्षीय आद्याचरण झा धरि रचनाकार छलाह।

३३२. तूलिका किछु दिन रचना किएक नहि पठा रहल छलीह?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) सी.बी.एस.ई.क दशम कक्षाक तैयारीमे लागल छलीह।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

३३३. तूलिकाकेँ दशम परिणाममे कतेक अंक भेटल?

- (A) ९६.८ प्रतिशत।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

३३४. दशमक बाद तूलिका कोन तैयारीमे लागल छथि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) इंजीनियरिंगक।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

३३५. तूलिका पुनः रचना पठौलनि — ई विदेह लेल की अर्थ राखैत अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) नवपीढ़ी पाठक-रचनाकारक पुनरागमन।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

३३६. स्वास्तिकाक परिचयमे कोन कक्षा आ विद्यालय-संदर्भ अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) कक्षा २, माउन्ट कार्मेल पटना।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

३३७. तूलिका-स्वास्तिका प्रसंग विदेहक कोन विशेषता देखबैत अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) बाल/किशोर प्रतिभाक स्वागत।

३३८. पीढ़ी-व्यापकता मैथिली साहित्य लेल किएक जरूरी अछि?

- (A) भविष्यक पाठक आ लेखक तैयार करबाक लेल।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

३३९. संपादकीय टिप्पणीक स्वर केहन अछि?

- (A) प्रोत्साहनपरक।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

३४०. तूलिका-स्वास्तिका प्रसंगक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) विदेह नवपीढ़ीक शैक्षिक उपलब्धि आ साहित्यिक भागीदारी दुनूकें महत्त्व दैत अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

खण्ड ६५९ : विदेह-सदेह २ — चन्द्रेशक समीक्षा: “हुगली ऊपर बहैत गंगा” आ नारी-संवेदना

३४१. चन्द्रेशक लेख कोन कथा-संग्रह पर केन्द्रित अछि?

- (A) रामभरोस कापड़ि “भ्रमर”क “हुगली ऊपर बहैत गंगा”।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

३४२. संग्रहमे कतेक कथा बताओल गेल?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ३२ गोटा कथा।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

३४३. नामक अंतिम कथा कोन पात्र-द्वय सँ नारी-मोन उभारैत अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) हीरा आ सोनाबाई।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

३४४. समीक्षकक अनुसार नारी मात्र की नहि अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) देह मात्र नहि।

३४५. कामुक पुरुष नारीक देहकें कोना बूझैत अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) अपन धन-सम्पत्ति जेकाँ।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

३४६. नारी-पुरुष साहचर्यकें समीक्षक कोना देखैत अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) सृष्टिक निरन्तरताक आधार, मुदा भोग-वस्तुकरण नहि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

३४७. धनक अतिशय लिप्सा पर समीक्षकक टिप्पणी की अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई मानवीय मूल्यबोधकें गिरबैत अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

३४८. अनैतिकताक अढ़मे छिड़हरा खेलाओल जाइत अछि — अर्थ की?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) धन-मद आ कामुकता सामाजिक नैतिकता कें ढाँपि विकृति करैत अछि।

३४९. समीक्षक शीर्षक कथाकें भविष्य-सृजन दिस डेग किएक मानैत अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) कारण नारी-मोनक संवेदना आ मानवीयता उभरैत अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

३५०. चन्द्रेशक प्रारम्भिक समीक्षा-खंडक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) भ्रमरक कथा-संसार नारी देह-वस्तुकरणक विरोधमे संवेदना आ अस्मिता स्थापित करैत अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

खण्ड ६६० : विदेह-सदेह २ — हीरा-सोनाबाई कथा: देहभोगसँ मनुष्यताक जागरण

३५१. हीरा सोनाबाई लग कोन उद्देश्यसँ अबैत अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) असन्तोष आ खौंझी मेटेबाक लेल।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

३५२. सोनाबाई अपन पेशामे कोना चित्रित अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) कोनो कोताही नहि करैत।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

३५३. सोनाक परिधान खोलबाक आमंत्रण पर हीराक प्रतिक्रिया की होइत अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ओ ठकमुहरी लागि जाइत अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

३५४. हीराक हृदयमे सोनाबाई प्रति की जागैत अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) नारीक प्रति सम्मान-भाव।

३५५. सोनाबाईक हड़बड़ीक कारण की अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) एक ग्राहकसँ निपटि दोसरक आशा।

३५६. हीराक मनोव्यथा सुनि सोनाक आँखि किएक चमकि उठैत अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ओ पहिल बेर सुच्चा मनुखक दर्शन अनुभव करैत अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

३५७. कथाक परिणतिमे दुनूक बीच की भाव जन्मैत अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) सुरक्षा आ अपनत्व-बोध।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

३५८. समीक्षकक अनुसार दैहिक भोगसँ बेसी महत्त्वपूर्ण की अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) मोनक राग।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

३५९. समीक्षक शिल्पक दृष्टिसँ कथाबारे की कहैत अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) कथा कनेक कमजोर अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

३६०. एहि खण्डक मूल अर्थ की अछि?

- (A) हीरा-सोनाबाई प्रसंग देहवादक अन्धारमे मनुष्यताक प्रकाश देखबैत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

खण्ड ६६१ : विदेह-सदेह २ — भोगवादी लिप्सा, दाम्पत्य आ सामाजिक दायित्व

३६१. “आधुनिक चकचोन्हीमे अन्हराएलि भगजोगनी” कथामे रेखाक मुख्य प्रवृत्ति की अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) भोगवादी लिप्सा।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

३६२. रेखाक भोगवादी प्रवृत्ति कोन परिणाम दिस ल’ जाइत अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) अपन बसल-बसाओल घर उजारबाक दिस।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

३६३. रेखा की बिसरि जाइत अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) अर्थ-लिप्सा संबंधकें गीड़ि दैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

३६४. रेखाक बादक बोध कोना व्यक्त अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) गत कर्मक तर्पण करैत भ्रमजाल तोड़ि फेकैत अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

३६५. कथा प्रेम आ यौन सम्बन्धी गाँठकें कोना फूटैत अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) गाँठ खोलैत उपसंस्कृति पर प्रहार करैत अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

३६६. दैहिक भूखक खतरा समीक्षा मे की बताओल गेल?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) लोककें कामुकतामे जकड़ि अस्थिर संबंध बनबैत अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

३६७. “काम-भावक भूख सम्बन्धकें स्थायित्व नहि प्रदान करैत” — अर्थ की?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) सिर्फ देह-आकर्षण टिकाऊ जीवन-संबंध नहि बना सकैत।

३६८. “अन्हारमे भोतिआएल” कथाक प्रकृति कोना बताओल गेल?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) गणेशक संस्मरणात्मक रिपोर्टाज।

३६९. “कामरेड” कथाक वैचारिक धुरी की अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) गरीब-गरीब सभ एक हो, सामाजिक असमानता भरबाक प्रयास।

३७०. भोगवादी लिप्सा समीक्षा-खंडक सार की अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) भ्रमरक कथासभ देह-लिप्सा, दाम्पत्य, अर्थलोलुपता आ वर्ग-असमानता पर प्रश्न उठबैत अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

खण्ड ६६२ : विदेह-सदेह २ — उड़ान, मधेश, नेओक जोड़ आ विस्थापन

३७१. “उड़ान” कथामे रजिन्दर कापरक सपना की अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) कतार जा कऽ ढेर पाइ कमेबाक।

३७२. रजिन्दर कापर एजेंट सभसँ कोना ठकाइत अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) दस हजार, अस्सी हजार आ पन्चानवे हजारक कर्ज-पैसा बोहाइत।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

३७३. उड़ान कथाक “उड़ान” की बनैत अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) आर्थिक आशा, ठगी आ जीवन-मूल्यक द्वन्द्व।

३७४. मधेश-संदर्भक कथामे अयोधी मास्टर किएक आन्दोलनमे कूदि पड़ैत छथि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) मधेशी अस्मिता पर चोट आ बेटाक बेरोजगारीक पीड़ा सँ।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

३७५. मधेशी होएबाक गौरवबोध पर चोट कोना असर करैत अछि?

- (A) पीड़ित मोनमे आक्रोश पनुगैत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

३७६. “नेओक जोड़” कथामे कोन समस्या उभरैत अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) सरोजाक दुःस्थिति आ स्त्री-त्रास।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

३७७. “ओढ़ल अभिभावकत्व” पर समीक्षकक प्रहार की अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) फोकिला मानसिकता आ हृदयहीनता उधार करैत अछि।

३७८. “किसुनमा” प्रसंगमे सबसे तीव्र घटना की अछि?

- (A) अनकर जनमल नेनाक हत्या।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

३७९. किसुनमा कथा पाठककें कोन प्रश्न छोड़ैत अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) निर्दोष बच्चाक हत्या आ ओकर नैतिक परिणाम।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

३८०. प्रवास-मधेश-नेओक जोड़ खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) भ्रमरक कथासभ प्रवास, अस्मिता, स्त्री-त्रास आ हिंसात्मक पितृसत्ताकें सामाजिक प्रश्न बनबैत अछि।

खण्ड ६६३ : विदेह-सदेह २ — अमरलत्ती, सम्बन्धक पीड़ा आ फ्लैशबैक

३८१. “अमरलत्ती” कथामे रेखाक प्रतीकात्मक रूप की अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) अमरलत्ती जकाँ चतुरैत आनक घर उजारनिहार प्रवृत्ति।

३८२. रमेशक कामलोलुपता कथामे की करैत अछि?

- (A) रेखाक काम-भाव जाग्रत करि मायाजाल पसारैत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

३८३. “सम्बन्धक पीड़ा” कथामे आशाक मनोस्थिति की अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) प्रेमसँ उपजल मानसिक पीड़ा सहबाक प्रयास।

३८४. आशा-संदीपक संबंधक मूल क्या अछि?

- (A) मोन-मिलानी।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

३८५. आशाक माए-बापक प्रतिक्रिया संबंध पर की असर डालैत अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) विरक्ति-भाव संबंध-सूत्र खण्डित करैत अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

३८६. “फ्लैशबैक” कथामे नरेशक मनमे की उठैत अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) बालपनक स्मृति-तरंग।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

३८७. नेनपनक अनुभूति कथामे कोन मूल्य देखबैत अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) निडरता, निश्छलता आ सौहार्द्र।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

३८८. वयस्क समाजक कोन पक्ष “फ्लैशबैक” मे रेखांकित अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) भय, सुरक्षा, षड्यंत्र आ छल-कपट।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

३८९. सामाजिक व्यक्तित्वक “दोगला मुँह” कथन की सूचित करैत अछि?

- (A) सभ्य समाज बनबाक नाम पर लोक छल-क्षुद्रक खोल ओढ़ैत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

३९०. अमरलत्ती-सम्बन्ध-फ्लैशबैक खण्डक निचोड़ की अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) प्रेम, वासना, स्मृति आ सामाजिक पाखण्डक बीच भ्रमरक कथा मानवीयता खोजैत अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

खण्ड ६६४ : विदेह-सदेह २ — भ्रमरक कथा-दृष्टि: नारी, शोषित वर्ग आ शिल्प-समीक्षा

३९१. समीक्षक भ्रमरक कथामे कोन “राग” देखैत छथि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) जीवनक राग।

३९२. भ्रमरक कथामे नारी प्रति कोन भाव विशेष कहल गेल?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) विशेष श्रद्धा-भाव।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

३९३. भ्रमरक कथाकारक मोनमे कोन पीड़ा अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) अबला नारीक चीख आ परिवेशक दंश।

३९४. भ्रमरक लेखनी कोन वर्गक पक्षमे उठैत अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) शोषित-पीड़ित, दबल-कुचलल लोकक।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

३९५. समसामयिक प्रश्नक झड़ीमे कथाकार की देखबैत अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) रोजीक औकाति आ जीवनक व्यवहारिक मुद्दा।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

३९६. समीक्षक भ्रमरक शिल्पबारे कोन आलोचना करैत छथि?

- (A) कथ्य जतेक सजग, शिल्पमे ओतेक सजगता नहि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

३९७. भ्रमरक अनुभववादी दृष्टि कोन यथार्थ चित्रित करैत अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) गाम-घर, अड़ोस-पड़ोसक देखल-भोगल यथार्थ।

३९८. भ्रमरक पात्र विशेषतः केकर प्रति संवेदनशील अछि?

- (A) निरीह समाज आ नारी पात्रक प्रति।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

३९९. नेपालीय मैथिली कथा-साहित्यमे भ्रमरक योगदान कोना देखल गेल?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) मात्रा आ गुण दुनू दृष्टिसँ प्रभाव छोड़ैत अछि।

४००. एहि समीक्षा-खंडक अन्तिम विश्वास की अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) भ्रमरक कथा सामाजिक परिवर्तनमे अपन औकाति सिद्ध करत आ ऐतिहासिक मूल्य पाओत।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

खण्ड ६६५ : विदेह-सदेह २ — आशाक किरण: मैथिली संचार माध्यमक आरम्भिक विस्तार

४०१. “आशाक किरण” लेखमे मैथिली भाषाक कोन नब प्रवृत्ति चिन्हित अछि?

- (A) मैथिली धीरे-धीरे विद्युतीय संचार माध्यममे स्थान बना रहल अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

४०२. सौभाग्य मिथिला नामक टेलिभिजनक प्रकृति लेखमे कोना कहल गेल?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) सम्पूर्ण मैथिली मनोरंजनात्मक टेलिभिजन रूपमे।

४०३. लेखक जनसंख्या अनुपातक आधारपर मैथिली समाजक कोन कमी बतबैत छथि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) समुदायक अपन पर्याप्त संचार माध्यम नहि भेटल।

४०४. भारत-नेपाल सीमामे बाँटल मिथिलाबारे मुख्य बाध्यता की कहल गेल?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) आन भाषाक माध्यमसँ सुसूचित होएबाक विवशता।

४०५. नेपालक किछु एफ.एम. आ चैनल सभ मैथिली लेल की करैत छल?

- (A) समाचार आ मनोरंजनक सामग्री पहुँचा रहल छल।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

४०६. नेपाल वनक मधेश स्पेशल कार्यक्रममे पहिने की-की प्रसारित होइत छल?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) मैथिली समाचार, अन्तर्वार्ता आ मैथिली-भोजपुरी गीत।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

४०७. नेपाल वनक कार्यक्रममे बादमे कोन भाषासभकें सेहो सन्धिया देल गेल?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) भोजपुरी आ थारु।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

४०८. हमार आ महुवा टेलिभिजनक उल्लेख किएक अछि?

- (A) भोजपुरी चैनल रहितहुँ कखनो-कखनो मैथिली सामग्री देबाक कारण।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

४०९. सहारा समयक मैथिली कार्यक्रमक समस्या की रहल?

- (A) साप्ताहिक कार्यक्रम शुरू भेल, मुदा निरन्तरता नहि पाबि सकल।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

४१०. आशाक किरण: मैथिली संचार माध्यमक आरम्भिक विस्तार खण्डक सार-निष्कर्ष की अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) मैथिली टीवी माध्यममे प्रवेश करैत अछि, मुदा प्रतिनिधित्व अभी छिटपुट आ अस्थिर अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

खण्ड ६६६ : विदेह-सदेह २ — आशाक किरण: भारत-नेपाल प्रसारण, उपेक्षा आ भविष्य

४११. मैथिली भारतक अष्टम अनुसूचीमे पड़लाक बादो कोन समस्या रहल?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) सरकारी संचार माध्यममे अपेक्षित स्थान नहि बनि सकल।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

४१२. नेपाल वनक मैथिली प्रसारणक विशेष असर कोना वर्णित अछि?

- (A) मैथिली भाषी समाजमे ओकर अलग स्थान बनल।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

४१३. नेपाल टेलिभिजनमे मैथिलीबारे लेख की कहैत अछि?

- (A) मैथिली एखनो उपेक्षित अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

४१४. सगरमाथा टेलिभिजन मैथिलीमे की प्रसारित करैत छल?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) साँझमे लगभग पन्द्रह मिनटक समाचार।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

४१५. तराई टेलिभिजन मैथिली लेल की उपलब्ध करैत छल?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) मनोरंजनात्मक आ सूचनामूलक कार्यक्रम।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

४१६. नेपाल टेलिभिजनक मेट्रो टेलिभिजन कार्यक्रमक स्थिति की रहल?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) साप्ताहिक मैथिली कार्यक्रम किछु एपिसोड चलि बन्द/अनिरंतर भेल।

४१७. लेखक सशक्त मैथिली संचार माध्यमक अभावकें कोना देखैत छथि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) नितान्त अभाव।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

४१८. सूचना-प्रविधिक युगमे संचार माध्यम मैथिली लेल किएक जरूरी अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) अस्तित्व बचएबामे सहायक बनि सकैत अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

४१९. सशक्त माध्यम बिना मैथिली भविष्यबारे लेखकक निष्कर्ष की अछि?

- (A) सुनिश्चित भविष्यक कल्पना मात्र रहि जाएत।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

४२०. “सिकुड़ल काया कहिया पुष्ट हएत” कथन की संकेत करैत अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) सम्भावना बहुत अछि, मुदा संचारमे मैथिलीक आकार कमजोर अछि।

खण्ड ६६७ : विदेह-सदेह २ — फूल चन्द्र झा ‘प्रवीण’: जीवन, रचना-संसार आ शिशु-साहित्य प्रवेश

४२१. फूल चन्द्र झा ‘प्रवीण’क जन्म-संदर्भ कोना देल गेल?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) १० अक्टूबर १९६१, तुमौल-पूतइ, दरभंगाक पृष्ठभूमि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

४२२. फूल चन्द्र झाक व्यवसाय की बताओल गेल?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) अध्यापन।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

४२३. हुनकर अभिरुचि सभमे कोन-कोन क्षेत्र अछि?

- (A) लेखन, चित्रकला, अभिनय, गीत-संगीत आ सामाजिक कार्य।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

४२४. हुनकर कविता-संग्रहमे कोन शीर्षक उल्लिखित अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) “आयल नवल प्रभात” आदि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

४२५. नाटक-सूचीमे “आन्दोलन” संग कोन सामाजिक स्वर देखाइत अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) सामाजिक-राजनीतिक विषयक नाटक रचना।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

४२६. फूल चन्द्र झाक कथा-संग्रहक नाम की अछि?

- (A) “भूत होइत भविष्य”।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

४२७. “हमरा जनैत” कोन विधाक पुस्तक अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) निबंध-संग्रह।

४२८. संकलन-सम्पादनमे हुनकर कोन काज देल गेल?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) बाबू भोलालाल दास रचनावली आ मधुपजी बीछल बेरायल कविता।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

४२९. हुनकर अनुवाद-कृति कोन अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) “मल्लिनाथ” अंग्रेजीसँ।

४३०. शिशु-साहित्य आलेखक पूर्व परिचयक उपयोग की अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) लेखकक व्यापक साहित्यिक-सांस्कृतिक आधार देखाएब।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

खण्ड ६६८ : विदेह-सदेह २ — मैथिली शिशु साहित्य लोक: मौखिक परम्परा, लिपिबद्धता आ वर्गीकरण

४३१. लेखक मैथिली लोक-साहित्यमे शिशु लोक-साहित्यक मात्रा कोना बतबैत छथि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) अम्बार लागल अछि।

४३२. शिशु लोक-साहित्यक कतेक अंश लिपिबद्ध अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) किछु लिपिबद्ध, बेसी मौखिक।

४३३. शिशु लोक-साहित्यक रचनाकारबारे लेख की कहैत अछि?

- (A) अज्ञात समय आ अज्ञात लोक-रचनाकार।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

४३४. मौखिक परम्पराकेँ वेद-समान कहबाक आशय की अछि?

- (A) हजारो वर्ष धरि कंठ-परम्परामे जीवित रहब।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

४३५. मौखिक परम्परामे जीबबाक कारणेँ कोन संकट उभरैत अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) मौलिकता दिनानुदिन नष्ट भेल जा रहल अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

४३६. लेखमे शिशु लोक-साहित्यक मुख्य केन्द्र कोन विधा अछि?

- (A) पद्य विधा।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

४३७. पूर्व संकलन/अध्ययनमे केकर कृति उपयोगी कहल गेल?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) प्रफुल्ल कुमार सिंह “मौन”, अणिमा सिंह आ दमन कुमार झाक काज।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

४३८. मैथिली शिशु लोक-साहित्यक पहिल भाग की अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) लालन-पालनसँ सम्बद्ध।

४३९. दोसरा आ तेसरा भाग की अछि?

- (A) खेल-मनोरंजनसँ सम्बद्ध आ ज्ञानोपयोगी।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

४४०. एहि खण्डक मूल स्थापना की अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) शिशु लोक-साहित्य मौखिक, पीढ़ीगत, विपुल आ संरक्षण-योग्य धरोहर अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

खण्ड ६६९ : विदेह-सदेह २ — लालन-पालन: सोहर, तेल-मालिश आ देह-उँगार गीत

४४१. लालन-पालन सम्बद्ध शिशु लोक-साहित्यक परिवेश कोना बताओल गेल?

- (A) घर-आँगनसँ दलान धरि सीमित।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

४४२. नेनाक जन्मक बाद सभसँ पहिने कोन ध्वनि कानमे पड़ैत अछि?

- (A) सोहर।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

४४३. नेनाक अवस्था बदलैत शिशु लोक-साहित्यमे की परिवर्तन होइत अछि?

- (A) रूप आ प्रयोजन बदलैत जाइत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

४४४. कड़ूतेलसँ जाँतल-पीचल जाइत समय कोन तरहक पद चलैत अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) “चै-चै-चै बौआ सूतभै” सन पंक्ति।

४४५. चानि पर तेल पचबैत नेनाक देह उँगारबाक पदमे की भाव अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) शारीरिक सुदृढ़ता आ खेलक मिश्र भाव।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

४४६. नेनाक हाथसँ लोकबाक बाद ओ किएक कानए लगैत अछि?

- (A) डरक कारण।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

४४७. “बौआ आम तोड़ू / जाम तोड़ू” पदक उपयोग कहिया होइत अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) नेनाकेँ बहटारबाक/मनोरंजन करबाक समय।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

४४८. टाँग पकड़ि उनटाकऽ झुलबैत कोन गामसभ देखाओल जाइत अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) मामा गाम, नाना गाम आ अपन गाम।

४४९. मामा गाम आ अपन गामक भेदमे कौन रोचक बात कहल गेल?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) नेना जतय रहए, ओकरा अनुसार दादा-दादी वा नाना-नानीक चौल कएल जाइत अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

४५०. लालन-पालन: सोहर, तेल-मालिश आ देह-उँगार गीत खण्डक सार-निष्कर्ष की अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) शिशु-पालनमे देह-देखभाल, रिश्तेदारी आ खेल-पद्य एकसंग चलैत अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

खण्ड ६७० : विदेह-सदेह २ — संझा-मैया, नजर-गुजरि, जिज्ञासा आ चलन-सिखाबन

४५१. पहिल साँझ दीप लेसलाक बाद कोन प्रार्थना कएल जाइत अछि?

- (A) संझा-मैया सँ नेनाक रक्षा लेल प्रार्थना।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

४५२. “आको मैया चाको” पदक उद्देश्य की अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) छोट नेनाक रक्षा।

४५३. देखनुहुक नेनाक नजरि-गुजरि हटएबाक लेल कोन तरहक पद अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) हँसनी-खिलनी/राजा धनपाल दोहाइ सन पद।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

४५४. छठिहारक दीप सँ जुड़ल लोकविश्वास की अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) दीप मिझा राखि बादमे टोटमा करबाक प्रथा।

४५५. नेना बैसऽ लगैत अछि तखन “आनी-मानी” पदक उपयोग किएक?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) जिज्ञासा पूर्ति आ बालबोधक खेल लेल।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

४५६. बिचला आँगुर पकड़बाकें कोना देखल जाइत अछि?

- (A) जिज्ञासा पूरा होएबाक सम्भावना प्रबल।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

४५७. नेना ठाढ़ होएब सीखैत समय कोन पद्य सुनाओल जाइत अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) “था...था...दिग-दिग था” प्रकारक पद।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

४५८. डेग उठएबाक क्रममे नेना बेर-बेर की करैत अछि?

- (A) खसैत अछि आ फेर प्रयास करैत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

४५९. चलन-सिखाबन पदक शिशु-विकासमे भूमिका की अछि?

- (A) बूलब/चलन सीखबामे लयात्मक सहारा।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

४६०. संझा-मैया, नजर-गुजरि, जिज्ञासा आ चलन-सिखाबन खण्डक सार-निष्कर्ष की अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) लोक-साहित्य नेनाक रक्षा, नजर हटएब, जिज्ञासा आ चलन-सिखाबनक साधन अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

खण्ड ६७१ : विदेह-सदेह २ — चन्ना मामा, तारा-कथा आ लोरीक दीर्घायु-कामना

४६१. चन्ना मामा पदक प्रयोग कहिया होइत अछि?

- (A) नेनाक संग कथा-गीत गाबि चान देखबैत।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

४६२. “सोनाक कटोरामे दूध-भात” छवि की सूचित करैत अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) नेनाक पोषण आ लाड़-प्यार।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

४६३. तरेगण दिस तकबैत “एक तारा दू तारा” मे कथा-शृंखला कोना चलैत अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) एक वस्तु दोसराक हाथ जाइत क्रम बनैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

४६४. तारा-बेटी कथा मे गंगाकातक बालु सँ शुरू भऽ क्रम कहाँ धरि पहुँचैत अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) कनुनियाँ, फुटहा, चरबहबा, गैया, बिलैया, मूसा, चिलहोरबा, राजा, हाथी, मामा धरि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

४६५. सुतएबाक काल नेनाक कनपट्टी-माथ सोहरबैत कोन परम्परा अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लोरी गाबबाक।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

४६६. “आगे निनियाँ आ आ” पदक मूल प्रयोजन की?

- (A) नेनाक निन्न आनब।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

४६७. ममहरसँ जुड़ल लोरीमे नेनाक खोराक की-की रूपमे अबैत अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) आरब चाउरक भात, गायक दूध, चूड़ा आदि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

४६८. लोरी सभक माध्यमसँ केवल सुताएल जाइत अछि कि आरो किछु?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) संगहि दीर्घायु होएबाक कामना कएल जाइत अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

४६९. नेना सुति गेलापर माए की करैत छथि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) निश्चित भऽ घरक काज-रोजगारमे लागि जाइत छथि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

४७०. चन्ना मामा, तारा-कथा आ लोरीक दीर्घायु-कामना खण्डक सार-निष्कर्ष की अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) चन्ना, तारा आ लोरी शिशु-पोषण, कल्पना, निन्न आ मंगलकामना सँ भरल अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

खण्ड ६७२ : विदेह-सदेह २ — घुघुआ-मना, दादी-नानीक पद आ नेनाक बहटार

४७१. घुघुआ-मना/धुआँ-चुआँ खेलमे वयस्क की करैत छथि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) उतान पड़ि नेनाकेँ पैरपर बैसाय पैर ऊपर-नीचाँ करैत छथि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

४७२. घुघुआ-मना खेलक पदमे मामा-पटना-चोर प्रसंग किएक रोचक अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) घरेलू हास्य आ गति-बिम्बक कारण।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

४७३. “नव घर उठे / पुरान घर खसे” कहब कहिया होइत अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) पैर उठाएब-खसाएबाक समय।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

४७४. नेना जागल रहैत अछि तखन ओकरा की चाही?

- (A) कोनो एक लोकक सानिध्य।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

४७५. गायक अतिरिक्त नेनाक मोन बहटारबाक लेल के-के पद गाबैत छथि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) नानी, दादी, दीदी आदि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

४७६. “अलिया गै, मलिया गै” सन पदक प्रकृति की अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) भास लगा कऽ गाओल रंग-बिरंगक पद्य।

४७७. “लाल गाछी गेली” पदमे कोन घरेलू दृश्य अबैत अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) आम, बाबा, बाघ-बघिनियाँ, चूड़ा आ नजरि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

४७८. “पड़बा रूसल जाइ छै” छवि की सूचित करैत अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) बालक मनुहार आ लोक-हास्य।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

४७९. दादी-नानी-दीदीक योगदान शिशु-साहित्यमे किएक महत्वपूर्ण?

- (A) नेनाक भाव-पालन आ लोक-स्मृति-संक्रमण दुनू हुनके माध्यमे होइत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

४८०. घुघुआ-मना, दादी-नानीक पद आ नेनाक बहटार खण्डक सार-निष्कर्ष की अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) घुघुआ-मना आ बहटार-पद्य शिशु-मनोरंजन, शारीरिक खेल आ घरेलू सामूहिकता जोड़ैत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

खण्ड ६७३ : विदेह-सदेह २ — दीदी, मामा-मामी आ रिश्तेदारीक पालन-पद्य

४८१. दीदी अर्थात पिउसिक योगदानकेँ लेखमे कोना देखल गेल?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) नेनाक लालन-पालनमे बड़ महत्वपूर्ण।

४८२. “लाल दीदी मे” पदमे कोन चीज तोड़ए लेल डलिया माँगल जाइत अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) मिरचाइ।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

४८३. दीदी-पद्य मे पुलिसबा प्रसंग की करैत अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) हास्य-भय आ लुकाएबाक खेल रचैत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

४८४. “बेटा कनै छी खोपड़ीमे” पदक भाव की अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) कानय, खेनाइ, सुताइ आ उठबैबाक घरेलू ठिठोली।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

४८५. तीसर दीदी-पद “एक रत्ती छाल्ही” कोन भाव राखैत अछि?

- (A) छोट गलती पर बाबा मारलक — बाल शिकायत।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

४८६. बेटीकेँ संतानक योग्यता भेलापर नैहर अनबाक परम्परा किएक उल्लेखित अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) मामा-मामी-नाना-नानीक दुलारक संदर्भ लेल।

४८७. मामा-पद्य मे पोखरी भीड़पर की अनबाक कहल जाइत अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) चिक्कन पड़बा।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

४८८. मामी-पद्य मे “भात उधिआए / दालि उधिआए” की सूचित करैत अछि?

- (A) मामाघरक भोजन-संसार।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

४८९. “आब नहि जएबै मामाक अँगना” क भाव की अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) मामाघरमे अपना लेल कम, दूसर लेल लाल-लाल कुटिया देखिक शिकायत।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

४९०. दीदी, मामा-मामी आ रिश्तेदारीक पालन-पद्य खण्डक सार-निष्कर्ष की अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) रिश्तेदारी शिशु लोक-पद्यकें मामा, मामी, दीदी, बाबा आदि पात्रसँ समृद्ध करैत अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

खण्ड ६७४ : विदेह-सदेह २ — खेल आ मनोरंजन: अटकन-मटकनसँ बाल-कथा-काव्य धरि

४९१. खेल-मनोरंजन सम्बद्ध शिशु लोक-साहित्यक परिवेश कोना अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) रस्ता-पेरा, परती-पराँत, विद्यालय-परिसर आ खेलक मैदान धरि विस्तृत।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

४९२. “अटकन-मटकन” खेलमे सिंगही कहला पर की होइत अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) बिट्टू काटल जाइत अछि।

४९३. ओहि खेलमे मुँगरी कहला पर की होइत अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) मुक्कासँ मारल जाइत अछि।

४९४. अटकन-मटकनक दोसर रूप किएक महत्त्वपूर्ण?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) एकहि खेलक क्षेत्रीय/रूपान्तरित पद देखबैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

४९५. “गाछ करै ठाँए-ठाँए” पदमे कोन प्राकृतिक बिम्ब अछि?

- (A) गाछ, नदी, कमल फूल, चमेली आदि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

४९६. बाल-कथा-काव्य “फुद्दी” मे कुस की करैत अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) फुद्दीक पेट चीरि दैत अछि।

४९७. फुद्दी कथा मे तीन-तीन वस्तु/पात्रक पुनरावृत्ति किएक प्रभावी अछि?

- (A) स्मृति, लय आ हास्यक क्रम बनबैत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

४९८. फुद्दी कथा मे असंभव घटनाक भूमिका की अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) बाल-कल्पनाकेँ चमत्कारिक विस्तार देब।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

४९९. नेना सभ एहन कथा-काव्य केना सुनैत अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) बड़ मनोयोगसँ।

५००. खेल आ मनोरंजन: अटकन-मटकनसँ बाल-कथा-काव्य धरि खण्डक सार-निष्कर्ष की अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) खेल-पद्य नियम, दंड, प्रकृति, चमत्कार आ लय सँ बाल-मनोरंजन रचैत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

खण्ड ६७५ : विदेह-सदेह २ — रेलगाड़ी, कबड्डी आ गिरगिटरानी: सामूहिक खेलक पद्य

५०१. रेलगाड़ी खेलमे नेना सभ अपनाकेँ कोना बाँटैत अछि?

- (A) एक गोटा इंजिन, आर सभ डिब्बा।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

५०२. “रेलगाड़ी झकमक” पदमे की विशेषता अछि?

- (A) ध्वनि, गति आ वस्तु-श्रृंखलाक मिश्रण।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

५०३. मिथिलाक खेलमे कबड्डीक परम्परा कोना कहल गेल?

- (A) बड्ड पुरान।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

५०४. “कबड्डी-कबड्डीकार” पदमे ककर उल्लेख अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) मैना बच्चा आ अण्डापार।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

५०५. “चेत कबट्टी” पदमे तबला, पइसा, बाग-बगइचा किएक अबैत अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) खेलक लय आ कल्पना बढ़एबाक लेल।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

५०६. “कबट्टी खेलऽ गेलहुँ” पदमे कोन दुर्घटना-छवि अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) कपार फुटि गेल, हाथ कटि गेल।

५०७. गिरगिटरानी खेल केकर बीच खेलाएल जाइत रहल?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) मिथिलाक कन्या लोकनिक मध्य।

५०८. गिरगिटरानी खेलमे एक कन्या की बनैत अछि?

- (A) गिरगिट।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

५०९. गिरगिट पद्य मे “देस-देससँ आएल छी” क भाव की अछि?

- (A) कल्पनात्मक यात्रा आ संवाद।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

५१०. रेलगाड़ी, कबट्टी आ गिरगिटरानी: सामूहिक खेलक पद्य खण्डक सार-निष्कर्ष की अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) सामूहिक खेलसभ देह-गतिशीलता, पद्य, अभिनय आ संवादकेँ एकसंग जोड़ैत अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

खण्ड ६७६ : विदेह-सदेह २ — कटहर, झिझिर कोना, साँप-डिगडिग आ आत्मरक्षा-कथा

५११. कटहरक गाछ खेलमे एक नेना की अभिनय करैत अछि?

- (A) गाछक।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

५१२. कटहर खेलमे कोतवाल की करैत अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) फल बनल नेना सभकेँ हाथसँ टेबैत अछि।

५१३. गाछक संवाद “काँच छै तऽ छोड़ि दू / पाकल छै तऽ लऽ लू” क अर्थ की?

- (A) फल पकबाक अभिनय अनुसार चयन।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

५१४. “झिझिर कोना” खेल कतय खेलाएल जाइत अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) खाली घर, दलानक कोठली वा विद्यालयक कोना धरि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

५१५. झिझिर कोना खेलमे मुख्य पद्य-प्रश्न की अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) कुन कोना जाएब।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

५१६. “साँप डिग-डिग” खेलक बनावट की अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) बहुत नेना हाथ जोड़ी सोझ पाँतीमे ठाढ़ होइत अछि।

५१७. “की रे बकरिया” संवादमे धान खाएबाक प्रश्न की संकेत करैत अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) पशु, खेत आ मालिकाना संवादक खेलरूप।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

५१८. आत्म-रक्षार्थ लोक-साहित्यक तुलना लेखक केकर संग करैत छथि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) पशु-पक्षी अपन अबोध नेनाकें उपाय सिखबैत अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

५१९. आत्मरक्षा खिस्सा मे कोन उदाहरण लोकप्रिय कहल गेल?

- (A) बगिया गाछक खिस्सा आ गोनू झाक खिस्सा।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

५२०. कटहर, झिझिर कोना, साँप-डिगडिग आ आत्मरक्षा-कथा खण्डक सार-निष्कर्ष की अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) खेल-पद्य स्थान, फल, पशु, जोखिम आ आत्मरक्षाक अनुभव बाल-रूपमे सिखबैत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

खण्ड ६७७ : विदेह-सदेह २ — निरर्थक शब्द, परिवार-पाठशाला आ अट्टा-पट्टा अंकज्ञान

५२१. औका-बौका सन पदमे केहन शब्दप्रयोग देखाइत अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) निरर्थक बुझाइत शब्दसभक प्रयोग।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

५२२. “ईटा-माटी सोनेक टाट” सन पद किएक महत्त्वपूर्ण अछि?

- (A) ध्वन्यात्मक खेल आ लोक-हास्यक कारण।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

५२३. ज्ञानोपयोगी शिशु लोक-साहित्यक आधार-वाक्य की अछि?

- (A) परिवार सामाजिक जीवनक पहिल पाठशाला अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

५२४. मैथिली शिशु लोक-साहित्यक माध्यमे नेनाकेँ की देल जाइत रहल?

- (A) अनेक प्रकारक शिक्षा।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

५२५. “अट्टा-पट्टा” खेलमे नेनाक कोन हाथ पर थापर मारल जाइत अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) दहिना हाथ पर।

५२६. अट्टा-पट्टा मे पाँच बेड़ा केकर-केकर संग जोड़ल जाइत अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) गाय, महीस, बड़द, बकरी आ छकरी संग।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

५२७. अट्टा-पट्टा खेलक अंतिम गुदगुदी भागमे नेना की करैत अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) हँसैत-हँसैत लोट-पोट भऽ जाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

५२८. एहि खेलक माध्यमे नेनाकेँ कतेक धरि अंकज्ञान होइत अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) एकसँ पाँच धरि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

५२९. ज्ञानोपयोगी खण्डमे शिक्षा कोना प्रस्तुत अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) खेल, स्पर्श, गीत आ हँसीक रूपमे।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

५३०. निरर्थक शब्द, परिवार-पाठशाला आ अट्टा-पट्टा अंकज्ञान खण्डक सार-निष्कर्ष की अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) निरर्थक-ध्वनि आ अंक-खेल दुनू मिलि बालभाषा आ बालज्ञान गढ़ैत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

खण्ड ६७८ : विदेह-सदेह २ — दहाइ-सैकड़ा, घो-घो रानी, आकारज्ञान आ वस्तु-उपयोग

५३१. दस सँ सौ धरि अंकक खेलमे कोन पंक्ति क्रम बनबैत अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) दस, बीस, तीस, चालीस...सौ।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

५३२. “सौमे लागल धागा, चोर निकलिकऽ भागा” पंक्ति की करैत अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) गणना केँ खेलक घटना मे बदलैत अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

५३३. “घो-घो रानी” खेलमे बीचमे के ठाढ़ होइत अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) एक नेना।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

५३४. घो-घो रानी मे पानीक स्तर कोन-कोन अंग धरि बढ़ैत अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) एड़ी सँ माथ धरि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

५३५. अंतमे “चुभुक” कहि नेना सभ की अभिनय करैत अछि?

- (A) डूबि कऽ नहएबाक।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

५३६. छिट्टा-पथिया-मउनी-चुक्का खेलमे नेना की सीखैत अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) वस्तु सभक आकारक ज्ञान।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

५३७. चुक्कामे अण्डा आ कउआ प्रसंगक उपयोग की अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) आकारज्ञानकें कूद-फान आ हास्य संग जोड़ब।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

५३८. “खेलए-धूपए गेलिऐ” पदमे लोहासँ की बनबैत अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) हाँसू।

५३९. हाँसू सँ शुरू भेल श्रृंखला अंतमे कतय पहुँचैत अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) बेटा जनमाबऽ आ कोरामे खेलाबऽ धरि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

५४०. दहाइ-सैकड़ा, घो-घो रानी, आकारज्ञान आ वस्तु-उपयोग खण्डक सार-निष्कर्ष की अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) लोकखेल संख्या, अंग, आकार आ वस्तु-उपयोगक व्यवहारिक ज्ञान देत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

खण्ड ६७९ : विदेह-सदेह २ — शिशु लोक-साहित्य: निष्कर्ष, संरक्षण आ नव-तकनीक

५४१. लेखकक अनुसार शिशु लोक-साहित्य नेनाक कोन पक्षसँ जुड़ल अछि?

- (A) प्रत्येक पक्षसँ।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

५४२. लालन-पालन आ खेल-मनोरंजनक साहित्यक मात्रा कोना बताओल गेल?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) अधिकता पाओल गेल।

५४३. खेलक माध्यमसँ नेना-भुटकामे कोन भावना जागैत अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) एकता, सहयोग, सहानुभूति आ प्रेम।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

५४४. अभिनय, नृत्य आ गीतक ज्ञान कोना आरम्भ होइत अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) शिशु लोक-साहित्य आ खेलक माध्यमे आरम्भहिसँ।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

५४५. एखन मैथिली शिशु लोक-साहित्यक सन्दर्भमे की प्रयोजन बताओल गेल?

- (A) अमूल्य धरोहरकेँ सहेजि समेटबाक।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

५४६. सचेष्ट नहि भेलहुँ त परिणाम की होएत?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) मूल्यवान धरोहर नष्ट भऽ सकैत अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

५४७. उपलब्ध संकलन यथेष्ट नहि किएक कहल गेल?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) क्षेत्र बहुत विस्तृत अछि आ लोकक ठोरपर बहुत साहित्य एखनो अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

५४८. पाश्चात्य सभ्यता प्रसंगमे “चन्न मामा”क बदला कोन उदाहरण देल गेल?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) “ट्विंकल ट्विंकल लिटिल स्टार”।

५४९. नव-नव तकनीकक उपयोग किएक सुझाओल गेल?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) असंकलित शिशु लोक-साहित्यकेँ चिरकाल धरि जोगा राखबाक लेल।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

५५०. शिशु लोक-साहित्य लेखक अन्तिम आग्रह की अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) समधानल डेग आ जोरगर प्रयास।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

खण्ड ६८० : विदेह-सदेह २ — केदार कानन: जगदीश प्रसाद मण्डल आ “पछताबा”क प्रारम्भिक समीक्षा

५५१. केदार कानन जगदीश प्रसाद मण्डलक निजी पहचान कोना बनबैत छथि?

- (A) गंभीर साम्यवादी दृष्टि, जीवनानुभव आ सहज परिपक्व अभिव्यक्ति।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

५५२. जगदीश प्रसाद मण्डलक लेखनक आरम्भ कोन विशेषता रखैत अछि?

- (A) एक बएसपर आबि लिखनाइ शुरू कएलनि, मुदा कृति पढ़िने ई बूझाइत नहि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

५५३. हिनक मानसक वस्तु कागतपर उतरबासँ पहिनहि कोना छल?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) रचित-खचित।

५५४. “पछताबा” कथा कतय पढ़ल गेल छल?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) सुपौलमे आयोजित कथा-गोष्ठीमे।

५५५. कथाक मुख्य पात्र रघुनाथ कोन पृष्ठभूमिसँ बहराइत अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) एकटा स्वतंत्रता सेनानीक घरसँ।

५५६. रघुनाथ पढ़ाइक बाद कतय चलि जाइत अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) पत्नी संग अमेरिका।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

५५७. रघुनाथ के-के छोड़ि अमेरिका जाइत अछि?

- (A) माता-पिता, परिवार, सर-सम्बन्धी आ समाज।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

५५८. अमेरिकाक चाक-चिक्क समाजमे रघुनाथ लेल मुख्य चिंता की रहि जाइत अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) पाइ कमएबाक।

५५९. शिवनाथ आ हुनक पत्नी के छथि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) रघुनाथक माता-पिता।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

५६०. केदार कानन: जगदीश प्रसाद मण्डल आ “पछताबा”क प्रारम्भिक समीक्षा खण्डक सार-निष्कर्ष की अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) “पछताबा” प्रवास, धनलोलुपता आ परिवार-विच्छेदक कथा रूपमे खुलैत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

खण्ड ६८१ : विदेह-सदेह २ — “पछताबा”: प्रवासी जीवन, माता-पिता आ कथा-शिल्प

५६१. रघुनाथक माता-पिता पुत्र-वियोगक बाद कोना जीवन जीबैत छथि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) थोड़ेक दिन मलीन रहि फेर ढंगसँ अपन जीवन जीबैत सुखसँ रहैत छथि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

५६२. “पछताबा” कथाक प्रस्तुति-शैली कोना चलैत अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) फ्लैशबैकमे।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

५६३. फ्लैशबैकमे कथासभ कोना खुलैत अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) अनेक उपकथा सभ उद्घाटित होइत अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

५६४. पछताबा कथामे अमेरिकाक जीवनसँ पहिने के उबैत अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) रघुनाथक पत्नी।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

५६५. रघुनाथक पत्नीक अकेलापन कोना कहल गेल?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ने क्यो संगी, ने क्यो गप कएनिहार।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

५६६. रघुनाथो केँ पश्चाताप कहिया होइत अछि?

- (A) पत्नी सँ बादमे, ओहो एक दिन।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

५६७. पश्चाताप भेलो पर रघुनाथ की करैत अछि?

- (A) ओछाइनपर छटपटाइत टा रहि जाइत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

५६८. गाम अएबाक कोन स्थिति कथा देखबए नहि दैत?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) कार्यरूप वा आन परिणति नहि देखाओल जाइत।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

५६९. समीक्षक कथाकें पढ़बाक अनुभव कोना बतबैत छथि?

- (A) मोनलगू, क्रम-भंग बिना।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

५७०. एहि खण्डक निष्कर्ष की अछि?

- (A) “पछताबा” प्रवासी अकेलापन, पश्चाताप आ क्रिया-असमर्थता केँ सुगठित फलैशबैकमे रखैत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

खण्ड ६८२ : विदेह-सदेह २ — “पछताबा”क मैथिल अभिव्यक्ति आ रूपक

५७१. समीक्षक कथामे कोन भाषा-गुण विशेष पसिन्न करैत छथि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) मैथिल अभिव्यक्तिक रूप।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

५७२. पाकल आमक उपमान ककर टूटल आशाकें देखबैत अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) शिवनाथक मनोस्थिति।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

५७३. अएनापर पाथरक लोढ़ी खसलाक उपमान की सूचित करैत अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) दुनूक मन चूर-चूर भऽ गेल।

५७४. फुकना बैलूनक हवाक उपमान कोन भाव देखबैत अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) अरमान आ सपना फूटि वायुमंडलमे मिलि गेल।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

५७५. पाकल आमक आँठी जेकाँ करेज सक्त होएबाक अर्थ की?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) दुख सँ करेज कठोर भऽ गेल।

५७६. अंडीक तेलमे जरैत डिबियाक इजोत उपमान की जोड़ैत अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) घर-गामक लोक-अनुभवक प्रकाश-छवि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

५७७. एहन उपमानक आलोचनात्मक महत्त्व की अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) भाषा कथाकेँ क्षेत्रीय जीवनानुभवसँ जोड़ैत अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

५७८. समीक्षक जगदीश प्रसाद मण्डलकेँ कोना सम्बोधित करैत छथि?

- (A) व्यक्तिगत रूपेँ बधाइ दैत छथि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

५७९. समीक्षक जगदीशजी सँ भविष्य लेल की आशा करैत छथि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) अनुभवकेँ आरो व्यापकता दैत नव-नव कृति देखिन।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

५८०. “पछताबा”क मैथिल अभिव्यक्ति आ रूपक खण्डक सार-निष्कर्ष की अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) “पछताबा”क शक्ति ओकर मैथिल उपमान, सहज भाषा आ जीवनानुभवमे अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

खण्ड ६८३ : विदेह-सदेह २ — प्रेमशंकर सिंह: जयकान्त मिश्रक अक्षर-पुरुष रूप

५८१. प्रेमशंकर सिंह जयकान्त मिश्रकेँ कोन रूपमे प्रस्तुत करैत छथि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) दिव्य अक्षर पुरुष।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

५८२. जयकान्त मिश्रक जीवनकाल कोना देल गेल?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) १९२२-२००९।

५८३. जयकान्त मिश्र विगत लगभग कतेक दशक धरि कार्यरत रहलाह?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) लगभग सात दशक।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

५८४. मैथिलीकेँ विश्वस्तर पर प्रतिष्ठित करबाक लेल जयकान्त मिश्र कोन प्रकारक साधना केलनि?

- (A) आन्दोलनात्मक आ रचनात्मक सृजन।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

५८५. प्राथमिक शिक्षामे मैथिलीबारे हुनकर संघर्ष की छल?

- (A) मातृभाषाक माध्यमे प्राथमिक शिक्षा नीति लागू करएबाक।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

५८६. वैज्ञानिक आलोचनात्मक ग्रन्थ प्रणयनमे हुनकर भूमिका किएक महत्वपूर्ण?

- (A) मैथिली अध्ययनकेँ शोध-आधारित दिशा देबाक लेल।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

५८७. हेड़ाएल-भुतिआएल विभूति प्रकाशमे अनबाक अर्थ की?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) भूला-पड़ल साहित्यिक धरोहरकेँ उजागर करब।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

५८८. मैथिली अन्धकारमे टापर-टोइया दैत छल — एहि समय हुनकर अनुसंधान की भेल?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) आलोकक रश्मि।

५८९. हुनकर कार्य मातृभाषानुरागी लोकनि पर की प्रभाव छोड़लक?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) एकर उत्थानार्थ निरन्तर कार्यरत रखलक।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

५९०. प्रेमशंकर सिंह: जयकान्त मिश्रक अक्षर-पुरुष रूप खण्डक सार-निष्कर्ष की अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) जयकान्त मिश्र मैथिलीक शोध, शिक्षा, आन्दोलन आ धरोहर-उद्धारक अक्षर-पुरुष रूपमे स्थापित छथि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

खण्ड ६८४ : विदेह-सदेह २ — जयकान्त मिश्र: प्रथम दर्शन, पुस्तकालय, पृष्ठभूमि आ अध्यापन

५९१. लेखककेँ जयकान्त मिश्रक पहिल दर्शन कतय भेल?

- (A) पटना मे बिहार पब्लिक सर्भिस कमीशनक प्रसंगमे।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

५९२. प्रथम दर्शनक समय लेखक कोन स्तरक छात्र छलाह?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) पटना विश्वविद्यालयक एम.ए. मैथिलीक अंतिम वर्षक छात्र।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

५९३. भागलपुर विद्यापति पर्वमे जयकान्त मिश्र की देलनि?

- (A) सारगर्भित गंभीर व्याख्यान।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

५९४. लेखक इलाहाबाद किएक गेल छलाह?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) शोध-सामग्री आ निजी पुस्तकालय देखबाक लेल।

५९५. हरिमोहन झा सम्बन्धी कोन सामग्रीक खोज लेल लेखक गेलाह?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) कन्यादान आ द्विरागमन पर श्रीकृष्ण मिश्रक समालोचना।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

५९६. जिराक्स नहि रहबाक समय जयकान्त मिश्र लेखक लेल की करवौलनि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) आवश्यक सामग्री टाइप करबा देलनि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

५९७. हुनकर पारिवारिक पृष्ठभूमिमे कोन विद्या परम्परा छल?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) संस्कृत पठन-पाठनक अगाध आस्था।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

५९८. पाश्चात्य शिक्षानुरूप हुनकर पढ़ाई कोन छत्रछाया मे भेल?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) पिता आ प्रोफेसर अमरनाथ झाक।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

५९९. जयकान्त मिश्र मात्र कतेक वर्षक अवस्था मे इलाहाबाद विश्वविद्यालयमे लेक्चरर भेलाह?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) २१ वर्ष।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

६००. सन् १९८३ मे जयकान्त मिश्र कोन पदावधि पछाति अवकाश ग्रहण कएलनि?

- (A) रीडर, यूनिवर्सिटी प्रोफेसर आ विभागाध्यक्ष पद सुशोभित कऽ।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

खण्ड ६८५ : विदेह-सदेह २ — जयकान्त मिश्र: तिरहुता-लिपि, कैथी आ सांस्कृतिक संरक्षण

६०१. जयकान्त मिश्रक वार्तालापमे पुरातन मिथिलाञ्चलक कोन दू लिपिक प्रचलन कहल गेल?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) तिरहुता आ कैथी।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

६०२. दरभंगा राजक कार्यकलापमे कोन लिपिक प्रयोगक उल्लेख अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) तिरहुता लिपि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

६०३. तिरहुताकें बहिष्कृत कऽ देवनागरी लादबाक परिणाम की कहल गेल?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) तिरहुता जनमानससँ शनैः-शनैः विलुप्त होइत गेल।

६०४. लेखकक अनुसार तिरहुता लिपि चलैत रहलित तँ कोन विवाद नहिँ उठित?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) मैथिलीकें हिन्दीक अंग ठहरएबाक विवाद।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

६०५. संस्कृत लेल देवनागरीक वैकल्पिक प्रयोगक प्रभाव मिथिलाञ्चलपर की पड़ल?

- (A) मैथिली साहित्य-निर्माता तिरहुताक बदला देवनागरी प्रयोग करए लगलाह।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

६०६. तिरहुता लिपिमे समाचार पत्र बाहर करबाक प्रयासक परिणाम की रहल?

- (A) ओ प्रयास सफल नहि भेल।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

६०७. जीवनाथ राय “मैथिलीक प्रथम पुस्तक” किएक लिखलनि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) तिरहुता/मैथिली लिपिक पुनर्जीवनक नेयारभास रूपमे।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

६०८. जयकान्त मिश्र तिरहुता टाइप बनएबाक प्रयास किएक करैत छलाह?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) मैथिली कोश तिरहुता लिपिमे प्रकाशित करबाक लेल।

६०९. “तिरहुता ककहारा” पुस्तकक उद्देश्य की छल?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) तिरहुता लिपिक शिक्षा आ पुनरुत्थान।

६१०. तिरहुताक पुनरुत्थान वर्तमान परिप्रेक्ष्यमे किएक उपयोगी कहल गेल?

- (A) रिसर्च आ सांस्कृतिक कार्यमे अलंकरण तथा प्राचीन साहित्य-अध्ययनक सुकरता लेल।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

खण्ड ६८६ : विदेह-सदेह २ — जयकान्त मिश्र: साहित्य अकादेमी परामर्श मण्डल आ इतिहास-विवाद

६११. साहित्य अकादेमी द्वारा मैथिलीक मान्यता भेटलाक बाद मैथिली समाजमे कोन भाव पसरल?

- (A) प्रसन्नताक लहरि आ नव आशा।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

६१२. मैथिली परामर्श मण्डलक प्रथम संयोजक रमानाथ झाक निधन पछाति के संयोजक बनाओल गेल?

- (A) जयकान्त मिश्र।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

६१३. जयकान्त मिश्र परामर्श मण्डलक संयोजक कतेक खेप रहलाह?

- (A) दू खेप।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

६१४. हुनक कार्यकालमे उमानाथ झा द्वारा सम्पादित कोन पुस्तक प्रकाशमे आयल?

- (A) विद्यापति गीत शती।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

६१५. जयधारी सिंह द्वारा संगृहीत कोन पुस्तक सेहो उल्लेखित अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) मैथिली कथा संग्रह।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

६१६. अकादेमी प्रो. राधाकृष्ण चौधरीकेँ कोन दायित्व देलक?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) अंग्रेजीमे मैथिली साहित्यक इतिहास लिखबाक।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

६१७. राधाकृष्ण चौधरीक पाण्डुलिपि किएक प्रकाशनसँ वंचित भऽ गेल कहल गेल?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) कथित बभन-पेंच आ इतिहास-लेखनपर जयकान्त मिश्रक एकाधिकारक कारण।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

६१८. जयकान्त मिश्र अपन पूर्व इतिहासकें संक्षिप्त कऽ अकादेमीसँ कोन ग्रंथ प्रकाशित करौलनि?

- (A) A History of Maithili Literature।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

६१९. स्वातंत्र्योत्तर मैथिली आलेख कोन पुस्तकमे विवादक कारण बनल?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) Indian Literature Since Independence।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

६२०. मिथिला मिहिरमे विवादक प्रत्युत्तरस्वरूप कोन शृंखला चलल?

- (A) वादे-वादे जायते तत्त्वबोध।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

खण्ड ६८७ : विदेह-सदेह २ — जयकान्त मिश्र: दिशा-बोधक समीक्षक आ “सुशीला” समीक्षा

६२१. लेखक जयकान्त मिश्रकें “दिशा बोधक समीक्षक” किएक कहैत छथि?

- (A) ओ मैथिली आलोचनाकें प्रतिमान आ दिशा देलनि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

६२२. ओ जीवन पर्यन्त कोन साहित्यक अध्ययन-अध्यापनमे निरत रहलाह?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) अंग्रेजी साहित्य।

६२३. मैथिलीमे समीक्षा लिखबाक प्रेरणा हुनका किएक भेटल?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) मातृभाषामे समीक्षाक सर्वथा अभाव देखि।

६२४. हुनकर पहिल बृहत समीक्षात्मक कृति कोन उपन्यासपर छल?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) गंगापति सिंहक “सुशीला” पर।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

६२५. “सुशीला” उपन्यासक समीक्षा किएक महत्त्वपूर्ण रहल?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) मैथिली शब्दक बदला हिन्दी शब्द-समूहक प्रयोगपर सतर्क प्रतिवादक कारण।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

६२६. “मैथिलीमे जे लिखल जाइत छैक से ठीक” — एहन धारणापर समीक्षा की प्रभाव डाललक?

- (A) आलोचनाक आवश्यकता स्थापित कएलक।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

६२७. भुवनेश्वर सिंह “भुवन” जयकान्त मिश्रकें की कएलनि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) अत्यधिक प्रोत्साहित कएलनि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

६२८. मैथिली इतिहास-लेखन हुनकर आलोचना-कर्मसँ कोना जुड़ैत अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) इतिहास-लेखन समीक्षाक श्रेणीमे परिणत भेल।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

६२९. तथाकथित आलोचकसभक दोषारोपण पर लेखकक प्रत्युत्तर की अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) हुनका समक्ष पूर्व प्रतिमान नहि छल।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

६३०. जयकान्त मिश्रक इतिहासक महत्त्व की कहल गेल?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) मैथिली आलोचना-साहित्यकें दिशा-बोध करौलनि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

खण्ड ६८८ : विदेह-सदेह २ — जयकान्त मिश्र: लोक-साहित्य, लेखक-सम्मेलन आ नाट्य-दृष्टि

६३१. An Introduction to Folk Literature of Mithila कोन विधाक प्रथम ग्रंथ कहल गेल?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) मैथिली लोक-साहित्यक।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

६३२. एहि लोक-साहित्य ग्रंथक प्रथम खण्डमे मुख्यतः की अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) लोकगीत आ लोकनाट्य सम्बन्धी गीतक विवेचन।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

६३३. द्वितीय खण्डमे कोन विषयसभक चर्चा अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) लोक विश्वास, लोक परम्परा आ लोककथा।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

६३४. आधुनिक लोक-साहित्य अध्ययन लेल एहि ग्रंथक भूमिका की अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) प्रेरणा-स्रोत आ पाथेय।

६३५. प्रथम अखिल भारतीय लेखक सम्मेलनक रचना-संग्रहमे जयकान्त मिश्र कोन बात उठौलनि?

- (A) मैथिली इतिहास सम्बन्धी किछु समस्या।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

६३६. अध्यक्षीय भाषणमे ओ कोन विधाक भविष्य पर प्रकाश देलनि?

- (A) नाट्य साहित्य।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

६३७. मैथिल संस्कृतिक उद्धार लेल ओ कोन क्षेत्रसभक चर्चा करैत छलाह?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) भेष-भूषा, भाव-भाषा, कला-कौशल, चित्रकला-संगीत।

६३८. नाटक आ रंगमंचक माध्यमे ओ की सुनिश्चित मानैत छलाह?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) मैथिलीक भविष्य।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

६३९. नाट्य साहित्यमे “पढ़बाक-सुनबाक-देखबाक” प्रक्रियाक महत्त्व की अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) मूर्तमय उपस्थितिक क्षमता।

६४०. बीसम शताब्दीक साहित्यिक परिवर्तनक प्रति जयकान्त मिश्रक रुख की छल?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ओ परिवर्तनक स्वरक समर्थक छलाह।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

खण्ड ६८९ : विदेह-सदेह २ — जयकान्त मिश्र: कीर्त्तिनिजा नाटक विवाद

६४१. A History of Maithili Literature में मिथिलामे उपलब्ध नाटकादिकें जयकान्त मिश्र कोन नाम देलनि?

- (A) कीर्त्तिनिजा।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

६४२. रमानाथ झा एहि नामकरणपर कोन पत्रिकामे आपत्ति कएलनि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) अभिव्यञ्जना।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

६४३. रमानाथ झा हुनकर मतकेँ खण्डन करैत की कहलनि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) कीर्त्तिनिजा नाच।

६४४. जयकान्त मिश्र रमानाथ झाक मतक उत्तर कतय देलनि?

- (A) अभिव्यञ्जनाक अग्रिम अंकमे।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

६४५. रमानाथ झा बादमे कोन स्वतंत्र पुस्तक प्रकाशित कएलनि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) कीर्त्तिनिजा नाटक।

६४६. विवादमे “नटुआ” आ “नटकिया” विषय किएक उठल?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) नाच-नाटक आ अभिनय-परम्पराक भेद स्पष्ट करबाक लेल।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

६४७. कीर्त्तिनिजामे पात्रक प्रवेश-निष्क्रमण पर चर्चा किएक महत्वपूर्ण?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) एहि सँ ओकर नाटकीय संरचनाक परीक्षण होइत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

६४८. मिथिलामे अभिनयक परम्पराक चर्चा विवादमे किएक आवश्यक छल?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) कीर्त्तिनिजाकेँ नाटक-परम्परा संग जोड़बाक/अलग करबाक लेल।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

६४९. कीर्त्तनिजा विवाद मैथिली आलोचनाक इतिहासमे की खोललक?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) वाद-प्रतिवादक परम्परा।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

६५०. कीर्त्तनिजा विवादक निचोड़ की अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) कीर्त्तनिजा प्रश्न केवल नामक नहि, मिथिलाक रंग-इतिहास बुझबाक प्रश्न अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

खण्ड ६९० : विदेह-सदेह २ — जयकान्त मिश्र: मैथिली आन्दोलन, जन-जागरण आ सांस्कृतिक शंखनाद

६५१. जयकान्त मिश्र साहित्य अकादेमी मान्यता प्राप्त भाषासभ लेल की चाहैत छलाह?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) भारतीय संविधानक अष्टम अनुसूचीमे स्थान लेल राष्ट्रीय आन्दोलन।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

६५२. आन्दोलन तीव्र करबाक लेल ओ कोन व्यावहारिक उपाय सुझौलनि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) मिथिलाञ्चलक गाम-गाम पदयात्रा आ जिला-जिलामे जन आन्दोलन।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

६५३. मैथिली आन्दोलनक वर्तमान सीमाबारे हुनकर आकलन की छल?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) पत्र-पत्रिका, पत्रकार, साहित्यकार आ सहृदय प्रेमी धरि सीमित।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

६५४. ओ आन्दोलनकेँ राष्ट्रीय रूप देबाक आवश्यकता किएक मानैत छलाह?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) भाषाक कल्याण लेल।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

६५५. पौल रोबसन/लूथर किंग प्रसंगमे कोन गीतक संकेत अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) We Shall Overcome।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

६५६. मैथिलीक नामपर चलाओल आन्दोलनकेँ ओ कखन-कखन “टिमटिमाइत दीप” मानैत रहथि?

- (A) जखन छोट-छोट बातकेँ आन्दोलन कहल जाइत छल।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

६५७. मैथिली आन्दोलनक असफलताक कारणमे ओ कोन बात कहैत छलाह?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) भाषा कोनो धर्मसँ सम्बद्ध नहि अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

६५८. मैथिली भाषी संख्याबारे हुनकर कथन की छल?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) भारतमे सातम स्थानक भाषा।

६५९. आन्दोलनमे बल कोना आओत, हुनकर अनुसार?

- (A) संस्कृतिक शंखनाद आ जन-जन भाषिक चेतनाक हुँकारसँ।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

६६०. आन्दोलनक उपलब्धिसभमे कोन-कोन मान्यता आयल?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) साहित्य अकादेमी, अष्टम अनुसूची, संघ लोक सेवा आयोग, बिहार लोक सेवा आयोग आ शैक्षिक स्तरपर स्वीकृति।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

खण्ड ६९१ : विदेह-सदेह २ — जयकान्त मिश्र: मातृभाषा माध्यमे प्राथमिक शिक्षा

६६१. शिक्षा आ भाषाक सम्बन्ध लेखक कोना बतबैत छथि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) दुनू परस्परश्रित अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

६६२. शिक्षाक उद्देश्य की कहल गेल?

- (A) ज्ञानार्जन।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

६६३. मातृभाषा माध्यमे प्राथमिक शिक्षा केहन रूपक कही गेल?

- (A) एक सिक्काक दू पहलू।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

६६४. भारतेन्दु हरिश्चन्द्रक कथन उद्धृत करबाक उद्देश्य की अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) निज भाषा उन्नतिक मूल अछि से प्रतिपादित करब।

६६५. मातृभाषाक माध्यमे शिक्षा नहि देलाक कारण जयकान्त मिश्रकेँ की अनुभूति छल?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) अपार कष्ट।

६६६. ओ प्राथमिक शिक्षा लेल कोन तरहक अभियान चलौलनि?

- (A) पृथक जन आन्दोलन।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

६६७. बिहार सरकारक उदासीनताक कारण हुनकर कोन स्वप्न साकार नहि भेल?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) मैथिली माध्यमे प्राथमिक शिक्षा।

६६८. जगन्नाथ मिश्र मुख्यमंत्री भेलापर जयकान्त मिश्र किएक आशान्वित भेलाह?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) मैथिली प्राथमिक शिक्षा नीति लागू होएबाक आशासँ।

६६९. मातृभाषा माध्यमे प्राथमिक शिक्षा नहि भेटलाक परिणाम की कहल गेल?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) नेना सभमे शिक्षाप्रति अरुचि आ विद्यालयसँ पलायन।

६७०. जयकान्त मिश्र एहि हेतु कोन-कोन उपाय कएलनि?

- (A) पदयात्रा, बैसार, प्रचार आ कानूनी लड़ाई तक।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

खण्ड ६९२ : विदेह-सदेह २ — जयकान्त मिश्र: १९६९ सम्मेलन, शिक्षा-तर्क आ निष्सारण

६७१. १९६९ मे मिथिला मण्डल मुम्बईक सम्मेलनमे मुख्य विचारणीय बिन्दु की छल?

- (A) मातृभाषाक माध्यमे प्राथमिक शिक्षा।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

६७२. शैशवावस्थामे मातृभाषा माध्यमक पहिल तर्क की अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) मस्तिष्कक विकास सहज-सुगम होइत अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

६७३. प्रजातंत्रक प्रथम शर्त लेखकक अनुसार की अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) जनमानसकें शिक्षित करब।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

६७४. मैथिली प्राथमिक शिक्षा अनिवार्य करबाक तर्क की अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई प्राचीनतम जीवित भाषा अछि आ बिहार-झारखण्डक अनेक जिलामे बाजल जाइत अछि।

६७५. सरकारक उदासीनताक कारण कोन मूल व्यवस्था नहि बनि सकल?

- (A) मैथिलीमे प्राथमिक पुस्तक आ अध्यापन।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

६७६. लेखमे बधिर/सुसुप्त सरकारकें जगएबाक उपाय की कहल गेल?

- (A) जनमत संग्रह आ सशक्त आन्दोलन।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

६७७. जयकान्त मिश्रक संघर्षकें लेखक कोन पौराणिक रूपकसँ जोड़ैत छथि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) दधीचि समान हड्डी गलौलक।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

६७८. हुनकर आलेखादि अहिले कोन स्थिति मे कहल गेल?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) यत्र-तत्र संग्रह आ पत्रिकामे धूलधूसरित।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

६७९. जयकान्त मिश्रक वास्तविक श्रद्धाञ्जलि की कहल गेल?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) हुनकर विचारादि संकलित कऽ प्रकाशित करब।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

६८०. सुनिता कुमार चटर्जी हुनका मैथिली लेल कोन रूपमे देखलनि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ग्रियर्सन पछाति भारतमे मैथिलीक महत्तम उपकारक।

खण्ड ६९३ : विदेह-सदेह २ — रमानन्द झा “रमण”: तन्त्रानाथ-सुभद्र जन्मशतवार्षिकीक परिप्रेक्ष्य

६८१. तन्त्रानाथ झा/सुभद्र झा जन्मशतवार्षिकी लेख के लिखल?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) डा. रमानन्द झा “रमण”।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

६८२. सुभद्र झाक “हम आगि...” कथनमे तन्त्रानाथकेँ की कहल गेल?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) प्रज्वलित कएनिहार बसात।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

६८३. राष्ट्रीय स्वाधीनता संग्रामक आगि संग मैथिली समाजमे की घनीभूत भेल?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) भाषा, साहित्य आ संस्कृतिक विकास-प्रचार-प्रसार-संरक्षणक चेतना।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

६८४. गत शताब्दीक पहिल दशक मैथिली लेल किएक महत्वपूर्ण कहल गेल?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) पत्र-पत्रिका सम्पादन-प्रकाशन आ अनेक अवदानी साहित्यकारक जन्मक कारण।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

६८५. मधुसूदन ओझा आ मुरलीधर झाक नाम किएक स्मरण कएल गेल?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) मैथिली पत्र-पत्रिका सम्पादन-प्रकाशनक आरम्भिक सन्दर्भमे।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

६८६. ओ दशकमे जनमल साहित्यकार सभ मैथिली भाषाक लेल की कएलनि?

- (A) मानकीकरण आ प्रतिमान-स्थापना।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

६८७. सरहपाद, ज्योतिरीश्वर आ विद्यापतिक भाषा कोन स्तर पर प्रतिष्ठित भेल?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) राष्ट्रीय-अन्तरराष्ट्रीय भाषा-कुलमे गरिमापूर्ण स्थान।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

६८८. एहि अवदानी पीढ़ीक ऊर्जा कोन दु उद्देश्य लेल छल?

- (A) साहित्य संवर्धन आ मातृभाषा अनुरागक भावी प्रवाह सुरक्षित करब।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

६८९. लेखक सुधी समाजक ध्यान सरिसब परिसर दिश किएक आकर्षित करैत छथि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) अनेक अवदानी साहित्यकारक सरिसब परिसर सँ सम्बन्ध रहल।

६९०. जन्मशतवार्षिकीक आयोजन किएक श्लाघ्य कहल गेल?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) महान अवदानी साहित्यकारक स्मरण प्रेरणास्पद अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

खण्ड ६९४ : विदेह-सदेह २ — तन्त्रानाथ झा आ सुभद्र झा: मित्रता, आन्दोलन आ पटना विश्वविद्यालय

६९१. तन्त्रानाथ झा आ सुभद्र झाक पारिवारिक पृष्ठभूमि कोना छल?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) भिन्न।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

६९२. दूनु व्यक्तित्वक अध्ययन-अध्यापन विषय कोना छल?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) भिन्न।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

६९३. दूनु मित्रक संयुक्त ताप केन बाटक ढेड जरौलक?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) पटना विश्वविद्यालयमे मैथिलीक स्वीकृतिक बाटक।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

६९४. दुर्गानाथ झा “श्रीश” तन्त्रानाथ झाकेँ कोन रूपमे देखैत छथि?

- (A) मैथिली साहित्यक सजग प्रहरी आ सिनेट सदस्य।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

६९५. सुभद्र झाक चतुर-प्रयासक परिणाम की बताओल गेल?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) तन्त्रानाथ झा सिनेटर निर्वाचित भेलाह।

६९६. लेखक कहैत छथि जे सुभद्र झाक सहयोग बिना की सम्भव नहि होइत?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) तन्त्रानाथ झाक सफल नेतृत्वक श्रेय।

६९७. तन्त्रानाथ झाक अवदान दू कोटिमे कोना बाँटल गेल?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) आन्दोलनात्मक आ साहित्य-सर्जना द्वारा संवर्धन।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

६९८. आन्दोलनात्मक काजक पहिल बिन्दु की अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) पटना विश्वविद्यालयक उच्चतर कक्षामे मैथिलीक स्वीकृति।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

६९९. शिक्षक समुदायक लेल संघर्ष किएक उल्लेखनीय अछि?

- (A) मातृभाषा आन्दोलनकेँ शिक्षक-अधिकार संग जोड़बाक कारण।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

७००. सरिसबमे कालेज स्थापना कोन अवदान-क्षेत्रमे अबैत अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) शिक्षाक क्षेत्रक विकास कार्य।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

खण्ड ६९५ : विदेह-सदेह २ — तन्त्रानाथ झा: साहित्य-सर्जना आ आन्दोलनक पूरकता

७०१. तन्त्रानाथ झा आ सुभद्र झा मैथिलीक अधिकार-संघर्षकेँ कोना देखैत छलाह?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) अध्यापन वा साहित्य-सर्जनासँ अलग नहि, पूरक रूपमे।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

७०२. व्यक्ति-केंद्रित मानसिकताक विपरीत लेख कोन आदर्श रखैत अछि?

- (A) साहित्य-सर्जना आ भाषा-आन्दोलनक संयुक्त सक्रियता।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

७०३. कांचीनाथ झा “किरण”क नाम आदर सँ किएक लेल गेल?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) साहित्य-सर्जना आ जागरण-अभियानमे सक्रियताक कारण।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

७०४. सरकारी सुविधा रहितो मैथिली प्राध्यापक/साहित्यकारक सामाजिक स्वीकार्यता किएक हासोन्मुख कहल गेल?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) सामाजिक संलग्नता आ आन्दोलनशीलता घटबाक कारण।

७०५. कौंकणी लेखक आर. केलकरक उदाहरण किएक देल गेल?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) भाषा बचाबए साहित्यकार, भाषाविद आ राजनीतिज्ञ बनबाक क्रम देखाबए।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

७०६. तन्त्रानाथ झाक व्यक्तित्वसँ कोन प्रेरणा लेबाक कहल गेल?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) आजीविकाक विषय भिन्न रहलो पर मातृभाषा सेवा सम्भव अछि।

७०७. हरिमोहन झाक उदाहरण किएक अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) दर्शनशास्त्र पढ़ि-पढ़ौला पर मैथिलीमे लिखबाक कारण।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

७०८. जयकान्त मिश्र आ उमानाथ झाक उदाहरण की बतबैत अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) अंग्रेजी पढ़ि-पढ़ौलनि मुदा मैथिलीक भंडार भरलनि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

७०९. प्रबोधनारायण सिंहक उदाहरण कोन भाव दैत अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) हिन्दी पढ़ि-पढ़ौला पर आजीवन मैथिलीक प्रति समर्पण।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

७१०. सम्प्रति स्थितिबारे लेखकक दुख की अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) आन विषयक मैथिल प्राध्यापक मैथिली पढ़बा-लिखबामे अरुचि राखैत छथि।

खण्ड ६९६ : विदेह-सदेह २ — तन्त्रानाथ झा: साहित्य-सर्जना, कीचकबध आ प्रयोगशीलता

७११. तन्त्रानाथ झाक सर्जनात्मक प्रतिभाक पृष्ठभूमिमे कोन प्रभाव मानल गेल?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) मातृकुलक पाण्डित्य आ साहित्य-सर्जनाक परम्परा।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

७१२. तात्कालिक प्रेरक रूपमे के उल्लिखित छथि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) अग्रज आचार्य रमानाथ झा।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

७१३. “कीचक बध” कोन आदर्शपर लिखल गेल?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) माइकेल मधुसूदन दत्तक “मेघनाद बध”क आदर्शपर।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

७१४. कोनो कविक पहिल कृति उच्च कलात्मक होएब लेखकक अनुसार की सूचित करैत अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) असामान्य प्रतिभा।

७१५. तन्त्रानाथ झाक साहित्य-सेवा कोन दू क्षेत्रमे अछि?

- (A) गद्य आ पद्य दुनू।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

७१६. हुनकर महाकाव्य-द्वय कोन अछि?

- (A) “कीचक बध” आ “कृष्णचरित”।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

७१७. कविता-संग्रह सभमे कोन-कोन नाम अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) “मंगलपंचाशिका”, “नमस्या” आ “कीर्ण-विकीर्ण”।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

७१८. गद्य रचना क्षेत्रमे कोन विधासभक उल्लेख अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) एकांकी, निबन्ध, ललित निबन्ध, संस्मरण, कथा, बाल-कथा।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

७१९. मिथिलाक्षर प्रचार लेल ओ की कएलनि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) अपन हाथेँ किछु कथा लिखि लिथो कराए प्रकाशित करौलनि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

७२०. “कीचकबध”क शिल्पगत प्रयोग की कहल गेल?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) मुक्त-वृत्त आ सरल भाषा द्वारा नव श्रीगणेश।

खण्ड ६९७ : विदेह-सदेह २ — तन्त्रानाथ झा: व्यंग्य, जड़ता-भंग आ नारी-सशक्तीकरण

७२१. तन्त्रानाथ झा कतेक अर्थमे प्रयोगशील रचनाकार कहल गेलाह?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) कथ्य आ शिल्प दूनू वर्गमे जड़ता तोड़बाक कारण।

७२२. मैथिली कथाक शिल्प सम्बन्धी जड़ता तोड़बाक प्रसंगमे केकर नाम आयल?

- (A) प्रो. उमानाथ झा “रेखाचित्र”क माध्यमे।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

७२३. तन्त्रानाथक साहित्यक सामाजिक प्रहार ककर विरुद्ध अछि?

- (A) कुरीति, आडम्बर आ अन्धविश्वास।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

७२४. एहि प्रहारक शिल्प कोना कहल गेल?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) व्यंग्यात्मक।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

७२५. सोमदेवक पंक्ति तन्त्रानाथक व्यंग्यबारे की कहैत अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) व्यंग्यधार तेज चोंच जेकाँ अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

७२६. चित्रलेखा देवीक मन्तव्य तन्त्रानाथबारे की देखबैत अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ओ पोथी, गीत-कविता लिखि मैथिल समाजकेँ उठौलनि।

७२७. नारी-सशक्तीकरणक उदाहरण कोन पात्रक चरित्रांकनमे भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) द्रुपद-सुता/द्रौपदी।

७२८. “अबला, भीरु...” विचारक अर्थ की अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) द्रुपद-सुताक भीतर आत्मप्रश्न आ साहस जागब।

७२९. “शार्दूली की कखनहु पाबए त्रास?” भाव की सूचित करैत अछि?

- (A) नारीक निर्भीक आत्मबल।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

७३०. तन्त्रानाथ स्त्री-शिक्षाबारे की मानैत छथि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) समाजक अर्धाशकें अशिक्षित राखि उन्नति सम्भव नहि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

खण्ड ६९८ : विदेह-सदेह २ — सुभद्र झा: अल्प-लोकप्रियता, कठिन भाषा-विज्ञान आ संरक्षण-संकट

७३१. लेखक कहैत छथि सुभद्र झा तन्त्रानाथ झा जकाँ सौभाग्यशाली किएक नहि रहलाह?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) हुनक प्रकाशित-अप्रकाशित साहित्य आजुक पाठक लेल सुलभ नहि भऽ सकल।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

७३२. पहिल प्रमुख कारण की देल गेल?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) हुनक कार्य-क्षेत्र कठिन भाषा-विज्ञान छल।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

७३३. भाषाविज्ञानक कठिनतासँ शिष्य-परम्परा पर की प्रभाव पड़ल?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) गुरुक वैदुष्यक प्रचार, खंडन-मंडन आ संकलन कठिन भेल।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

७३४. सुभद्र झाक “हम आगि छी” रूपकक अर्थ लेखक कोना खोलैत छथि?

- (A) आगिक जरूरत सभकेँ, मुदा पकबाक डरसँ केओ छूबैत नहि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

७३५. दोसरा कारणमे सुभद्र झा कोन रूपमे वर्णित छथि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) भाषाविद, शास्त्र-मर्मज्ञ, देश-विदेशमे आदरित विद्वान।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

७३६. ओ कविता, कथा, नाटक, उपन्यास आदि नहि लिखलनि — एहि कारण का भेल?

- (A) सामान्य पाठकक लोकप्रिय रचनाकार नहि बनि सकलाह।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

७३७. मंचपर हास्य-व्यंग्य न करबाक प्रभाव की रहल?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) श्रोता-दर्शकक आकर्षणक केन्द्र नहि बनलाह।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

७३८. तेसर कारण की देल गेल?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) संतानमे कृतिक संरक्षण-प्रचार प्रति अभिरुचिक अभाव।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

७३९. हुनकर प्रकाशित रचना दुर्लभ किएक भेल?

- (A) संरक्षण आ प्रचारक अभावसँ।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

७४०. सुभद्र झाक जनसुलभता-संकटक निचोड़ की अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) सुभद्र झाक महत्ता अत्यन्त, मुदा कठिन विषय, अमंचीयता आ संरक्षण-अभावसँ जनसुलभता सीमित रहल।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

खण्ड ६९९ : विदेह-सदेह २ — सुभद्र झा: भाषा-विज्ञान, विद्यापति गीत आ यात्रा-साहित्य

७४१. सुभद्र झाक प्रकाशित पहिल उपलब्ध रचनामे लेखक कोन लेख देखलनि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) “मैथिली भाषाक उत्पत्ति”।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

७४२. “मैथिली भाषाक उत्पत्ति” सुभद्र झाक कोन गुण देखबैत अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) गंभीर अध्ययन।

७४३. “मैथिलीमे संख्यावाचक शब्द ओ विशेषण” कोन मूल-गोत्रक रचना कहल गेल?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) भाषा-विज्ञानक।

७४४. The Formation of The Maithili Language के निर्देशनक क्रम की रहल?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) आरम्भ ए. बनर्जी शास्त्रीक अधीन, समाप्त सुनीति कुमार चटर्जी अधीन।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

७४५. सुभद्र झाक रचना-दू कोटिमे पहिल की अछि?

- (A) मैथिली भाषा सम्बन्धी अंग्रेजीमे लिखित साहित्य।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

७४६. The Formation of The Maithili Language क विशेषता की अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) हुनकर शोध-प्रबन्ध, जाहिपर डी.लिट उपाधि भेटल।

७४७. The Songs of Vidyapati मे की अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) नेपाल स्रोताधारित विद्यापतिक २६२ गीत, भाषावैज्ञानिक विश्लेषण आ अंग्रेजी अनुवाद।

७४८. “विद्यापति-गीतसंग्रह”मे कतेक गीत अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ३७० गीत।

७४९. सुभद्र झाक विदेश-यात्रा वर्णनक दू पुस्तक कोन अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) “प्रवास जीवन” आ “यात्रा प्रकरण शतक”।

७५०. फ्रांसमे ओ कोन विषयसभक विशेष अध्ययन कएलनि?

- (A) अर्थवेदक पैप्लाद, आधुनिक भाषा-विज्ञान आ ध्वनि-विज्ञान।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

खण्ड ७०० : विदेह-सदेह २ — सुभद्र झा: महत्त्व, अन्तरराष्ट्रीयता आ मातृभाषा-हित

७५१. सुभद्र झासँ पूर्व मैथिली भाषाक अध्ययन के-के कएलनि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) किछु विदेशी आ भारतीय भाषाविद।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

७५२. सुभद्र झाक भाषावैज्ञानिक महत्त्व की अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) मैथिली भाषाक गम्भीर, विस्तृत वैज्ञानिक विश्लेषण।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

७५३. विद्यापति गीतक भाषा-शास्त्रीय विवेचन आ अंग्रेजी अनुवादसँ की भेल?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) विद्यापति गीतक महत्व अन्तरराष्ट्रीय पाठकक समक्ष आयल।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

७५४. सुभद्र झा मैथिली यात्रा-साहित्यमे कोन स्थान राखैत छथि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) विदेश-यात्रा साहित्यक पहिल लेखक।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

७५५. “नातिक पत्रक उत्तर”क प्रकृति की कहल गेल?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) भाषा-आन्दोलनक विचार प्रधान इतिहास सन।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

७५६. “प्रवास जीवन” आ “यात्राप्रकरण शतक”मे हुनकर कोन भाव देखाइत अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) राष्ट्रीय भावना आ मिथिला-मैथिल-मैथिलीक प्रेम।

७५७. पेरिस प्रसंगमे दर्शक सभ हुनका केकरा बुझि आकर्षित भेल?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) डा. एस. राधाकृष्णन।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

७५८. सुभद्र झाक विद्वत् व्यक्तित्वक गुण-सूचीमे की-की अबैत अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) प्राच्यविद्या, भाषाविज्ञान, अनुवाद, सरलता, शोध-निर्देशन, निरअहंकारिता।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

७५९. मैथिलीकें भारोपीय कुलक स्वतंत्र भाषा सिद्ध करबामे हुनकर भूमिका की अछि?

- (A) पर्याप्त सामग्री आ तर्क विश्व समुदाय समक्ष रखलनि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

७६०. पटना विश्वविद्यालयमे मैथिली स्वीकृति हेतु ओ की कएलनि?

- (A) प्रतिकूल केँ अनुकूल बनबैत लोकक सङोर कएलनि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

खण्ड ७०१ : विदेह-सदेह २ — तन्त्रानाथ-सुभद्र: जन्मशती लेखक समेकित संदेश

७६१. रमानन्द झा “रमण”क लेखक मूल प्रयोजन की बुझाईत अछि?

- (A) दू विभूतिक स्मरणसँ मैथिली समाजकेँ प्रेरित करब।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

७६२. तन्त्रानाथ झा आ सुभद्र झा दूनूक संयुक्त उपलब्धि कोन क्षेत्रमे सर्वाधिक उजागर अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) मैथिली स्वीकृति आ मातृभाषा-संरक्षण।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

७६३. तन्त्रानाथ झा मुख्यतः कोन रूपमे अधिक जनसुलभ छथि?

- (A) सर्जक, आन्दोलनकारी आ संस्थान-निर्माता।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

७६४. सुभद्र झा मुख्यतः कोन रूपमे विशेष प्रतिष्ठित छथि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) भाषाविद आ अंतरराष्ट्रीय विद्वान।

७६५. दूनू विभूति मैथिली समाजक लेल कोन साझा आदर्श राखैत छथि?

- (A) मातृभाषा लेल समर्पित बौद्धिक कर्म।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

७६६. लेख आधुनिक मैथिल प्राध्यापक आ साहित्यकार पर कोन अप्रत्यक्ष प्रश्न उठबैत अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) की ओ सभ मातृभाषा-सेवामे सामाजिक रूपेँ सक्रिय छथि?
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

७६७. जन्मशती स्मरणक श्रेष्ठ उपयोग की अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) केवल श्रद्धांजलि नहि, कार्य-दिशाक पुनरारम्भ।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

७६८. तिरहुता, विश्वविद्यालय-मान्यता, भाषा-विज्ञान, नाटक — एहि सभक सम्मिलित अर्थ की अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) मैथिली अस्मिताक बहुआयामी संरक्षण।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

७६९. दूनु व्यक्तित्वक प्रेरणा ककरा लेल अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) मातृभाषानुरागी वर्तमान आ भावी पीढ़ी लेल।

७७०. तन्त्रानाथ-सुभद्र जन्मशती लेखनक सार की अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) तन्त्रानाथ-सुभद्र स्मरण मैथिली पुनर्जागरणक कर्म-संकल्पक पाठ अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

खण्ड ७०२ : विदेह-सदेह २ — तन्त्रानाथ झा: मिथिलाक्षर, अनुवाद आ असंकलित शोध

७७१. तन्त्रानाथ झाक मिथिलाक्षर सम्बन्धी काज कथा-दृष्टिसँ मात्र नहि, कोन दृष्टिसँ महत्वपूर्ण कहल गेल?

- (A) सांस्कृतिक सम्पदा आ लिपि-संरक्षण दृष्टिसँ।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

७७२. ओ “कीर्तिलता” आ “हितोपदेश”क संग की कएलनि?

- (A) किछु अंशक भाषा-अनुवाद।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

७७३. “हेमलेट”, “मालती-माधव” आ “रत्नावली”सँ संबंधित हुनकर काज की छल?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) गद्य मे नाट्यसार लिखि प्रकाशित करब।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

७७४. हिनक गद्यबारे लेख की कहैत अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) विलक्षण गद्यक दर्शन होइत अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

७७५. रविनाथकृत रौंदी-वर्णन सम्बन्धी निबन्ध कतेक सालक रौंदी पर आधारित कहल गेल?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) सन १३०४ सालक रौंदी।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

७७६. “सन्तकवि रामदास” कोन प्रकारक निबन्ध-सूचीमे उल्लिखित अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) अनुसंधान-परक निबन्धमे।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

७७७. Vishnu Puri: The Maithil Vaishnav Savant क उल्लेख की बतबैत अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) मैथिल वैष्णव परम्परा पर अंग्रेजी/शोधपरक रुचि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

७७८. Adventures of Maithil Pandits मे किनकर प्रसंग देल गेल?

- (A) सचल मिश्र आ मोहन मिश्र।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

७७९. तन्त्रानाथक असंकलित निबन्ध स्थितिबारे लेखकक संकेत की अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ओ पत्र-पत्रिकामे छपल, मुदा संकलित नहि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

७८०. तन्त्रानाथ झाक शोध-अनुवाद अवदानक सार की अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) तन्त्रानाथ झा कवि मात्र नहि, शोधक, अनुवादक, गद्य-शिल्पी आ लिपि-संरक्षक छथि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

खण्ड ७०३ : विदेह-सदेह २ — सुभद्र झा: अनुवाद, फ्रेंच-जर्मन अधिकार आ अप्रयुक्त ज्ञान-राशि

७८१. सुभद्र झा किन-किन भाषाक ज्ञाता कहल गेलाह?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी, फ्रेंच आ जर्मन।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

७८२. ओ जर्मन आ फ्रेंचमे लिखित पोथीक अनुवाद कोन भाषासभमे कएलनि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) हिन्दी आ अंग्रेजीमे।

७८३. Grammar of the Prakrit Language केर अनुवादक रूपमे किनकर नाम देल गेल?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) सुभद्र झा।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

७८४. History of Indian Literature क अनुवाद-प्रसंग की देखबैत अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) भारतीय साहित्य-इतिहासक यूरोपीय विद्वता सँ संवाद।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

७८५. Abhidharmakosa सम्बन्धी अनुवादमे हुनक भूमिका की अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) चीनीसँ फ्रेंचकृत व्याख्यायुक्त पाठ केँ अंग्रेजीमे रूपान्तर।

७८६. Descriptive Catalogue of Sanskrit Manuscripts क उल्लेख की बतबैत अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) संस्कृत पाण्डुलिपि-विज्ञानमे हुनकर काज।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

७८७. लेखक “एहि विद्वता एवं ज्ञानराशिक फलसँ मैथिली वंचित रहि गेल” किएक कहैत छथि?

- (A) बहुत काज मैथिलीमे उपलब्ध/सुलभ नहि भऽ सकल।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

७८८. सुभद्र झाक अनुसन्धानरत रूप कोना चित्रित अछि?

- (A) सदिखन अनुसन्धानरत शोध-निर्देशक।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

७८९. सामान्यक बीच सामान्य आ विद्वानक बीच विद्वान कहलाक अर्थ की अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) विद्वता आ सरलता एकसंग।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

७९०. सुभद्र झाक बहुभाषी अनुवाद-अवदानक सार की अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) सुभद्र झा बहुभाषी, अनुवादक, पाण्डुलिपि-विद आ शोध-गुरु छलाह, जिनकर ज्ञान मैथिली लेल अझ अधिक सुलभ होएबाक चाही।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

खण्ड ७०४ : विदेह-सदेह २ — जयकान्तसँ तन्त्रानाथ-सुभद्र धरि: भाषा-संस्था-शोधक साझा पाठ

७९१. जयकान्त मिश्र आ तन्त्रानाथ झा दूनूक काजमे कोन साझा बिन्दु अछि?

- (A) मातृभाषा लेल संस्था, आन्दोलन आ साहित्यक मेल।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

७९२. जयकान्त मिश्र आ सुभद्र झा दूनू मैथिलीकेँ कोना प्रतिष्ठित करैत छथि?

- (A) शोध, इतिहास आ भाषावैज्ञानिक तर्कद्वारा।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

७९३. तिरहुता लिपि आ मातृभाषा शिक्षा प्रसंग एकसंग की बतबैत अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) भाषिक अस्मिताक आधार लिपि आ शिक्षा दुनू अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

७९४. साहित्य अकादेमी विवाद आ कीर्त्तनिजा विवाद की सिद्ध करैत अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) मैथिली आलोचनामे मतभेद आ शोध-विवादक जीवन्त परम्परा।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

७९५. तन्त्रानाथक स्त्री-शिक्षा विचार आ जयकान्तक प्राथमिक शिक्षा आन्दोलनमे साझा भाव की अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) शिक्षा बिना समाजोन्नति नहि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

७९६. सुभद्र झाक अन्तरराष्ट्रीय भाषाशास्त्र आ जयकान्तक आन्दोलन-दृष्टि मिलि की करैत अछि?

- (A) मैथिलीक स्वतंत्रता लेल भीतर-बाहर दुनू प्रमाण जुटबैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

७९७. रमानन्द झाक लेखमे पूर्वज स्मरणक अर्थ की अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) वर्तमान पीढ़ीकेँ दायित्व याद करब।

७९८. मैथिली धरोहरक संकट कोन-कोन रूपमे उभरैत अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) लिपि-विस्मरण, असंकलित लेखन, सरकारी उदासीनता आ जन-अरुचि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

७९९. एहि बैचमे समेटल पाठक मुख्य शैक्षिक निष्कर्ष की अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) भाषा-साहित्यक अध्ययन संस्थागत, लोकाधारित आ शोधसमर्थ तीनू होएबाक चाही।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

८००. एहि खण्डक अंतिम सार की अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) जयकान्त, तन्त्रानाथ आ सुभद्र—तीनू मैथिली पुनर्जागरणक अलग-अलग मुद्रा परस्परपूरक स्तम्भ छथि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

खण्ड ७०५ : विदेह-सदेह २ — श्यामसुन्दर शशि: “आह उमा! वाह उमा!” प्रथम भेंट

८०१. लेखक उमा सिंहसँ पहिल भेंट कोन प्रसंगमे भेल?

- (A) रेडियो टुडेक कार्यक्रम संचालक आ समाचार वाचकक छनौट प्रक्रियामे।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

८०२. पहिल भेंटक समय परीक्षक-दलमे लेखकक भूमिका की छल?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ओ परीक्षकक रूपमे छलाह।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

८०३. उमा सिंहक बाह्य रूप-वर्णनमे लेखक कोन बात पर बल दैत छथि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) सादगी, मेकअप-विहीन चमकैत मुख आ साधारण पहिरन।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

८०४. उमा सिंहक देह-यष्टि लेखककेँ की संकेत दैत छल?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ओकर भीतरक पीड़ा।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

८०५. उमा सिंह ओ समय कोन शैक्षिक अवस्थामे छलीह?

- (A) स्नातकक अंतिम वर्षक परीक्षाक बाद व्यावसायिक जीवनमे प्रवेश चाहैत छलीह।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

८०६. संचार क्षेत्रसँ उमा सिंहक सम्बन्ध पहिने कोना रहल छल?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) छापा आ विद्युतीय संचारक तालिम, सभा, सेमिनार आदिमे सहभागितासँ।

८०७. उमा सिंहक सपना की कहल गेल?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) रेडियोक लेल समाचार संकलन आ मैथिलीमे समाचार वाचन।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

८०८. लेखक कहैत छथि जे अवसर उमाकेँ कोना भेटल?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) दयासँ नहि, अपन प्रतिभाक बलपर।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

८०९. प्रतिस्पर्धिसभ मध्य उमा सिंहके लेखक कोना आँकलनि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) सर्वोत्तम।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

८१०. एहि प्रथम-भेंट प्रसंगक मूल भाव की अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) एक संभावनाशील मैथिली पत्रकारक उदय।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

खण्ड ७०६ : विदेह-सदेह २ — उमा सिंह: मैथिली समाचार, प्रशिक्षण आ भाषा-शुद्धि

८११. माओवादी द्वारा पिता-भैयाक बेपत्ता बनलाक बाद उमा किएक संचारक्षेत्रमे आएल होएबाक अनुमान अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) अपन बात कहबाक लेल।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

८१२. चयनक बाद उमाकेँ कोन अवसर भेटल?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) रेडियो टुडेमे समाचार-संबंधी काज करबाक।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

८१३. लेखकक अनुसार उमा सिंहक प्रमुख गुणसभ कोन-कोन छल?

- (A) अध्ययनशीलता, मेहनत, निर्भीकता आ पेसाप्रति निष्ठा।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

८१४. लेखक कतबा समय धरि उमासँ तालिम आ काजक सम्बन्धमे रहलाह?

- (A) एक महिना तालिम आ करीब नौ महिना काज।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

८१५. कतार प्रवासक दौरान लेखकक उमासँ सम्पर्क कोना रहैत छल?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) इंटरनेट मार्फत बात-चीत।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

८१६. उमाक एक उलहन लेखककेँ की रहैत छल?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) लेखक गेलाक बाद भाषा-शुद्धि देखए वाला नहि अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

८१७. भाषा-शुद्धि सम्बन्धी उलहनसँ उमाक कोन गुण प्रकट होइत अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) मैथिली समाचार-वाचनमे भाषिक अनुशासनक आग्रह।

८१८. लेखक जनकपुरक मित्रसँ कोन प्रकारक समाचार सुनलनि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) उमासिंहक हत्या सम्बन्धी अशुभ समाचार।

८१९. लेखक उमाकेँ कोन रूपकसँ स्मरण करैत छथि?

- (A) नीकसँ फुलबासँ पहिनहि निचोड़ि देल गेल फूल।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

८२०. एहि खण्डक मुख्य अर्थ की अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) उमा सिंह भाषिक सजगता आ पेशागत साहसक प्रतीक छलीह।

खण्ड ७०७ : विदेह-सदेह २ — उमा सिंह: पारिवारिक त्रासदी, धमकी आ हत्या

८२१. उमा सिंहक पिता आ भैयाकेँ कोन घटना भेल छल?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) माओवादी कार्यकर्तासभ सिरहासँ अपहरण कऽ बेपत्ता बनौने छल।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

८२२. पिता आ भैयाक बेपत्ता भेला पछाति घरक जिम्मेवारी केकरा पर आयल?

- (A) उमा सिंह पर।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

८२३. उमा विवाह किएक नहि कएने छलीह कहल गेल?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) पारिवारिक जिम्मेवारीक कारण।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

८२४. पिता-भैयाक मुक्ति लेल उमा कोन स्तर पर गुहार करैत छलीह?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) राष्ट्रीय आ अन्तरराष्ट्रीय निकायसभमे।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

८२५. सिरहामे रहिते उमा किएक असुरक्षित छलीह?

- (A) बार-बार धमकी भेटैत छल।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

८२६. जनकपुरमे उमा कतय रहैत छलीह?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) रजौल स्थित एक साथीक घरमे भाड़ापर।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

८२७. हतियारधारी समूह उमापर कोन प्रकारक आक्रमण कएलक?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) अंधाधुंध खुकुरी प्रहार।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

८२८. उमाक मृत्यु कतय जाइत काल भेल कहल गेल?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) उपचारार्थ काठमाण्डू लऽ जाइत काल बाटेमे।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

८२९. हत्या सम्बन्धी प्रारम्भिक अनुमान की छल?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) समाचारक विषय लऽ कऽ हत्या भेल होएबाक।

८३०. नेपालमे हत्या कएल गेल उमा सिंहक ऐतिहासिक स्थिति की कहल गेल?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) नेपालमे मारल गेल पहिल महिला पत्रकार।

खण्ड ७०८ : विदेह-सदेह २ — “आह उमा! वाह उमा!” बलिदान, कलम आ श्रद्धा

८३१. लेखक वर्तमान सरकारसँ दोषी-दण्ड पर की अपेक्षा व्यक्त करैत छथि?

- (A) सम्भावना बहुत न्यून मानैत छथि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

८३२. उमा सिंहक बलिदान बेकार नहि जाएत — एकर आधार लेखक की देलनि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) कलमक धार अवरुद्ध करयवाला कहियो जीवित नहि रहल।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

८३३. लेखक सैनिकक शहादत आ उमाक मृत्युकेँ कोना जोड़ैत छथि?

- (A) देशहितमे प्राण देनिहार सैनिक जकाँ पत्रकारिता-धर्मक बलिदान।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

८३४. उमाकेँ “सौभाग्यशाली” कहबाक भाव की अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) समाचार लिखबाक-पढ़बाक कारण प्राण देलनि।

८३५. लेखक उमाकेँ कोन सम्बोधन दैत छथि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) वीराङ्गना।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

८३६. “दुनियाभरिक कलमजीवी सभक मनमानसमे रहव” कथनक आशय की अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) उमा पत्रकारिता-स्मृतिक सार्वदेशिक प्रतीक बनि रहथु।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

८३७. लेखक अन्तमे ककर पंक्ति द्वारा श्रद्धासुमन व्यक्त करैत छथि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) डा. धीरेन्द्रक पंक्ति द्वारा।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

८३८. “नोरक टघारेसँ जीवन...” पंक्ति सभ कोन भाव व्यक्त करैत अछि?

- (A) दुखक बीच आशा आ संघर्षमे जीतक विश्वास।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

८३९. उमा सिंहक प्रसंगमे “आह” आ “वाह” दुनू किएक सार्थक अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) शोक आ गौरव एक साथ।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

८४०. एहि श्रद्धांजलिक मुख्य संदेश की अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) पत्रकारिताक हत्या संभव अछि, मुदा कलमक प्रतिरोध नष्ट नहि होइत।

खण्ड ७०९ : विदेह-सदेह २ — “नमन गुरुदेव”: स्मृतिसभा, पूजा आ आदर्श

८४१. “नमन गुरुदेव” लेखमे गुरुदेव के छथि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) डा. धीरेश्वर झा “धिरेन्द्र”।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

८४२. गुरुदेवक कतेक स्मृतिसभाक उल्लेख अछि?

- (A) छठम।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

८४३. मिथिला नाट्यकला परिषद् हुनका किएक स्मरण कएलक?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) हुनकर प्रेरणासँ जन्मग्रहण कएने संस्था हेबाक कारण।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

८४४. लेखक मंचीय स्मरण आ मौन स्मरणक तुलना कोना करैत छथि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) देवता-पूजा मोने-मोन सेहो सम्भव अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

८४५. असली पूजा लेखकक अनुसार की अछि?

- (A) देवताक देखाओल बाटपर चलब आ आदर्श पालन।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

८४६. घोषणासभक सम्बन्धमे लेखकक चिन्ता की अछि?

- (A) ई देखबाक अछि जे घोषणा कार्यरूपमे आबैत अछि कि नहि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

८४७. लेखक गुरुदेवकेँ “चटिसारक अंतिम प्राचार्य” कहिते किएक सचेत छथि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) एहि कथनपर समकालीन कलमजीवी आपत्ति कऽ सकैत छथि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

८४८. “चटिसार” रूपकक मूल अर्थ की अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) गुरु-केंद्रित अध्ययन-परम्परा।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

८४९. लेखक स्मरणक स्वर ककर विरुद्ध राखैत छथि?

- (A) केवल भाषण-भूषण आ निष्प्रभावी घोषणा विरुद्ध।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

८५०. एहि खण्डक मुख्य बात की अछि?

- (A) गुरुदेवक स्मरण आदर्शक कर्मरूप पुनर्जीवनसँ पूर्ण होइत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

खण्ड ७१० : विदेह-सदेह २ — गुरुदेव धिरेन्द्र: एम.ए. पहिल बैच आ जनकपुर चटिसार

८५१. राराव क्याम्पसमे मैथिली एम.ए. क पढ़ाई कोन प्रयाससँ शुरू भेल कहल गेल?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) गुरुदेवक भागिरथी प्रयाससँ।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

८५२. राराव क्याम्पसमे मैथिलीक बाद कोन विषयसभमे स्नातकोत्तर पढ़ाई शुरू भेल?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) राजनीति शास्त्र, अर्थशास्त्र आदि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

८५३. मैथिली एम.ए. पहिल बैचक विद्यार्थीसभ कोना वर्णित छथि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) पहिने सँ अपन-अपन मुकाम पर स्थापित धुरंधर व्यक्तित्व।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

८५४. पहिल बैचक अधिकांश विद्यार्थी कोन कारणे भोरमे पढ़ैत छलाह?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ओ सभ नोकरियाहा छलाह।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

८५५. कक्षा कतय प्रायः संचालित होइत छल?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) गुरुदेवक घरे।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

८५६. कक्षा-परिसरमे चाह-पानक प्रसंग की देखबैत अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) गुरु-शिष्यक आत्मीय घरेलू वातावरण।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

८५७. लेखक स्वयं ओहि वातावरणमे कोन काजक उल्लेख करैत छथि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) चाह-पान लाभएमे परेसान रहब।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

८५८. भाषा-विज्ञानक कापी तैयार करैत समय गुरुदेव किनक राय लैत छलाह?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) जानकी बाबू आ विमलसरक।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

८५९. लेखकक अनुसार ओहि कापीक आजो की उपयोगिता रहल?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) विद्यार्थीसभ परीक्षामे पास करैत छथि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

८६०. गुरुदेवकें “अंतिम प्राचार्य” कहबाक आधार की अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ओहन जीवित गुरु-केंद्रित चटिसार एखन नहि चलैत अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

खण्ड ७११ : विदेह-सदेह २ — गुरुदेव धिरेन्द्र: सर्जक ब्रह्मा, विधा-विभाजन आ नेपालीय मैथिली

८६१. लेखक गुरुदेवकें केवल साहित्यकार नहि, आओर की कहैत छथि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) साहित्यकार सृजना करएबला ब्रह्मा।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

८६२. महेन्द्र मलंगियाक सम्बन्धमे गुरुदेवक अवदान की कहल गेल?

- (A) नाटक लिखबाक प्रेरणा आ सीख दुनू देलनि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

८६३. रेवती रमणलालकें गुरुदेव कोन जिम्मेवारी देलनि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) रिपोर्ट लिखबाक।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

८६४. रामभरोस कापड़िकें कोन क्षेत्र दिस प्रेरित कएल गेल?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) कविता आ गीत।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

८६५. भुवनेश्वर पाथेयकै कोन रचनात्मक जिम्मेवारी देल गेल?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) कविता आ कथा।

८६६. ई जिम्मेवारी-विभाजनक पाछाँ लेखक कोन उद्देश्य मानैत छथि?

- (A) नेपालीय मैथिलीमे सभ विधामे रचना हो।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

८६७. “नेपालीय मैथिली साहित्य” नामकरणक श्रेय किनका देल गेल?

- (A) गुरुदेव डा. धिरेन्द्रकै।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

८६८. लेखक गुरुदेवसँ कोन प्रेरणा माँगैत छथि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) जनकपुरमे फेर गुरुकुल परम्परा चलय।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

८६९. आज मैथिलसभकै लेखकीय सृजनसँ बेसी कोन आवश्यकता कहल गेल?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) अधिकारक आवश्यकता।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

८७०. गुरुदेवक उद्धृत पंक्तिमे मूल संघर्ष-बोध की अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) कठिन युद्ध लड़ेब आ जीत निश्चित मानब।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

खण्ड ७१२ : विदेह-सदेह २ — नवेन्दु कुमार झा: चेतना समितिक चुनाव

८७१. चेतना समितिक वार्षिक आम सभामे कोन अवधिक लेल नव पदाधिकारीक चुनाव भेल?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) २००९-११क लेल।

८७२. निर्वाचनमे कोन पद छोड़ि आन पदाधिकारी निर्विरोध चुनल गेलाह?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) उपाध्यक्ष।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

८७३. निर्वर्तमान अध्यक्ष विजय कुमार मिश्रक परिणाम की भेल?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ओ पुनः अध्यक्ष बनलाह।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

८७४. सचिव पदपर के निर्वाचित भेलाह?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) विवेकानन्द ठाकुर।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

८७५. उपाध्यक्षक तीन पदक लेल के-के निर्वाचित घोषित भेलाह?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) प्रेमकान्त झा, प्रमीला झा आ पुरुषोत्तम झा।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

८७६. संयुक्त सचिव पदपर के-के बनाओल गेलाह?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) मधुकान्त झा, सत्यनारायण मेहता आ प्राणमोहन मिश्र।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

८७७. कोषाध्यक्ष पदपर के बनलाह?

- (A) योगेन्द्र नारायण मल्लिक।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

८७८. संगठन सचिव पदपर के नियुक्त भेलाह?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) जगत नारायण चौधरी।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

८७९. प्रचार सचिव पदपर के बनलाह?

- (A) सुरेन्द्र नारायण यादव।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

८८०. एहि समाचारक मुख्य प्रकृति की अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) मिथिलांचलक प्रतिनिधि सामाजिक संस्थाक संगठनात्मक अद्यतन।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

खण्ड ७१३ : विदेह-सदेह २ — भाषाई अकादमीक विकास: सरकारक डेग

८८१. बिहारक भाषाई अकादमीसभक तत्कालीन स्थिति कोना कहल गेल?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) बदहाली आ स्थायी ठेकानक अभाव।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

८८२. कोन भाषाई अकादमीसभक नाम उदाहरणस्वरूप आयल?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) मैथिली, मगही, भोजपुरी, संस्कृत, बंगला आ दक्षिण भारतीय भाषा अकादमी।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

८८३. एहि संस्थानसभ कोन विभागक नियंत्रणाधीन कहल गेल?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) मानव संसाधन विकास विभाग।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

८८४. ब्लू-प्रिन्टमे कोन मुख्य काजसभ प्रस्तावित छल?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) शोध, पाण्डुलिपि प्रकाशन आ पुस्तक-बिक्री व्यवस्था।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

८८५. अकादमीसभकें कोना संगठित करबाक प्रयास वर्णित अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) एक छत/एक परिसरमे अनबाक।

८८६. कौन-कौन स्थान चयन-विचारमे आयल?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् परिसर आ नजदीकक संस्कृत विद्यालयक खाली जमीन।

८८७. सरकारक पहिल प्राथमिकता की कहल गेल?

- (A) आधारभूत संरचनाक विकास।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

८८८. प्रकाशित पुस्तकक बिक्री व्यवस्थाक उद्देश्य की छल?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) अकादमीसभकें आर्थिक रूपसँ मजबूत बनएब।

८८९. पूर्व गतिविधि किएक अपर्याप्त कहल गेल?

- (A) कतेक वर्षसँ मंद आ सीमित गतिविधि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

८९०. सरकार ईमानदारीसँ प्रयास करय तँ सम्भावित लाभ की?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) दुर्लभ पाण्डुलिपि पुस्तकाकार रूपमे आओत आ शोधार्थी-छात्रकेँ लाभ भेटत।

खण्ड ७१४ : विदेह-सदेह २ — सुशान्त झा: मैथिली गीत-संस्कृतिक संस्थागत संरक्षण

८९१. लेखक यू-ट्यूबपर की ताकैत भटकैत छलाह?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) मनपसंद मैथिली गीत।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

८९२. यू-ट्यूबपर उपलब्ध मैथिली गीतसभमे कोन प्रकार अधिक भेटैत अछि?

- (A) बियाहक गीत आ भक्ति गीत।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

८९३. मैथिलीक विराट लोकगीत संसारक समस्या की कहल गेल?

- (A) छिड़ाएल सामग्रीकेँ एकठाम पौनाई कठिन।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

८९४. लेखक कोन कारणे गजेन्द्रजीकेँ फोन कएलनि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) लोकप्रिय मैथिली गीत वेबसाइटपर डालल जा सकैत अछि कि नहि बुझबाक लेल।

८९५. गीत वेबसाइटपर देबाक बाटमे कोन संकट कहल गेल?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) कॉपीराइट संकट।

८९६. लेखकक इच्छा कोन प्रकारक वेबसाइटक लेल छल?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) दिल्ली-बंबई-अमेरिका धरि मैथिल गीत-संगीत सुनि सकथि एहन एकठाम मंच।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

८९७. अंग्रेजी आ हिंदी भाषाई साम्राज्यवादसँ बचबाक उपाय की सूचित अछि?

- (A) नब तकनीकक सतर्क उपयोग।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

८९८. मैथिली लोकगीत, नाटक, लोककथा आ आख्यानकेँ लेखक की कहैत छथि?

- (A) बड़ पैघ धरोहर।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

८९९. भविष्यक माध्यमक स्वरूप लेखक कोना देखैत छथि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ऑडियो-विजुअल युग।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

९००. लेखक कोन प्रकारक प्रयास सुझबैत छथि?

- (A) ट्रस्ट वा सोसाइटी अधीन संस्थागत, इमानदार डिजिटल-सांस्कृतिक प्रयास।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

खण्ड ७१५ : विदेह-सदेह २ — सुशान्त झा: हमर सपनाक मिथिला — शिक्षा, हाइवे आ उद्योग

९०१. “हमर सपनाक मिथिला”मे लेखक ककर तस्वीर मोने-मोन बना रहल छथि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) सुन्दर आ समृद्ध इलाकाक।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

९०२. दरभंगामे लेखक कोन विद्यमान संस्थागत रंग देखैत छथि?

- (A) एकटा यूनिवर्सिटी आ मेडिकल कॉलेज।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

९०३. जयनगर तक बड़ी लाइन आ चारि-लेन सड़कक महत्त्व की?

- (A) मिथिलाक हृदयस्थली बाटे संपर्क-संरचना बनब।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

९०४. हाइवे किनारमे लेखक कोन संस्थानसभ खुलबाक कल्पना करैत छथि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) दर्जनों इंजीनियरिंग आ मेडिकल कॉलेज।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

९०५. झंझारपुरक बायोटेक्नोलॉजी कॉलेजमे केरलक विद्यार्थी प्रवेश लेब—एहि कल्पनाक अर्थ की?

- (A) मिथिला बाहरी विद्यार्थीक आकर्षण-केंद्र बनत।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

९०६. लेखक नार्थ-ईस्ट आ दक्षिण भारतक बच्चासभक काठमांडू टूरक कल्पना किएक करैत छथि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) मिथिलाक मार्गीय-पर्यटन आ ढावा-संस्कृति विकसित होएबाक संकेत।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

९०७. झंझारपुर, निर्मली, सकरी, सुपौल आ उदाकिशुनगंजक संदर्भमे लेखक की कल्पना करैत छथि?

- (A) उद्योग-धंधा खुलत।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

९०८. मिथिलाक लोककें घर लग की भेटबाक सपना अछि?

- (A) रोजगार आ उच्च शिक्षा।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

९०९. मखानक सम्बन्धमे लेखकक स्वप्न की अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) विश्व-स्तरीय ब्रांडिंग आ निर्यात।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

९१०. दार्जिलिंग-सिक्किमक दूरी कम भेला सँ की सांस्कृतिक-आर्थिक अवसर देखल गेल?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) शिक्षा, पर्यटन आ जीवन-शैलीक नब सम्भावना।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

खण्ड ७१६ : विदेह-सदेह २ — हमर सपनाक मिथिला — पुल, पर्यटन, पोखरि आ क्षेत्रीय नियोजन

९११. लेखक मिथिलाक कमी कोन मानैत छथि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) नियोजनक कमी।

९१२. कोसीपर रेलवे आ सड़क पुलक महत्त्व की?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) मिथिलाकें फेर जोड़ब।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

९१३. मोकामासँ जयनगर भाया समस्तीपुर फोर-लेनक कल्पना किएक अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) सम्पूर्ण क्षेत्रीय संपर्क-सुधार लेल।

९१४. नेपालसँ सम्बन्धित लेखकक आशा की अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) शांति-सुव्यवस्था आ बिजलीसँ मिथिला जगमगाएब।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

९१५. नेपाल आउने अन्तरराष्ट्रीय पर्यटकसभ मिथिला दिस मुइथि — एकर लेल की जरूरी?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) पर्यटन स्थलसभक विकास।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

९१६. सीता जन्मस्थान-जनकपुर, वैशाली, पाटलिपुत्र, बोधगया, नालन्दा जोड़बाक योजना की बनि सकैत अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पर्यटन सर्किट।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

९१७. मिथिला लोककला, गीत आ पेंटिंग लेल लेखक की चाहैत छथि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) कार्यशाला आ म्यूजियम।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

९१८. पोखरिसभक व्यवस्थित उपयोगसँ कोन लाभ सम्भव?

- (A) माछ-मखान उत्पादन आ सौन्दर्यीकरण आधारित आर्थिक गतिविधि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

९१९. दरभंगा आ पूर्णियाँ लेखक कोन रूपमे उभरैत देखैत छथि?

- (A) मेडिकल हब।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

९२०. भागलपुर आ मधुबनीक भविष्यक सम्बन्धमे कोन स्वप्न अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) भागलपुर सिल्क-हस्तकला, मधुबनी कला-सेमिनारक केन्द्र।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

खण्ड ७१७ : विदेह-सदेह २ — मैथिलीकें लऽ कऽ असुविधाजनक प्रश्न: आम मैथिल आ भाषा-दूरी

९२१. लेखक मैथिली आ मिथिलांचलक विकासपर कोन मूल प्रश्न उठबैत छथि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) दोसर प्रान्त-भाषा जकाँ विकास किएक नहि भेल।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

९२२. मैथिली साहित्य-विकासक चिन्ता लेखकक अनुसार किनका धरि सीमित अछि?

- (A) किछु मुट्ठी भरि लोकक दिमागी कसरत धरि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

९२३. दरभंगा-मधुबनीक बच्चासभक भाषा-ब्यवहार पर लेखक की चिन्ता दैत छथि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ओ मैथिली नहि, हिंदीमे बात करैत छथि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

९२४. मैथिली संग सभसँ पैघ अन्याय लेखक की मानैत छथि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) एकरा खास इलाका आ खास लोकक भाषा बनएबाक प्रयास।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

९२५. मैथिलीकें कोन समुदाय/क्षेत्रक भाषा बनाकऽ राखल गेल कहल गेल?

- (A) दरभंगा-मधुबनी आ खासकए ओतुक्का ब्राह्मणक भाषा।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

९२६. मधेपुरा-पूर्णिया छोड़ि दरभंगा-मधुबनीक विशाल जनसमुदायक सम्बन्धमे लेखक की कहैत छथि?

- (A) ओ किताबी मैथिली नहि बजैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

९२७. स्थानीय रूपकें हेय दृष्टिसँ देखबाक परिणाम की?

- (A) भाषिक अपनत्व घटैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

९२८. मिथिलाक खेतिहर, मजूर, मुसलमान आ निम्नवर्गक संदर्भ किएक उठल?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ओहि भाषामे हुनकर तस्वीर नहि देखाइ पड़ल।

९२९. राज्य-माँग आ भाषा-माँग बीच विरोधाभास की?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) राज्यक कल्पना विशाल, भाषा-मानक पंचकोसी धरि सीमित।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

९३०. एहि खण्डक मूल चेतावनी की अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) मैथिली आम मैथिलसँ कटत तँ आन्दोलन कमजोर रहत।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

खण्ड ७१८ : विदेह-सदेह २ — भाषा-भूगोल, पंचकोसी ग्रन्थि आ आन्दोलनक सीमा

९३१. सहरसा वा पूर्णियाक लोकक भाषा प्रति मधुबनी इलाकामे कोन दृष्टि लेखक स्मरण करैत छथि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) अलग आ हीन-दृष्टि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

९३२. इलाकाई भिन्नता कोना स्वीकारल गेल?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) कोनो भाषामे स्वाभाविक।

९३३. भाषाई आधारपर राज्य-माँग कमजोर किएक रहल?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) विराट जनसमुदाय आन्दोलनसँ नहि जुड़ि सकल।

९३४. राज्यसरकारक मैथिली-विरोधी रवैयाक उदाहरण की देल गेल?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) मैथिलीकेँ बीपीएससीसँ हटाओल गेल आ अकादमी निर्जीवप्राय बनल।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

९३५. लेखक सत्ता दोषक सीमा किएक बतबैत छथि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) जनता दिससँ प्रबल प्रतिरोध नहि छल।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

९३६. मैथिलीमे आम जनता आ प्रगतिशील चेतनाक स्वर पर लेखकक मत की?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) स्वर रहल, मुदा व्यापक मुख्यधारा नहि बनि सकल।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

९३७. मिथिलामे समाज-सुधार आन्दोलनक अभावक चर्चा किएक आयल?

- (A) भाषा-विकास समाज-विकाससँ अलग नहि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

९३८. मैथिली संस्थासभक कामकाजक समीक्षा किएक आवश्यक कहल गेल?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) भाषा-विकास लेल बनल संस्थासभ जनतासँ कतेक जुड़ल अछि, से बुझबाक लेल।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

९३९. चेतना समिति पर लेखक कोन प्रश्न उठबैत छथि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) सालाना जलसा-सेमिनार छोड़ि भाषा लेल ठोस योगदान की?
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

९४०. भारत-नेपालक मैथिली भाषाभाषीक सम्बन्धमे कोन अभाव कहल गेल?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) दूनु दिसक लोककेँ जोड़बाक ठोस उपाय नहि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

खण्ड ७१९ : विदेह-सदेह २ — मान्यता, साहित्य अकादेमी आ जन-सरोकारक प्रश्न

९४१. संविधानमे मान्यता भेटलाक बाद कोन संस्थाक गतिविधि किछु बेसी देखाइ पड़ल?

- (A) साहित्य अकादेमी।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

९४२. लेखकक अनुसार मैथिली आन्दोलन धार कखन पकड़त?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) जखन भाषा आम जनता आ ओकर सरोकारसँ जुड़त।

९४३. सभसँ पैघ जिम्मेवारी किनका पर कहल गेल?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) मैथिलीक पुरोधा कहबैत बुद्धिजीवी लोकनिपर।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

९४४. बुद्धिजीवी लोकनिसँ लेखक की अपेक्षा रखैत छथि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ठोस, सर्वग्राही आ समीचीन समाधान सामने आनब।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

१४५. समग्र चर्चा पर बल किएक अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) भाषा-संकट बहुस्तरीय अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

१४६. लेखकक दृष्टिमे मैथिली साहित्यक चिन्ता आ आम मैथिलक दूरी ककर परिणाम अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) भाषा-आन्दोलनक धार कम भऽ जाएब।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

१४७. मान्यता भेटलाक बादो आत्मालोचना किएक जरूरी अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) कानूनी मान्यता सामाजिक स्वीकृति नहि बनबैत।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

१४८. लेखक पंचकोसी ग्रन्थिसँ बाहर अबबाक बात ककर सन्दर्भमे करैत छथि?

- (A) भाषाक सर्वसमावेशी रूप स्वीकारबाक।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

१४९. भाषा-संरक्षणक नागरिक पक्ष की अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) आम मैथिलक प्रतिरोध, सहभागिता आ संस्था-समीक्षा।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

१५०. एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) मैथिलीकेँ मान्यतासँ आगू बढ़ि जन-सरोकारक भाषा बनबाक अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

खण्ड ७२० : विदेह-सदेह २ — डॉ. शंभु कुमार सिंह: आधुनिक मैथिली नाटकमे निर्धनता

१५१. डॉ. शंभु कुमार सिंहक आलेखक विषय की अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) आधुनिक मैथिली नाटकमे चित्रित निर्धनताक समस्या।

१५२. लेखक भारतक अधिकांश गामक जनता केँ कोन पर निर्भर बतबैत छथि?

- (A) कृषि कार्य आ बरखा पर।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

९५३. गामक गरीब किसान शहरमे जा कऽ की कहबैत छथि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) मजदूर वा बोनिहार।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

९५४. निर्धनता मनुष्यकेँ कोना बना दैत अछि?

- (A) बेवस, लाचार, शक्तिहीन, दीन-हीन।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

९५५. जाहि मनुष्य लग रोटी-वस्त्र-घर-औषध नहि, ओकर स्वतंत्रता पर लेखक कोन प्रश्न उठबैत छथि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ओ स्वतंत्र कोना भऽ सकैत अछि?

९५६. निर्धनता मनुष्यक स्वभावपर की प्रभाव डालैत अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) तंगदिल, तुच्छ, कमजोर आ इच्छामारक बनबैत अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

९५७. लेखमे निर्धनता-समस्या विश्लेषण लेल कोन नाटकसभक नाम आयल?

- (A) वीर-वीरेन्द्र, मनोरथ, कुहेस, कनियाँ-पुतरा, ओकरा आँगनक बारहमासा, नायकक नाम जीवन, आगि धधकि रहल छै, अन्तिम प्रणाम, बुधिबधिया आदि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

९५८. “मनोरथ”मे लक्ष्मीनाथ अपन नामक सम्बन्धमे की कोसैत छथि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) लक्ष्मीनाथ नहि, दरिद्रनाथ होमक चाही।

९५९. डॉ. प्रेमशंकर सिंहक उद्धृत मतमे “मनोरथ” की देखबैत अछि?

- (A) आर्थिक दशाक क्षीणतासँ संकटापन्न समस्या।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

९६०. एहि आलेखक प्रवेश-तर्क की अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) निर्धनता आधुनिक सामाजिक मैथिली नाटकक केन्द्रीय समस्या अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

खण्ड ७२१ : विदेह-सदेह २ — निर्धनता: “नाटकक लेल” आ “ओकरा आँगनक बारहमासा”

९६१. “गरीबीक ई पराकाष्ठा” कथनमे लेखक की कहैत छथि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) क्यो खाइत-खाइत मरैत अछि तँ क्यो कमाइत-कमाइत।

९६२. “नाटकक लेल”मे गरीबीक कोन दृश्य उद्भूत अछि?

- (A) कूड़ाक ढेरसँ किछु बीछैत लोक आ रोगाएल बच्चा।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

९६३. “ओकरा आँगनक बारहमासा” मैथिली नाट्य-साहित्यमे कोन कारणे अद्वितीय कहल गेल?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) निम्नवर्गक यथार्थ चित्रणक कारण।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

९६४. “ओकरा आँगनक बारहमासा”क केन्द्रबिन्दु की अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) सर्वहारा वर्गक यातनापूर्ण जीवन।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

९६५. नाटकमे ऋतु-सौन्दर्य गरीबक लेल किएक फुसि कहल गेल?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) किएक तँ भूख आ अभाव सब अनुभूति ढाँकि दैत अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

९६६. कातिक मास खेतिहर मजदूर लेल कोना कहल गेल?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) दुखक मास।

९६७. कातिक प्रसंगमे पेटक ज्वाला आ अन्न-अभावक गीत ककर प्रतिनिधित्व करैत अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) मिथिलाक निम्नवर्गीय आँगनक रोस आ हाहाकार।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

९६८. गरीब लोकक लेल कोन तीन वस्तु जटिल समस्या बनि गेल कहल गेल?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) अन्न, वस्त्र आ आवास।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

९६९. प्रो. प्रेमशंकर सिंह “ओकरा आँगनक बारहमासा” केँ की कहैत छथि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) मिथिलाक निम्नवर्गीय समाजक अलबम।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

९७०. बारहमासा-विश्लेषणक मुख्य साहित्यिक अर्थ की अछि?

- (A) ऋतुगीत सामाजिक आ आर्थिक पीड़ाक दस्तावेज बनैत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

खण्ड ७२२ : विदेह-सदेह २ — निर्धनता: “अंतिम प्रणाम”, “बुधिबधिया” आ निष्कर्ष

९७१. “अंतिम प्रणाम”मे समाजक कोन दुर्दशा चित्रित अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) गरीबक मुड़लाक बाद कफन लेल टका नहि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

९७२. “आनिपर दस गोटे मिलि जाए तँ की ने क’ सकैत छी” कथनक अर्थ की अछि?

- (A) सामुदायिक सहयोग बिना गरीबक अंतिम संस्कार कठिन।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

९७३. “बुधिबधिया”मे गरीबीक दृष्टान्त कोना देल गेल?

- (A) देहपर एक बीत वस्त्र नहि, अंग-उघार स्थिति।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

९७४. सरकारी व्यवस्था पर लेखक कोन टिप्पणी करैत छथि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) लाभ गरीब लोक धरि नहि पहुँचि सकैत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

९७५. महँगाई सम्बन्धी कथनक आशय की अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) सामान्य लोक भोजन, वस्त्र, आवास जुटएबामे परेशान अछि।

९७६. “अंतिम प्रणाम”मे मुरारीक कथन कोन पारिवारिक संकट देखबैत अछि?

- (A) बच्चा भुखले सुतैत आ पत्नी फाटल वस्त्रमे।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

९७७. आधुनिक युगमे कोन दू प्रवृत्ति बीच संघर्ष कहल गेल?

- (A) सामाजिक चेतनाक गतिशीलता आ परंपरागत रूढ़ि व्यवस्थाक जड़ता।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

९७८. आधुनिक सामाजिक मैथिली नाटकक मूल स्वर ककरासँ भरल कहल गेल?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) संघर्ष, तनाव आ अनेक सामाजिक समस्या।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

९७९. सामाजिक जीवनक यथार्थक अभिव्यक्ति ककर पर आधारित कहल गेल?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) नाटककारक सामाजिक दृष्टि आ रचना-दृष्टि पर।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

९८०. लेखकक अंतिम सामाजिक निष्कर्ष की अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) मिथिलांचलक आर्थिक विपन्नता अस्त-व्यस्तता सँ स्वाभाविकता बनि गेल अछि।

खण्ड ७२३ : विदेह-सदेह २ — आशीष अनचिन्हार: “अन्हारपर इजोतक कहिओ विजय नहि” आलोचना

९८१. आशीष अनचिन्हारक आलोचनाक शीर्षक आरम्भमे पाठककेँ की भ्रम देत?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) रचनाकार निराशावादी छथि।

९८२. पूर्ण शीर्षक लेखक कोना प्रस्तुत करैत छथि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) “अन्हारपर इजोतक कहिओ विजय नहि, सरकारपर जनताक कोनो धाख नहि।”

९८३. लेखकक अनुसार मैथिली साहित्यमे तीन गोट कमी कोन अछि?

- (A) व्यंगक प्रचुरता नहि, स्तरीय आलोचना नहि, आ आलोचना अबितो हरिमोहन झाकेँ शिखर मानि सभकेँ भुट्टा बनाओल जाइत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

९८४. मैथिली आलोचनामे हरिमोहन झाक उपस्थिति पर लेखकक तर्क की अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ओ तेना घुसिआएल रहैत छथि जे आन आलोचना सेहो हुनक आलोचना बुझाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

९८५. रूपकांत ठाकुरकेँ आलोचनाक स्तरपर की कहल गेल?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) मैथिली व्यंगमे बिसरल नाम।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

९८६. साहित्य अकादेमीक हास्य-व्यंग लेखमे रूपकांत ठाकुरक उल्लेख कोना सीमित रहल?

- (A) १९६३-६७ बीच मात्र छह कथा धरि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

९८७. रूपकांत ठाकुरक जीवन-रचना कालक सम्बन्धमे लेखक की तथ्य देलनि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) १९३०मे जन्म, १९६० लग रचनारम्भ, १९७२मे मृत्यु।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

९८८. रूपकांत ठाकुरक प्रकाशित पोथीसभमे कोन नाम आयल?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) मोमक नाक, धूकल केरा, लगाम, वचन वैष्णव, नहला पर दहला।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

९८९. शीर्षक रूपकांत ठाकुरक रचनासँ लेल गेल कहलाक अर्थ की?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ठाकुरजी भविष्यक राजनीतिक-सामाजिक संकेत कऽ गेल छथि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

९९०. एहि खण्डक मूल लक्ष्य की अछि?

- (A) मैथिली व्यंग आलोचनामे रूपकांत ठाकुरक पुनर्पाठ।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

खण्ड ७२४ : विदेह-सदेह २ — रूपकांत ठाकुर: राजनीतिक व्यंग, “मोमक नाक” आ जन-सरकार

९९१. लेखक राजनीतिक व्यंगकेँ कोना परिभाषित करैत छथि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) जाहि व्यंगमे राजनीति, शासन-व्यवस्था आ संचालकपर निशाना साधल गेल हो।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

९९२. मैथिलीमे व्यंग आ हास्यक सम्बन्ध पर लेखक शिकायत की अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) व्यंगकेँ आलोचक प्रायः हास्य मानि लैत छथि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

९९३. हरिमोहन झाक सम्बन्धमे लेखक कोन विडंबना देखबैत छथि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) सुच्चा व्यंग लिखलापर सेहो हास्य-व्यंग सम्राट कहल गेलाह।

९९४. “मर्द माने की” कथामे रूपकांत ठाकुर की व्यंग करैत छथि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) मर्दानगी, कमाइ, विवाह आ अधिकारहीन श्रमक सामाजिक धारणा।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

९९५. “ठोकल ठक्क”मे कोन प्रवृत्तिक दर्शन अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) कमीशनखोरी आ नातागत शोषण।

९९६. “सरकारपर जनताक कोनो धाख नहि” कथन सरकारक कोन रूप देखबैत अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) बेशर्म, निर्लज्ज, हेहर, थैथर सत्ता।

९९७. “जय गंगा जी”मे रेलगाड़ीक तुलना ककरासँ कएल गेल?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) कांग्रेसी नेतासँ।

९९८. “पंचवर्षीय योजना” पर रूपकांतक व्यंग की संकेत करैत अछि?

- (A) उन्नतिक कागजी आँकड़ा मोन राखबाक निरर्थकता।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

९९९. “फूजल ऊक”क उद्धृत भाव की अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) सुधारवादी दृष्टि मात्रसँ सुधार नहि होइत।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

१०००. “मोमक नाक”मे जनता संबंधी रूपक की अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) जनता मोमक नाक जकाँ जेम्हर नफगर तेम्हर घूमि जाइत अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

खण्ड ७२५ : विदेह-सदेह २ — हृदय नारायण झा: “मिथिलाक लुप्तप्राय गीत” भूमिका

१००१. हृदय नारायण झाक परिचयमे हुनका कोन क्षेत्रसँ जोड़ल गेल अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) आकाशवाणीक बी-हाइग्रेड कलाकार आ परम्परागत योगक शिक्षाप्राप्त।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

१००२. “मिथिलाक लुप्तप्राय गीत” लेखक मूल चिन्ता की अछि?

- (A) मिथिलाक परम्परागत लोकगीत-धनकें लुप्त होइत रूपमे बुझि संरक्षणक आग्रह।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

१००३. लेखक मैथिली लोकगीतकें कोन सांस्कृतिक भूमिका दैत छथि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) मिथिलाक श्रेष्ठ संस्कृति आ परम्पराकें सुरक्षित रखबाक श्रेय।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

१००४. पूर्वजलोकनिक भूमिका लेखक कोना देखैत छथि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ओ सभ लोकगीतक माध्यमसँ जनसामान्यकें मूल संस्कृति प्रति उदार बनौलनि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

१००५. देश-काल-परिस्थितिमे परिवर्तनक प्रभाव लोकगीतपर कोना कहल गेल अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) रचनामे विविधता आएल, मुदा आदर्श-आचारक परम्परा लोककंठमे रहि गेल।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

१००६. लेखक लोकगीतमे कृत्रिमताक प्रश्नपर की कहैत छथि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) लोकगीतमे कृत्रिमता नहि, समाजक सामान्य व्यवहारक अभिव्यक्ति होइत अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

१००७. लोकगीतक अवलोकनसँ मिथिलाक कोन पक्ष बुझबा योग्य कहल गेल अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) सभ्यता, संस्कृति, रीति-रिवाज, पर्व-त्योहार, कला, साहित्य आ आकांक्षा।

१००८. मिथिलामे जन्मसँ विवाह धरि व्यवहारक संग गीतक सम्बन्ध की अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) सभ बिध-बेवहार गीतक संग सम्पन्न होइत रहल अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

१००९. मिथिलाक विवाह आ उपनयन गीतमे लेखक कोन विशेषता मानैत छथि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) खास प्रकारक रागक प्रयोग, जे अन्यत्र नहि देखल जाइत।

१०१०. धर्मप्रधान मिथिलामे प्रातः-जागरणक सम्बन्ध कोन गीतसँ कहल गेल?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) पराती लोकगीतसँ।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

खण्ड ७२६ : विदेह-सदेह २ — जन्म-संस्कार, सोहर आ पुत्रकामना

१०११. जन्मसँ जुड़ल लोकगीतक उदाहरणमे कोन-कोन नाम देल गेल अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) सोहर, खेलउना, छठिहार, पीपर पिलाई, आँख अँजाई आ बधैया।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

१०१२. सोहरमे पुत्रकामनाक भाव कोन रूपमे व्यक्त अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) बगीचा, नैहर आ सासुरक पूर्णता पुत्र बिना अधूर मानल गेल।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

१०१३. “पाँच गाछ” आ “एकहि चनन”क चित्रमे मुख्य अर्थ की अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) बहुलता रहितहुँ एक प्रिय अभावसँ सौन्दर्य अधूर बुझाइत अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

१०१४. नैहरक गीत-पंक्तिमे स्त्रीक भाव कोना अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) भाइ-भातिज रहितहुँ माय बिना नैहर अपूर्ण लगैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

१०१५. सासुर सम्बन्धी सोहरमे स्त्रीक आकांक्षा कोन अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) अपन होरिल/संतान बिना सासुर सेहो मनभावन नहि लगैत।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

१०१६. गंगास्नान आ हरिवंश सुनबाक उल्लेख कोन मनोभावसँ जुड़ल अछि?

- (A) दैवी सहाय आ संतान-प्राप्तिक आशासँ।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

१०१७. “एकहि पुत्र दैव दीतथि” पंक्ति क भावार्थ की अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) एक संतान भेटिते हृदय जुड़ा जाए।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

१०१८. लेखक सोहरक उदाहरण किएक दैत छथि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) जन्म-संस्कारक भाव-गहनता आ लोकस्मृति देखएबाक लेल।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

१०१९. सोहरमे लौकिक आ भक्ति प्रधान विषयक समावेश कोना बुझायल अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) संतान-आकांक्षा सामाजिक अछि, मुदा दैव-सहायक आशा धार्मिक अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

१०२०. सोहरक सांस्कृतिक महत्त्व की अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ओ मिथिलाक जन्म-संस्कारक भाव, विश्वास आ परिवार-रचना सुरक्षित राखैत अछि।

खण्ड ७२७ : विदेह-सदेह २ — प्रसव-पीड़ा, छठिहार आ खेलउना

१०२१. प्रसव-पीड़ाक सोहरमे स्त्रीक मनोदशा कोना व्यक्त अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) वेदना कालमे सासु, जेठानी आ ननद कठोर लगैत छथि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

१०२२. पुत्र-जन्मक बाद सोहरमे स्त्रीक दृष्टि कोना बदलैत अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) संतान देखिते सभ कष्ट बिसरि जाइत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

१०२३. “अपन माए मोरा रहितइ” भावक केन्द्र की अछि?

- (A) अपन माय वेदना बाँटि लेतथि, एहि विश्वासक अभाव।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

१०२४. गीतमे “निरमोहिया” कहल पात्र सभ के प्रतीक छथि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) पीड़ित स्त्रीक दृष्टिमे असंवेदनशील सासु-भाउज।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

१०२५. मिथिलामे जन्मक पहिल उत्सव कोन कहल गेल?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) छठिहार।

१०२६. छठिहारक अवसरपर खेलउना गीतमे कोन सम्बन्ध उभरैत अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ननद आ भाउजक मधुर हास-परिहास।

१०२७. भाउज पतिकेँ ननदिकेँ बजाबए लेल किएक कहैत अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) छठिहारक आनन्दमे ननदिक उपस्थिति मधुर मानल गेल।

१०२८. खेलउना गीतमे ननदिक आगमनक क्रम कोना बनल अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) नगर, द्वार, आँगन, सोइरी धरि क्रमिक प्रवेश।

१०२९. “बेसरि माँगे बड़ तीत लागे” पंक्तिक भावार्थ की अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) स्नेह बीच उपहार-मांगक चुटकीदार हास्य।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

१०३०. प्रसव-पीड़ा आ छठिहार गीतक संयुक्त सांस्कृतिक अर्थ की अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) दुख, जन्म, स्नेह, मांग आ उत्सवक पूरा घरेलू संसार।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

खण्ड ७२८ : विदेह-सदेह २ — ननद-भाउज, बधैया आ सम्बन्ध-मधुरता

१०३१. ननद-भाउजक गीतमे ननदि की मांग करैत अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) इनाम/बधैया आ गहना-सामग्री।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

१०३२. “नथिया” प्रसंगमे भाउजक उत्तरक स्वर कइसन अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) मांग टारबाक चतुर हास्यपूर्ण प्रयास।

१०३३. ननदि बच्चाकेँ उठाकऽ चलि दैत अछि — एहि प्रसंगक अर्थ की अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) उपहार-मांगक खेलमे हास्यपूर्ण दबाव।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

१०३४. “हम लेबइ भइया के राज” पंक्तिमे ननदिक दावा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) भाइपर अपन स्नेह-अधिकारक ठिठोली।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

१०३५. भाउजक तर्कक समक्ष ननदि की करैत अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) हारि बधैया गबैत अधिकारपूर्वक मांग करैत अछि।

१०३६. बधैया गीतमे ननदि साधारण गहना किएक नहि स्वीकारए चाहैत?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ओ अधिक विशेष, मनपसिन्न वस्तु चाहैत अछि।

१०३७. बधैया गीतमे “लहरदार चुनरी”क मांग कोन भाव देखबैत अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) उत्सवक सौन्दर्यबोध आ सजधजक आकांक्षा।

१०३८. लेखक किएक कहैत छथि जे एहि गीतक परम्परा लुप्तप्राय अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) आधुनिक व्यवहारमे पुरान लोक-गायनक प्रचलन घटि रहल अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

१०३९. गीत-परम्परा लुप्त भेलासँ लेखक कोन सामाजिक प्रभाव सोचनीय मानैत छथि?

- (A) लौकिक परम्परागत सम्बन्धक मधुरता प्रभावित होएबाक सम्भावना।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

१०४०. लेखक अन्तमे कोन प्रश्न छोड़ैत छथि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) आदर्शकेँ बचाबए लेल विकल्प कोना खोजल जाए।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

खण्ड ७२९ : विदेह-सदेह २ — विवाह-गीत: सम्मर, लगन आ कुमार

१०४१. विवाह संस्कार गीतक परम्परा मिथिलामे कतेक व्यापक कहल गेल अछि?

- (A) विवाहपूर्वहिसँ गीतक रीत लोकजीवनमे रहल अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

१०४२. सुयोग्य वर खोजबाक प्रसंगमे कोन गीतक नाम आएल अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) सम्मर, कुमार आ लगन।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

१०४३. सम्मरक उदाहरण कोन पौराणिक प्रसंगसँ जुड़ल अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) सीता स्वयंवर।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

१०४४. “जानकि अंगना बहारल धनुखा” पंक्तिमे विवाहक कोन शर्त उभरैत अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) धनुष तोड़निहार वरक चयन।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

१०४५. सम्मरमे “राजा हो आ कि रंक” भाव की कहैत अछि?

- (A) योग्यता वंश-धनसँ ऊपर निर्णायक अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

१०४६. लगन गीत कखन गाओल जाइत अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) विवाह सुनिश्चित भेलापर आँगनमे स्त्रीगण समूह द्वारा।

१०४७. राजा जनकक कठोर प्रण लगन गीतमे कोन रूपमे अछि?

- (A) द्वारपर धनुष राखल, जे तोड़त से सीताकेँ लऽ जाएत।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

१०४८. रावण प्रसंगक उल्लेख लगन गीतमे किएक महत्त्वपूर्ण अछि?

- (A) धनुष-स्पर्शक असफलता आ रामक विजयक विरोधी पृष्ठभूमि बनबैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

१०४९. कुमार गीतमे बाबा आ बेटीक संवादक केन्द्र की अछि?

- (A) विवाहक व्यवस्था, कन्यादान आ दहेज-चिन्ता।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

१०५०. “धिया बिनु धर्म ने होय” पंक्तिक सांस्कृतिक अर्थ की अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) बेटीकेँ धर्म-सम्पादनक अनिवार्य अंग मानल गेल।

खण्ड ७३० : विदेह-सदेह २ — परिछन, धुरछक आ शुभकामना

१०५१. परिछन गीतमे बेटी आ जमायक उपमा कोना देल गेल अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) बेटी लछमी आ जमाय विष्णु रूपमे।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

१०५२. “विष्णु उतरि अएला अंगना” भावक आशय की अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) दुलहाकेँ शुभ, दैवी अतिथि रूपमे देखब।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

१०५३. धुरछक परिछनक पहिल विधि ककर स्वागत अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) दुलहाक।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

१०५४. धुरछक गीतमे सोना कलसिया नेने स्त्रीक छवि की सूचित करैत अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) मंगल-स्वागतक विधिकारी उपस्थिति।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

१०५५. धुरछक बाद परिछनक डाला कोन सामग्रीसँ सजैत अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) अरवा चाउरक चानन, सिन्दूर, काजर, बेसन, राई, लवण आदि।

१०५६. परिछन गीतमे “लवण राई”क भूमिका की अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) टोना-टारबाक लोक-उपचार।

१०५७. दुलहाकें परीछि आँगन लएबाक परम्परा कोन भाव रखैत अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) दुआरसँ गृह-आँगन धरि विधिपूर्वक प्रवेश।

१०५८. “शुभे हो शुभे” परिछनक मूल स्वर की अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) दुलहा-दुलहिन लेल मंगलकामना।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

१०५९. दधि, केसर, दिठौना, लौन-राईक उल्लेख कोन प्रकारक संस्कार देखबैत अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) सौन्दर्य, रक्षा आ मंगलक मिश्रित लोकविधि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

१०६०. परिछन गीतक लुप्तप्रायता किएक चिन्ताजनक अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) विवाहक लोक-विधि आ तकर संगीत-स्मृति कमजोर होइत अछि।

खण्ड ७३१ : विदेह-सदेह २ — शिव-विवाह आ कन्यादान गीत

१०६१. शिव-विवाहक परिछन मिथिलामे कोन धारणापर आधारित अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) हिमालय राजा, गौरी बेटी आ शिव जमाय मानल जाइत छथि।

१०६२. शिव-विवाह गीतमे शिवक रूप कइसन वर्णित अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) गरल, नाग, जटा-गंगा, डमरू आ भूत-प्रेतसहित भयावह-विलक्षण।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

१०६३. शिवक बरियात देखिकय नगरक लोकक प्रतिक्रिया की अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) लोक कोठा चढ़ि देखैत अछि आ बरियात भयंकर लगैत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

१०६४. कन्यादान गीतक परम्परा कोन पीढ़ीमे लुप्तप्राय कहल गेल?

- (A) नवतुरिया पीढ़ीक बीच।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

१०६५. शिव-पार्वती कन्यादान गीतमे कोन भाव मुख्य अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) मंगलमय दान-विधि आ दुलहा-दुलहिनक जोड़ी देखबाक हर्ष।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

१०६६. सीता-राम कन्यादान गीतमे कोन भाव विशेष व्यक्त अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) बेटीक वियोगक करुणा।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

१०६७. “जाँघिया चढ़ाए बाबा बैसला मण्डप पर” पंक्तिमे कोन विधि आरम्भ होइत अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) कन्यादान।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

१०६८. गुरु वशिष्ठक मंत्र-उच्चार प्रसंग की देखबैत अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) लोकगीतमे वैदिक कर्मकाण्डक समावेश।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

१०६९. सुनयना मायक रोदनक कारण की अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) बेटीकेँ विदा/वीरान होइत देखबाक वियोग।

१०७०. “ई थिक जग व्यवहार” कहबाक अर्थ की अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) विवाह-वियोगकेँ सामाजिक परम्पराक अनिवार्य रूप मानब।

खण्ड ७३२ : विदेह-सदेह २ — जेवनार, डहकन आ कोहबर

१०७१. जेवनार गीत कखन गाओल जाइत रहल?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) बरियाती भोजन करए बैसला पर स्वागतक लेल।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

१०७२. जेवनार गीतमे मिठाइक “मंदिर” रूपक कोन प्रभाव उत्पन्न करैत अछि?

- (A) भोजनकेँ कल्पनाशील महल/मंदिरक उत्सवमे बदलि दैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

१०७३. “छप्पन भोग बत्तीसो बेअंजन” जेवनारमे की सूचित करैत अछि?

- (A) आतिथ्यक सम्पन्नता आ भोजक विस्तार।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

१०७४. डहकन गीतक घोषित उद्देश्य की अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) दुलहामे धैर्य, विनम्रता आ सहिष्णुता जगाएब।

१०७५. श्रीरामक उदाहरण डहकन परम्पराकेँ कोना वैधता दैत अछि?

- (A) मान्यता अछि जे राम सेहो मैथिलानीक गारि सुनि प्रसन्न भेलाह।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

१०७६. डहकनमे “राम लला सन सुन्दर वर” कहि गारि किएक रोकेबाक भाव अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) गारि-विनोदक मर्यादा आ सौन्दर्य-दृष्टि दुनू साथ अछि।

१०७७. दुलहासँ हँसी-मजाकक डहकन गीतमे स्त्रीगणक भूमिका की अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) विध-बेवहार करबैत दुलहासँ चुटकी लेब।

१०७८. कोहबर गीतक सम्बन्ध कोन परम्परासँ अछि?

- (A) विवाहक बाद दुलहा-दुलहिनक कोहबरमे चारि दिन रहबाक परम्परा।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

१०७९. सीता-रामक कोहबर गीत किएक विशेष प्रसिद्ध कहल गेल?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ओ प्रेमभाव जगाबए बला विलक्षण कोहबर-वर्णन करैत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

१०८०. कोहबर गीतक लुप्तप्रायता ककर हानि अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) दाम्पत्य-प्रेम बढ़ाबए बला लोक-संस्कारक गीत-स्मृति।

खण्ड ७३३ : विदेह-सदेह २ — मधुश्रावणी: फूल लोढ़इ, गौरी गीत आ विषहारा

१०८१. मधुश्रावणी मिथिलाक विवाह-संस्कारमे कोन रूपमे अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) नवविवाहिताक तेरह दिनक व्रत-अनुष्ठान।

१०८२. मधुश्रावणीमे नवविवाहिताक दैनिक क्रिया की कहल गेल अछि?

- (A) अपराह्णमे फूल लोढ़ि आनब।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

१०८३. फूल लोढ़बाक गीतमे टोलीक भूमिका की अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) गामभरिक नवविवाहिताक टोली मनोरंजनपूर्वक व्रत-निष्ठा निभबैत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

१०८४. मधुश्रावणीमे कोन पूजा बीच बिसहारा गीत गाओल जाइत अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) नाग-नागिनक पूजा।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

१०८५. फूल लोढ़इ गीतमे स्त्री-सौन्दर्यक कोन चिह्न सभ आएल अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) सिन्दूर, टिकुली, अँगूठी, मुनरी आ तिरछी नजरि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

१०८६. गौरी गीतमे राधा, सीता आ गौरीक क्रम किएक अर्थपूर्ण अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) सखी-समूह आ देवी-नायिका सभकेँ फूल-लोढ़ाइमे जोड़ैत अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

१०८७. गौरी “तपसी भिखरिया” वर किएक माँगैत छथि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) शिवक वैरागी रूपक लोक-संकेत।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

१०८८. बिषहारा गीतमे “सोना के घड़ला, रूपा के गेरुलि” कोन भाव दैत अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) पूजाक श्रृंगारिक आ मंगलमय तैयारी।

१०८९. बिषहारा गीतक शुभकामना कोन अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) सुहागिनक कंत लाख बरिस जीबथि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

१०९०. लेखक फूल-लोढ़इ, गौरी आ बिषहारा गीतकें किएक लुप्तप्राय कहैत छथि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) नवतुरिया पीढ़ीक बीच पद, धुन आ परम्परा कमजोर भऽ रहल अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

खण्ड ७३४ : विदेह-सदेह २ — समदाउन, लगनी आ श्रमगीत

१०९१. समदाउन गीत कखन गाओल जाइत अछि?

- (A) बेटीक द्विरागमनक अवसरपर स्त्रीगणक समवेत स्वरमे।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

१०९२. समदाउनक मूल भाव कोन कहल गेल?

- (A) करुणा प्रधान उदासी।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

१०९३. “बेटी के जनम जुनि देब” गीतमे कोन सामाजिक पीड़ा व्यक्त अछि?

- (A) निरधन कोखि, रूप, मुख पति आ बेटी-भाग्यक करुण प्रश्न।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

१०९४. कहरिया भासक समदाउनमे सीताक कोन दुख व्यक्त अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) नैहर मिथिला सँ बिछोह।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

१०९५. “माएक नयना सँ गंगा नीर” पंक्ति अर्थ की अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) मायक आँसू गंगा-धार जकाँ बहि रहल अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

१०९६. लगनी गीतक सम्बन्ध कोन गृहस्थी क्रियासँ अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) जाँत चलबैत दू स्त्रीक गायन।

१०९७. लगनी गीत परस्पर सम्बन्धकै कोना समृद्ध करैत अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) भक्ति, करुणा आ व्यवहारप्रधान स्वरक कारण।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

१०९८. मशीनीकरणक युगमे लगनीक स्थिति कोना बताओल गेल?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) जाँतक चलन बन्द भेलासँ गीत प्रायः लुप्त, मुदा दूर देहातमे कतहु सुरक्षित।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

१०९९. साहेबदास पदावलीसँ संकलित लगनीमे कोन भक्ति-प्रसंग भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) राधा-कृष्ण विरह आ माधवकै रोकबाक भाव।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

११००. समदाउन आ लगनीक संयुक्त महत्त्व की अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ओ स्त्री-जीवनक वियोग, श्रम, भक्ति आ सम्बन्धक लोक-संसार सुरक्षित करैत अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

खण्ड ७३५ : विदेह-सदेह २ — मलार, बटगमनी आ लोक-परम्परा संरक्षण

११०१. मलार गीतक परम्परा मिथिलामे कोना वर्णित अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) समृद्ध रहल, मुदा वर्तमानमे गीत आ धुन लुप्तप्राय।

११०२. मलार पद सभ कोन स्रोतसँ संकलित कहल गेल?

- (A) साहेबदास पदावलीसँ।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

११०३. “अली रे प्रीतम बड़ निरमोहिया” पदमे कोन भाव छैक?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) विरह आ प्रेमक व्यथा।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

११०४. “हे उधो लिखब कओने विधि पाती” पदमे नायिका कोन कठिनाई कहैत अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) विरह-वेदना सँ पत्र लिखबो कठिन।

११०५. बटगमनी गीतक विषयक मुख्य स्वर की अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) प्रेम, श्रृंगार आ रति-भावक अभिव्यक्ति।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

११०६. बटगमनी कखन गाओल जाइत अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) मांगलिक अनुष्ठानमे डिहवार, ब्रह्मस्थान, माटिमंगल, आम-महू बियाह आदि लेल बाटमे निकलैत काल।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

११०७. बटगमनीक लुप्तप्रायता लेखक ककर उदासीनतासँ जोड़ैत छथि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) नव पीढ़ीक मैथिल ललनाक गीत-उमंग आ रुचिक अभाव।

११०८. “काँच कली पहु तोड़थि” बटगमनीमे कोन भाव प्रमुख अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) संभोग-संकेतयुक्त श्रृंगारिक नायिका-वाणी।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

११०९. परदेशसँ पतिक आगमनक बटगमनीमे नायिका कोना देखायल अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) मिलन लेल साज-श्रृंगार आ प्रेम-उत्साहमे आकुल।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

१११०. मलार आ बटगमनीक चर्चा संरक्षण-दृष्टिसँ की बतबैत अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) धुन, पद, ऋतु, प्रेम आ संस्कार सभकेँ संग-संग बचाएब जरूरी अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

खण्ड ७३६ : विदेह-सदेह २ — जयकान्त मिश्रपर विशेष: गंगेश गुंजन आ विद्या मिश्र

११११. “जयकान्त मिश्रपर विशेष”मे आरम्भिक लेखक-नाम कोन-कोन देल गेल?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) डॉ. गंगेश गुंजन आ विद्या मिश्र।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

१११२. गंगेश गुंजन जयकान्त मिश्रक निधनकेँ कोन रूपकसँ बुझबैत छथि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) महान पोथीक पुस्तकालयमे सजा देबाक ऐतिहासिक शोक जेकाँ।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

१११३. गंगेश गुंजनक अनुसार जयकान्त बाबूक मौलिकता कोन समन्वयमे छल?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) मैथिलीक लौकिक आ शास्त्रीय बुद्धिक समन्वयमे।

१११४. फिराकक उद्धरणक प्रयोग किएक भेल?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) आगामी पीढ़ी हुनका देखबाक सौभाग्यपर रश्क करत, एहि भावक संकेत लेल।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

१११५. गंगेश गुंजन जयकान्त बाबूक कोन अत्यन्त उच्च उपाधि दैत छथि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) मैथिलीक आधुनिक वेद।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

१११६. विद्या मिश्र नेनपनमे जयकान्त मिश्रसँ किएक प्रभावित रहलीह?

- (A) मिथिला-मैथिलीक विकास आ साहित्यमे हुनक योगदानक चर्चा सुनि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

१११७. विद्या मिश्रक सम्बन्ध जयकान्त परिवारसँ कोना बदलल?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ओ जयकान्त मिश्रक भातिजक संग विवाहित भऽ परिवारक पुतोहु बनलीह।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

१११८. हरिवंश राय बच्चनक पत्र-संदर्भ किएक महत्त्वपूर्ण अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ओ जयकान्त-उमेश मिश्र परिवारक विद्वत्ता आ गुरु-सम्बन्धक प्रशंसा करैत छल।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

१११९. विद्या मिश्र १९९९ ई.क बाद कतए बसलाह मुदा मन कतए रहल कहैत छथि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) संयुक्त राज्य अमेरिकामे बसलाह, मुदा हृदय-आत्मा-मन इलाहाबादमे रहल।

११२०. विद्या मिश्रक लेखमे जयकान्त मिश्र परिवारक मुख्य गुण की कहल गेल?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) समर्पण, परम्परा, सरलता आ संस्कृतिक प्रति लगाव।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

खण्ड ७३७ : विदेह-सदेह २ — डॉ. चन्द्रेश्वर शाह: होलीक संदेश

११२१. डॉ. चन्द्रेश्वर शाहक लेख “होलीक संदेश” कोन क्रियासँ आरम्भ होइत अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) रंग-अबीरक खेलसँ पहिने सम्मत/होलिका दहन।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

११२२. प्रह्लादक कथामे हिरण्यकश्यपु किएक क्रुद्ध छल?

- (A) प्रह्लादक विष्णु-भक्ति सँ।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

११२३. होलिकाकेँ आगिमे न जरएबाक शक्ति ककर रूपमे छल?

- (A) बरदानमे भेटल चदरि/रक्षा-वस्त्रक रूपमे।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

११२४. प्रह्लादक रक्षा आ होलिकाक दहनक मूल संदेश की अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) अन्याय अंततः टिकैत नहि, भक्त/धर्मक रक्षा होइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

११२५. लेखक होलिकाक मृत्यु सँ समाजक कोन प्रतिक्रिया जोड़ैत छथि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) अत्याचारीक अंतपर लोक खुशी मनबैत अछि।

११२६. समाज तत्काल विरोध नहि करैत तकर अर्थ की नहि मानब चाही?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) समाज अत्याचार सहर्ष स्वीकार करैत अछि, से नहि।

११२७. अन्यायी-अत्याचारीक सम्बन्धमे लेखक कोन बात कहैत छथि?

- (A) अकाल मृत्यु वा विनाशक दिशा ओहि प्रवृत्तिक फल भऽ सकैत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

११२८. हिरण्यकश्यपुक अहंकारक मूल कारण की कहल गेल?

- (A) धन-बल आ सुख-भोगसँ स्वयंकेँ ईश्वर मानब।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

११२९. ईश्वरीय शक्ति वा आशीर्वादक उपयोग कोन काजमे करबाक चाही?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) जनकल्याणमे, जनविरोधी काजमे नहि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

११३०. “होलीक संदेश”क कथा-व्याख्या मात्र पौराणिक नहि किएक अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ओ आजुक व्यवहार, मर्यादा आ सामाजिक बुद्धिक पाठ दैत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

खण्ड ७३८ : विदेह-सदेह २ — होलीक मर्यादा, सम्मत आ विद्यापति

११३१. सम्मत जरएबाक लेल लकड़ी-काठी जुटेबाक प्रसंगमे लेखक कोन सावधानी कहैत छथि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ककरो घरक जरूरी लकड़ी चुपचाप जरा देब सामाजिक क्षति अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

११३२. होलीक दिन नीक भोजनक नामपर ऋण करब लेखक किएक अनुचित मानैत छथि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) पर्वक बहाना आर्थिक असंतुलन आ बादक कष्ट बना सकैत अछि।

११३३. भाँग, धतूरा, दारु-ताड़ीक अधिक प्रयोगपर लेखक कोन संकेत दैत छथि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) मस्ती बादमे अनर्थक कारण बनि सकैत अछि।

११३४. रंग-अबीर खेलबामे अलकतरा वा इनामेल प्रयोगक आलोचना किएक अछि?

- (A) एहन “मस्ती” दोसराक तकलीफ बढ़बैत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

११३५. बीमार व्यक्तिपर बलपूर्वक रंग लगएबाक उदाहरण कोन नीति सिखबैत अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) उत्सवमे सीमाक भीतर रहब बुद्धिमानी अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

११३६. संस्कृति-परम्पराक रक्षा लेखक ककर दायित्व मानैत छथि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) बन्धन-बाधा रहितहुँ समाजक निरन्तर दायित्व।

११३७. विद्यापतिक गीतमे पार्वती महादेवसँ की आग्रह करैत छथि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) नटवेश धरि नृत्य देखेबाक।

११३८. महादेव नाचबाक बाधा रूपमे कोन सम्भावना कहैत छथि?

- (A) गंगाधार बहि धरती जलमग्न आ सर्प चारुदिसि बिखरि जाएबाक।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

११३९. “राखल गौराक मान कि नाँच देखावल” पंक्तिक प्रयोग लेखक किएक करैत छथि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) बाधा रहितहुँ बुद्धिमानीपूर्वक मर्यादित काजक संकेत लेल।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

११४०. होली प्रसंगसँ अन्तिम संदेश की निकलैत अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) क्रियाकलाप अपन आ समाजक हितमे, बुद्धिमानीपूर्वक होअए।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

खण्ड ७३९ : विदेह-सदेह २ — विद्या मिश्र: अमेरिकामे मैथिलक होली

११४१. विद्या मिश्रक “मैथिल रंग बरसे” लेखक प्रसंग की अछि?

- (A) अमेरिकामे मैथिल परिवार सभक पारम्परिक होली।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

११४२. एहि होलीमे कतेक परिवार सम्मिलित रहबाक उल्लेख अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) २५-३० टा परिवार।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

११४३. प्रतीक झा ककर नाति आ पुत्र रूपमे उल्लेखित छथि?

- (A) प्रो. हरिमोहन झाक नाति आ डॉ. रमा झाक पुत्र।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

११४४. प्रवासी मैथिल लोकनिक प्रयासक मुख्य उद्देश्य की कहल गेल?

- (A) पाबनि-तिहार पारम्परिक रूपमे मनेबाक, जाहिसँ अगिला पीढ़ी सीखि सकए।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

११४५. पछिला साल बच्चा सभ कोन नाटक मंचित केने छल?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) हिरण्यकश्यप/होलिका प्रसंगक नाटक।

११४६. बच्चा सभकेँ होली सम्बन्धी कोन-कोन बातक ज्ञान कहल गेल?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) होली किएक-कोना मनाओल जाए, रंग, गरा-मिलन, खानपान आ गीत।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

११४७. मैथिल सहभागी कतए-कतए सँ अएलाह?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) न्यूजर्सी, वर्जिनिया, वाशिंगटन डी.सी. आ मेरीलैण्ड।

११४८. एहि बेरक आयोजनमे कोन प्रतियोगिता महत्त्वपूर्ण रहल?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) नीक उत्तर, श्रेष्ठ पोशाक-समन्वय आ पार्सल देबाक प्रतियोगिता।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

११४९. प्रतियोगिताक प्रश्नक स्वरूप की छल?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) मिथिला-संस्कृतिसँ सम्बन्धित गहन प्रश्न।

११५०. अमेरिकाक बसंत छुट्टीक प्रसंग लेखमे किएक आयल अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) स्कूल-कॉलेजक बच्चा सभ एहि अवसरमे भाग लऽ सकल।

खण्ड ७४० : विदेह-सदेह २ — गंगेश गुंजन: कविक आत्मोक्ति, बजार आ कविता

११५१. “कविक आत्मोक्ति: कविताक अएना” कोन लेखकक कविता-संग्रहपर टिप्पणी अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) विनीत उत्पलक कविता-संग्रहपर।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

११५२. गंगेश गुंजन विश्व-बजारी समाजमे भाषा-साहित्यक स्थिति कोना देखैत छथि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) बजार जकाँ मंदी आ दबाव साहित्य-विधामे सेहो पसरल अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

११५३. कविताक विधा सम्बन्धी प्रारम्भिक चिन्ता की अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) कविता आओर अनठिआएल, कात-करोट भेल वा कएल जा रहल अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

११५४. कविता केवल प्रतिष्ठा-वस्तु बनि गेल तँ लेखक किएक अस्वीकार करैत छथि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ओ दीर्घजीवी कला नहि रहि, ड्राइंग रूमक सजावटी नमूना बनि जाएत।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

११५५. भाषाक जीवित रहबाक बाजारी कसौटी लेखक कोना आलोचित करैत छथि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) केवल उपयोगिता वा क्रय-विक्रय मूल्यपर भाषा बचबाक धारणा अवसरवादी अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

११५६. ग्लोबल बजारमे भाषा सम्बन्धी लेखकक मुख्य चेतावनी की अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) भाषाकेँ केवल “दाम” वा बिक्रीक आधारपर नहि बुझल जाए।

११५७. नवागन्तुक कविक लेल लेखक कोन भेद बुझब जरूरी मानैत छथि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) बजारक भाषा आ कविताक भाषा बीचक भेद।

११५८. कविता “नव पैकेटक नव उत्पाद” बनबाक डर किएक अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) जँ कवि बाजारक तर्कमे समर्पित भऽ जाए।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

११५९. भाषाक यात्रा लेल लेखक कोन साधन चाहैत छथि?

- (A) नीति-बुद्धि, स्वविवेक आ गंभीर मंथन।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

११६०. विनीत उत्पलक पाण्डुलिपि लेखकक एहि चर्चा लेल किएक कारण बनल?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ओहि पाण्डुलिपिक बहाने लेखक बाजार आ कविता-भाषाक प्रश्न उठबैत छथि।

खण्ड ७४१ : विदेह-सदेह २ — कविक आत्मोक्ति: प्रकाशन, कवि-दायित्व आ विनीत उत्पल

११६१. लेखक कविता केँ ककर सवारीपर लोक-यात्रा कहैत छथि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) भाषाक सवारीपर।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

११६२. “जेहन सवारी, जेहन सवार तेहन यात्रा”क आशय की अछि?

- (A) भाषा, कवि आ काव्यबोध यात्रा-स्वरूप निर्धारित करैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

११६३. कविक साधनाक प्रक्रियामे लेखक की विकसित होइत मानैत छथि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) स्वविवेक आ अनेक आन्तरिक काव्य-तत्त्व।

११६४. हिन्दीक स्थापित कवि सभक प्रकाशन-संकटक उल्लेख किएक अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ब्रांड प्रकाशन, धन, सरकारी पुस्तकालय आ बिक्रीक दबाव देखएबाक लेल।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

११६५. मैथिली साहित्यक प्रकाशन सम्बन्धी लेखकक कथन की अछि?

- (A) लेखक-कविकेँ प्रायः अपना अपनी कऽ पुस्तक छपबाबए पड़ैत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

११६६. यात्रीजीक प्रसंग लेखक किएक याद करैत छथि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) मैथिल लेखकक पोथी-प्रसार-विक्रयक उद्यमक इतिहास देखएबाक लेल।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

११६७. विनीत उत्पलक पाण्डुलिपि प्राप्त करि लेखकक पहिल अनुभव की छल?

- (A) युवक दुस्साहसी बुझएलाह।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

११६८. भूमिका-लेखनक प्रति लेखकक सामान्य रुख की अछि?

- (A) ई काज हुनक प्राथमिकतासँ बाहर, मुदा मैथिली भविष्य सामने हो तँ स्वागत योग्य।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

११६९. विनीत उत्पलक प्रस्तावना लेखककै कि एक उपयोगी लगल?

- (A) ओ कविताक संसार, वर्तमान आ सरोकार बुझबामे सहायक अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

११७०. लेखक विनीतक कविता के कोन तीन अर्थ-छायासँ घेरल अनुभव करैत छथि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) कथनक कोटि, तकर पकड़ आ प्रयोगक विधि।

खण्ड ७४२ : विदेह-सदेह २ — रामभरोस कापडि ‘भ्रमर’: संचारमे समावेशी स्वरूप

११७१. रामभरोस कापडि “भ्रमर”क परिचयमे प्रमुख पद की देल गेल अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) साझा प्रकाशन, ललितपुरक अध्यक्ष।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

११७२. “संचार एवं साहित्य क्षेत्रमे समावेशी स्वरूपक अपेक्षा” लेख ककर पृष्ठभूमिमे अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) नेपालक संचार-साहित्य क्षेत्रमे मधेशी/मैथिल प्रतिनिधित्वक कमी।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

११७३. गोरखापत्रक इतिहासमे लेखक कोन सीमा देखैत छथि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) नेपाली भाषा आ नेपाली भाषी सभक पृष्ठपोषण मुख्य रहल।

११७४. मधेश आन्दोलनक बाद लेखक कोन प्रकारक परिवर्तन मानैत छथि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) आँगुरपर गनएबला परिवर्तनक संकेत।

११७५. गोरखापत्रमे मधेशी/मैथिल नि. प्रधान सम्पादकक पदपर पहुँचना कि एक महत्वपूर्ण अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) सय वर्षसँ अधिक इतिहासमे पहिल बेर एहन जवावदेह पदपर पहुँच।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

११७६. लेखकक अनुसार नीति-निर्माण तहमे मैथिल वा मधेशीक पहुँच कोना रहल?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) लगभग शून्य।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

११७७. प्रेस काउन्सिल सम्बन्धी आलोचना की अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) मधेशक पत्र-पत्रिकापर पक्षपातपूर्ण आ द्वैध चरित्र देखाओल गेल।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

११७८. सरकारी संचार क्षेत्रपर लेखकक प्रश्न की अछि?

- (A) सबकर कर-मालपोत लगितो समावेशी अवधारणा किएक नहि अपनाओल गेल।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

११७९. निजी संचार माध्यमक स्थिति लेखक कोना देखैत छथि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) मधेश, मिथिला आ मैथिली चर्चा कहुआ गोली जकाँ बुझायल।

११८०. लेखकक मूल अपेक्षा की अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) संचार आ साहित्य क्षेत्रमे वास्तविक, निर्णायकारी समावेशी स्वरूप।

खण्ड ७४३ : विदेह-सदेह २ — नेपालक मैथिली गतिविधि, प्रज्ञा आ प्रकाशन

११८१. दुनू देशक मैथिली गतिविधि सम्बन्धी लेखक कोन संकट देखैत छथि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) सूचना-प्रवाहक संकट।

११८२. भारतीय क्षेत्रक लेखक सभपर लेखकक आलोचना की अछि?

- (A) ओ सभ अपना मे सीमित भऽ नेपालक गतिविधिपर नजरि राखब जरूरी नहि बुझैत छथि।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

११८३. नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठानक स्थिति कोना बताओल गेल?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) विगत चारि वर्षसँ राजनीतिक शिकार, गठन नहि भेने काज रुकल।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

११८४. “आँगन” पत्रिकाक प्रसंगमे लेखक की दुख व्यक्त करैत छथि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) भारतीय पत्र-पत्रिकामे चर्चा नहि भेल आ पत्रिका ठमकल।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

११८५. प्रज्ञा लोकनिक पद राजनीतिक कार्यकर्तासभ हथिअएबाक प्रसंग ककर आलोचना अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) सांस्कृतिक संस्थाक राजनीतिकरण।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

११८६. गोरखापत्र मैथिलीमे की दैत अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) दैनिक एक पृष्ठ।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

११८७. निजी चैनल सभक मैथिली समाचारक शुरुआत लेखक कोना देखैत छथि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) माहौल बनि रहल अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

११८८. उपराष्ट्रपतिक हिन्दी शपथ विवादक परिणाम लेखक कोना पढ़ैत छथि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) मैथिली प्रति जनमत-वृद्धि, एक उपलब्धि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

११८९. संघीय संविधान बाद नेपालमे मैथिलीक सम्भावना लेखक कोना देखैत छथि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) नीक, आओर बढ़ल सम्भावना।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

११९०. मैथिली प्रकाशनक लेल लेखक अन्तमे कोन आवश्यकता कहैत छथि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) छपल पुस्तकक प्रचार-प्रसार, समालोचना-समीक्षा आ उदारता।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

खण्ड ७४४ : विदेह-सदेह २ — साझा प्रकाशनमे विद्यापति आ मैथिली पुस्तक

११९१. रामभरोस कापडि साझा प्रकाशनमे कखन अध्यक्ष नियुक्त भेलाह?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) २०६५ साल पुस २ गते।

११९२. साझा प्रकाशनक मुख्य कार्य की छल?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) पुस्तक-पत्रिका छपब आ सरकारी विद्यालयक पाठ्यपुस्तक वितरण-विक्रय।

११९३. साझा प्रकाशनमे ४५ वर्ष बाद “बज्जर केबार” कोना खुजल?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) मधेशक मंत्रीक प्रवेश आ समावेशी लोकतंत्रक माहौलसँ।

११९४. लेखक अपना कोना देखैत छथि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) पहिल मधेशी, मैथिली साहित्य-प्रेमी जे एहि गरिमामय पदपर बैसाओल गेल।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

११९५. साझा प्रकाशन पहिने कुन भाषामे साहित्यिक पुस्तक छपैत छल?

- (A) नेपाली भाषामे मात्र।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

११९६. लेखक गेलाक बाद कोन निर्णय भेल?

- (A) नेपाली वाहेकक भाषामे सेहो पुस्तक छापल जाए।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

११९७. सर्वप्रथम कोन सांस्कृतिक प्रकाशन निर्णय कराओल गेल?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) विद्यापतिक पोस्टर-चित्र बहार करबाक।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

११९८. विद्यापति चित्र बनबामे कलाकारकें कोन कठिनाई भेल?

- (A) छोट चित्रमे देखाओल पागक गणित बुझब कठिन भेल।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

११९९. साझा प्रकाशनक इतिहासमे पहिल मैथिली पुस्तक कोन कहल गेल?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) “बगियाक गाछ” बालकथा-संग्रह।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

१२००. “बगियाक गाछ”क महत्त्व की अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) साझा प्रकाशनक दरवाजा मैथिली आ आन भाषाक अधिकार लेल खुजल।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

खण्ड ७४५ : विदेह-सदेह २ — डा. कल्पना मणिकान्त मिश्र: “मातृभाषा” परिचय

१२०१. डा. कल्पना मणिकान्त मिश्रक परिचयमे हुनक मूल पेशा की कहल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) स्त्री-रोग विशेषज्ञ।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

१२०२. डा. कल्पनाक जन्म-गाम वा मूल परिचयमे कोन गामक उल्लेख अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) राटी।

१२०३. डा. कल्पनाक सासुरक रूपमे कोन स्थान कहल गेल अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) गजहारा।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

१२०४. लेखिका कतेक बरससँ मुम्बईवासी रहबाक बात कहल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लगभग ३०-३२ बरससँ।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

१२०५. लेख “मातृभाषा”क आरम्भिक भाव की अछि?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) मातृभाषा-प्रेम सुनल-पढ़ल बातसँ आगाँ, स्वयं अनुभवक विषय अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

१२०६. लेखिकाक बम्बई-आगमनक काल-भावना कोना व्यक्त अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) महानगरीक चकाचौंधमे हराएब वा भटक जाएबाक चिन्ता।

१२०७. संजय गाँधी योजनाक प्रसंगमे लेखिका केहन सुविधा पाबि सकलीह?

- (A) बेरोजगार ग्राजुएट लेल बैंकसँ २०,००० रुपयाक लोन।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

१२०८. लोन भेटलाक बाद सामान्य व्यावसायिक सम्भावना की छल?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) क्लीनिक वा दवाखाना खोलि भविष्य सुरक्षित करब।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

१२०९. लेखिका ओहि धनसँ निजी सुखक कोन सम्भावना सभ गनौलनि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गहना बनाब, सोख पूरा करब वा भारत-भ्रमण करब।
- (C) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

१२१०. “मातृभाषा”क आरम्भमे आर्थिक प्रसंग किएक महत्वपूर्ण अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) किएक तँ मातृभाषा-सेवा लेल निजी पूँजी आ भविष्यक सुरक्षा दाउपर लगल।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

खण्ड ७४६ : विदेह-सदेह २ — “विदेह” पत्रिका: भाषा-प्रेम आ आर्थिक जोखिम

१२११. लेखिकाक पतिक नाम कोन रूपमे आयल अछि?

- (A) डा. मणिकान्त मिश्र।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

१२१२. लोनक धनक सम्बन्धमे डा. मणिकान्त मिश्रक इच्छा की छल?

- (A) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) मैथिली भाषाक पत्रिका निकालब।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

१२१३. दूनू गोटे मिलि कोन नामक मैथिली पत्रिका शुरू कएलनि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) “विदेह”।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

१२१४. पत्रिका शुरू भेलाक बाद सभसँ पैघ समस्या की ठाढ़ भेल?

- (A) के कीनत आ के पढ़त।
- (B) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

१२१५. घरक पूँजी लगा कतेक बरख पत्रिका चलाओल गेल?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) लगभग दू बरख।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

१२१६. “विदेह” पत्रिका बन्द करए पड़बाक कारण की छल?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) दूनू गोटे डाक्टरी, घर, अस्पताल आ पारिवारिक झंझटमे व्यस्त छलाह।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।

१२१७. बम्बईमे नव-नव रहबाक प्रसंग भाषाक निर्णयकेँ कोना गाढ़ बनबैत अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) नव महानगरीय संघर्षक बीच मैथिली पत्रिका निकालब असाधारण साहस छल।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

१२१८. पत्रिका प्रसंगमे “दुस्साहस” शब्दक अर्थ की अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (C) सुरक्षित निजी लाभ छोड़ि मातृभाषाक लेल कठिन जोखिम उठाएब।
- (D) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।

१२१९. “विदेह” पत्रिका प्रसंग मातृभाषा-प्रेमक कोन रूप देखबैत अछि?

- (A) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।
- (B) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (C) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (D) भाषा लेल संस्थागत, मुद्रित आ सार्वजनिक मंच बनाएबाक प्रयास।

१२२०. लेखक-दम्पतीक निर्णयमे निजी भविष्य आ मातृभाषाक सम्बन्ध कोना बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प स्रोतक आशयसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) निजी भविष्यक साधन मातृभाषाक सार्वजनिक सेवामे लगा देल गेल।
- (C) ई बात एहि प्रसंगमे गौण वा असंबद्ध अछि।
- (D) ई निष्कर्ष पाठक उलट अर्थ निकालैत अछि।

उत्तरमाला — अध्याय २ (उत्तर ओ व्याख्या / Answers & Explanations)

१. (B) २००९-१० क मैथिली प्रबन्ध, निबन्ध आ समालोचना संकलन रूपमे। — आरम्भिक शीर्षक एहि खण्डक विधागत क्षेत्र स्पष्ट करैत अछि।
२. (A) २६म सँ ५०म अंकक चुनल रचना पर। — संकलनक आधार पूरा वर्षक पाक्षिक अंक-परिसर अछि।
३. (D) लगभग दस प्रतिशत चुनल रचना संग प्रस्तुत। — ई पूरा ई-पत्रिका नहि, संपादित चयन अछि।
४. (D) साक्षात्कार, सम्पादकीय, संदेश-आलोचना, प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना। — आरम्भिक वक्तव्य खण्डक बहुविध आलोचनात्मक प्रकृति देखबैत अछि।
५. (D) रचनात्मक साहित्यक साथ विचार, विवेचन आ संवाद केँ केन्द्रमे राखि। — शीर्षक पाठककेँ आलोचनात्मक-सांस्कृतिक सामग्रीक संकेत दैत अछि।
६. (B) ई संकलन सामग्री-विभाजन आ पुस्तक-योजना दुनू सँ जुड़ल अछि। — मुख्य संकलनसँ बाहर अलग पुस्तकाकार परियोजना सेहो बताओल गेल अछि।
७. (A) कविता-संग्रहकेँ स्वतंत्र पुस्तक रूपमे प्रतिष्ठित करबाक योजना। — किछु दीर्घ/विशिष्ट कृति संकलनसँ अलग स्थान पबैत अछि।
८. (C) मैथिली चित्र-शृंखलाकेँ स्वतंत्र दृश्य-पुस्तक रूपमे देखल गेल। — कॉमिक्स/चित्र-कथा केँ सेहो प्रकाशन-योजना मे जगह अछि।
९. (A) पाक्षिक ई-प्रकाशन आ प्रिंट चयन बीच सेतु बनबैत अछि। — पाठककेँ ऑनलाइन मूल आ मुद्रित चयन दुनू संदर्भ भेटैत अछि।
१०. (C) ई-पत्रिका, प्रिंट-संकलन, आलोचना आ साहित्य-इतिहासक संयुक्त परियोजना। — भूमिका संकलनकेँ मात्र पुस्तक नहि, आंदोलनक दस्तावेज बनबैत अछि।
११. (B) तिरहुता आ देवनागरी। — आन्दोलन लिपि-सचेत मैथिली कार्य रूपमे चित्रित अछि।
१२. (C) २०० सँ बेसी लेखक जुड़ि चुकल छथि। — भूमिका लेखकीय समुदाय विस्तार पर बल दैत अछि।
१३. (A) देवनागरी, तिरहुता आ ब्रेल तीनू रूपमे। — ई बहुल लिपि/स्पर्श-पाठक पहुँचक संकेत अछि।
१४. (C) ई-पत्रिका सँ मुद्रित सदेह शृंखला धरि यात्रा। — ऑनलाइन सामग्री प्रिंट संस्करण मे सेहो बदलल गेल।
१५. (C) विदेहक व्यापक डिजिटल साहित्य-संग्रह। — भूमिका साहित्यिक परिमाण आ सार्वजनिक प्रस्तुति पर बल दैत अछि।

१६. (A) भाषिक संसाधन आ शोध-सामग्री रूपमे। — कॉर्पोरा मैथिली भाषा-प्रौद्योगिकी आ अध्ययनक आधार बनि सकैत अछि।
१७. (B) भोजपत्र, तालपत्र आदि पाण्डुलिपिक मिथिलाक्षर अंकण आ देवनागरी लिप्यंतरण। — भूमिका परम्परागत धरोहरकें डिजिटल/पठनीय रूप देबाक काम बतबैत अछि।
१८. (A) शब्द, ऑडियो, वीडियो, चित्रकला, छायाचित्र, पोथी आ बाल-साहित्यक भंडार। — आर्काइव बहु-माध्यमी सांस्कृतिक संग्रह रूपमे राखल अछि।
१९. (A) मैथिली साहित्यक दृष्टिबाधित पाठक-समावेशनक दिशा देखबैत अछि। — ब्रेल प्रकाशन साहित्यक पहुँचक दायरा बढ़बैत अछि।
२०. (D) उपलब्धि सभकें अन्तिम नहि, विस्तृत भविष्य-कार्यक आरम्भ मानल गेल। — वाक्य आन्दोलनक दीर्घकालिकता आ विस्तार-कामना व्यक्त करैत अछि।
२१. (B) विदेहक ३००० सँ बेसी अन्तर्जाल सदस्यक सहभागितासँ। — ई सामुदायिक भाषा-मानकीकरणक प्रक्रिया देखबैत अछि।
२२. (D) आवेदनकर्ता द्वारा आवेदनमे विदेहक योगदान वर्णित। — भूमिका लिपि-प्रौद्योगिकीमे विदेहक योगदान बतबैत अछि।
२३. (A) मैथिलीमे विधि-व्यवहार आ श्रमगीतक ऑडियो-वीडियो संरक्षण। — विदेह लोक-संस्कारकें जीवित अभिलेख बनबैत अछि।
२४. (B) मौखिक-संगीतिक मैथिली संस्कृति सुरक्षित करबाक दृष्टिसँ। — साहित्य केवल लिखित रूपमे नहि, ध्वनि-संग्रह रूपमे सेहो उपस्थित अछि।
२५. (A) रंगमंच आ दृश्य-संस्कृति कें आर्काइवमे स्थान। — नाटकक प्रदर्शन-परम्परा डिजिटल संग्रहमे पहुँचल अछि।
२६. (B) पठन, डाउनलोड आ शोध लेल विशाल सार्वजनिक पुस्तक-संसाधन। — ई संसाधन मैथिली पाठक-वर्गक पहुँच बढ़बैत अछि।
२७. (D) बाल-पाठककें मैथिली साहित्य-संसारमे सक्रिय जगह। — भूमिका बाल-साहित्य कें अलग महत्व दैत अछि।
२८. (D) साहित्यिक आ दृश्य-कला धरोहरक संयुक्त संरक्षण। — आर्काइव कला-साहित्य विभाजनसँ आगू बढ़ैत अछि।
२९. (A) प्राचीन अभिलेख आ आधुनिक डिजिटल पाठ बीच। — मिथिलाक्षर अंकण परंपरा कें पुनर्पठनीय बनबैत अछि।
३०. (D) लिपि, भाषा, संस्कार, ध्वनि, दृश्य, पोथी आ बाल-साहित्य सभकें एकसंग। — ई भूमिका विदेहकें बहु-माध्यमी सांस्कृतिक मंच बनबैत अछि।
३१. (B) गजेन्द्र ठाकुर। — प्रकाशन-परिचयमे सम्पादकीय उत्तरदायित्व स्पष्ट देल अछि।
३२. (D) रश्मि रेखा सिन्हा आ उमेश मंडल। — संकलनक सम्पादन सहयोगी संरचना मे ई नाम देल अछि।
३३. (C) विद्यानन्द झा आ नागेन्द्र कुमार झा। — भाषिक शुद्धि/सम्पादनक अलग भूमिका निर्दिष्ट अछि।
३४. (C) ई-पत्रिका मे लेखक-संदर्भ सहित प्रकाशनक संपादकीय पद्धति। — रचना संग लेखक-परिचय दस्तावेज बनबैत अछि।
३५. (B) रचनाक मौलिकता आ प्रकाशन-उत्तरदायित्व। — संपादकीय नियम साहित्यिक ईमानदारी पर बल दैत अछि।
३६. (A) मैथिली, संस्कृत आ अंग्रेजीमे। — ई भाषिक विस्तार मिथिला-केंद्रित बहुभाषी मंचक संकेत अछि।
३७. (C) मासक ०१ आ १५ तिथिकें ई-प्रकाशन। — पत्रिकाक नियमितता पाक्षिक समय-सारिणी सँ निर्धारित अछि।
३८. (A) रचनाक अधिकार मूल रचनाकार लग मानल गेल। — संपादकीय नीति लेखक-अधिकारक संरक्षणक घोषणा करैत अछि।
३९. (A) आर्काइव/रचनाक पुनः उपयोग लेल अनुमति-व्यवस्था आवश्यक। — ई डिजिटल सामग्रीक अधिकार-बोध देखबैत अछि।
४०. (C) संपादकीय पद्धति बुझबाक सीमा धरि। — मूल महत्त्व प्रकाशन-संरचना आ साहित्यिक नीति बुझबामे अछि, न कि पता-दाम याद करबामे।
४१. (C) मामाक गाम अभुआढ़, सुपौल जिला। — साक्षात्कार जन्म आ आरम्भिक पालन-पोषणक ग्रामीण स्रोत स्पष्ट करैत अछि।
४२. (D) २७ जुलाई १९३६। — ई जीवकान्तक जीवन-संदर्भक मूल तथ्य अछि।
४३. (D) पहिने मामक गाममे, बादमे अपन गाम मधुवनक डेओढ़मे। — आरम्भिक जीवन दू ग्रामीण परिसर सँ जुड़ल अछि।
४४. (B) चारि भाइक संयुक्त परिवार, १५-१६ बच्चा संग लालन-पालन। — संयुक्त परिवारक सामाजिक वातावरण हुनकर स्मृतिमे स्पष्ट अछि।
४५. (A) दू भाइ, बहिन सभक स्थिति आ परिवारक अलग-अलग ठामक जीवन। — साक्षात्कार निजी पारिवारिक संदर्भ खोलैत अछि।
४६. (D) चेन्नईमे बैंकमे कार्यरत। — परिवार परिचयमे संतति सभक पेशागत/स्थानगत सूचना देल अछि।
४७. (B) लखीसरायमे एल.आई.सी. काज। — ई परिवारक वर्तमान जीवन-सूत्रक भाग अछि।
४८. (B) नेपालक राजविराज। — परिवार मिथिला-नेपालक सांस्कृतिक परिसर धरि पसरल देखाइत अछि।
४९. (D) जीवन-परिवारक सामाजिक पृष्ठभूमि। — लेखकक विचार ओकर जीवन-संदर्भसँ जुड़ि बुझाओल गेल अछि।

५०. (D) सामूहिक ग्रामीण अनुभवक संवेदनात्मक आधार। — पारिवारिक परिवेश बादक साहित्यिक अनुभवक स्रोत मानल जा सकैत अछि।
५१. (D) नहि, भाइ वा बच्चा मैथिलीमे नहि लिखैत छल। — ई लेखकक अकेल रचनात्मक पथक संकेत अछि।
५२. (B) ओ बहुत नहि बुझैत छलीह आ एकरा फालतू काज बुझैत छलीह। — लेखनक घरेलू स्वीकृति आरम्भमे सहज नहि छल।
५३. (D) घरक दिनचर्या आ लेखकक रात्रि-लेखन बीच तनाव। — लाइट मिझा देबाक प्रसंग लेखनक घरेलू संघर्षक प्रतीक अछि।
५४. (B) ओ सहयोग करए लगलीह। — जीवकान्त लेखन जारी राखबामे पत्नी-सहयोगक आधार मानैत छथि।
५५. (A) घरेलू समर्थन लेखकक रचनात्मक जीवन लेल निर्णायक। — लेखक अपन निर्भरता आ कृतज्ञता स्पष्ट करैत छथि।
५६. (B) आधार। — साक्षात्कारमे पत्नीक सहयोगक महत्त्व प्रत्यक्ष मानल गेल अछि।
५७. (C) लेखन व्यक्तिगत संकल्पक परिणाम बनैत अछि। — परिवार-परंपरा नहि, स्वनिर्णय हुनका साहित्य दिस अनलक।
५८. (D) दृढ़ता आ रचनात्मक धैर्य। — घरक असहमति बावजूद लेखन जारी रहल।
५९. (B) साहित्यक श्रम घर-परिवारक अदृश्य सहमति पर निर्भर रहैत अछि। — साक्षात्कार लेखनक सामाजिक/घरेलू आधार देखबैत अछि।
६०. (C) लेखन निजी प्रतिभा मात्र नहि, सहनशील घरेलू सहयोगसँ बनैत अछि। — ओ पत्नीक सहायताकें रचनात्मक अस्तित्वक आधार मानैत छथि।
६१. (A) ओहि कालमे पढ़ैक महत्व बेसी नहि छल। — उत्तर आरम्भिक शिक्षा-संस्कृतिक कमी देखबैत अछि।
६२. (C) कियो नहि गेल, ओ स्वयं गेलाह। — ई आत्म-प्रेरित शिक्षा-यात्राक संकेत अछि।
६३. (A) माटि पर लिखब। — ग्रामीण पाठशाला-संस्कृतिक साधारण यथार्थ सामने अबैत अछि।
६४. (B) तुलसीदासक रामायण पाठ आ तर्क-वितर्क। — लोक-सभा मे श्लोकक अर्थ-बहस साहित्यिक चेतना जगबैत अछि।
६५. (A) बेंकटेश्वर स्टीम प्रेससँ छपल मोटका रामायण। — घरक धार्मिक-पाठ्य वातावरण हुनका पढ़बाक सामग्री देलक।
६६. (B) हमहूँ किएक नहि लिखी। — लेखनक प्रेरणा पाठ-बहससँ जन्मल।
६७. (C) कविता। — साक्षात्कारमे पहिल रचनात्मक दिशा कविता बताओल गेल।
६८. (C) आर्यावर्तमे। — प्रारम्भिक प्रकाशन हुनका लेखक-विश्वास देलक।
६९. (C) प्राइवेटसँ बी.ए.। — जीवन-क्रममे उच्च शिक्षा स्वप्रयत्नसँ जोडायल अछि।
७०. (D) भाषा-चयन लेखकत्वक निर्णायक मोड़ छल। — जीवकान्तक साहित्य-दिशा सहज नहि, विचारक बाद तय भेल।
७१. (A) ओहिसँ बेसी प्रभावित भेलाह। — मिथिला मिहिर हुनका मैथिली साहित्यिक जगतसँ जोड़लक।
७२. (B) ओ सेहो प्रभावक स्रोत छल। — जीवकान्त भारतीय व्यापक साहित्यिक परंपरासँ सेहो जुड़ल देखाइत छथि।
७३. (A) नित दिन लिखबाक। — लेखन हुनका लेल नियमित साधना बनल।
७४. (B) खजौली, देहोल, पोखराम आदि गाममे रहि व्यापक अनुभव भेटल। — स्थान-स्थानक जीवनक अनुभव साहित्यक सामग्री बनल।
७५. (C) इंगलिश मीडियम खुल्लासँ लोक संस्कृत बिसरि गेल। — भाषा-शिक्षा परिवर्तनक सामाजिक टिप्पणी अछि।
७६. (A) शिक्षा-प्रणालीमे मैथिली उपस्थित छल। — भाषिक संरचना परिवर्तनशील छल।
७७. (A) ग्राम-जीवन हुनकर भाषा-संवेदना के मूल अछि। — ओ शहरिया प्रभावसँ अधिक ग्रामीण संवेदना पर बल दैत छथि।
७८. (A) “इजोरिया आ टिटही”। — ई प्रकाशन हुनका जोश देनिहार घटना बनल।
७९. (B) हुनका लेखनक जोश भेटल। — पहिल मैथिली प्रकाशन आत्मविश्वासक स्रोत बनल।
८०. (B) आर्यावर्त शुरुआती कविता छापलक, मिथिला मिहिर मैथिली दिशा दृढ़ कएलक। — दुनू मंच हुनकर लेखक-निर्माणमे अलग भूमिका खेलैत अछि।
८१. (D) कविता। — ओ स्पष्ट कहैत छथि जे कविता हुनकर प्रिय अछि।
८२. (C) आनन्द अबैत अछि। — लेखनक मूल भाव रसात्मक अनुभूति अछि।
८३. (A) रचना/लेखनक अलग-अलग प्रभाव, जे साफ तुलना सँ परे अछि। — गंधक प्रतीक सूक्ष्म साहित्यिक अनुभूति बुझबैत अछि।
८४. (A) कविता हुनकर विचार-प्रेषणक मूल माध्यम अछि। — कविता अर्थ आ अनुभूति दुनू केँ एकसंग पहुँचबैत अछि।
८५. (D) पाठककें सूत्र जोड़ए पड़ैत अछि। — हुनकर कथा-शिल्प पाठक-सक्रियता माँगैत अछि।

८६. (D) प्रत्येक लेखक/रचनाक संवेदना विशिष्ट होइत अछि। — ई साहित्यिक विविधता स्वीकार करैत अछि।
८७. (D) कविता। — ओ अपन रचनात्मक जड़ कविता मे देखैत छथि।
८८. (A) विचार सेहो काव्यात्मक ढंगसँ कहबाक प्रवृत्ति। — हुनकर गद्य मे सेहो काव्य-संवेदना रहैत अछि।
८९. (C) सक्रिय अर्थ-निर्माण। — पाठक तैयार सूत्र नहि, संकेत सँ अर्थ जोड़ैत अछि।
९०. (D) ओ मूलतः काव्य-संवेदनासँ संचालित लेखक छथि। — कविता हुनकर शैली, विचार आ अनुभवक केन्द्रीय आधार अछि।
९१. (A) जीवकान्तक कहियौ ओ उपन्यास लिखताह। — ई कथन हुनकर कथात्मक क्षमता पर विश्वास देखबैत अछि।
९२. (B) चुनौतीक रूपमे। — आमंत्रण हुनका नियमित लेखनक दिशा देलक।
९३. (C) जे लिखबैत रहल, फरमाइश करैत छल, से लिखैत रहलाह। — ई पत्रिका-संपर्क आधारित सक्रिय लेखन-प्रक्रिया अछि।
९४. (C) पटना जाएबाक आ लोकसँ भेटक अवसर। — संगठनात्मक जीवन लेखक-सम्पर्क बढ़बैत अछि।
९५. (C) प्रोत्साहनक स्रोत। — साहित्यिक संवाद हुनकर लेखन बलवती कएलक।
९६. (A) फरमाइश पर। — हुनकर उपन्यास-लेखन संपादकीय आग्रहसँ प्रेरित रहल।
९७. (C) धारावाहिक रूपमे। — पत्रिका-आधारित पाठक-संबंध उपन्यास प्रकाशनक माध्यम बनल।
९८. (D) व्यक्तिगत प्रतिभा संग साहित्यिक समुदाय आ संपादकीय आग्रह। — लेखन अकेल नहि, सम्पर्क-संरचना सँ सेहो बढ़ल।
९९. (B) कविताक भीतर कथाकारक संभावना देखल गेल। — वरिष्ठ साहित्यकार नव दिशा पहिचानैत छथि।
१००. (C) लेखककें आमंत्रित, चुनौतीत आ प्रकाशित करनिहार मंच। — पत्रिका जीवकान्तक विस्तारक सक्रिय माध्यम बनल।
१०१. (A) लोक ओकरा संदेहक दृष्टिसँ देखैत अछि। — ओ पुरस्कार-प्रक्रिया पर सहज भरोसा नहि देखबैत छथि।
१०२. (C) ओ नहि जनैत छथि। — ओ स्वयंकेँ पुरस्कार-राजनीति सँ दूर रखैत छथि।
१०३. (C) साहित्यिक सत्ता-केंद्रसँ दूरी। — गामक जीवन अकादमीक नेटवर्कसँ अलग अछि।
१०४. (A) पुरस्कार-पहुँच लेल गुट/मित्र-मंडली नहि बनाएल। — ओ संबंध-राजनीति सँ दूरीक दावा करैत छथि।
१०५. (D) अनौपचारिक। — पुरस्कार चर्चा मे समाजक ढाँचा सेहो उल्लेखित अछि।
१०६. (A) भऽ सकैत अछि, मुदा ओ एहि सभमे नहि पड़ैत। — ओ विलंब पर शिकायतक बजाय उदासीनता देखबैत छथि।
१०७. (A) स्वतंत्रता आ संस्थागत राजनीति सँ दूरी। — ओ पुरस्कारकें लेखनक अंतिम मूल्य नहि मानैत।
१०८. (A) योग्य लेखकक उपेक्षा होइत अछि। — ओ पुरस्कार-व्यवस्थाक निष्पक्षता पर प्रश्न करैत छथि।
१०९. (D) सम्मान पर संदेह हो सकैत, रचना स्वतंत्र रहैत अछि। — ओ पुरस्कारक राजनीतिकता आ लेखनक स्वतन्त्रता अलग रखैत छथि।
११०. (A) लेखन पुरस्कार-समीकरणसँ ऊपर रहबाक चाही। — जीवकान्त अपन लेखकीय अस्मिता केँ संस्थागत गणना सँ अलग रखैत छथि।
१११. (A) किछु अनुवाद कएलथि। — पत्रिका आरम्भ हुनका अनुवाद-कर्म दिस आनलक।
११२. (A) पहिल कहानी हुनकर आएल। — ओ पत्रिका-प्रकाशनमे मैथिली उपस्थिति पर अपन भूमिका बतबैत छथि।
११३. (A) राष्ट्रीय/बृहत्तर पत्रिका संसारमे मैथिलीक प्रवेश। — विशेषांक मैथिली साहित्यक दृश्यता बढ़बैत अछि।
११४. (C) एकटा अनुवाद। — जीवकान्त पत्रिका-परिसरक अन्य अनुवादक नाम सेहो जोड़ैत छथि।
११५. (B) आदरसँ छापैत छल। — मैथिली लेखकक हिंदी साहित्यिक मंचमे स्वीकार्यता देखाइत अछि।
११६. (B) भौगोलिक रूपे विस्तृत प्रकाशन-पहुँच। — जीवकान्तक रचना मिथिला सीमासँ बाहर छपल।
११७. (B) “तकैत अछि चिड़ै”। — साक्षात्कार एहि संग्रहकेँ मुख्य साहित्यिक उपलब्धि रूपमे राखैत अछि।
११८. (C) साहित्य अकादमी पुरस्कार। — कविता-संग्रह हुनका प्रमुख मान्यता देलक।
११९. (B) “निशांतक चिड़िया”। — अनुवाद मैथिली रचनाकेँ हिंदी पाठक धरि ल’ गेल।
१२०. (B) हुनकर कृतित्व शैक्षिक अध्ययनक विषय बनल। — रचना प्रकाशनसँ आगू शोध-क्षेत्र धरि पहुँचल।
१२१. (B) कविता कतहुसँ शुरू भऽ तार्किक परिणति तक पहुँचैत अछि। — ओ रहस्यकेँ अव्यवस्था नहि, तार्किक यात्रा मानैत छथि।

१२२. (B) कविता अंतर्मे अर्थ-वक्रता वा मोड़ लैत अछि। — पाठक अंतिम मोड़सँ नब अर्थ ग्रहण करैत अछि।
१२३. (B) अलग-अलग पाठक अलग गप देखैत अछि। — कविता अर्थक बहुलता स्वीकार करैत अछि।
१२४. (C) स्वयं अर्थ खोजबाक। — पाठक निष्क्रिय ग्रहणकर्ता नहि रहैत।
१२५. (A) आरम्भ खुला, पर अन्त अर्थ-संगत। — कविताक रहस्य भीतर आंतरिक क्रम राखैत अछि।
१२६. (C) पूर्व अर्थकें पलटि वा गाढ़ करि दैत अछि। — मोड़ पाठकक धारणाक पुनर्गठन करैत अछि।
१२७. (D) पाठक, काल आ अनुभव भिन्न-भिन्न होइत अछि। — हर पाठक अपना अनुभवसँ कविता पढ़ैत अछि।
१२८. (C) ओ आरम्भ, परिणति आ पाठकीय अर्थक संबंध पर बोलाई छथि। — उत्तर कवि-कर्मक संरचनात्मक समझ देखबैत अछि।
१२९. (B) सादा एकरेखीय सूचना। — कविता संकेत, मोड़ आ पाठकीय भागीदारी सँ बनैत अछि।
१३०. (D) कविता खुलल आरम्भसँ अर्थपूर्ण मोड़ धरि पाठककें सक्रिय यात्रा करबैत अछि। — ई दृष्टि रहस्य, तर्क आ अनुभवकें जोड़ैत अछि।
१३१. (C) ओते प्रोफेशनल नहि। — ओ समीक्षा कें जीवन-पठनक विस्तार मानैत छथि, पेशेवर दावेदारी नहि।
१३२. (C) छोट-छोट टिप्पणी। — हुनकर समीक्षा-शैली संक्षिप्त, पाठकीय प्रतिक्रिया-आधारित रहल।
१३३. (C) ६०-७० टा। — ई दीर्घ पठन-यात्रा आ सीमित टिप्पणीक संकेत अछि।
१३४. (B) समीक्षा संग हास-परिहास आ चर्चा हुनकर स्वभाविक संवाद-क्षेत्र छल। — ओ गंभीर समीक्षा कें जीवन-चर्चा सँ अलग नहि राखैत।
१३५. (C) नव लेखक तेजी सँ आबि रहल छथि। — ओ मैथिली लेखनमे नब पीढ़ीक उभार देखैत छथि।
१३६. (D) लेखनक सामाजिक आधार विस्तृत भऽ रहल अछि। — मैथिली साहित्य केवल शहर-केंद्रित नहि।
१३७. (C) अद्भुत लेखक भेल। — ओ मध्यवर्ती पीढ़ीक योगदान स्वीकार करैत छथि।
१३८. (B) लोक विवशता आ निर्धनताक विलक्षण चित्रण। — ओ समाजक दुख-दरिद्रता कें कलात्मक रूप दैत छथि।
१३९. (C) गंभीर भऽ रहल अछि, स्तर बढ़ल अछि। — ओ कविता-क्षेत्रमे विचारक विस्तार देखैत छथि।
१४०. (A) मैथिलीमे नब स्वर, ग्रामीण विस्तार आ गंभीर काव्य-चेतना उभरि रहल अछि। — जीवकान्त समकालीन लेखनमे जीवंतता देखैत छथि।
१४१. (D) यूरोपसँ। — ओ समीक्षा परंपराक ऐतिहासिक उद्गम यूरोपीय मानैत छथि।
१४२. (D) अन्वेषण आ समुचित परिप्रेक्ष्य। — ओ आदर्श समीक्षा कें शोधपूर्ण आ संदर्भ-सचेत मानैत छथि।
१४३. (B) एहि विधामे पिछड़ल। — तुलनात्मक दृष्टि मे भारतीय समीक्षा कमजोर कहैत छथि।
१४४. (D) हिंदीमे सेहो नीक समीक्षा नहि भऽ रहल। — ओ आलोचना-संकट केवल मैथिली धरि सीमित नहि मानैत।
१४५. (A) तटस्थ मूल्यांकनक स्थान पर वक्तव्य-प्रधानता। — जीवकान्त समीक्षा कें भाषणबाजीसँ अलग करैत छथि।
१४६. (C) समीक्षा-व्यवस्था मे प्रतिभा-दमन होइत अछि। — ओ आलोचनात्मक न्याय पर प्रश्न करैत छथि।
१४७. (B) महान परंपरा पर पर्याप्त समालोचना-अन्वेषणक कमी। — ओ मूल साहित्यिक धरोहर पर गहन अध्ययनक अभाव बतबैत छथि।
१४८. (A) प्रमुख कृतित्व/समालोचक पर पर्याप्त समीक्षा-अभाव। — ओ मैथिली आलोचनाक अधूरापन बतबैत छथि।
१४९. (B) सूक्ष्म साहित्यिक काम लेल उपयुक्त आलोचनात्मक औजार चाही। — गलत पद्धति सँ सही समीक्षा सम्भव नहि।
१५०. (A) समीक्षा मे तटस्थता, पद्धति, योग्यता आ गहराई कम अछि। — जीवकान्त आलोचनाक संस्थागत संकट रेखांकित करैत छथि।
१५१. (C) छोट स्वार्थक भीतर फँसल आलोचना-संस्कृति। — जीवकान्त साहित्यिक दुनिया मे संकीर्णता देखैत छथि।
१५२. (D) साहित्यिक मूल्यांकन मे सामाजिक पक्षपात घुसल अछि। — ओ जाति-आधारित दृष्टि कें साहित्यक बाधा मानैत छथि।
१५३. (C) प्रतिस्पर्धा आ अहंकारक रोग। — साहित्यिक संवाद सम्मानक बजाय अवमूल्यन बनि जाइत अछि।
१५४. (D) साहित्यिक सृजनक नैतिक-संवेदनात्मक धरातल कमजोर भेल। — जीवकान्त रचना कें समूहवादसँ दबैत देखैत छथि।
१५५. (B) अपने समूहक रचना-प्रशंसा आ पक्षपात। — ई स्वायत्त मूल्यांकनकें कमजोर करैत अछि।
१५६. (B) अहंकारी आत्म-महिमा। — साहित्यिक समाजमे विनम्रता आ आत्मालोचनक कमी बताओल गेल।
१५७. (D) साहित्यिक श्रेय-लालसा। — सृजन/सेवा सँ बेसी श्रेय-दावेदारी प्रमुख भऽ गेल।

१५८. (D) पक्षपात आ गुटबाजी तटस्थ समीक्षा रोकैत अछि। — समालोचना नैतिक-सामाजिक रोग सँ प्रभावित अछि।
१५९. (C) निष्पक्षता, गुण-पहिचान आ स्वार्थ-नियंत्रण। — ओ साहित्यकें निजी दल-बन्दी सँ बचाबय चाहैत छथि।
१६०. (B) ओ मैथिली साहित्यिक समाजक अंदरूनी रोग केँ बेपर्दा करैत अछि। — साक्षात्कार प्रशंसा नहि, आत्म-समालोचना बनैत अछि।
१६१. (B) सभ लेखक अपन अनुभवकेँ पुनर्जीवित करैत अछि। — लेखन जीवन-अनुभवक पुनर्सर्जन अछि।
१६२. (B) व्यक्तिगत अनुभव सँ व्यापक अर्थ/व्यवस्था बनबैत अछि। — लेखक अनुभवकेँ विचारक रूप देताह।
१६३. (C) शिक्षक स्तर बढ़त त प्रचार-प्रसार बढ़त। — भाषा-विकास शिक्षा-संरचना पर निर्भर मानल गेल।
१६४. (B) भाषा-विस्तारक शैक्षिक बाधा। — गुणी शिक्षक बिना भाषा-संस्कृति मजबूत नहि होइत।
१६५. (A) एखनो बेसी नहि अछि। — जीवकान्त भाषा-विकास केँ महिला-शिक्षासँ जोड़ैत छथि।
१६६. (B) साक्षरता बढ़त त आर्थिक स्थिति नीक होएत। — भाषा, शिक्षा आ अर्थनीतिक संबंध देखाओल गेल।
१६७. (D) डिजिटल माध्यम मैथिली प्रसारक नया आधार बनल। — जीवकान्त इंटरनेटक सम्भावना स्वीकार करैत छथि।
१६८. (B) नीक काज कए रहल छथि। — हुनका आधुनिक मैथिली सक्रियता मे सकारात्मक रूपे देखल गेल।
१६९. (D) संस्थागत/सामुदायिक भाषा-काजक स्वीकृति। — कोलकाताक संगठन सेहो मैथिली प्रसारमे मान्य बताओल गेल।
१७०. (B) मैथिली विकास लेल जीवन-अनुभव, शिक्षण-सुधार आ डिजिटल सक्रियता तीनू आवश्यक। — जीवकान्त भाषा-प्रसारकेँ बहु-आधारी प्रक्रिया मानैत छथि।
१७१. (A) अन्यायक खिलाफ आवाज उठबैत हुनकर मनोदशा अछि। — ओ लेखनकेँ कमजोर लोकक पक्षक प्रतिरोध मानैत छथि।
१७२. (D) जनताकेँ सुरक्षा आ सड़क चाही। — राज्यक मूल उत्तरदायित्व लोक-सुविधा आ सुरक्षा अछि।
१७३. (A) राजनीतिक स्वतंत्रता संग सामाजिक समस्या समाप्त नहि भेल। — ओ स्वतंत्रता पछाति संरचनात्मक कमी देखैत छथि।
१७४. (D) लेखन सामाजिक अन्यायसँ प्रेरित अछि। — विद्रोही स्वर पीड़ित वर्गक अनुभव सँ उठैत अछि।
१७५. (B) विद्यापति आ परंपरागत पद/श्लोकमे दरिद्रता-वर्णन। — गरीबीक साहित्यिक चेतना मार्क्सवादसँ पुरान बताओल गेल।
१७६. (D) भक्ति/काव्य परंपरामे दुख-दरिद्रताक स्वर। — गरीबी केवल आधुनिक राजनीतिक शब्द नहि।
१७७. (D) मार्क्सवाद आ लोहिया दुनूसँ। — ओ बराबरी-समानताक विचार प्रमुख मानैत छथि।
१७८. (C) उत्तम विचार, मुदा हिंसाक पक्षमे बेसी। — ओ विचारक मूल्य मानैत, पर हिंसात्मक पक्षसँ असहज छथि।
१७९. (A) “सर्वे भवन्तु सुखिनः” पर आधारित। — ओ भारतीय संदर्भमे गांधी/समाजवादक प्रासंगिकता जोड़ैत छथि।
१८०. (B) लेखन अन्याय-विरोधी अछि, पर विचारधारा केँ भारतीय-सामाजिक संदर्भमे परखैत अछि। — जीवकान्त प्रतिरोध, समानता आ अहिंसक सामाजिक दृष्टिक संतुलन राखैत छथि।
१८१. (B) मार्क्सवादी छवि बावजूद आध्यात्मिक-सांस्कृतिक काव्यक प्रशंसा केलथि। — ओ विचारधारा सँ परे साहित्यिक मूल्य मानैत छथि।
१८२. (D) आध्यात्म पर हुनकर लेखन अद्भुत आ काव्य उत्कृष्टता तक पहुँचेनिहार। — ओ आध्यात्मिक-सांस्कृतिक योगदानक सम्मान करैत छथि।
१८३. (C) मार्क्सवादी होएबाक अर्थ सांस्कृतिक परंपरा त्याग नहि। — जीवकान्त विचार आ परंपराक संतुलन चाहैत छथि।
१८४. (C) हर क्षेत्रमे परिवर्तन आवश्यक, परिवर्तन समर्थक कालजयी। — कविता समय-सापेक्ष बदलैत रहैत अछि।
१८५. (B) पाँच साल बाद विषय बदलैत गेलहुँ। — स्वयंकेँ जीवित रखबाक कारण विषय-विस्तार मानैत छथि।
१८६. (C) पंजाब आ बंगालसँ। — ओ क्षेत्रीय साहित्यिक आंदोलनो केँ याद करैत छथि।
१८७. (C) कृष्णक कुरुक्षेत्र छोड़ि बाँसुरी बजाबक आह्वानक रूपमे। — राजनीतिक/युद्ध-प्रसंगसँ मानवता/संगीत दिस लौटबाक काव्य संकेत अछि।
१८८. (B) शृंगार आ भक्ति। — परंपरागत कविता विषय-विविधता सँ भरल अछि।
१८९. (C) ओकरा बेवकूफी कहैत छथि, मुदा आदमी-मित्रता-सुख-दुख स्थायी विषय मानैत। — ओ क्षणिक राजनीति सँ बेसी मानवीय अनुभवक पक्षमे छथि।
१९०. (C) जन्मक बाद निरंतर बदलैत जीवन जकाँ कविता बदलैत रहैत अछि। — रूपक परिवर्तनकेँ स्वाभाविक जीवन-प्रक्रिया बनबैत अछि।

१९१. (C) शिक्षक रहलहुँ, प्रभाव छोड़ब स्वाभाविक; कमांडो वा दलाल नहि बनेने छी। — ओ प्रभाव आ गुट-निर्माण बीच भेद करैत छथि।
१९२. (A) हुनकर लेखन/शिक्षकत्वसँ प्रभावित रचनाकर्मी सभ। — प्रभाव साहित्यिक उत्तराधिकार रूपमे देखल गेल।
१९३. (D) मिथिला मिहिरमे जीवकान्तक कविता पढ़ि लेखनधारा संग जुड़ल प्रेरणा। — ई पाठकीय प्रेरणा केँ सर्जनात्मक परिणाम बनबैत अछि।
१९४. (A) यात्रीजी आ विद्यापतिक। — ओ परंपरा स्वीकार करैत छथि, दास्य-गुट नहि।
१९५. (C) एक समीक्षा सभटा समकालीन सम्भावना खारिज करैत छल। — जीवकान्त एकरेखीय खारिजीक विरोध करैत छथि।
१९६. (A) गौरीनाथकेँ पत्र पठेलथि आ कौपी आन लोककेँ पठेलथि। — ओ निजी असहमति केँ पत्र-आधारित सार्वजनिक आलोचना बनबैत छथि।
१९७. (D) समीक्षक दारू, पैसा, मूर्खता पी कऽ विषवमन करैत अछि। — शीर्षकात्मक कथन समीक्षा-नैतिकता पर तीख हमला अछि।
१९८. (B) मुद्दा पर किछु नहि कहबाक, लेखक स्वयं कारण जनैत हेताह। — ओ कतिपय विवादमे सीमित प्रतिक्रिया दैत छथि।
१९९. (A) लोककेँ सभ ठाम ईमानदार हेबाक चाही। — साहित्यिक नैतिकता जीवन-नैतिकतासँ अलग नहि।
२००. (B) समाजक सत्य लिखलाक कारण बदनाम भेल लेखकक रूपमे। — जीवकान्त सत्य-लेखनक सामाजिक जोखिम देखबैत छथि।
२०१. (B) साहित्य जनसामान्यसँ दूर भऽ प्रदर्शनक वस्तु बनि गेल। — प्रश्न साहित्य आ समाजक दूरी केँ बहसक केन्द्र बनबैत अछि।
२०२. (A) ओ पूछैत छथि जे एहि लेल साहित्यकारकेँ दोषी कोना कहल जा सकैत अछि। — हुनकर उत्तर आरोपक सीधा स्वीकार नहि, प्रत्युत्तरक रूपमे अछि।
२०३. (C) गोष्ठी, कवि सम्मेलन आ अपन लेखन धरि। — प्रश्नमे समाज-राजनीति सँ दूर रहबाक शिकायत अछि।
२०४. (C) साहित्य जीवित सामाजिक सरोकारक बजाय प्रदर्शनात्मक व्यवहार बनल। — ई कथन साहित्यक सामाजिक उपयोगिता पर प्रश्न करैत अछि।
२०५. (D) पहिनुका साहित्यकार एना नहि करैत छलाह। — ओ वर्तमान आ पूर्व पीढ़ी बीच अंतर राखैत छथि।
२०६. (D) पाठक-वर्ग आ जनसमाजसँ विच्छेद। — पहिल प्रश्नसभ साहित्यक लोकाधार पर केन्द्रित अछि।
२०७. (A) ओ दोषक सामान्यीकरण पर प्रश्न उठबैत छथि। — हुनका लेल पूरा दोष साहित्यकार पर राखब सरलीकरण अछि।
२०८. (A) समाज आ राजनीति सँ संवाद रखनिहार साहित्य। — प्रश्न साहित्यकेँ लोकजीवनसँ जुड़ल देखए चाहैत अछि।
२०९. (C) जनजीवनसँ साहित्यिक दूरीक। — गामक अभाव साहित्यक लोक-सम्पर्क टूटबाक संकेत अछि।
२१०. (D) साहित्यकारक दोष बनाम व्यापक सामाजिक-सांस्कृतिक परिस्थिति। — दुनू पक्ष साहित्यक जनाधारबारे अलग ढंगसँ सोचैत अछि।
२११. (A) हरिमोहन झा। — प्रश्नमे गामक पाठकीय स्मृति हरिमोहन झा धरि सीमित कहल गेल अछि।
२१२. (B) पत्रिका गाम-गाम जाइत छल आ साहित्यक पहुँच बनबैत छल। — मिथिला मिहिर पाठक-वर्गक निर्माणक माध्यम रूपमे स्मरित अछि।
२१३. (A) ओकरा एकटा रहस्य जेकाँ मानैत छथि। — ओ तैयार समाधान नहि देखि, समस्या खुला राखैत छथि।
२१४. (A) ओ सम्पूर्ण समाज नहि, एक विशेष वर्ग केँ चित्रित करैत छथि। — लोकप्रियताक साथ वर्गीय सीमा सेहो चिन्हित अछि।
२१५. (D) हरिमोहनक साहित्यसँ दलित समाज लगभग वंचित रहल। — ई लोकप्रिय साहित्यक सामाजिक सीमा बतबैत अछि।
२१६. (B) सीमा रहितहुँ पाठक-वर्ग निर्माणमे हुनकर असर असाधारण रहल। — लोकप्रियता आ प्रतिनिधित्व एकहि चीज नहि।
२१७. (A) हरिमोहन झाक साहित्यसँ। — हुनकर साहित्य पाठकीय अस्तित्व गढ़बाक स्रोत मानल गेल।
२१८. (C) लोकप्रियता बुझबाक सरल सूत्र नहि भेटल। — राजमोहन साहित्यिक प्रभावक जटिलता स्वीकार करैत छथि।
२१९. (D) केना साहित्य लोकधरि पहुँचैत अछि आ पाठक बनबैत अछि। — सवाल केवल लेखक-प्रशंसा नहि, पाठकीय संरचना पर अछि।
२२०. (D) लोकप्रियता, सामाजिक सीमा आ पाठक-निर्माण एकसंग विचार योग्य अछि। — हरिमोहन झाक उदाहरण मैथिली साहित्यक जन-सम्बंधक कसौटी बनैत अछि।
२२१. (D) साहित्य उद्देश्यपूर्ण हो वा मात्र मनोरंजनक लेल। — प्रश्न साहित्यक उपयोगिता आ आनंदक सम्बन्ध पर केन्द्रित अछि।
२२२. (B) मनोरंजन रहबाक चाही, नहि तँ क्यो नहि पढ़त। — ओ पाठक आकर्षणक आवश्यक शर्त मानैत छथि।
२२३. (A) मात्र मनोरंजन। — मनोरंजन जरूरी अछि, मुदा अन्तिम लक्ष्य नहि।
२२४. (C) अलग पाठक-वर्गक अलग आवश्यकता होइत अछि। — राजमोहन साहित्यक बहुस्तरीयता मानैत छथि।

२२५. (D) रुचिकरता संग उद्देश्यपूर्णता। — ओ नीरस उपदेश आ खाली मनोरंजन दुनूसँ आगू सोचैत छथि।
२२६. (C) पठनक आरम्भिक आकर्षण ताहिसँ बनैत अछि। — पाठक नहुँ होए त साहित्यक सामाजिक असर घटैत अछि।
२२७. (A) पाठकक आवश्यकता अनुसार अर्थपूर्ण सामग्री देब। — साहित्य समाजक विविध स्तरक संवाद बनैत अछि।
२२८. (D) साहित्यकारकेँ अपन लक्ष्य आत्मपरीक्षणसँ ठहरएबाक चाही। — राजमोहन निर्णायक आदेश नहि, विवेकपूर्ण जाँच सुझावैत छथि।
२२९. (C) मनोरंजन बिना पाठक नहि, उद्देश्य बिना सामाजिक सार नहि। — दुनू तत्त्वक संतुलन जनपाठक तैयार करैत अछि।
२३०. (C) साहित्य आनंददायी सेहो हो, आ समाजक जरूरतक पूर्ति सेहो करए। — राजमोहनक दृष्टि संतुलित आ पाठक-सचेत अछि।
२३१. (A) बाहर जाइत पीढ़ी अंग्रेजी वा हिन्दी दिस झुकैत अछि। — प्रश्न भाषिक विस्थापनक संकट उठबैत अछि।
२३२. (C) लोकमे भाषा-प्रेम घटल अछि। — ओ संकटक मूल मनोवैज्ञानिक-सामुदायिक पक्षमे देखैत छथि।
२३३. (D) स्वभाषा-त्यागक। — भाषाक भविष्य बोलनिहार समुदायसँ जुड़ल अछि।
२३४. (B) स्थिति खराप अछि। — ओ भारतमे मैथिलीप्रति समर्पण घटल मानैत छथि।
२३५. (B) गजेन्द्र ठाकुर द्वारा। — प्रश्न भारत-नेपालक भिन्न भाषिक राजनीति देखबैत अछि।
२३६. (A) पहिनुका लोक जेकाँ समर्पण आब नहि अछि। — ओ पीढ़ीगत परिवर्तनकेँ भाषा-संकटसँ जोड़ैत छथि।
२३७. (A) घर-गामक निरन्तर बोलचाल आ पीढ़ीगत हस्तांतरण। — विस्थापन भाषा-उपयोगक स्थिरता तोड़ि सकैत अछि।
२३८. (C) भाषा-राजनीति अलग-अलग भूभागमे अलग परिणाम देत अछि। — एहि संवादमे मैथिली एकरूप परिस्थिति नहि, बहु-क्षेत्रीय भाषा अछि।
२३९. (D) ई सांस्कृतिक आत्मीयता आ सामुदायिक जिम्मेदारीक क्षय सेहो अछि। — भाषा अपन समुदायिक सम्मानसँ जीवित रहैत अछि।
२४०. (B) मैथिली बोलनिहार समाजक स्वभाषा प्रति ढील आ विस्थापन। — साक्षात्कार भाषाक भविष्यकेँ सामाजिक व्यवहारसँ जोड़ैत अछि।
२४१. (B) ओ कहैत छथि जे स्वयं विरोध नहि कएने छलाह, दिल्लीमे आन लोक कएने छल। — राजमोहन व्यक्तिगत भूमिका आ सामूहिक विरोध बीच भेद करैत छथि।
२४२. (C) आरम्भ बन्द नहि, स्थगित अछि। — ई पत्रिका-जीवनक अस्थायी ठहरावक रूपमे कहल गेल।
२४३. (D) जूरी सभ कृति देखैत/पढ़ैत नहि, ताहिसँ चयन असंगत होइत अछि। — प्रश्न चयन-प्रक्रियाक अध्ययनहीनता पर चोट करैत अछि।
२४४. (D) सोझे अनुवाद कएल पोथी पुरस्कारक पात्र अछि। — ओ मूल भाषासँ अनुवाद केँ मान्यता योग्य मानैत छथि।
२४५. (D) पुरस्कार-निर्णयमे गुट, पुरान दावेदारी आ पठन-अभावक आशंका। — गजेन्द्र चयन-व्यवस्था पर व्यापक प्रश्न उठबैत छथि।
२४६. (C) गुटबन्दी। — ओ वर्तमान साहित्यिक वातावरणमे समूहबद्धता बढ़ल मानैत छथि।
२४७. (B) साहित्यिक न्याय, पठन-संस्कृति आ चयन-नैतिकता। — विवाद व्यक्ति-विशेषक नहि, व्यवस्था-प्रश्नक रूपमे उठैत अछि।
२४८. (C) अन्य भाषिक साहित्य संग सम्बन्ध आ तुलना लेल। — अनुवाद पाठक-संसार विस्तारक माध्यम अछि।
२४९. (C) विरोध होइत रहैत अछि, मुदा असर सीमित रहैत अछि। — राजमोहन साहित्यिक प्रतिरोधक प्रभावहीनता महसूस करैत छथि।
२५०. (C) पुरस्कारक मूल्य पढ़ल-समझल चयन, अनुवाद-मान्यता आ गुटविहीनता पर निर्भर अछि। — संवाद साहित्यिक संस्थाक जवाबदेही मांगैत अछि।
२५१. (C) आत्ममुग्धता आ अनुवाद-अभाव साहित्यकेँ पाछू करैत अछि कि नहि। — विश्व-साहित्यक उदाहरण मैथिली पर लागू कएल गेल।
२५२. (D) अनुवाद बहुत जरूरी अछि, तखने तुलना सम्भव। — ओ अनुवादकेँ तुलनात्मक साहित्यक आधार मानैत छथि।
२५३. (D) अनुवाद अनुभवकेँ व्यापक पाठकीय विस्तार दैत अछि। — स्थानीय जीवनानुभव अनुवादें अन्य संसार धरि पहुँचैत अछि।
२५४. (C) अन्य भाषासँ संवाद घटि जाएब। — स्व-संतोष साहित्यिक विकास रोकि सकैत अछि।
२५५. (B) भाषा-भाषा बीच मूल्यांकन आ अनुभव-साझाक लेल। — तुलना बिना साहित्य अपन सीमाक बोध नहि पबैत।
२५६. (C) मैथिलीकेँ अन्य भाषिक अनुभवसँ जोड़बाक। — ओ भाषा-साहित्यकेँ बंद खाँचा नहि मानैत।
२५७. (B) आर विस्तार। — राजमोहन स्पष्ट कहैत छथि जे अनुवाद अनुभवक विस्तार करैत अछि।
२५८. (D) स्थानीय प्रश्नकेँ वैश्विक साहित्यिक विमर्शसँ जोड़ैत अछि। — एहि संवादमे मैथिली विश्व-साहित्यक संदर्भमे सोचल जा रहल अछि।
२५९. (A) बंद समूह-संस्कृति बाहरी मूल्यांकन आ पठनसँ दूरी बनबैत अछि। — दुनू प्रश्न साहित्यिक खुलापनसँ जुड़ल अछि।

२६०. (D) मैथिली साहित्यिक विकास लेल अनुवाद, तुलना आ आत्मालोचन जरूरी अछि। — राजमोहनक दृष्टि संवादपरक साहित्यिक संस्कृति दिस अछि।
२६१. (C) विद्वान, वाग्गेयकार, शिक्षक आ मंच-सम्पादक। — परिचय हुनकर बहुआयामी संगीत-व्यक्तित्व देखबैत अछि।
२६२. (D) ८० बरख पार केलहुँ, संगीतमे बहटल रहैत छी। — उत्तर उम्रक बावजूद संगीत-निष्ठा देखबैत अछि।
२६३. (A) तीन राग। — मुख्य राग-रचना मिथिला-सम्बद्ध बताओल गेल।
२६४. (D) तीरभुक्ति, विद्यापति कल्याण आ वैदेही भैरव। — ई नाम मिथिला-सांस्कृतिक धुरी पर निर्मित अछि।
२६५. (D) मैथिली भाषामे खयाल बनल अछि। — राग-रचना सीधे मैथिली गीत-साहित्यसँ जुड़ैत अछि।
२६६. (A) भूपाली आ बिलावल। — रामरंगजी अपन धार्मिक-संगीतक मैथिली रूप बतबैत छथि।
२६७. (C) मैथिली संगीत-साधनाक शास्त्रीय-भक्ति आयाम देखबैत अछि। — राग, देव-वन्दना आ भाषा एकसंग अछि।
२६८. (A) मिथिला प्रदेशक वन्दना। — राग-माध्यमे भू-सांस्कृतिक पहचान व्यक्त अछि।
२६९. (A) विलम्बित आ द्रुत खयाल रूपमे। — ई राग-रचना शास्त्रीय गायन-संरचना धरि विकसित अछि।
२७०. (B) मैथिली भाषा आ मिथिला-भावनाकेँ शास्त्रीय संगीत-सृजनमे प्रतिष्ठित करब। — रामरंगजीक कार्य संगीत-साहित्यक सेतु बनैत अछि।
२७१. (A) तीरभुक्ति, विद्यापति कल्याण आ वैदेही भैरवक पूर्ण रागशास्त्र उपलब्ध नहि। — प्रश्न राग-सृजनक दस्तावेजीकरणक आवश्यकता उठबैत अछि।
२७२. (D) हाथ थरथराइत अछि आ लिखब कठिन अछि। — वय आ शारीरिक कठिनाई संरक्षणक समस्या बनैत अछि।
२७३. (A) तीनू रागक रचना-शास्त्र लिखि देबाक। — एहि आग्रहमे संगीत-धरोहर सुरक्षित करबाक चिंता अछि।
२७४. (A) जे रचना देने छी ओकरा छापि दिअ। — ओ तत्काल उपलब्ध सामग्री प्रकाशन लेल कहैत छथि।
२७५. (A) ओ पठेबाक आ लिखबाक बात कहैत छथि। — उत्तरमे संरक्षणक आंशिक वचन अछि।
२७६. (C) श्रद्धा आ आशीषक। — साक्षात्कार संगीत-शास्त्रक संग मानवीय सान्निध्य सेहो राखैत अछि।
२७७. (C) नव पीढ़ी सीखि सकए आ रचना पुस्तकाकार सुरक्षित होए। — मौखिक स्मृति बिना लिखित आधार खोज सकैत अछि।
२७८. (C) सृजन त अछि, मुदा दस्तावेजीकरण अधूरा अछि। — संगीत-संसारमे संरक्षणक चुनौती स्पष्ट अछि।
२७९. (B) गुरु-शिष्य परम्परा आ लेखन-सहयोगक अभाव। — संगीत परम्परा निरन्तरता लेल ग्रहणकर्ता माँगैत अछि।
२८०. (B) रामरंगजीक राग-सृजनकेँ लिखित रूपमे सुरक्षित करब जरूरी अछि। — साक्षात्कार धरोहर-संरक्षणक तात्कालिक आह्वान अछि।
२८१. (C) सड़कपर कवितावाचन करैत चक्काजाम कवि-गोष्ठी। — ई प्रतिरोधक रचनात्मक रूप छल।
२८२. (C) नव संविधानमे मिथिला राज्यक व्यवस्था। — कविता राजनीतिक-सांस्कृतिक मांगक माध्यम बनल।
२८३. (A) पिडारी चौक। — स्थान जनकपुरक सार्वजनिक आवागमनक प्रतीक अछि।
२८४. (C) विभिन्न समुदाय अपन अधिकारक लेल आवाज उठा रहल छल। — मिथिला राज्यक मांग संविधान-निर्माणक सन्दर्भमे अछि।
२८५. (C) मिथिला राज्य आ मधेशीक हक-अधिकार सुनिश्चित होएबाक चाही। — मांग सांस्कृतिक मात्र नहि, अधिकार-संबंधी अछि।
२८६. (A) साहित्यकार, रंगकर्मी आ मिथिला राज्य संघर्ष समिति। — आन्दोलन कला, साहित्य आ संगठनक संयुक्त रूप लेल।
२८७. (B) जनकपुर-महेन्द्रनगर सड़क खण्डमे सवारी साधन नहि चलि सकल। — सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रत्यक्ष सार्वजनिक अवरोध सेहो बनल।
२८८. (A) मिथिला राज्यक मांगकेँ थोड़ा-बहुत चर्चा भेटल। — कार्यक्रम मांगकेँ दृश्यता देबाक माध्यम बनल।
२८९. (C) सृजनात्मकता आ प्रतिरोधक संयोजन। — गोष्ठी साहित्यकेँ सड़क-आन्दोलनमे उतारैत अछि।
२९०. (C) जनकपुरक रचनात्मक चक्काजाम मिथिला राज्यक सांस्कृतिक-राजनीतिक हस्तक्षेप छल। — कविता सार्वजनिक अधिकार-स्वरमे बदलल।
२९१. (D) पारम्परिक मैथिली विवाह गीत। — क्यासेट विवाह-संस्कारक गीत-संग्रह रूपमे वर्णित अछि।
२९२. (A) परिछनसँ विदाई धरि। — ई विवाह-प्रक्रियाक आरम्भसँ समापन धरि गीत समेटैत अछि।
२९३. (B) अंशुमाला। — गायिका क्यासेटक मुख्य स्वर छथि।
२९४. (D) मिथिलाक मौलिक गीत। — अंशुमाला क्यासेटक विशिष्टता एहि गीतमे देखबैत छथि।
२९५. (B) ई गीत आब बहुत ठोरपर नहि चढ़ैत, ताहि लेल महत्व देल गेल। — क्यासेट लुप्तप्राय विवाह-गीत बचाबैत अछि।

२९६. (C) परम्परा आ आधुनिक श्रोता बीच सेतु। — क्यासेट पुरान संस्कारक नवीकृत प्रस्तुति बनैत अछि।
२९७. (B) विवाहक अलग-अलग विधि-क्षणक गीत-स्मृति सुरक्षित करैत अछि। — संग्रह विवाह-जीवनक संस्कारिक चरण चिन्हित करैत अछि।
२९८. (C) विवाह गीतमे मर्यादित हास्य आ स्नेह। — मिथिला विवाह गीत केवल विधि नहि, सामाजिक भाव-संवाद अछि।
२९९. (A) लोक-संग्रह आ आधुनिक संगीत-प्रस्तुति दुनू मिलल अछि। — क्यासेट परंपरा केँ मंच/रिकॉर्डिंग रूप देलक।
३००. (A) प्रिय पाहुन मैथिली विवाह-गीत परम्पराकेँ ऑडियो रूपमे सुरक्षित करबाक प्रयास अछि। — ई संस्कार-संगीतक स्मृति आ प्रसार दुनू साधैत अछि।
३०१. (D) लोकक असाधारण चुनाव-रुचि आ बदलैत परिदृश्य। — आरम्भमे चुनावी जागरूकता नया सामाजिक संकेत रूपमे लेल गेल।
३०२. (B) वोटर बुधियार भऽ रहल अछि आ नव नागरिक समाज ठाढ़ भऽ रहल अछि। — लेख नागरिकता आ जिम्मेदारीक बदलैत भाव पर केन्द्रित अछि।
३०३. (D) भारत-पाक युद्धक समय गामक बूढ़-पुरान लोकक सैनिक-गर्वा। — राजनीतिक स्मृति ग्रामीण सामुदायिक भावसँ जुड़ल अछि।
३०४. (C) युवा सभ न्यायवादी-आन्दोलनकारी बनि गेल। — राजनीतिक उभार पीढ़ीक चेतना बदलैत छल।
३०५. (B) आपातकाल विरोधमे पहिल कविता लिखल, जे भाय फाड़ि देलक। — ई बाल राजनीतिक संवेदनाक निजी प्रसंग अछि।
३०६. (C) धर्मगुरु सेहो जनता पार्टीक पक्षमे कहए आएल। — लेखक देखबैत छथि जे राजनीति व्यापक लोक-हस्तक्षेपक विषय छल।
३०७. (A) गरीबी, असुविधा आ ग्रामीण जीवनक यथार्थ। — राजनीतिक चेतना सम्पन्न शहरक नहि, अभावग्रस्त गामक अनुभवसँ सेहो जुड़ल छल।
३०८. (D) लिखबाक-छापबाक छूट भेटते विचारक बनबाक दंभ। — लेख मीडिया-बौद्धिकताक स्वयम्भू स्वरूप पर कटाक्ष करैत अछि।
३०९. (D) दृश्य-मीडिया उपस्थिति केँ विचारकता मानि लेबाक प्रवृत्ति। — लेखक सार्वजनिक वक्तव्यक सतही वैचारिकता पर प्रश्न उठबैत छथि।
३१०. (A) चुनाव-स्मृति, आन्दोलन, गरीबी आ आजुक मीडिया-बौद्धिकता पर आत्मव्यंग्यात्मक टिप्पणी। — लेख राजनीतिक चेतना आ सार्वजनिक दंभ दुनूकेँ साथे पढ़ैत अछि।
३११. (C) महत्त्वपूर्ण आ सकारात्मक ऊर्जा सँ भरल वर्ष। — लेखक सामाजिक-सांस्कृतिक सक्रियताक शुरुआत एहि समयसँ जोड़ैत छथि।
३१२. (B) दिल्लीक लेखक-कलाकार मंडलीसँ जुड़बाक स्थल। — कॉफी हाउस साहित्यिक संगति आ गोष्ठीक केन्द्र बनल।
३१३. (A) वयोवृद्ध, खादीधारी, गाँधी टोपी पहिरने सादगीमय व्यक्तित्व। — वर्णन हुनकर व्यक्तित्वक सादगी आ गरिमा उभारैत अछि।
३१४. (C) १९९५ धरि। — लेखक नियमित साहित्यिक संगति केर अवधि बतबैत छथि।
३१५. (B) दाढ़ी, पाइप, खादीक कुर्ता-पायजामा। — ई आत्म-स्मृति बौद्धिक छविक व्यंग्यात्मक रंग रखैत अछि।
३१६. (C) बौद्धिक रूपसँ आतंकित करनिहार व्यक्तित्व। — लेखक अपन छवि पर हल्का हास्य राखैत छथि।
३१७. (C) ओ छोटपनक अहसास नहिए होमए देलन्हि। — वरिष्ठ लेखकक विनम्रता लेखक पर गहरा असर छोड़ैत अछि।
३१८. (A) स्नेहिल स्पर्श आ सान्निध्य प्राप्त करबाक अवसर रूपमे। — व्यक्तिगत स्मृति श्रद्धा आ निकटता व्यक्त करैत अछि।
३१९. (A) गोष्ठी, साहचर्य, संवाद आ वरिष्ठजनक सान्निध्य सँ। — साहित्य केवल पाठ नहि, जीवित संगति सेहो अछि।
३२०. (A) विष्णु प्रभाकरक सादगी लेखकक साहित्यिक जीवन-स्मृतिमे मृदुल आदर्श बनि रहल। — स्मरण व्यक्तिगत अनुभवसँ साहित्यिक श्रद्धांजलि बनैत अछि।
३२१. (B) भारतीय भाषाक लेल संघर्षक क्रममे। — लेखक भाषा-अधिकार आन्दोलनमे अपन भागीदारी स्मरैत छथि।
३२२. (B) तिहाड़ जेल। — प्रसंग भाषा-आन्दोलनक तीव्रता देखबैत अछि।
३२३. (A) नेता, साहित्यकार, पत्रकार, समाजसेवी आ आन्दोलनकारी सभक दबावसँ। — रिहाइ सामूहिक सार्वजनिक समर्थनक फल रूपमे बताओल गेल।
३२४. (A) साथी सभक आदर-भाव बढ़ि गेल। — आन्दोलनक अनुभव लेखकक सामाजिक प्रतिष्ठा बढ़बैत अछि।
३२५. (B) आवारा स्वभावक कारण। — ओ स्वयं पर आत्म-व्यंग्य करैत छथि।
३२६. (D) विष्णु प्रभाकरजीकेँ लेखकक यायावरीक भान न भेल होएत, एहन आत्मीय कल्पना। — ई स्मरण विनोद आ श्रद्धा दुनू राखैत अछि।
३२७. (C) मृदुल, जेना ओ अखनो कॉफी हाउसक मंडलीमे छथि। — अनुपस्थिति स्मृति-सान्निध्य मे बदलैत अछि।
३२८. (C) कॉफी हाउसक साहित्यिक मंडली आ सार्वजनिक भाषा-संघर्ष एकहि जीवन-अवधि मे भेटैत अछि। — साहित्यिक साहचर्य आ सामाजिक सक्रियता साथ-साथ चलैत अछि।

३२९. (A) आत्मकथात्मक, कृतज्ञ आ हल्का व्यंग्यमय। — लेख व्यक्तिगत इतिहासकें जीवंत बनबैत अछि।
३३०. (A) साहित्यिक संगति, भाषा-संघर्ष आ विष्णु प्रभाकरक सादगी लेखकक स्मृतिमे एकसंग बसल अछि। — स्मरण व्यक्ति-श्रद्धा आ आन्दोलन-इतिहास दुनू अछि।
३३१. (D) १४ वर्षीय तूलिका सँ ८८ वर्षीय आद्याचरण झा धरि रचनाकार छलाह। — एहि तुलना सँ पीढ़ी-व्यापकता देखाइत अछि।
३३२. (C) सी.बी.एस.ई.क दशम कक्षाक तैयारीमे लागल छलीह। — संपादकीय टिप्पणी हुनकर विद्यार्थी-जीवन संदर्भ दैत अछि।
३३३. (A) ९६.८ प्रतिशत। — ई हुनकर शैक्षिक उपलब्धि बताओल गेल अछि।
३३४. (C) इंजीनियरिंगक। — टिप्पणीमे हुनकर भविष्य-शैक्षिक दिशा बताओल अछि।
३३५. (B) नवपीढ़ी पाठक-रचनाकारक पुनरागमन। — ई संकेत करैत अछि जे पढ़ाइ-संग साहित्यिक सक्रियता चलि सकैत अछि।
३३६. (B) कक्षा २, माउन्ट कार्मेल पटना। — नवबाल रचनाकार/उपस्थिति बाल-साहित्यिक दायरा देखबैत अछि।
३३७. (D) बाल/किशोर प्रतिभाक स्वागत। — विदेह केवल वरिष्ठ साहित्यकारक मंच नहि।
३३८. (A) भविष्यक पाठक आ लेखक तैयार करबाक लेल। — नवपीढ़ी बिना भाषा-साहित्यक निरन्तरता कमजोर होइत अछि।
३३९. (A) प्रोत्साहनपरक। — टिप्पणी युवा/बाल प्रतिभाकें पाठकक सामने सम्मानसँ रखैत अछि।
३४०. (C) विदेह नवपीढ़ीक शैक्षिक उपलब्धि आ साहित्यिक भागीदारी दुनूकें महत्त्व दैत अछि। — तूलिका-स्वास्तिका उदाहरण पीढ़ीगत निरन्तरता देखबैत अछि।
३४१. (A) रामभरोस कापड़ि “भ्रमर”क “हुगली ऊपर बहैत गंगा”। — समीक्षा संग्रहक कथा-संसारक विवेचन करैत अछि।
३४२. (B) ३२ गोट कथा। — समीक्षक संग्रहक आकार स्पष्ट करैत छथि।
३४३. (C) हीरा आ सोनाबाई। — समीक्षा शीर्षक कथा मे स्त्री-संवेदना देखैत अछि।
३४४. (D) देह मात्र नहि। — ई समीक्षा नारी-अस्मिताक मूल कथन अछि।
३४५. (B) अपन धन-सम्पत्ति जेकाँ। — समीक्षा देहवादी पुरुष-दृष्टिक आलोचना करैत अछि।
३४६. (C) सृष्टिक निरन्तरताक आधार, मुदा भोग-वस्तुकरण नहि। — संबंधक मर्यादा आ मानवता पर बल अछि।
३४७. (C) ई मानवीय मूल्यबोधकें गिरबैत अछि। — भौतिकता मानवता कें कुण्ठित करैत देखाओल गेल।
३४८. (D) धन-मद आ कामुकता सामाजिक नैतिकता कें ढाँपि विकृति करैत अछि। — समीक्षा समाजक बाह्य मर्यादा आ भीतरक पाखण्ड खोलैत अछि।
३४९. (B) कारण नारी-मोनक संवेदना आ मानवीयता उभरैत अछि। — कथा पीढ़ाक भीतर नब संबंध-संभावना देखबैत अछि।
३५०. (C) भ्रमरक कथा-संसार नारी देह-वस्तुकरणक विरोधमे संवेदना आ अस्मिता स्थापित करैत अछि। — समीक्षा मानवीय मूल्य आ स्त्री-अधिकारक पक्षधर अछि।
३५१. (B) असन्तोष आ खौड़ी मेटेबाक लेल। — समीक्षा हीराक आरम्भिक मनोवस्था बतबैत अछि।
३५२. (C) कोनो कोताही नहि करैत। — ओ पेशागत व्यवहारमे तत्पर देखाओल गेल।
३५३. (C) ओ ठकमुहरी लागि जाइत अछि। — ई क्षण भोग-इच्छासँ मानव-संवेदना दिस मोड़ अछि।
३५४. (D) नारीक प्रति सम्मान-भाव। — कथा भोग-दृष्टि कें सम्मान-दृष्टिमे बदलैत अछि।
३५५. (D) एक ग्राहकसँ निपटि दोसरक आशा। — पेशा आ जीवनक कठोर आर्थिक यथार्थ उपस्थित अछि।
३५६. (C) ओ पहिल बेर सुच्या मनुक्खक दर्शन अनुभव करैत अछि। — मानवीयता देह-व्यापारक ढाँचा तोड़ैत अछि।
३५७. (C) सुरक्षा आ अपनत्व-बोध। — दुनू पात्रक संबंध भोगसँ विश्वास दिस बदलैत अछि।
३५८. (B) मोनक राग। — कथा भीतरक भाव-संबंधकें प्रधान बनबैत अछि।
३५९. (C) कथा कनेक कमजोर अछि। — प्रशंसा संग आलोचनात्मक संतुलन सेहो राखल गेल।
३६०. (A) हीरा-सोनाबाई प्रसंग देहवादक अन्धारमे मनुष्यताक प्रकाश देखबैत अछि। — समीक्षा कथ्यक मानवीय शक्ति कें शिल्प-दोषसँ ऊपर मानैत अछि।
३६१. (C) भोगवादी लिप्सा। — समीक्षक रेखाक चरित्रमे आधुनिक भौतिक आकर्षणक अति देखैत अछि।

३६२. (C) अपन बसल-बसाओल घर उजारबाक दिस। — स्वार्थी आकर्षण दाम्पत्य-संरचना केँ तोड़ैत अछि।
३६३. (B) अर्थ-लिप्सा संबंधकेँ गीड़ि दैत अछि। — समीक्षा धन-लालसाकेँ संबंध-विनाशक मानैत अछि।
३६४. (B) गत कर्मक तर्पण करैत भ्रमजाल तोड़ि फेकैत अछि। — चरित्र अंततः आत्मबोधक दिशा पबैत अछि।
३६५. (B) गाँठ खोलैत उपसंस्कृति पर प्रहार करैत अछि। — समीक्षक कथाकेँ सामाजिक आलोचना मानैत अछि।
३६६. (C) लोककेँ कामुकतामे जकड़ि अस्थिर संबंध बनबैत अछि। — भोग-संबंध स्थायित्व नहि दैत।
३६७. (D) सिर्फ देह-आकर्षण टिकाऊ जीवन-संबंध नहि बना सकैत। — समीक्षा दाम्पत्यक नैतिक-सामाजिक आधार पर बल दैत अछि।
३६८. (D) गणेशक संस्मरणात्मक रिपोर्ताज। — समीक्षक एकरा कथा-सूत्रसँ बेसी संस्मरणात्मक प्रस्तुति मानैत अछि।
३६९. (D) गरीब-गरीब सब एक हो, सामाजिक असमानता भरबाक प्रयास। — कथा साम्यवादी चेतना आ आत्मचेतना जगाबय चाहैत अछि।
३७०. (B) भ्रमरक कथासभ देह-लिप्सा, दाम्पत्य, अर्थलोलुपता आ वर्ग-असमानता पर प्रश्न उठबैत अछि। — समीक्षा सामाजिक दायित्वक दृष्टिसँ कथासभ पढ़ैत अछि।
३७१. (D) कतार जा कऽ ढेर पाइ कमेबाक। — कथा प्रवास-लोभ आ आर्थिक सपना पर केन्द्रित अछि।
३७२. (B) दस हजार, अस्सी हजार आ पन्चानवे हजारक कर्ज-पैसा बोहाइत। — समीक्षा प्रवासी श्रमिक शोषणक स्तर बतबैत अछि।
३७३. (D) आर्थिक आशा, ठगी आ जीवन-मूल्यक द्वन्द्व। — कथा विदेश-स्वप्नक अंधकार पक्ष देखबैत अछि।
३७४. (B) मधेशी अस्मिता पर चोट आ बेटाक बेरोजगारीक पीड़ा सँ। — व्यक्तिगत संकट राजनीतिक अस्मिता संग जुड़ैत अछि।
३७५. (A) पीड़ित मोनमे आक्रोश पनुगैत अछि। — समीक्षा राष्ट्रीयता, अस्मिता आ असमानताक सम्बन्ध देखबैत अछि।
३७६. (C) सरोजाक दुःस्थिति आ स्त्री-त्रास। — कथा अभिभावकत्व, स्त्रीपीड़ा आ सामाजिक बदलावक प्रश्न उठबैत अछि।
३७७. (D) फोकिला मानसिकता आ हृदयहीनता उधार करैत अछि। — समीक्षा संरक्षकता नामक सामाजिक पाखण्ड खोलैत अछि।
३७८. (A) अनकर जनमल नेनाक हत्या। — कथा पितृ-अहं, संदेह आ हिंसाक भयावह परिणति देखबैत अछि।
३७९. (B) निर्दोष बच्चाक हत्या आ ओकर नैतिक परिणाम। — समीक्षक कथा-अन्तकेँ आगे सोचबाक बाध्यता मानैत अछि।
३८०. (D) भ्रमरक कथासभ प्रवास, अस्मिता, स्त्री-त्रास आ हिंसात्मक पितृसत्ताकेँ सामाजिक प्रश्न बनबैत अछि। — समीक्षा अलग कथासभमे व्यापक सामाजिक पीड़ा जोड़ैत अछि।
३८१. (D) अमरलती जकाँ चतरैत आनक घर उजारनिहार प्रवृत्ति। — समीक्षा रेखाकेँ संबंध-विनाशक वासना-प्रतीक बनबैत अछि।
३८२. (A) रेखाक काम-भाव जाग्रत करि मायाजाल पसारैत अछि। — पुरुष आ स्त्री दुनू वर्गक कुत्सित मानसिकता उभरैत अछि।
३८३. (D) प्रेमसँ उपजल मानसिक पीड़ा सहबाक प्रयास। — समीक्षा प्रेमक सामाजिक अवरोध आ अंतःपीड़ा देखैत अछि।
३८४. (A) मोन-मिलानी। — कथा प्रेमकेँ खरिद-बिक्री नहि, हृदय-संबंध मानैत अछि।
३८५. (C) विरक्ति-भाव संबंध-सूत्र खण्डित करैत अछि। — सामाजिक व्यवस्था प्रेमक मार्ग तोड़ैत अछि।
३८६. (C) बालपनक स्मृति-तरंग। — कथा नेनपनक निश्छलता आ वयस्क भयक तुलना करैत अछि।
३८७. (B) निडरता, निश्छलता आ सौहार्द। — बाल-स्मृति सामाजिक दोगलापनक विरुद्ध उज्जर बिम्ब बनैत अछि।
३८८. (B) भय, सुरक्षा, षड्यंत्र आ छल-कपट। — कथा बचपनक सरलता संग समाजक जटिलता भिड़बैत अछि।
३८९. (A) सभ्य समाज बनबाक नाम पर लोक छल-क्षुद्रक खोल ओड़ैत अछि। — समीक्षा आधुनिक सामाजिक पाखण्डकेँ चिन्हैत अछि।
३९०. (C) प्रेम, वासना, स्मृति आ सामाजिक पाखण्डक बीच भ्रमरक कथा मानवीयता खोजैत अछि। — समीक्षा कथासभकेँ संबंध-संवेदना आ सामाजिक आलोचना रूपमे पढ़ैत अछि।
३९१. (D) जीवनक राग। — नेपालीय मैथिली कथा-साहित्यमे भ्रमरक कथा जीवंत जीवन-बोध रखैत अछि।
३९२. (C) विशेष श्रद्धा-भाव। — समीक्षक मानैत छथि जे नारी-संघर्ष हुनकर कथा-संसारक मूल पक्ष अछि।
३९३. (D) अबला नारीक चीख आ परिवेशक दंश। — नारी-पीड़ा सामाजिक व्यवस्था संग जुड़ि उभरैत अछि।
३९४. (B) शोषित-पीड़ित, दबल-कुचलल लोकक। — समीक्षा लेखककेँ उत्पीड़ित अस्मिता-अधिकारक पक्षधर मानैत अछि।

३९५. (B) रोटीक औकाति आ जीवनक व्यवहारिक मुद्दा। — भ्रमरक कथा सामाजिक अर्थसंकटकेँ प्रत्यक्ष करैत अछि।
३९६. (A) कथ्य जतेक सजग, शिल्पमे ओतेक सजगता नहि। — प्रशंसा संग समीक्षक संरचनात्मक कमजोरी सेहो दर्ज करैत अछि।
३९७. (D) गाम-घर, अड़ोस-पड़ोसक देखल-भोगल यथार्थ। — अनुभव कथासंसारक विश्वसनीय आधार बनैत अछि।
३९८. (A) निरीह समाज आ नारी पात्रक प्रति। — समीक्षा नारी-अधिकार आ चेतनाबोधक पक्षधरता रेखांकित करैत अछि।
३९९. (D) मात्रा आ गुण दुनू दृष्टिसँ प्रभाव छोड़ैत अछि। — संग्रह कथा-भंडार भरैत आ मूल्य-बोधक संवाहक बनैत अछि।
४००. (B) भ्रमरक कथा सामाजिक परिवर्तनमे अपन औकाति सिद्ध करत आ ऐतिहासिक मूल्य पाओत। — समीक्षक भविष्यक मूल्यांकनमे भ्रमरक कथा-दृष्टि पर भरसा जतबैत अछि।
४०१. (A) मैथिली धीरे-धीरे विद्युतीय संचार माध्यममे स्थान बना रहल अछि। — लेख मैथिलीकेँ मुद्रित दायरासँ आगू टीवी/इलेक्ट्रॉनिक माध्यममे प्रवेश करैत देखैत अछि।
४०२. (D) सम्पूर्ण मैथिली मनोरंजनात्मक टेलिभिजन रूपमे। — लेखमे गीत-नाद आ टेली-श्रृंखला प्रसारण ओकर प्रमुख पक्ष कहल गेल अछि।
४०३. (D) समुदायकेँ अपन पर्याप्त संचार माध्यम नहि भेटल। — समुदाय संख्या मे पैघ रहितहुँ मीडिया-संरचनामे पर्याप्त प्रतिनिधित्व नहि पवैत अछि।
४०४. (D) आन भाषाक माध्यमसँ सुसूचित होएबाक विवशता। — प्रतीकात्मक मिथिला अपन भाषाक स्वायत्त सूचना-माध्यमसँ वंचित बताओल गेल अछि।
४०५. (A) समाचार आ मनोरंजनक सामग्री पहुँचा रहल छल। — लेखमे मैथिली सामग्रीक आंशिक प्रसारक उल्लेख सकारात्मक संकेत रूपमे अछि।
४०६. (B) मैथिली समाचार, अन्तर्वार्ता आ मैथिली-भोजपुरी गीत। — दिल्लीसँ चलल एहि प्रसारणमे मैथिली लेल एक घण्टाक महत्त्वपूर्ण स्थान छल।
४०७. (B) भोजपुरी आ थारु। — एहि बदलावसँ मैथिली लेल उपलब्ध समयक साझेदारी बढ़ल।
४०८. (A) भोजपुरी चैनल रहितहुँ कखनो-कखनो मैथिली सामग्री देबाक कारण। — लेख मैथिली प्रसारक छिटपुट अवसरसभ सेहो नोंद करैत अछि।
४०९. (A) साप्ताहिक कार्यक्रम शुरू भेल, मुदा निरन्तरता नहि पाबि सकल। — लेख मैथिली कार्यक्रमक अस्थिरता पर ध्यान देत अछि।
४१०. (C) मैथिली टीवी माध्यममे प्रवेश करैत अछि, मुदा प्रतिनिधित्व अभी छिटपुट आ अस्थिर अछि। — “आशाक किरण” आशा आ अभाव दुनूकेँ एकसंग रेखांकित करैत अछि।
४११. (B) सरकारी संचार माध्यममे अपेक्षित स्थान नहि बनि सकल। — लेख संवैधानिक मान्यताक बादो मीडिया-मान्यताक अभाव देखबैत अछि।
४१२. (A) मैथिली भाषी समाजमे ओकर अलग स्थान बनल। — भारतसँ संचालित चैनल नेपालक मैथिली भाषी समुदायमे प्रभावी बनल।
४१३. (A) मैथिली एखनो उपेक्षित अछि। — नेपालक सरकारी माध्यममे मैथिली लेल स्थिर जगह नहि बनल बताओल गेल अछि।
४१४. (C) साँझमे लगभग पन्द्रह मिनटक समाचार। — ई निजी चैनलक मैथिली सूचना-प्रसारणक उदाहरण अछि।
४१५. (C) मनोरंजनात्मक आ सूचनामूलक कार्यक्रम। — बीरगंजसँ प्रसारित एहि माध्यमक उल्लेख क्षेत्रीय मैथिली प्रसारण रूपमे अछि।
४१६. (D) साप्ताहिक मैथिली कार्यक्रम किछु एपिसोड चलि बन्द/अनिरंतर भेल। — लेख फेर निरन्तरताक कमीकेँ महत्त्वपूर्ण समस्या मानैत अछि।
४१७. (C) नितान्त अभाव। — एहि अभावकेँ मैथिली भविष्यक बुनियादी संकटसँ जोड़ल गेल अछि।
४१८. (C) अस्तित्व बचएबामे सहायक बनि सकैत अछि। — लेख भाषिक जीवनरक्षा आ संचार-संरचना बीच सीधा सम्बन्ध स्थापित करैत अछि।
४१९. (A) सुनिश्चित भविष्यक कल्पना मात्र रहि जाएत। — भाषाक भविष्य भावनासँ नहि, संस्थागत माध्यमसँ सुरक्षित होएत।
४२०. (D) सम्भावना बहुत अछि, मुदा संचारमे मैथिलीक आकार कमजोर अछि। — लेख आशाक संग अनिश्चितताक यथार्थ स्वीकार करैत अछि।
४२१. (C) १० अक्टूबर १९६१, तुमौल-पूतइ, दरभंगाक पृष्ठभूमि। — परिचय हुनकर ग्राम, परिवार आ जन्मतिथि स्पष्ट करैत अछि।
४२२. (C) अध्यापन। — परिचयमे अध्यापनकेँ हुनकर व्यवसाय रूपमे राखल गेल अछि।
४२३. (A) लेखन, चित्रकला, अभिनय, गीत-संगीत आ सामाजिक कार्य। — परिचय हुनका बहुआयामी सांस्कृतिक व्यक्ति रूपमे चिन्हैत अछि।
४२४. (B) “आयल नवल प्रभात” आदि। — रचना-संसारमे कैक कविता-संग्रहक नाम देल गेल अछि।
४२५. (C) सामाजिक-राजनीतिक विषयक नाटक रचना। — “आन्दोलन”, “सामाजिक न्याय” आदि शीर्षक सामाजिक सरोकारक संकेत दैत अछि।
४२६. (A) “भूत होइत भविष्य”। — परिचयमे कथा-संग्रह अलग रूपे उल्लिखित अछि।
४२७. (D) निबंध-संग्रह। — रचना-संसारमे निबंधक क्षेत्र सेहो उपस्थित अछि।

४२८. (C) बाबू भोलालाल दास रचनावली आ मधुपजी बीछल बेरायल कविता। — हुनका सर्जकक संग सम्पादक रूपमे सेहो चिन्हित कएल गेल।
४२९. (D) “मल्लिनाथ” अंग्रेजीसँ। — परिचयमे अनुवादक रूप सेहो शामिल अछि।
४३०. (C) लेखकक व्यापक साहित्यिक-सांस्कृतिक आधार देखाएब। — एहि पृष्ठभूमिसँ “मैथिली शिशु साहित्य लोक”क लेखकीय विश्वसनीयता बढ़ैत अछि।
४३१. (D) अम्बार लागल अछि। — लेख शिशु लोक-साहित्यकें अत्यन्त विपुल धरोहर मानैत अछि।
४३२. (D) किछु लिपिबद्ध, बेसी मौखिक। — ई धरोहर मुख्यतः लोकक कंठमे जीवित रहल अछि।
४३३. (A) अज्ञात समय आ अज्ञात लोक-रचनाकार। — लोक-साहित्य व्यक्तिगत लेखकक बदला सामूहिक परम्परा सँ जुड़ल अछि।
४३४. (A) हजारो वर्ष धरि कंठ-परम्परामे जीवित रहब। — लेख मौखिक स्मृति आ पीढ़ीगत संचारक गहिराइ बतबैत अछि।
४३५. (B) मौलिकता दिनानुदिन नष्ट भेल जा रहल अछि। — शब्द, उच्चारण आ रूप क्षेत्र-विशेष अनुसार बदलि रहल अछि।
४३६. (A) पद्य विधा। — लेख पद्यकें केन्द्र बनबैत, थोड़े आनो विधा पर विचार करैत अछि।
४३७. (C) प्रफुल्ल कुमार सिंह “मौन”, अणिमा सिंह आ दमन कुमार झाक काज। — लेख पूर्ववर्ती संकलन-समालोचनाकें स्वीकार करैत अछि।
४३८. (D) लालन-पालनसँ सम्बद्ध। — लेख वर्गीकरणक आधार नेनाक जीवन-स्थिति पर राखैत अछि।
४३९. (A) खेल-मनोरंजनसँ सम्बद्ध आ ज्ञानोपयोगी। — तीन-भागी वर्गीकरण शिशु-जीवनक देखभाल, खेल आ शिक्षा कवर करैत अछि।
४४०. (C) शिशु लोक-साहित्य मौखिक, पीढ़ीगत, विपुल आ संरक्षण-योग्य धरोहर अछि। — लेख लोककंठमे बाँचल साहित्यकें शोध-योग्य बनबैत अछि।
४४१. (A) घर-आँगनसँ दलान धरि सीमित। — ई साहित्य नेनाक निकट घरेलू जगतमे घटित होइत अछि।
४४२. (A) सोहर। — जन्म-संस्कारसँ शिशु लोक-साहित्य आरम्भ भऽ जाइत अछि।
४४३. (A) रूप आ प्रयोजन बदलैत जाइत अछि। — जन्मसँ चलन धरि अलग-अलग गीत/क्रीड़ा जुड़ैत अछि।
४४४. (D) “चै-चै-चै बौआ सूतभैं” सन पंक्ति। — तेल-मालिशक क्रिया लयबद्ध लोक-पद्य सँ जुड़ल अछि।
४४५. (C) शारीरिक सुदृढ़ता आ खेलक मिश्र भाव। — “ईलसन, कील सन” आदि छवि नेनाक देह-देखभालक लोक-शैली देखबैत अछि।
४४६. (A) डरक कारण। — लालन-पालनमे खेल, डर, मनुहार आ पुचकार सब सम्मिलित अछि।
४४७. (C) नेनाकें बहटारबाक/मनोरंजन करबाक समय। — फल-छवि लोक-खेलक सरल बिम्ब बनैत अछि।
४४८. (D) मामा गाम, नाना गाम आ अपन गाम। — गाम-परिचय परिवारिक रिश्ताक बाल-रूप अछि।
४४९. (C) नेना जतय रहए, ओकरा अनुसार दादा-दादी वा नाना-नानीक चौल कएल जाइत अछि। — लोक-पद्य रिश्तेदारीक स्थिति अनुसार रूप बदलैत अछि।
४५०. (C) शिशु-पालनमे देह-देखभाल, रिश्तेदारी आ खेल-पद्य एकसंग चलैत अछि। — लालन-पालनक लोक-साहित्य नेनाक सामाजिक आरम्भ करबैत अछि।
४५१. (A) संझा-मैया सँ नेनाक रक्षा लेल प्रार्थना। — रक्षक देवता, सुखक राति आ दुःख-दरिद्र हटबाक कामना लोक-पद्यक केन्द्र अछि।
४५२. (D) छोट नेनाक रक्षा। — ई पद संध्या-समयक घरेलू धार्मिक-सांस्कृतिक सुरक्षा-विधि अछि।
४५३. (C) हँसनी-खिलनी/राजा धनपाल दोहाइ सन पद। — नेनाक सुन्दरता पर नजरि लगबाक डर लोक-पद्यसँ निबटाओल जाइत अछि।
४५४. (D) दीप मिझा राखि बादमे टोटमा करबाक प्रथा। — लेख प्राचीन विश्वासक उल्लेख करैत अछि, मुदा वर्तमानमे कम देखाइत अछि।
४५५. (C) जिज्ञासा पूर्ति आ बालबोधक खेल लेल। — नेनाक कपार पर आँगुर घुमाएब उत्तर/संकेतक लोक-खेल अछि।
४५६. (A) जिज्ञासा पूरा होएबाक सम्भावना प्रबल। — लोकविश्वास बाल-हावभावकें संकेत रूपमे पढ़ैत अछि।
४५७. (C) “था...था...दिग-दिग था” प्रकारक पद। — ई पद नेनाक डेग उठएबाक प्रोत्साहन अछि।
४५८. (A) खसैत अछि आ फेर प्रयास करैत अछि। — लोक-पद्य सीखबाक प्रक्रिया मे धैर्य आ उत्साह भरैत अछि।
४५९. (A) बूलब/चलन सीखबामे लयात्मक सहारा। — शारीरिक विकास लोकधुन आ पुचकारसँ जुड़ल अछि।
४६०. (C) लोक-साहित्य नेनाक रक्षा, नजर हटएब, जिज्ञासा आ चलन-सिखाबनक साधन अछि। — बाल-जीवनक सूक्ष्म चरणसभ लोक-गीतक माध्यमे संस्कारित होइत अछि।

४६१. (A) नेनाक संग कथा-गीत गाबि चान देखबैत। — चानक छवि बाल-कल्पना आ खेनाइ-सुताइ संग जुड़ैत अछि।
४६२. (C) नेनाक पोषण आ लाड़-प्यार। — चन्ना मामा पदमे खोराक आ स्नेहक कल्पना अछि।
४६३. (B) एक वस्तु दोसराक हाथ जाइत क्रम बनैत अछि। — बाल-कथा कड़ी-दर-कड़ी स्मृति आ लय पर आधारित अछि।
४६४. (C) कनुनियाँ, फुटहा, चरबहबा, गैया, बिलैया, मूसा, चिलहोरबा, राजा, हाथी, मामा धरि। — एहि संचरित क्रममे बाल-स्मृति, पशु-पक्षी आ रिश्तेदारी मिलैत अछि।
४६५. (B) लोरी गाबबाक। — लोरी देह-स्पर्श, डोलाव आ धुनक सम्मिलित क्रिया अछि।
४६६. (A) नेनाक निन्न आनब। — लोरी निन्नक मानवीकरण करि बौआ लग बोलबैत अछि।
४६७. (C) आरब चाउरक भात, गायक दूध, चूड़ा आदि। — लोरी खेनाइ आ दीर्घ जीवनक शुभकामना संग चलैत अछि।
४६८. (C) संगहि दीर्घायु होएबाक कामना कएल जाइत अछि। — लेख लोरीक भावात्मक आ मंगलकामना पक्ष स्पष्ट करैत अछि।
४६९. (C) निश्चित भऽ घरक काज-रोजगारमे लागि जाइत छथि। — लोरी घरेलू श्रम-संरचनासँ सेहो जुड़ल अछि।
४७०. (C) चन्ना, तारा आ लोरी शिशु-पोषण, कल्पना, निन्न आ मंगलकामना सँ भरल अछि। — बाल लोक-साहित्य घरेलू जीवनक भावात्मक लय बनबैत अछि।
४७१. (C) उतान पड़ि नेनाकें पैरपर बैसाय पैर ऊपर-नीचाँ करैत छथि। — ई खेल वयस्क आ नेना दुनूक मनोरंजनक साधन अछि।
४७२. (C) घरेलू हास्य आ गति-बिम्बक कारण। — खेलमे कथा, ठिठोली आ शरीरक डोल एकसंग अछि।
४७३. (C) पैर उठाएब-खसाएबाक समय। — खेलक शारीरिक क्रिया घरक प्रतीकात्मक भाषा संग जुड़ैत अछि।
४७४. (A) कोनो एक लोकक सानिध्य। — लेख बालक सामाजिक-स्नेह आवश्यकताकें चिन्हैत अछि।
४७५. (C) नानी, दादी, दीदी आदि। — शिशु-पालन सामूहिक घरेलू जिम्मेदारी अछि।
४७६. (D) भास लगा कऽ गाओल रंग-बिरंगक पद्य। — लोक-पद्यक उद्देश्य नेनाक मोन बहटारब अछि।
४७७. (C) आम, बाबा, बाघ-बघिनियाँ, चूड़ा आ नजरि। — बाल-पद्य परिचित ग्रामीण वस्तुसंसारसँ बनल अछि।
४७८. (C) बालक मनुहार आ लोक-हास्य। — छोट-छोट प्रसंग नेनाक मनोरंजन लेल नाटकीय बनैत अछि।
४७९. (A) नेनाक भाव-पालन आ लोक-स्मृति-संक्रमण दुनु हुनके माध्यमे होइत अछि। — घरेलू स्त्री-पात्र शिशु लोक-साहित्यक प्रमुख संवाहक अछि।
४८०. (C) घुघुआ-मना आ बहटार-पद्य शिशु-मनोरंजन, शारीरिक खेल आ घरेलू सामूहिकता जोड़ैत अछि। — नेनाक जागल समय लोकगीतक जीवित मंच बनैत अछि।
४८१. (D) नेनाक लालन-पालनमे बड़ महत्त्वपूर्ण। — दीदी-पद्य शिशु देखभालमे बहिन-पिउसिक भूमिका चिन्हैत अछि।
४८२. (C) मिरचाइ। — दीदी-पद्य घरेलू वस्तु आ खेलक मिश्र भाषा रखैत अछि।
४८३. (C) हास्य-भय आ लुकाएबाक खेल रचैत अछि। — बालगीत छोट सामाजिक पात्रसभकें खेलक रूपमे आनैत अछि।
४८४. (C) कानय, खेनाइ, सुताइ आ उठबैबाक घरेलू ठिठोली। — दीदी-पद्य शिशु-दैनिकता कें हास्यमय बनबैत अछि।
४८५. (A) छोट गलती पर बाबा मारलक — बाल शिकायत। — बालस्वर आ घरेलू अनुशासन लोकगीतमे प्रवेश करैत अछि।
४८६. (D) मामा-मामी-नाना-नानीक दुलारक संदर्भ लेल। — नेनाक रिश्तेदारीक विस्तार मातृकुल धरि पहुँचैत अछि।
४८७. (B) चिक्कन पड़बा। — मामा-मामीक पद्य खोराक, ममता आ शिकायत संग भरल अछि।
४८८. (A) मामाघरक भोजन-संसार। — बाल-गीत खेनाइ-पीबाइ आ दुलारक घरेलू स्मृति बनबैत अछि।
४८९. (B) मामाघरमे अपना लेल कम, दूसर लेल लाल-लाल कुटिया देखिक शिकायत। — बाल-पद्य दुलारक संग बाल-मनक ईर्ष्या/असंतोष सेहो रखैत अछि।
४९०. (C) रिश्तेदारी शिशु लोक-पद्यकें मामा, मामी, दीदी, बाबा आदि पात्रसँ समृद्ध करैत अछि। — बाल-साहित्य परिवारिक जालक माध्यमे भाव-संस्कार बनबैत अछि।
४९१. (C) रस्ता-पेरा, परती-परौत, विद्यालय-परिसर आ खेलक मैदान धरि विस्तृत। — लालन-पालनक घर-सीमा सँ ई साहित्य बाहरक सामूहिक जगतमे फैलैत अछि।

४९२. (D) बिट्टू काटल जाइत अछि। — खेलमे उत्तर अनुसार दंड/क्रिया बदलैत अछि।
४९३. (D) मुक्कासँ मारल जाइत अछि। — लोकखेल हास्यपूर्ण दंड-नियम पर चलैत अछि।
४९४. (B) एकहि खेलक क्षेत्रीय/रूपान्तरित पद देखबैत अछि। — लोकसाहित्यमे पाठांतर स्वाभाविक अछि।
४९५. (A) गाछ, नदी, कमल फूल, चमेली आदि। — खेल-पद्य प्रकृति आ लोक-छविसँ बनैत अछि।
४९६. (D) फुद्दीक पेट चीरि दैत अछि। — अद्भुत-कल्पना बालक मनोयोग आकर्षित करैत अछि।
४९७. (A) स्मृति, लय आ हास्यक क्रम बनबैत अछि। — तीन हेलबार, तीन ब्राह्मण आदि श्रृंखला बाल-श्रवण लेल उपयुक्त अछि।
४९८. (B) बाल-कल्पनाकें चमत्कारिक विस्तार देब। — लोककथा-काव्य यथार्थक नियमसँ मुक्त खेल-लोक बनबैत अछि।
४९९. (D) बड़ मनोयोगसँ। — लेख स्पष्ट करैत अछि जे एहन असंगत-चमत्कारिक साहित्य बाल-रुचिक अनुरूप अछि।
५००. (C) खेल-पद्य नियम, दंड, प्रकृति, चमत्कार आ लय सँ बाल-मनोरंजन रचैत अछि। — शिशु लोक-साहित्य खेलक माध्यमे सामूहिक श्रवण-स्मृति बनबैत अछि।
५०१. (A) एक गोटा इंजिन, आर सभ डिब्बा। — बालसमूह आधुनिक वस्तु रेलकें खेल-देहमे रूपान्तरित करैत अछि।
५०२. (A) ध्वनि, गति आ वस्तु-श्रृंखलाक मिश्रण। — रेल, पहिया, कुआँ, तेल आदि बिम्ब बाल-गति बनबैत अछि।
५०३. (A) बड्ड पुरान। — लेख कबड्डीकें क्षेत्रीय खेल-स्मृति संग जोड़ैत अछि।
५०४. (B) मैना बच्चा आ अण्डापर। — कबड्डी पद्य खेलक श्वास-ताल आ छवि बनबैत अछि।
५०५. (C) खेलक लय आ कल्पना बढ़एबाक लेल। — कबड्डी पद्य केवल खेल-सूत्र नहि, लयात्मक लोक-रचना अछि।
५०६. (D) कपार फुटि गेल, हाथ कटि गेल। — खेलक उत्साहक संग चोटक अतिशयोक्ति हास्य बनैत अछि।
५०७. (D) मिथिलाक कन्या लोकनिक मध्य। — लेख लिंग-विशिष्ट खेल-परम्परा सेहो दर्ज करैत अछि।
५०८. (A) गिरगिट। — अन्य कन्या ओकर जाँघ/पैर पकड़ि घुमबैत खेल रचैत अछि।
५०९. (A) कल्पनात्मक यात्रा आ संवाद। — खेलमे प्रश्नोत्तर आ नाटकीय अभिनय जुड़ल अछि।
५१०. (C) सामूहिक खेलसभ देह-गतिशीलता, पद्य, अभिनय आ संवादकें एकसंग जोड़ैत अछि। — रेलगाड़ी, कबड्डी आ गिरगिटरानी बालसमूहक जीवित लोकनाट्य अछि।
५११. (A) गाछक। — बाकी नेना सभ ओकर पैर पकड़ि फल जेकाँ बैसैत अछि।
५१२. (D) फल बनल नेना सभकें हाथसँ टेबैत अछि। — खेलमे काँच-पाकल फल पर क्रिया निर्भर करैत अछि।
५१३. (A) फल पकबाक अभिनय अनुसार चयन। — बाल-खेल कृषि/फल-पक्वता ज्ञानसँ जुड़ल अछि।
५१४. (C) खाली घर, दलानक कोठली वा विद्यालयक कोना धरि। — चार कोनाबला स्थान एहि खेलक आधार अछि।
५१५. (B) कुन कोना जाएब। — ई खेल स्थान-बोध आ दौड़-गति पर आधारित अछि।
५१६. (D) बहुत नेना हाथ जोड़ी सोझ पाँतीमे ठाढ़ होइत अछि। — ई सामूहिक देह-श्रृंखला बनबैत खेल अछि।
५१७. (B) पशु, खेत आ मालिकाना संवादक खेलरूप। — ग्रामीण जीवनक दृश्य बाल-खेलमे बदलैत अछि।
५१८. (B) पशु-पक्षी अपन अबोध नेनाकें उपाय सिखबैत अछि। — शिशु लोक-साहित्य जीवन-कौशलक लोक प्रशिक्षण अछि।
५१९. (A) बगिया गाछक खिस्सा आ गोनू झाक खिस्सा। — लोक-कथासभ बालक मनमे बुद्धि आ सावधानी जगबैत अछि।
५२०. (C) खेल-पद्य स्थान, फल, पशु, जोखिम आ आत्मरक्षाक अनुभव बाल-रूपमे सिखबैत अछि। — शिशु लोक-साहित्य मनोरंजनक संग जीवन-कौशलक पाठ अछि।
५२१. (C) निरर्थक बुझाईत शब्दसभक प्रयोग। — लोक-पद्य अर्थसँ बेसी ध्वनि, लय आ खेल-आनन्द पर टिकैत अछि।
५२२. (A) ध्वन्यात्मक खेल आ लोक-हास्यक कारण। — ऐहन पद बालभाषाक सहज लय रचैत अछि।
५२३. (A) परिवार सामाजिक जीवनक पहिल पाठशाला अछि। — लेख परिवारकें शिक्षा-संस्कारक प्रारम्भिक केन्द्र मानैत अछि।
५२४. (A) अनेक प्रकारक शिक्षा। — लोकगीत-खेल मनोरंजनक संग ज्ञानक साधन सेहो अछि।

५२५. (D) दहिना हाथ पर। — खेल शारीरिक स्पर्श, आँगुर-पकड़ आ संख्या-स्मृति संग जुड़ल अछि।
५२६. (B) गाय, महीस, बड़द, बकरी आ छकरी संग। — घरेलू पशु-संसार अंकज्ञानक माध्यम बनैत अछि।
५२७. (B) हँसैत-हँसैत लोट-पोट भऽ जाइत अछि। — शिक्षा आनंद आ शरीरक अनुभवसँ जुड़ल अछि।
५२८. (C) एकसँ पाँच धरि। — खेल प्रारम्भिक संख्या-बोध तैयार करैत अछि।
५२९. (C) खेल, स्पर्श, गीत आ हँसीक रूपमे। — लोकशिक्षा औपचारिक पाठ नहि, जीवन-खेल बनि अबैत अछि।
५३०. (C) निरर्थक-ध्वनि आ अंक-खेल दुनू मिलि बालभाषा आ बालज्ञान गढ़ैत अछि। — शिशु लोक-साहित्य खेलमे शिक्षा छिपबैत अछि।
५३१. (B) दस, बीस, तीस, चालीस...सौ। — ई खेल दहाड़ आ सैकड़ा धरिक संख्या-बोध दैत अछि।
५३२. (C) गणना केँ खेलक घटना मे बदलैत अछि। — संख्या-स्मृति लयात्मक कथनसँ मनमे बसैत अछि।
५३३. (C) एक नेना। — बाकी नेना वृत्ताकार हाथ जोड़ि ठाढ़ होइत अछि।
५३४. (C) एड़ी सँ माथ धरि। — ई खेल अंग-ज्ञानक क्रमिक पाठ अछि।
५३५. (A) डूबि कऽ नहएबाक। — जल-स्तरक बढ़त क्रम शरीर-ज्ञान आ अभिनय बनैत अछि।
५३६. (C) वस्तु सभक आकारक ज्ञान। — हाथक आकार घटा-बढ़ा कऽ आकार-बोध देल जाइत अछि।
५३७. (C) आकारज्ञानकेँ कूद-फान आ हास्य संग जोड़ब। — “ती-ती-ती” कहि नेना कूदैत अछि।
५३८. (D) हाँसू। — वस्तुक उपयोग-श्रृंखला लोहारक औजारसँ घरेलू जीवन धरि चलैत अछि।
५३९. (C) बेटा जनमाबऽ आ कोरामे खेलाबऽ धरि। — उपयोग-ज्ञान कृषि, गृहस्थी, भोजन आ परिवार तक फैलैत अछि।
५४०. (C) लोकखेल संख्या, अंग, आकार आ वस्तु-उपयोगक व्यवहारिक ज्ञान देत अछि। — शिशु-साहित्य जीवनोपयोगी शिक्षा केँ खेलक रूपमे साधैत अछि।
५४१. (A) प्रत्येक पक्षसँ। — लालन-पालन, खेल, मनोरंजन आ ज्ञान सभ एहि धरोहरमे भेटैत अछि।
५४२. (D) अधिकता पाओल गेल। — लेखमे एहि दूनू श्रेणीकेँ विशेष रूपे भरिपूर मानल गेल अछि।
५४३. (B) एकता, सहयोग, सहानुभूति आ प्रेम। — लोकखेल सामाजिक गुण विकसित करैत अछि।
५४४. (B) शिशु लोक-साहित्य आ खेलक माध्यमे आरम्भहिसँ। — लोकसाहित्य बालक कला-संस्कारक प्रारम्भिक पाठ अछि।
५४५. (A) अमूल्य धरोहरकेँ सहेजि समेटबाक। — लेख संरक्षणकेँ तात्कालिक सांस्कृतिक काम मानैत अछि।
५४६. (B) मूल्यवान धरोहर नष्ट भऽ सकैत अछि। — मौलिकता-क्षयक खतरा लेखमे स्पष्ट चेतावनी रूपमे अछि।
५४७. (C) क्षेत्र बहुत विस्तृत अछि आ लोकक ठोरपर बहुत साहित्य एखनो अछि। — लेख संकलनक अधूरापन स्वीकार करैत अछि।
५४८. (D) “ट्विंकल ट्विंकल लिटिल स्टार”। — लेख लोकधरोहर छोड़ि विदेशी बालगीत दिस भागबाक प्रवृत्ति पर चिन्ता करैत अछि।
५४९. (B) असंकलित शिशु लोक-साहित्यकेँ चिरकाल धरि जोगा राखबाक लेल। — लेख आधुनिक तकनीककेँ लोकसाहित्य संरक्षणक साधन मानैत अछि।
५५०. (C) समधानल डेग आ जोरगर प्रयास। — धरोहर बचएबाक लेल संगठित, योजनाबद्ध काज जरूरी अछि।
५५१. (A) गंभीर साम्यवादी दृष्टि, जीवनानुभव आ सहज परिपक्व अभिव्यक्ति। — समीक्षा लेखकक वैचारिकता आ अनुभव-संवेदना एकसंग चिन्हैत अछि।
५५२. (A) एक बएसपर आबि लिखनाइ शुरू कएलनि, मुदा कृति पढ़िने ई बूझाइत नहि। — समीक्षक परिपक्वता केँ उम्रक देर आरम्भसँ अलग करैत अछि।
५५३. (D) रचित-खचित। — समीक्षक मानैत छथि जे जीवनानुभव पूर्व सँ भीतर पकैत रहल।
५५४. (D) सुपौलमे आयोजित कथा-गोष्ठीमे। — समीक्षा कथाक सार्वजनिक पाठ-संदर्भ दैत अछि।
५५५. (D) एकटा स्वतंत्रता सेनानीक घरसँ। — पारिवारिक राष्ट्रवादी पृष्ठभूमि आ प्रवासी जीवनक द्वन्द्व कथा आधार अछि।
५५६. (C) पत्नी संग अमेरिका। — इंजीनियरिंगक बाद नोकरी लेल विदेश-प्रवास कथा मोड़ बनैत अछि।
५५७. (A) माता-पिता, परिवार, सर-सम्बन्धी आ समाज। — प्रवास केवल भौगोलिक नहि, संबंध-विच्छेद सेहो अछि।
५५८. (D) पाइ कमएबाक। — समीक्षा भोगवादी प्रवासी जीवनक संकुचन बतबैत अछि।
५५९. (B) रघुनाथक माता-पिता। — गामपर रहि गेल माता-पिता कथा नैतिक धुरी बनैत छथि।

५६०. (C) “पछताबा” प्रवास, धनलोलुपता आ परिवार-विच्छेदक कथा रूपमे खुलैत अछि। — केदार कानन कथा-समीक्षा केँ सामाजिक मूल्यबोधसँ जोड़ैत छथि।
५६१. (B) थोड़ेक दिन मलीन रहि फेर ढंगसँ अपन जीवन जीबैत सुखसँ रहैत छथि। — कथा वृद्ध माता-पिताकेँ केवल रोदन नहि, जीवन-संयमसहित देखबैत अछि।
५६२. (C) फ्लैशबैकमे। — समीक्षक कथा-संरचनाक तकनीक स्पष्ट करैत छथि।
५६३. (B) अनेक उपकथा सभ उदघाटित होइत अछि। — कथा मुख्य प्रसंगक भीतर स्मृति-आधारित उपकथासभ खोलैत अछि।
५६४. (B) रघुनाथक पत्नी। — विदेशी अकेलापन परिवार-विच्छेदक पहिल बोध हुनकामे जगबैत अछि।
५६५. (B) ने क्यो संगी, ने क्यो गप कएनिहार। — प्रवासक समृद्धि संवादहीनता दूर नहि करैत।
५६६. (A) पत्नी सँ बादमे, ओहो एक दिन। — कथा धीरे-धीरे नायकक भीतर पछतावा जगबैत अछि।
५६७. (A) ओछाइनपर छटपटाइत टा रहि जाइत अछि। — बोध क्रियामे परिणत नहि भऽ पबैत अछि।
५६८. (C) कार्यरूप वा आन परिणति नहि देखाओल जाइत। — समीक्षक कथाक अपूर्ण/अटकल भावक ओर संकेत करैत छथि।
५६९. (A) मोनलगू, क्रम-भंग बिना। — कथा-प्रवाह सहज आ पाठक-पकड़निहार कहल गेल।
५७०. (A) “पछताबा” प्रवासी अकेलापन, पश्चाताप आ क्रिया-असमर्थता केँ सुगठित फ्लैशबैकमे रखैत अछि। — समीक्षा कथाक भाव आ संरचना दुनू पर बात करैत अछि।
५७१. (C) मैथिल अभिव्यक्तिक रूप। — कथा स्थानीय उपमान आ कहन-ढंगसँ अपनपन पबैत अछि।
५७२. (B) शिवनाथक मनोस्थिति। — आम तोड़ै सँ पहिनहि खसि पड़बाक छवि असफल आशा दर्शाबैत अछि।
५७३. (D) दुनूक मन चूर-चूर भऽ गेल। — समीक्षक तीव्र मानसिक टूटनक स्थानीय बिम्बक सराहना करैत छथि।
५७४. (C) अरमान आ सपना फूटि वायुमंडलमे मिलि गेल। — आशा अचानक समाप्त भऽ खालीपन बनैत अछि।
५७५. (D) दुख सँ करेज कठोर भऽ गेल। — स्थानीय फल-बिम्ब भावनात्मक कठोरता व्यक्त करैत अछि।
५७६. (B) घर-गामक लोक-अनुभवक प्रकाश-छवि। — कथा मे घरेलू उपमान मैथिल वातावरण गाढ़ करैत अछि।
५७७. (C) भाषा कथाकेँ क्षेत्रीय जीवनानुभवसँ जोड़ैत अछि। — कहानीक संवेदना स्थानीय बोल-बिम्ब सँ प्रामाणिक बनैत अछि।
५७८. (A) व्यक्तिगत रूपेँ बधाइ दैत छथि। — समीक्षा प्रशंसा आ अपेक्षाक स्वरमे समाप्त होइत अछि।
५७९. (B) अनुभवकेँ आरो व्यापकता दैत नव-नव कृति देथिन। — समीक्षा लेखकक सम्भावना पर भरोसा व्यक्त करैत अछि।
५८०. (C) “पछताबा”क शक्ति ओकर मैथिल उपमान, सहज भाषा आ जीवनानुभवमे अछि। — केदार काननक समीक्षा कथाक सामाजिक भावक संग भाषिक स्वाद सेहो चिन्हैत अछि।
५८१. (C) दिव्य अक्षर पुरुष। — लेख हुनका मैथिली भाषा-साहित्यक उत्थानक विराट व्यक्तित्व रूपमे देखैत अछि।
५८२. (D) १९२२-२००९। — लेखक जीवनी-संदर्भसँ साहित्य-साधनाक काल-व्याप्ति स्पष्ट करैत छथि।
५८३. (C) लगभग सात दशक। — लेख हुनकर दीर्घ, अखण्ड मातृभाषा-सेवा पर बल दैत अछि।
५८४. (A) आन्दोलनात्मक आ रचनात्मक सृजन। — ओ केवल लेखक नहि, भाषा-आन्दोलनक कर्मयोगी रूपमे चित्रित छथि।
५८५. (A) मातृभाषाक माध्यमे प्राथमिक शिक्षा नीति लागू कएबाक। — लेख भाषा-साधनाकेँ शिक्षा-नीति संग जोड़ैत अछि।
५८६. (A) मैथिली अध्ययनकेँ शोध-आधारित दिशा देबाक लेल। — हुनकर आलोचना भावुकता नहि, वैज्ञानिक अध्ययन पर आधारित कहल गेल।
५८७. (C) भूला-पड़ल साहित्यिक धरोहरकेँ उजागर करब। — जयकान्त मिश्रक शोध-साधना इतिहास-उद्धारक काज करैत अछि।
५८८. (D) आलोचक रश्मि। — लेख अनुसन्धानकेँ दिशा-दर्शक प्रकाश रूपमे चित्रित करैत अछि।
५८९. (C) एकर उत्थानार्थ निरन्तर कार्यरत रखलक। — जयकान्त मिश्रक व्यक्तित्व प्रेरक शक्ति बनल।
५९०. (C) जयकान्त मिश्र मैथिलीक शोध, शिक्षा, आन्दोलन आ धरोहर-उद्धारक अक्षर-पुरुष रूपमे स्थापित छथि। — प्रेमशंकर सिंह हुनकर बहुआयामी योगदानक उद्घाटन करैत छथि।
५९१. (A) पटना मे बिहार पब्लिक सर्भिस कमीशनक प्रसंगमे। — प्रथम दर्शन छात्र-जीवन आ गुरु-परिचयक प्रसंगसँ जुड़ल अछि।

५९२. (C) पटना विश्वविद्यालयक एम.ए. मैथिलीक अंतिम वर्षक छात्र। — लेखक अपन विद्यार्थी-अवस्था सँ जयकान्त मिश्रक स्मृति जोड़ैत छथि।
५९३. (A) सारगर्भित गंभीर व्याख्यान। — हुनकर व्याख्यान मातृभाषानुरागक बीज-वपन करैत बताओल गेल।
५९४. (D) शोध-सामग्री आ निजी पुस्तकालय देखबाक लेल। — जयकान्त मिश्रक पुस्तकालय शोधक लेल समृद्ध स्रोत बनल।
५९५. (C) कन्यादान आ द्विरागमन पर श्रीकृष्ण मिश्रक समालोचना। — शोधार्थी लेल मिथिला मिहिरमे प्रकाशित सामग्री आवश्यक छल।
५९६. (C) आवश्यक सामग्री टाइप करबा देलनि। — ई सहयोग शोध-संस्कृति आ विद्वत्सन्नेहक उदाहरण अछि।
५९७. (C) संस्कृत पठन-पाठनक अगाध आस्था। — पितामह जयदेव मिश्र आ पिता उमेश मिश्रक संस्कृत अनुराग उल्लेखित अछि।
५९८. (B) पिता आ प्रोफेसर अमरनाथ झाक। — इलाहाबाद आधुनिक यूरोपीय परम्पराक केन्द्र बताओल गेल।
५९९. (C) २१ वर्ष। — हुनकर विलक्षण वैदुष्य आ शैक्षणिक योग्यता एहि चयनक आधार बनल।
६००. (A) रीडर, यूनिवर्सिटी प्रोफेसर आ विभागाध्यक्ष पद सुशोभित कऽ। — अध्यापन-जीवन दीर्घ आ प्रतिष्ठित रहल, अवकाशोपरांत सेहो अन्य विश्वविद्यालयमे सक्रियता चलल।
६०१. (C) तिरहुता आ कैथी। — लेखमे कहल गेल अछि जे पुरातन कालमे समग्र मिथिलाञ्चलमे तिरहुताक संग कैथी सेहो प्रचलित छल।
६०२. (B) तिरहुता लिपि। — दरभंगा राजमे तिरहुताक प्रयोग छल, मुदा बादमे देवनागरी लादल गेल।
६०३. (D) तिरहुता जनमानससँ शनैः-शनैः विलुप्त होइत गेल। — लेख एहि भाषिक-लिपिक बदलाबकेँ गंभीर सांस्कृतिक क्षति मानैत अछि।
६०४. (C) मैथिलीकेँ हिन्दीक अंग ठहरएबाक विवाद। — स्वतंत्र लिपि मैथिली स्वतंत्रता केर स्पष्ट प्रमाण बनि सकैत छल।
६०५. (A) मैथिली साहित्य-निर्माता तिरहुताक बदला देवनागरी प्रयोग करए लगलाह। — सांस्कृतिक संपर्कक कारण मैथिली लेखनमे लिपि-परिवर्तन भेल।
६०६. (A) ओ प्रयास सफल नहि भेल। — लेख तिरहुता पुनर्जीवनक प्रयाससभक विफलता दर्ज करैत अछि।
६०७. (B) तिरहुता/मैथिली लिपिक पुनर्जीवनक नेयारभास रूपमे। — ई प्रयास बांग्ला प्रभावक काँटा काटबाक भावनासँ जोड़ल गेल, मुदा सफल नहि भेल।
६०८. (D) मैथिली कोश तिरहुता लिपिमे प्रकाशित करबाक लेल। — हुनकर इच्छा छल जे कोश तिरहुतामे निकसए, एहि लेल टाइप बनएबाक अथक प्रयत्न भेल।
६०९. (D) तिरहुता लिपिक शिक्षा आ पुनरुत्थान। — तिरहुता पुनर्जीवनक बलवती इच्छा सँ ई पुस्तक लिखल गेल।
६१०. (A) रिसर्च आ सांस्कृतिक कार्यमे अलंकरण तथा प्राचीन साहित्य-अध्ययनक सुकरता लेल। — लेख तिरहुताकेँ केवल लिपि नहि, शोध आ सांस्कृतिक अस्मिताक साधन मानैत अछि।
६११. (A) प्रसन्नताक लहरि आ नव आशा। — मान्यताक बाद विकासक अवरुद्ध मार्गमे नव किरण विकीर्ण होएबाक आशा जागल।
६१२. (A) जयकान्त मिश्र। — रमानाथ झाक आकस्मिक निधनक बाद जयकान्त मिश्र परामर्श मण्डलक संयोजक भेलाह।
६१३. (A) दू खेप। — लेख स्पष्ट करैत अछि जे ओ दू खेप संयोजक रहलाह।
६१४. (A) विद्यापति गीत शती। — अकादेमी प्रकाशन-सूचीमे एहि पुस्तकक उल्लेख अछि।
६१५. (C) मैथिली कथा संग्रह। — कार्यकालमे प्रकाशित ग्रंथसभमे मैथिली कथा संग्रहक उल्लेख भेटैत अछि।
६१६. (C) अंग्रेजीमे मैथिली साहित्यक इतिहास लिखबाक। — मैथिलीक स्वीकृति पछाति इतिहास लेखनक दायित्व हुनका सौंपल गेल।
६१७. (B) कथित बभन-पेंच आ इतिहास-लेखनपर जयकान्त मिश्रक एकाधिकारक कारण। — लेख विवादक मूलमे पाण्डुलिपि रोकल जाएब आ इतिहास-लेखनक अधिकार-भाव देखैत अछि।
६१८. (A) A History of Maithili Literature। — एहि ग्रंथक अकादेमी संस्करण इतिहास-विवादक केंद्र बनल।
६१९. (C) Indian Literature Since Independence। — एहि आलेखमे मैथिली विकासक मूल्यांकन विवादित ठहरल।
६२०. (A) वादे-वादे जायते तत्त्वबोध। — सुधांशु शेखर चौधरीक सम्पादनमे अनेक लेखकक प्रतिक्रिया एहि शृंखलामे प्रकाशित भेल।
६२१. (A) ओ मैथिली आलोचनाकेँ प्रतिमान आ दिशा देलनि। — हुनकर समीक्षा-कर्म भावुक प्रशंसा नहि, साहित्यिक मूल्यांकनक दिशा खोलैत अछि।
६२२. (D) अंग्रेजी साहित्य। — अंग्रेजी अध्यापनक पृष्ठभूमि हुनकर आलोचनात्मक दृष्टि बनएबाक आधार बनल।
६२३. (D) मातृभाषामे समीक्षाक सर्वथा अभाव देखि। — हुनका मैथिली आलोचनाकेँ विकसित करबाक इच्छा प्रेरित कएलक।
६२४. (B) गंगापति सिंहक “सुशीला” पर। — “सुशीला” समीक्षा मैथिली आलोचनानामे हुनकर प्रवेशक मुख्य द्वार मानल गेल।

६२५. (C) मैथिली शब्दक बदला हिन्दी शब्द-समूहक प्रयोगपर सतर्क प्रतिवादक कारण। — एहि समीक्षा भाषिक शुद्धता आ आलोचनात्मक निर्भीकताक उदाहरण बनल।
६२६. (A) आलोचनाक आवश्यकता स्थापित कएलक। — एहि धारणा विरुद्ध आलोचनात्मक विचार-विवाद आरम्भ भेल।
६२७. (B) अत्यधिक प्रोत्साहित कएलनि। — युवा साहित्य-चिन्तक भुवन हुनकर आलोचनात्मक प्रयासक समर्थक छलाह।
६२८. (C) इतिहास-लेखन समीक्षाक श्रेणीमे परिणत भेल। — लेखक कहैत छथि जे इतिहासग्रंथ आलोचनात्मक दिशा सेहो देलक।
६२९. (B) हुनका समक्ष पूर्व प्रतिमान नहि छल। — आरम्भिक इतिहासकारक दोष चर्चा करत समय ऐतिहासिक संदर्भ बुझब आवश्यक अछि।
६३०. (C) मैथिली आलोचना-साहित्यकें दिशा-बोध करौलनि। — इतिहासक सीमासहित ओकर मार्गदर्शक भूमिका लेखमे स्वीकार कएल गेल।
६३१. (C) मैथिली लोक-साहित्यक। — लेखमे एहि ग्रंथकें मिथिला लोक-साहित्य अध्ययनक पहिल ग्रंथ मानल गेल।
६३२. (B) लोकगीत आ लोकनाट्य सम्बन्धी गीतक विवेचन। — प्रथम खण्ड लोकगीत सामग्री आ नाट्य-गीतक लेखा-जोखा दैत अछि।
६३३. (C) लोक विश्वास, लोक परम्परा आ लोककथा। — दूसर खण्ड लोकसंस्कृतिक विश्वास-परम्परा दिस बढ़ैत अछि।
६३४. (D) प्रेरणा-स्रोत आ पाथेय। — लेख परवर्ती लोक-साहित्यकारक लेल एकर आधार-भूमिका मानैत अछि।
६३५. (A) मैथिली इतिहास सम्बन्धी किछु समस्या। — ओ समस्या-दर्शनक माध्यमे भविष्यक शोध-दिशा खोलैत छथि।
६३६. (A) नाट्य साहित्य। — नाटकक भविष्यपर विचार देलनि आ नब बिन्दु संकेत कएलनि।
६३७. (D) भेष-भूषा, भाव-भाषा, कला-कौशल, चित्रकला-संगीत। — हुनकर समीक्षा-दृष्टि साहित्यसँ बाहर व्यापक सांस्कृतिक जीवन धरि फैलल छल।
६३८. (C) मैथिलीक भविष्य। — ओ मानैत छलाह जे मंचित साहित्य जीवित सामाजिक शक्ति बनि सकैत अछि।
६३९. (D) मूर्तमय उपस्थितिक क्षमता। — नाटक दृश्य-अनुभव, अभिनय-सौन्दर्य आ कलात्मक सत्यता जोड़ैत अछि।
६४०. (C) ओ परिवर्तनक स्वरक समर्थक छलाह। — वैज्ञानिक आविष्कार, औद्योगिकरण, मार्क्सवाद, फ्रायड आ बौद्धिकता आदिक प्रभाव ओ स्वीकार करैत छथि।
६४१. (A) कीर्त्तिनिजा। — हुनकर नामकरणपर मैथिली आलोचनामे विवाद आरम्भ भेल।
६४२. (B) अभिव्यञ्जना। — अभिव्यञ्जनाक प्रथम अंकमे आपत्ति प्रस्तुत कएल गेल।
६४३. (D) कीर्त्तिनिजा नाच। — ओ नाटक नहि, नाच शब्दक सार्थकता पर बल देलनि।
६४४. (A) अभिव्यञ्जनाक अग्रिम अंकमे। — ई वाद-प्रतिवाद मैथिली आलोचनाक जीवंत विवादक प्रारम्भ बनल।
६४५. (D) कीर्त्तिनिजा नाटक। — अपन मतक समर्थनमे १९६५क पुस्तक प्रकाशित भेल।
६४६. (C) नाच-नाटक आ अभिनय-परम्पराक भेद स्पष्ट करबाक लेल। — शब्द, पात्र, अभिनय आ परम्परा सभ नामकरणक आधार बनल।
६४७. (C) एहि सँ ओकर नाटकीय संरचनाक परीक्षण होइत अछि। — नाट्यत्व सिद्ध वा असिद्ध करब लेल मंच-व्यवहार जाँचल गेल।
६४८. (B) कीर्त्तिनिजाकें नाटक-परम्परा संग जोड़बाक/अलग करबाक लेल। — नाटक नाम देबाक आधार अभिनय-परम्परा पर निर्भर भेल।
६४९. (B) वाद-प्रतिवादक परम्परा। — नामकरण-संघर्ष मैथिली शोध-आलोचनाक जीवंतता देखबैत अछि।
६५०. (C) कीर्त्तिनिजा प्रश्न केवल नामक नहि, मिथिलाक रंग-इतिहास बुझबाक प्रश्न अछि। — विवाद नाच, नाटक, अभिनय आ परम्पराक गहन शोधक माँग करैत अछि।
६५१. (B) भारतीय संविधानक अष्टम अनुसूचीमे स्थान लेल राष्ट्रीय आन्दोलन। — ओ मैथिली प्रश्नकें व्यापक भाषा-अधिकारक राष्ट्रीय स्तर पर देखैत छथि।
६५२. (C) मिथिलाञ्चलक गाम-गाम पदयात्रा आ जिला-जिलामे जन आन्दोलन। — ओ आन्दोलनकें पत्रिका-साहित्यकार सीमासँ बाहर जनसंकल्प बनाबए चाहैत छलाह।
६५३. (B) पत्र-पत्रिका, पत्रकार, साहित्यकार आ सहृदय प्रेमी धरि सीमित। — ओ व्यापक सामाजिक आधारक कमी देखैत छलाह।
६५४. (B) भाषाक कल्याण लेल। — स्थानीय सीमामे सिमटल आन्दोलन प्रभावी नहि बनत, एहन हुनकर धारणा छल।
६५५. (B) We Shall Overcome। — ओ भाषा-समूहक संग्राम-गीत सन प्रेरक सांस्कृतिक प्रतीक चाहैत छलाह।
६५६. (A) जखन छोट-छोट बातकें आन्दोलन कहल जाइत छल। — हुनका विराट शक्ति आ व्यापक उद्देश्यक आन्दोलन अपेक्षित छल।
६५७. (C) भाषा कोनो धर्मसँ सम्बद्ध नहि अछि। — पंजाबी-उर्दू उदाहरणक बरक्स मैथिलीकें सांस्कृतिक अस्मिताक आधार चाही, एहन संकेत अछि।

६५८. (D) भारतमे सातम स्थानक भाषा। — संख्या, लिपि, अतीत आ सांस्कृतिक परम्परा आन्दोलनक आधार बनबैत अछि।
६५९. (A) संस्कृतिक शंखनाद आ जन-जन भाषिक चेतनाक हुँकारसँ। — हुनकर आन्दोलन-दृष्टि भाषा-संस्कृति संग जनचेतना जोड़ैत अछि।
६६०. (C) साहित्य अकादेमी, अष्टम अनुसूची, संघ लोक सेवा आयोग, बिहार लोक सेवा आयोग आ शैक्षिक स्तरपर स्वीकृति। — लेख मैथिली आन्दोलनकेँ नीचे सँ ऊपर ससरल गतिशील प्रक्रिया मानैत अछि।
६६१. (B) दुनू परस्परश्रित अछि। — ज्ञानार्जनक माध्यम भाषा अछि, तँ शिक्षा-विकास भाषासँ जुड़ल अछि।
६६२. (A) ज्ञानार्जन। — लेख भाषाकेँ अर्जित ज्ञानक अभिव्यक्ति आ व्यक्तित्व निर्माणक साधन मानैत अछि।
६६३. (A) एक सिक्काक दू पहलू। — प्रारम्भिक जीवनमे मातृभाषा आ प्राथमिक शिक्षा दुनूक प्राथमिकता अपेक्षित अछि।
६६४. (D) निज भाषा उन्नतिक मूल अछि से प्रतिपादित करब। — हिन्दी नवजागरणक पंक्ति द्वारा मातृभाषा-महत्त्व पुष्ट कएल गेल।
६६५. (D) अपार कष्ट। — हुनका भाषिक शिक्षा-अभाव सामाजिक पीड़ा रूपमे अनुभव होइत छल।
६६६. (A) पृथक जन आन्दोलन। — हुनकर संघर्ष केवल लेखन नहि, सार्वजनिक अभियानक रूप लेलनि।
६६७. (D) मैथिली माध्यमे प्राथमिक शिक्षा। — लेख सरकारी उदासीनताकेँ असफलताक प्रमुख कारण मानैत अछि।
६६८. (D) मैथिली प्राथमिक शिक्षा नीति लागू होएबाक आशासँ। — मुदा एहि आशाक कोनो फलाफल नहि बहराएल।
६६९. (D) नेना सभमे शिक्षाप्रति अरुचि आ विद्यालयसँ पलायन। — अपरिचित भाषिक माध्यम बाल-शिक्षा रोकैत अछि, ई तर्क देल गेल।
६७०. (A) पदयात्रा, बैसार, प्रचार आ कानूनी लड़ाई तक। — हुनकर शिक्षा-संघर्ष जनचेतना आ विधिक मार्ग दुनू पर चलल।
६७१. (A) मातृभाषाक माध्यमे प्राथमिक शिक्षा। — अखिल भारतीय मैथिली सम्मेलनमे एहि प्रश्नपर जयकान्त मिश्र अपन विचार रखलनि।
६७२. (B) मस्तिष्कक विकास सहज-सुगम होइत अछि। — बच्चा विषय-वस्तु स्थायी संस्कार रूपमे सरलता सँ ग्रहण करैत अछि।
६७३. (C) जनमानसकेँ शिक्षित करब। — लोकशिक्षा बिना जीवित प्रजातंत्र संभव नहि, एहि हेतु मातृभाषा जरूरी अछि।
६७४. (D) ई प्राचीनतम जीवित भाषा अछि आ बिहार-झारखण्डक अनेक जिलामे बाजल जाइत अछि। — भाषिक क्षेत्र आ ऐतिहासिकता नीति-कार्यान्वयनक आधार बनैत अछि।
६७५. (A) मैथिलीमे प्राथमिक पुस्तक आ अध्यापन। — नीति-स्वीकृति बिना पाठ्य-सामग्री आ शिक्षण-दोनू अधूरा रहल।
६७६. (A) जनमत संग्रह आ सशक्त आन्दोलन। — सामाजिक दबाव बिना प्राथमिक शिक्षा-नीति लागू नहि होएत।
६७७. (C) दधीचि समान हड्डी गलौलक। — हुनकर त्याग आ संघर्षक ऊँचाइ बताबए ई रूपक प्रयोग अछि।
६७८. (C) यत्र-तत्र संग्रह आ पत्रिकामे धूलधूसरित। — लेख संकलन-प्रकाशनक तात्कालिक आवश्यकता बतबैत अछि।
६७९. (C) हुनकर विचारादि संकलित कऽ प्रकाशित करब। — भावी पीढ़ीक दिशा-बोध लेल लेखन बचाएब जरूरी मानल गेल।
६८०. (D) ग्रियर्सन पछाति भारतमे मैथिलीक महत्तम उपकारक। — उद्धरण हुनकर मातृभाषा-सेवाक राष्ट्रीय-अन्तरराष्ट्रीय मूल्य स्वीकार करैत अछि।
६८१. (C) डा. रमानन्द झा “रमण”। — लेखक जन्मशती प्रसंगमे मैथिली चेतना आ साहित्यकार-समूहक मूल्यांकन करैत छथि।
६८२. (C) प्रज्ज्वलित कएनिहार बसात। — ई रूपक दूनू मित्रक परस्पर-ऊर्जा आ संघर्ष-सहयोग देखबैत अछि।
६८३. (C) भाषा, साहित्य आ संस्कृतिक विकास-प्रचार-प्रसार-संरक्षणक चेतना। — राजनीतिक स्वाधीनता-संग्राम सांस्कृतिक आत्मचेतनासँ जुड़ल अछि।
६८४. (B) पत्र-पत्रिका सम्पादन-प्रकाशन आ अनेक अवदानी साहित्यकारक जन्मक कारण। — ई दशक आधुनिक मैथिली निर्माणक आधारभूमि बनल।
६८५. (B) मैथिली पत्र-पत्रिका सम्पादन-प्रकाशनक आरम्भिक सन्दर्भमे। — प्रबुद्ध मैथिलक प्रकाशन-चेतना एहि दशकमे सक्रिय भेल।
६८६. (A) मानकीकरण आ प्रतिमान-स्थापना। — अध्ययन, अनुशीलन आ मातृभाषा-प्रेमसँ भाषाक आधार मजबूत भेल।
६८७. (C) राष्ट्रीय-अन्तरराष्ट्रीय भाषा-कुलमे गरिमापूर्ण स्थान। — पुरानी परम्परा आधुनिक संघर्षक कारण नब गरिमा पाबि सकल।
६८८. (A) साहित्य संवर्धन आ मातृभाषा अनुरागक भावी प्रवाह सुरक्षित करब। — ओ सभ केवल वर्तमान नहि, भविष्यक साहित्य-सर्जना लेल भूमि तैयार कएलनि।
६८९. (D) अनेक अवदानी साहित्यकारक सरिसब परिसर सँ सम्बन्ध रहल। — सरिसब मैथिली प्रतिभाक उर्वर परिसर रूपमे प्रस्तुत अछि।
६९०. (B) महान अवदानी साहित्यकारक स्मरण प्रेरणास्पद अछि। — स्मरण आ आयोजन मातृभाषा-संस्कारक नवीकरण बनैत अछि।

६९१. (C) भिन्न। — लेख भिन्न पृष्ठभूमि, विषय आ स्वभाव बावजूद अद्वितीय मित्रता देखबैत अछि।
६९२. (B) भिन्न। — विषय-भिन्नता मातृभाषा-संघर्षमे बाधक नहि बनल।
६९३. (C) पटना विश्वविद्यालयमे मैथिलीक स्वीकृतिक बाटक। — आगि-बसात रूपक स्वीकृति-संघर्षक तीव्रता दिखबैत अछि।
६९४. (A) मैथिली साहित्यक सजग प्रहरी आ सिनेट सदस्य। — तन्त्रनाथ झा संस्थागत संघर्षक अग्रणी चेहरा छलाह।
६९५. (D) तन्त्रनाथ झा सिनेटर निर्वाचित भेलाह। — मित्र-सहयोग विश्वविद्यालयीय आन्दोलनक रणनीतिक पक्ष बनल।
६९६. (D) तन्त्रनाथ झाक सफल नेतृत्वक श्रेय। — दूनु मित्रक परस्पर सहयोग मैथिली स्वीकृतिक केंद्र रहल।
६९७. (C) आन्दोलनात्मक आ साहित्य-सर्जना द्वारा संवर्धन। — लेख हुनका कर्मी आ सर्जक दुनू रूपमे देखैत अछि।
६९८. (C) पटना विश्वविद्यालयक उच्चतर कक्षामे मैथिलीक स्वीकृति। — संस्थागत मान्यता हुनक संघर्षक मुख्य दिशा रहल।
६९९. (A) मातृभाषा आन्दोलनकें शिक्षक-अधिकार संग जोड़बाक कारण। — तन्त्रनाथ झाक आन्दोलन सामाजिक-शैक्षिक क्षेत्र धरि फैलल।
७००. (C) शिक्षाक क्षेत्रक विकास कार्य। — भाषा-प्रेम व्यवहारिक शिक्षण-संस्थान निर्माण धरि पहुँचैत अछि।
७०१. (C) अध्यापन वा साहित्य-सर्जनासँ अलग नहि, पूरक रूपमे। — हुनका लेल मातृभाषा-काज वर्ग-विशेषक नहि, समग्र बौद्धिक दायित्व छल।
७०२. (A) साहित्य-सर्जना आ भाषा-आन्दोलनक संयुक्त सक्रियता। — लेख आधुनिक अरुचि पर प्रश्न करैत तन्त्रनाथ-सुभद्रक उदाहरण दैत अछि।
७०३. (C) साहित्य-सर्जना आ जागरण-अभियानमे सक्रियताक कारण। — किरणक उदाहरण मातृभाषा-कर्मक बहुआयामी रूप सिद्ध करैत अछि।
७०४. (D) सामाजिक संलग्नता आ आन्दोलनशीलता घटबाक कारण। — लेख संस्थागत पदसँ बेसी सक्रिय मातृभाषा-कर्मकें महत्त्व दैत अछि।
७०५. (C) भाषा बचाबए साहित्यकार, भाषाविद आ राजनीतिज्ञ बनबाक क्रम देखाबए। — भाषा-जीवनक संघर्ष अनेक रूप धारण करैत अछि।
७०६. (D) आजीविकाक विषय भिन्न रहलो पर मातृभाषा सेवा सम्भव अछि। — अर्थशास्त्रक प्राध्यापक रहितहुँ ओ मैथिली काजमे अग्रणी रहलाह।
७०७. (C) दर्शनशास्त्र पढ़ि-पढ़ौला पर मैथिलीमे लिखबाक कारण। — आन विषयक विद्वान सेहो मातृभाषा-साहित्य भरि सकैत छथि।
७०८. (C) अंग्रेजी पढ़ि-पढ़ौलनि मुदा मैथिलीक भंडार भरलनि। — मातृभाषा-कर्म विषयगत पेशासँ सीमित नहि।
७०९. (B) हिन्दी पढ़ि-पढ़ौला पर आजीवन मैथिलीक प्रति समर्पण। — लेख मातृभाषा-प्रेमक व्यापक सम्भावना चिन्हैत अछि।
७१०. (D) आन विषयक मैथिल प्राध्यापक मैथिली पढ़बा-लिखबामे अरुचि राखैत छथि। — लेख मातृभाषासँ दूरीकें हीनताबोधक सामाजिक लक्षण मानैत अछि।
७११. (C) मातृकुलक पाण्डित्य आ साहित्य-सर्जनाक परम्परा। — लेख बाल्यकालसँ प्रतिभा दर्शनक कारण पारिवारिक विद्या-परम्परा मानैत अछि।
७१२. (B) अग्रज आचार्य रमानाथ झा। — रमानाथ झाक प्रेरणासँ तन्त्रनाथ “कीचक बध” रचैत छथि।
७१३. (B) माइकेल मधुसूदन दत्तक “मेघनाद बध”क आदर्शपर। — एहि कृतिमे नव शिल्प आ महाकाव्य परम्पराक संवाद भेटैत अछि।
७१४. (D) असामान्य प्रतिभा। — “कीचक बध”क प्रथम कृति होएब तन्त्रनाथक प्रतिभाक प्रमाण मानल गेल।
७१५. (A) गद्य आ पद्य दुनू। — ओ कवि, गद्यकार, अनुवादक, निबन्धकार आ प्रयोगशील रचनाकार छलाह।
७१६. (A) “कीचक बध” आ “कृष्णचरित”। — पद्य साहित्यक मुख्य कृतिमे ई दूनु महाकाव्य देल गेल।
७१७. (C) “मंगलपंचाशिका”, “नमस्या” आ “कीर्ण-विकीर्ण”। — लेख हुनकर कविता-कर्मक बहुरंगी रूप बतबैत अछि।
७१८. (C) एकांकी, निबन्ध, ललित निबन्ध, संस्मरण, कथा, बाल-कथा। — तन्त्रनाथ गद्यक अनेक रूपमे सक्रिय रहलाह।
७१९. (C) अपन हाथें किछु कथा लिखि लिथो कराए प्रकाशित करौलनि। — एकर महत्त्व सांस्कृतिक सम्पदा आ लिपि-संरक्षण दृष्टिसँ बहुत अछि।
७२०. (D) मुक्त-वृत्त आ सरल भाषा द्वारा नव श्रीगणेश। — ओ पारम्परिक कठिन शिल्पक विपरीत सामान्य पाठकक रसबोधक दिशा खोलैत छथि।
७२१. (D) कथ्य आ शिल्प दूनु वर्गमे जड़ता तोड़बाक कारण। — लेख हुनकर विपुल साहित्यकें मैथिलीमे नव प्रयोगक उदाहरण मानैत अछि।
७२२. (A) प्रो. उमानाथ झा “रेखाचित्र”क माध्यमे। — लेख प्रयोगशीलता चर्चा करैत शिल्प-भंगक व्यापक परम्परा जोड़ैत अछि।
७२३. (A) कुरीति, आडम्बर आ अन्धविश्वास। — हुनकर रचना सामाजिक आलोचना आ व्यंग्य-शक्ति सँ युक्त अछि।
७२४. (B) व्यंग्यात्मक। — व्यंग्य हुनकर साहित्यक सहज उपलब्ध गुण रूपमे वर्णित अछि।
७२५. (B) व्यंग्यधार तेज चोंच जेकाँ अछि। — मेना-कोकिल-बगराक रूपक हुनकर व्यंग्यक तीक्ष्णता बतबैत अछि।

७२६. (D) ओ पोथी, गीत-कविता लिखि मैथिल समाजकेँ उठौलनि। — महिला-स्वरक माध्यमे हुनकर सामाजिक अवदान प्रतिध्वनित अछि।
७२७. (D) द्रुपद-सुता/द्रौपदी। — कीचक प्रसंगमे आतंकित स्त्री आत्मबल जागबैत देखाओल गेल।
७२८. (D) द्रुपद-सुताक भीतर आत्मप्रश्न आ साहस जागब। — पात्र अपन क्षत्रिय कुल आ आत्मसम्मान स्मरण करैत अछि।
७२९. (A) नारीक निर्भीक आत्मबल। — द्रौपदी शिकार नहि, प्रतिरोधी चेतना रूपमे उभरैत छथि।
७३०. (B) समाजक अर्धाशकेँ अशिक्षित राखि उन्नति सम्भव नहि। — लेख नारी-शिक्षा के सामाजिक कल्याणक आवश्यक आधार मानैत अछि।
७३१. (B) हुनक प्रकाशित-अप्रकाशित साहित्य आजुक पाठक लेल सुलभ नहि भऽ सकल। — सुलभता आ संरक्षणक कमी हुनकर व्यापक पठन रोकैत अछि।
७३२. (C) हुनक कार्य-क्षेत्र कठिन भाषा-विज्ञान छल। — बिहारमे स्वतंत्र भाषा-विज्ञान विभागक अभाव सेहो बाधा रहल।
७३३. (B) गुरुक वैदुष्यक प्रचार, खंडन-मंडन आ संकलन कठिन भेल। — शिष्य न रहला पर विद्वत परम्परा संस्थागत नहि बनि सकल।
७३४. (A) आगिक जरूरत सभकेँ, मुदा पकबाक डरसँ केओ छूबैत नहि। — विद्वत्ताक ताप आकर्षक सेहो, कठिन सेहो अछि।
७३५. (C) भाषाविद, शास्त्र-मर्मज्ञ, देश-विदेशमे आदरित विद्वान। — ओ लोकप्रिय मंचीय लेखक नहि, उच्च विद्वत जगतक व्यक्ति छलाह।
७३६. (A) सामान्य पाठकक लोकप्रिय रचनाकार नहि बनि सकलाह। — लोकप्रिय विधासँ दूरी पठन-प्रसार घटौलक।
७३७. (C) श्रोता-दर्शकक आकर्षणक केन्द्र नहि बनलाह। — जनप्रिय मंच-संस्कृति हुनकर विद्वत् व्यक्तित्वसँ कम जुड़ल।
७३८. (C) संतानमे कृतिक संरक्षण-प्रचार प्रति अभिरुचिक अभाव। — परिवारिक-संरक्षणक कमीले प्रकाशित रचना दुर्लभ आ अप्रकाशित रचना अप्रकाशित रहि गेल।
७३९. (A) संरक्षण आ प्रचारक अभावसँ। — लेख साहित्यिक धरोहरक पारिवारिक-सामाजिक संरक्षणक आवश्यकता देखबैत अछि।
७४०. (C) सुभद्र झाक महत्ता अत्यन्त, मुदा कठिन विषय, अमंचीयता आ संरक्षण-अभावसँ जनसुलभता सीमित रहल। — लेख लोकप्रियता आ विद्वत्ता बीचक अन्तर स्पष्ट करैत अछि।
७४१. (B) “मैथिली भाषाक उत्पत्ति”। — मिथिला मिहिरमे प्रकाशित एहि लेखमे विद्वान मतक खंडन-मंडन अछि।
७४२. (D) गंभीर अध्ययन। — विभिन्न मतक विश्लेषण पछाति अपन मत स्थापित करब भाषावैज्ञानिक परिपक्वता देखबैत अछि।
७४३. (D) भाषा-विज्ञानक। — ई लेख सेहो मैथिलीक वैज्ञानिक विश्लेषणक रुचि प्रमाणित करैत अछि।
७४४. (B) आरम्भ ए. बनर्जी शास्त्रीक अधीन, समाप्त सुनीति कुमार चटर्जी अधीन। — सुभद्र झाक शोध-यात्रा पटना कालेज सँ सुनीति कुमारक मार्गदर्शन धरि पहुँचल।
७४५. (A) मैथिली भाषा सम्बन्धी अंग्रेजीमे लिखित साहित्य। — हुनकर अन्तरराष्ट्रीय भाषाशास्त्रीय कृतिसभ एहि कोटिमे आबैत अछि।
७४६. (D) हुनकर शोध-प्रबन्ध, जाहिपर डी.लिट उपाधि भेटल। — ई मैथिली भाषा-विज्ञानक आधारभूत ग्रंथ मानल गेल।
७४७. (D) नेपाल स्रोताधारित विद्यापतिक २६२ गीत, भाषावैज्ञानिक विश्लेषण आ अंग्रेजी अनुवाद। — विद्यापति गीतकेँ विश्व-पाठक समक्ष लए जाएबामे ई कृति महत्वपूर्ण अछि।
७४८. (D) ३७० गीत। — मैथिलीमे सम्पादित पोथीसभमे एहि संग्रहक उल्लेख अछि।
७४९. (D) “प्रवास जीवन” आ “यात्रा प्रकरण शतक”। — फ्रांस यात्रा-अनुभव मैथिली यात्रा-साहित्यक महत्वपूर्ण आरम्भ बनल।
७५०. (A) अर्थवेदक पैप्लाद, आधुनिक भाषा-विज्ञान आ ध्वनि-विज्ञान। — उच्च अध्ययन हुनकर भाषाशास्त्रीय क्षमता केँ और विस्तार देलक।
७५१. (B) किछु विदेशी आ भारतीय भाषाविद। — लेख स्वीकार करैत अछि जे पूर्व अध्ययन छल, मुदा सुभद्र झाक कार्य अधिक गंभीर आ विस्तृत छल।
७५२. (C) मैथिली भाषाक गम्भीर, विस्तृत वैज्ञानिक विश्लेषण। — हुनक कार्य मैथिलीकेँ विश्व-भाषा मानचित्रपर प्रतिष्ठित करबाक आधार बनल।
७५३. (B) विद्यापति गीतक महत्व अन्तरराष्ट्रीय पाठकक समक्ष आयल। — विद्यापति-साहित्य स्थानीय सीमा पारि वैश्विक विद्वत समुदाय धरि पहुँचल।
७५४. (C) विदेश-यात्रा साहित्यक पहिल लेखक। — लेख हुनका यात्रा-अनुभवकेँ मैथिलीमे लिपिबद्ध करनिहार अग्रणी मानैत अछि।
७५५. (C) भाषा-आन्दोलनक विचार प्रधान इतिहास सन। — पत्रात्मक शैलीमे मैथिली स्वीकृति आ समस्या पर निर्भीक विचार राखल गेल।
७५६. (D) राष्ट्रीय भावना आ मिथिला-मैथिल-मैथिलीक प्रेम। — विदेशमे रहितो वेष, संस्कार आ भाषा-प्रेम कायम अछि।
७५७. (C) डा. एस. राधाकृष्णन। — वेष-भूषा आ भारतीयता एहि प्रसंगक रोचक सांस्कृतिक बिम्ब अछि।

७५८. (C) प्राच्यविद्या, भाषाविज्ञान, अनुवाद, सरलता, शोध-निर्देशन, निरअहंकारिता। — लेख हुनका बहुआयामी सारस्वत विभूति रूपमे चित्रित करैत अछि।
७५९. (A) पर्याप्त सामग्री आ तर्क विश्व समुदाय समक्ष रखलनि। — भाषा-वैज्ञानिक आधार पर मैथिलीक स्वतंत्र स्वरूप स्पष्ट कएल।
७६०. (A) प्रतिकूल कै अनुकूल बनबैत लोकक सङोर कएलनि। — ओ विद्वानक संग नीतिकुशल कूटनीतिज्ञ सेहो सिद्ध भेलाह।
७६१. (A) दू विभूतिक स्मरणसँ मैथिली समाजकें प्रेरित करब। — जन्मशती प्रसंग ऐतिहासिक स्मृति आ वर्तमान दायित्व दुनू उठबैत अछि।
७६२. (B) मैथिली स्वीकृति आ मातृभाषा-संरक्षण। — दूनू भिन्न स्वभाव होइतहुँ भाषा-अधिकारक संघर्षमे एक भेलाह।
७६३. (A) सर्जक, आन्दोलनकारी आ संस्थान-निर्माता। — ओ कविता, गद्य, शिक्षण-संस्था आ आन्दोलन सभमे सक्रिय रहलाह।
७६४. (D) भाषाविद आ अंतरराष्ट्रीय विद्वान। — हुनकर प्रतिष्ठा भाषाविज्ञान, विद्यापति-अध्ययन आ अनुवादक कारण अछि।
७६५. (A) मातृभाषा लेल समर्पित बौद्धिक कर्म। — विषय, पेशा वा स्वभाव भिन्न रहितो मातृभाषा-कर्म सर्वोपरि अछि।
७६६. (C) की ओ सभ मातृभाषा-सेवामे सामाजिक रूपेँ सक्रिय छथि? — पूर्वजक कर्मक तुलना वर्तमान निष्क्रियता पर आलोचनात्मक आलोक डालैत अछि।
७६७. (C) केवल श्रद्धांजलि नहि, कार्य-दिशाक पुनरारम्भ। — लेख स्मरणकें सक्रिय दायित्वमे रूपान्तरित करब चाहैत अछि।
७६८. (B) मैथिली अस्मिताक बहुआयामी संरक्षण। — भाषा केवल लेखन नहि, लिपि, संस्था, शोध, कला आ शिक्षा सभ अछि।
७६९. (D) मातृभाषानुरागी वर्तमान आ भावी पीढ़ी लेल। — लेख बारम्बार भावी पीढ़ीकें पूर्वजक काजसँ दिशा लेबाक आग्रह करैत अछि।
७७०. (C) तन्त्रानाथ-सुभद्र स्मरण मैथिली पुनर्जागरणक कर्म-संकल्पक पाठ अछि। — रमानन्द झाक लेख ऐतिहासिक मूल्यांकनक संग वर्तमानक जागरण-पत्र सेहो अछि।
७७१. (A) सांस्कृतिक सम्पदा आ लिपि-संरक्षण दृष्टिसँ। — लिथो कराए प्रकाशित कथा मिथिलाक्षर प्रचार-प्रसारक ठोस प्रयास छल।
७७२. (A) किछु अंशक भाषा-अनुवाद। — अनुवाद-कर्म हुनकर गद्य आ परम्परा-संपर्कक उदाहरण अछि।
७७३. (C) गद्य मे नाट्यसार लिखि प्रकाशित करब। — विश्व-साहित्य आ संस्कृत नाट्य परम्पराकें मैथिली गद्य-परिसरमे अनबाक प्रयास अछि।
७७४. (B) विलक्षण गद्यक दर्शन होइत अछि। — विविध अनुवाद-सार आ निबन्ध हुनकर गद्य-प्रभुत्व सिद्ध करैत अछि।
७७५. (C) सन १३०४ सालक रौढ़ी। — अनुसंधान-परक निबन्ध इतिहास-स्मृति आ साहित्यिक जिज्ञासा जोड़ैत अछि।
७७६. (B) अनुसंधान-परक निबन्धमे। — समए-समए पत्र-पत्रिकामे छपल अनेक निबन्ध अद्यावधि असंकलित कहल गेल।
७७७. (B) मैथिल वैष्णव परम्परा पर अंग्रेजी/शोधपरक रुचि। — तन्त्रानाथक शोध मैथिली सीमासँ व्यापक वैष्णव अध्ययन धरि जाइत अछि।
७७८. (A) सचल मिश्र आ मोहन मिश्र। — मैथिल पण्डित परम्पराक ऐतिहासिक-अनुसंधानात्मक रुचि स्पष्ट अछि।
७७९. (C) ओ पत्र-पत्रिकामे छपल, मुदा संकलित नहि। — लेखक अप्रकाशित/असंकलित विद्वत धरोहरक संरक्षणक आवश्यकता बतबैत अछि।
७८०. (C) तन्त्रानाथ झा कवि मात्र नहि, शोधक, अनुवादक, गद्य-शिल्पी आ लिपि-संरक्षक छथि। — हुनकर अवदान विधा-विस्तार आ सांस्कृतिक पुनरुद्धार दुनू अछि।
७८१. (B) संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी, फ्रेंच आ जर्मन। — हुनकर भाषाज्ञान बहुभाषी शोध आ अनुवादक आधार रहल।
७८२. (D) हिन्दी आ अंग्रेजीमे। — ई हुनकर यूरोपीय भाषासभ पर असाधारण अधिकार देखबैत अछि।
७८३. (B) सुभद्र झा। — सन्दर्भ-सूची हुनकर प्राकृत-भाषा अध्ययनक अनुवादक रूप बतबैत अछि।
७८४. (C) भारतीय साहित्य-इतिहासक यूरोपीय विद्वता सँ संवाद। — जर्मन कृति के भारतीय भाषाई पठनमे अनबाक हुनकर क्षमता स्पष्ट अछि।
७८५. (D) चीनीसँ फ्रेंचकृत व्याख्यायुक्त पाठ कै अंग्रेजीमे रूपान्तर। — ई बौद्ध अध्ययन, चीनी-फ्रेंच-अंग्रेजी संवादक कठिन विद्वत-कर्म अछि।
७८६. (C) संस्कृत पाण्डुलिपि-विज्ञानमे हुनकर काज। — सुभद्र झाक विद्वता भाषाविज्ञानसँ पाण्डुलिपि-सूचीकरण धरि फैलल अछि।
७८७. (A) बहुत काज मैथिलीमे उपलब्ध/सुलभ नहि भऽ सकल। — सुभद्र झाक विशाल विद्वता मैथिली पाठक धरि पर्याप्त रूपेँ नहि पहुँचल।
७८८. (A) सदिखन अनुसंधानरत शोध-निर्देशक। — लेख हुनका निरन्तर शोध-साधना करनिहार गुरु रूपमे देखैत अछि।
७८९. (C) विद्वता आ सरलता एकसंग। — हुनकर निरअहंकारी आ सहज व्यक्तित्वक प्रशंसा अछि।

७९०. (C) सुभद्र झा बहुभाषी, अनुवादक, पाण्डुलिपि-विद आ शोध-गुरु छलाह, जिनकर ज्ञान मैथिली लेल अझ अधिक सुलभ होएबाक चाही। — लेख उनका विद्वत्ता केँ सांस्कृतिक ऋण रूपमे देखैत अछि।
७९१. (A) मातृभाषा लेल संस्था, आन्दोलन आ साहित्यक मेल। — दूनू व्यक्ति भाषा-कर्मकेँ केवल लेखनमे सीमित नहि राखैत छथि।
७९२. (A) शोध, इतिहास आ भाषावैज्ञानिक तर्कद्वारा। — एक इतिहास-समीक्षा दिशा दैत छथि, दोसर भाषाविज्ञानक आधार।
७९३. (C) भाषिक अस्मिताक आधार लिपि आ शिक्षा दुनू अछि। — भाषा बाँचए लेल लेखन-प्रणाली आ बालशिक्षा दूनू आवश्यक अछि।
७९४. (C) मैथिली आलोचनानामे मतभेद आ शोध-विवादक जीवन्त परम्परा। — विवाद सभ भाषा-साहित्यक गम्भीरता आ प्रतिमान-निर्माणक सूचक अछि।
७९५. (C) शिक्षा बिना समाजोन्नति नहि। — दूनू दृष्टि शिक्षा केँ सामाजिक मुक्ति आ उन्नति संग जोड़ैत अछि।
७९६. (A) मैथिलीक स्वतंत्रता लेल भीतर-बाहर दुनू प्रमाण जुटबैत अछि। — एक विद्वत विश्वसमक्ष तर्क दैत अछि, दोसर जनसमाजमे चेतना।
७९७. (D) वर्तमान पीढ़ीकेँ दायित्व याद करब। — जन्मशती केवल इतिहासक पुनर्पाठ नहि, कर्मक पुकार अछि।
७९८. (B) लिपि-विस्मरण, असंकलित लेखन, सरकारी उदासीनता आ जन-अरुचि। — विभिन्न प्रसंग मिलि मैथिली संरक्षणक बहुस्तरीय चुनौती देखबैत अछि।
७९९. (C) भाषा-साहित्यक अध्ययन संस्थागत, लोकाधारित आ शोधसमर्थ तीनू होएबाक चाही। — सफल मातृभाषा-कर्म पुस्तक, मंच, विद्यालय, विश्वविद्यालय, आन्दोलन आ शोध सभ मांगैत अछि।
८००. (C) जयकान्त, तन्त्रानाथ आ सुभद्र—तीनू मैथिली पुनर्जागरणक अलग-अलग मुद्रा परस्परपूरक स्तम्भ छथि। — एहि त्रयीसँ मातृभाषा-प्रेमक कर्मठ, शोधशील आ संस्थागत आदर्श बनैत अछि।
८०१. (A) रेडियो टुडेक कार्यक्रम संचालक आ समाचार वाचकक छनौट प्रक्रियामे। — श्रद्धांजलिमे पहिल भेटक स्थल आ प्रसंग रेडियो टुडे चयन-प्रक्रिया रूपमे वर्णित अछि।
८०२. (C) ओ परीक्षकक रूपमे छलाह। — उमा प्रतिस्पर्धीक रूपमे सामने छलीह आ लेखक सहित अन्य संचारकर्मी परीक्षक छलाह।
८०३. (C) सादगी, मेकअप-विहीन चमकैत मुख आ साधारण पहिरन। — लेखक आधुनिकता-विहीन सादगी आ भीतरी तेजकेँ एक साथ रेखांकित करैत छथि।
८०४. (C) ओकर भीतरक पीड़ा। — सुखल देह-यष्टि लेखकक दृष्टिमे भीतरक दुखक बखान करैत छल।
८०५. (A) स्नातकक अंतिम वर्षक परीक्षाक बाद व्यावसायिक जीवनमे प्रवेश चाहैत छलीह। — लेखमे स्पष्ट अछि जे ओ पढ़ाइ सँ पेशागत संचार जीवन दिस बढ़ि रहल छलीह।
८०६. (D) छापा आ विद्युतीय संचारक तालिम, सभा, सेमिनार आदिमे सहभागितासँ। — ओ नवागत मात्र नहि, संचार-प्रशिक्षण आ सार्वजनिक उपस्थिति सँ तैयार युवती छलीह।
८०७. (B) रेडियोक लेल समाचार संकलन आ मैथिलीमे समाचार वाचन। — लेखक हुनकर संचार-स्वप्नकेँ भाषा आ पत्रकारिता दुनूसँ जोड़ैत छथि।
८०८. (B) दयासँ नहि, अपन प्रतिभाक बलपर। — लेखक स्वयंकेँ निमित्त मानैत छथि आ उमाक श्रेष्ठता स्वीकार करैत छथि।
८०९. (C) सर्वोत्तम। — उमा अपन प्रतिभा, सादगी आ संचार-दृष्टिसँ प्रतियोगितामे सबसँ नीक सिद्ध भेलि।
८१०. (B) एक संभावनाशील मैथिली पत्रकारक उदय। — भेंटक विवरण श्रद्धांजलिक भूमिका अछि, जाहिसँ उमाक व्यक्तित्वक संभावनाशीलता झलकैत अछि।
८११. (C) अपन बात कहबाक लेल। — लेखक मानैत छथि जे परिवारिक त्रासदीक बाद हुनका बहुत किछु कहबाक छल।
८१२. (C) रेडियो टुडेमे समाचार-संबंधी काज करबाक। — रेडियो मंच हुनका मैथिली समाचार-संकलन आ वाचनक अवसर देलक।
८१३. (A) अध्ययनशीलता, मेहनत, निर्भीकता आ पेसाप्रति निष्ठा। — श्रद्धांजलिमे हुनकर पत्रकार व्यक्तित्वक चारि आधार स्पष्ट कएल गेल।
८१४. (A) एक महिना तालिम आ करीब नौ महिना काज। — लेखक उमासँ प्रत्यक्ष प्रशिक्षण-कर्म आ सहकर्मी सम्बन्धक अवधि स्मरण करैत छथि।
८१५. (C) इंटरनेट मार्फत बात-चीत। — भौगोलिक दूरीक बादो भाषा आ पत्रकारिता-संबंधी संवाद चलैत रहल।
८१६. (C) लेखक गेलाक बाद भाषा-शुद्धि देखए वाला नहि अछि। — ई बात उमाक मैथिली भाषिक शुद्धताप्रति सजगता देखबैत अछि।
८१७. (D) मैथिली समाचार-वाचनमे भाषिक अनुशासनक आग्रह। — ओ केवल खबर पढ़यवाली नहि, भाषा-मानकक चिन्ता करयवाली संचारकर्मी छलीह।
८१८. (D) उमासिंहक हत्या सम्बन्धी अशुभ समाचार। — ओछानेपर रहिते फोनसँ ई समाचार भेटल आ लेखकक मोन घोर भऽ गेल।

८१९. (A) नीकसँ फुलबासँ पहिनिहि निचोड़ि देल गेल फूल। — रूपक हुनकर अकाल मृत्यु आ नष्ट भेल संभावना व्यक्त करैत अछि।
८२०. (D) उमा सिंह भाषिक सजगता आ पेशागत साहसक प्रतीक छलीह। — संचारकर्मी रूपमे हुनकर गठन, प्रतिभा, भाषा-चिन्ता आ निष्ठा सब एकत्र देखाइत अछि।
८२१. (C) माओवादी कार्यकर्तासभ सिरहासँ अपहरण कऽ बेपत्ता बनौने छल। — लेखमे पिता रंजीत सिंह आ भैयाक बेपत्ता बनलाक प्रसंग प्रमुख पृष्ठभूमि अछि।
८२२. (A) उमा सिंह पर। — ओ बेसहारा माए, भाउज, बहिन आ भतीजा-भतीजीक देखभाल करैत छलीह।
८२३. (B) पारिवारिक जिम्मेवारीक कारण। — लेखक विवाह-अभावकें निजी निर्णय नहि, उत्तरदायित्वबोधसँ जोड़ैत छथि।
८२४. (B) राष्ट्रीय आ अन्तरराष्ट्रीय निकायसभमे। — ओ परिवारक न्याय लेल स्थानीय सीमासँ बाहर धरि आवाज उठा रहल छलीह।
८२५. (A) बार-बार धमकी भेटैत छल। — धमकीक कारण ओ सुरक्षित वासक खोजमे जनकपुर आयल छलीह।
८२६. (C) रजौल स्थित एक साथीक घरमे भाड़ापर। — लेखमे जनकपुर नगरपालिका १४, रजौल डेरा प्रसंग देल गेल।
८२७. (C) अंधाधुंध खुकुरी प्रहार। — रवि दिन साँझ डेरामे प्रवेश कऽ गंभीर घाइल कएल गेल।
८२८. (B) उपचारार्थ काठमाण्डू लऽ जाइत काल बाटेमे। — हुनका बचएबाक प्रयास भेल, मुदा बाटे मृत्युक उल्लेख अछि।
८२९. (D) समाचारक विषय लऽ कऽ हत्या भेल होएबाक। — लेखक वास्तविक कारण दोषी पकड़े बिना निश्चित नहि कहैत छथि।
८३०. (D) नेपालमे मारल गेल पहिल महिला पत्रकार। — श्रद्धांजलि उमाक बलिदानकें पत्रकारिता-इतिहासक कठोर प्रसंग बनबैत अछि।
८३१. (A) सम्भावना बहुत न्यून मानैत छथि। — लेखक सरकारसँ अधिक आशान्वित नहि छथि, मुदा बलिदान बेकार नहि मानैत।
८३२. (C) कलमक धार अवरुद्ध करयवाला कहियो जीवित नहि रहल। — इतिहास कलम-विरोधी शक्तिक नाशक साक्षी कहल गेल।
८३३. (A) देशहितमे प्राण देनिहार सैनिक जकाँ पत्रकारिता-धर्मक बलिदान। — ओ समाचार आ नैसर्गिक अधिकारक वकालतमे प्राण देबाक गरिमा स्वीकार करैत छथि।
८३४. (D) समाचार लिखबाक-पढ़बाक कारण प्राण देलनि। — ई कठोर शब्द श्रद्धात्मक अर्थमे प्रयोग अछि—पत्रकारिता-धर्मक सर्वोच्च मूल्य।
८३५. (B) वीराङ्गना। — मनुष्यक नैसर्गिक अधिकार लेल प्राण देनिहारी रूपमे उमाक सम्मान कएल गेल।
८३६. (B) उमा पत्रकारिता-स्मृतिक सार्वदेशिक प्रतीक बनि रहथु। — श्रद्धांजलि स्थानीय घटना कें विश्वव्यापी कलम-समुदायक स्मृति सँ जोड़ैत अछि।
८३७. (C) डा. धीरेन्द्रक पंक्ति द्वारा। — उमाकें सहकर्मी आ शिष्या कहैत लेखक गुरु-वाक्यसँ श्रद्धांजलि दैत छथि।
८३८. (A) दुखक बीच आशा आ संघर्षमे जीतक विश्वास। — कठिन युद्धक बावजूद हार नहि मानबाक भाव श्रद्धांजलिक समापन बनैत अछि।
८३९. (C) शोक आ गौरव एक साथ। — आह मृत्यु-वेदना अछि, वाह साहस, निष्ठा आ बलिदानक सम्मान।
८४०. (D) पत्रकारिताक हत्या संभव अछि, मुदा कलमक प्रतिरोध नष्ट नहि होइत। — लेख उमाक अकाल मृत्युकें न्याय, भाषा आ पत्रकारिता-साहसक अमर बिन्दु बनबैत अछि।
८४१. (C) डा. धीरेश्वर झा “धिरेंद्र”। — लेख नेपालीय मैथिली साहित्यक जनक आ जनकपुरक चटिसारक अंतिम प्राचार्य रूपमे हुनका स्मरण करैत अछि।
८४२. (A) छठम। — लेख पुस २७ गते सम्पन्न छठम स्मृतिसभा प्रसंगसँ आरम्भ होइत अछि।
८४३. (C) हुनकर प्रेरणासँ जन्मग्रहण कएने संस्था हेबाक कारण। — लेखक संस्थागत स्मरणकें गुरुदेवक सर्जक प्रभावसँ जोड़ैत छथि।
८४४. (B) देवता-पूजा मोने-मोन सेहो सम्भव अछि। — लेखक कहैत छथि जे स्मरणक असली अर्थ आदर्शक पालन अछि।
८४५. (A) देवताक देखाओल बाटपर चलब आ आदर्श पालन। — श्रद्धा केवल भाषण नहि, व्यवहारिक अनुकरण बनबाक चाही।
८४६. (A) ई देखबाक अछि जे घोषणा कार्यरूपमे आबैत अछि कि नहि। — स्मृतिसभाक भाषण-घोषणापर लेखक व्यावहारिक कसौटी लगबैत छथि।
८४७. (C) एहि कथनपर समकालीन कलमजीवी आपत्ति कऽ सकैत छथि। — लेखक अपन अनुभव-आधार प्रस्तुत करबाक भूमिका बनबैत छथि।
८४८. (B) गुरु-केंद्रित अध्ययन-परम्परा। — गुरुदेवक घर आ व्यक्तित्व ज्ञान-आदान-प्रदानक केन्द्र बनल छल।
८४९. (A) केवल भाषण-भूषण आ निष्प्रभावी घोषणा विरुद्ध। — ओ जीवन्त आदर्श, शिक्षण-परम्परा आ सृजन-संस्कारकें प्राथमिकता दैत छथि।
८५०. (A) गुरुदेवक स्मरण आदर्शक कर्मरूप पुनर्जीवनसँ पूर्ण होइत अछि। — लेखक श्रद्धांजलिकें संस्थागत आ व्यावहारिक दायित्व बनबैत छथि।
८५१. (B) गुरुदेवक भागिरथी प्रयाससँ। — लेखक मैथिली उच्चशिक्षाक आरम्भमे धिरेंद्रजीक निर्णायक श्रम मानैत छथि।

८५२. (B) राजनीति शास्त्र, अर्थशास्त्र आदि। — लेख मैथिली एम.ए. के अग्रणी कार्यक्रम रूपमे स्थापित करैत अछि।
८५३. (B) पहिने सँ अपन-अपन मुकाम पर स्थापित धुरंधर व्यक्तित्व। — राजेन्द्र विमल, जानकी रमण, भ्रमर, पशुपतिनाथ आदि नाम सँ बैचक गरिमा झलकैत अछि।
८५४. (C) ओ सभ नोकरियाहा छलाह। — कार्यरत विद्यार्थीसभ लेल कक्षा भोरमे आ प्रायः गुरुदेवक घरे चलैत छल।
८५५. (B) गुरुदेवक घरे। — ई घर-आधारित अध्ययन चटिसार-परम्पराक जीवित रूप छल।
८५६. (C) गुरु-शिष्यक आत्मीय घरेलू वातावरण। — अध्ययन, हँसी, गम्भीर मन्थन आ सेवा एकहि ठाम जुड़ल छल।
८५७. (C) चाह-पान लाबएमे परेसान रहब। — ई बाल-स्मृति चटिसारक जीवन्त दृश्य बनबैत अछि।
८५८. (C) जानकी बाबू आ विमलसरक। — गुरुदेव सहयोगी बौद्धिकता सँ पाठ्य-सामग्री तैयार करैत छलाह।
८५९. (B) विद्यार्थीसभ परीक्षामे पास करैत छथि। — ई अतिशयोक्तिपूर्ण नहि, चिरस्थायी शिक्षण-प्रभावक संकेत अछि।
८६०. (C) ओहन जीवित गुरु-केंद्रित चटिसार एखन नहि चलैत अछि। — विद्वान अधिक भेला परो गुरु-कुल परम्परा ओहिना जीवित नहि रहल, ई लेखकक तर्क अछि।
८६१. (C) साहित्यकार सृजना करएबला ब्रह्मा। — गुरुदेव स्वयं लिखयवाला मात्र नहि, लेखक-प्रतिभा तैयार करयवाला गुरु छलाह।
८६२. (A) नाटक लिखबाक प्रेरणा आ सीख दुनू देलनि। — गुरुदेव प्रतिभा पहचानि विधा-दिशा देनिहार सर्जक-गुरु रूपमे उभरैत छथि।
८६३. (B) रिपोर्ट लिखबाक। — लेख प्रतिभा आ रुचि अनुसार कार्य-विभाजनक उदाहरण दैत अछि।
८६४. (C) कविता आ गीत। — गुरुदेव नव साहित्यिक विधासभमे व्यक्तित्व लगाबैत छलाह।
८६५. (D) कविता आ कथा। — ई बतबैत अछि जे गुरुदेव विधा-विशेष प्रतिभा सँ जोड़ि लेखक बनबैत छलाह।
८६६. (A) नेपालीय मैथिलीमे सभ विधामे रचना हो। — गुरुदेवक योजना एक विधा नहि, पूर्ण साहित्यिक प्रणाली निर्माणक दिशा छल।
८६७. (A) गुरुदेव डा. धिरेन्द्रकें। — लेख हुनक सांस्कृतिक-क्षेत्रीय दृष्टिकेँ नामकरण धरि मान्यता दैत अछि।
८६८. (C) जनकपुरमे फेर गुरुकुल परम्परा चलय। — अन्तिम प्रार्थना भविष्यक बौद्धिक-सांस्कृतिक पुनरुद्धारक आकांक्षा अछि।
८६९. (B) अधिकारक आवश्यकता। — लेख भाषा-साहित्यकेँ राजपाट, अधिकार आ अपन भाषामे कामकाज संग जोड़ैत अछि।
८७०. (C) कठिन युद्ध लड़ेब आ जीत निश्चित मानब। — नोर, आशा, युद्ध आ जीतक सूत्र गुरुदेवक संघर्षशील आशावादक सार अछि।
८७१. (D) २००९-११क लेल। — समाचार पटनाक प्रतिनिधि संस्था चेतना समितिक चुनाव विवरण दैत अछि।
८७२. (B) उपाध्यक्ष। — उपाध्यक्ष पदपर मतदान भेल, बाकी पदसभ निर्विरोध रहल।
८७३. (C) ओ पुनः अध्यक्ष बनलाह। — समिति नेतृत्वमे निरन्तरता देखाइत अछि।
८७४. (C) विवेकानन्द ठाकुर। — समाचार स्पष्ट रूपे सचिव पदक परिणाम देलक।
८७५. (B) प्रेमकान्त झा, प्रमीला झा आ पुरुषोत्तम झा। — तीन उपाध्यक्ष पदपर मतदानक बाद एहि तीन नामक घोषणा भेल।
८७६. (C) मधुकान्त झा, सत्यनारायण मेहता आ प्राणमोहन मिश्र। — समाचार संयुक्त सचिवक तीन नाम देलक।
८७७. (A) योगेन्द्र नारायण मल्लिक। — वित्तीय दायित्वक पदक स्पष्ट उल्लेख अछि।
८७८. (C) जगत नारायण चौधरी। — समितिक संगठनात्मक काजक लेल ई पदाधिकारी बनलाह।
८७९. (A) सुरेन्द्र नारायण यादव। — समाचार प्रचार-दायित्वक नाम सेहो दैत अछि।
८८०. (C) मिथिलांचलक प्रतिनिधि सामाजिक संस्थाक संगठनात्मक अद्यतन। — ई साहित्यिक आलेख नहि, संस्था-समाचार आ पदाधिकारी-सूची अछि।
८८१. (C) बदहाली आ स्थायी ठेकानक अभाव। — लेख कहैत अछि जे अकादमी सभक ठेकान पाता लगाएबो मुश्किल अछि।
८८२. (C) मैथिली, मगही, भोजपुरी, संस्कृत, बंगला आ दक्षिण भारतीय भाषा अकादमी। — समाचार विभिन्न भाषा-अकादमीक साझा दुर्दशा देखबैत अछि।
८८३. (B) मानव संसाधन विकास विभाग। — विकासक ब्लू-प्रिन्ट एहि विभाग द्वारा तैयार भेल बताओल गेल।
८८४. (C) शोध, पाण्डुलिपि प्रकाशन आ पुस्तक-विक्री व्यवस्था। — उद्देश्य अकादमीकेँ सक्रिय आ आर्थिक रूपेँ सक्षम बनएब छल।

८८५. (D) एक छत/एक परिसरमे अनबाक। — राजधानीमे बिखरल कार्यालयसभकेँ एकीकृत आधारभूत संरचना देबाक योजना अछि।
८८६. (D) बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् परिसर आ नजदीकक संस्कृत विद्यालयक खाली जमीन। — एहि दूनू स्थानमे सँ कोनो एक पर सुविधासम्पन्न परिसर बनएबाक सोच अछि।
८८७. (A) आधारभूत संरचनाक विकास। — भाषा-विकास आ शोधक काज संरचना बनलाक बाद सुचारू मानल गेल।
८८८. (D) अकादमीसभकेँ आर्थिक रूपसँ मजबूत बनएब। — साहित्य-प्रकाशनकेँ आत्मनिर्भरता संग जोड़ल गेल।
८८९. (A) कतेक वर्षसँ मंद आ सीमित गतिविधि। — केवल वेतन आ किछु साहित्यकारक महिमामंडन सँ संस्थागत उद्देश्य पूरा नहि होइत।
८९०. (D) दुर्लभ पाण्डुलिपि पुस्तकाकार रूपमे आओत आ शोधार्थी-छात्रकेँ लाभ भेटत। — समाचार संस्थागत सुधारकेँ भाषा-विकासक व्यावहारिक आधार मानैत अछि।
८९१. (C) मनपसंद मैथिली गीत। — व्यस्त जीवनमे फुर्सत भेटलापर लेखक मैथिली गीत सुनबाक इच्छा व्यक्त करैत छथि।
८९२. (A) बियाहक गीत आ भक्ति गीत। — लेखक मैथिली संगीतक सीमित डिजिटल उपलब्धता नोट करैत छथि।
८९३. (A) छिड़ाएल सामग्रीकेँ एकठाम पौनाई कठिन। — र recording, संकलन आ संयोजनक अभाव मुख्य बाधा अछि।
८९४. (D) लोकप्रिय मैथिली गीत वेबसाइटपर डालल जा सकैत अछि कि नहि बुझबाक लेल। — लेखक डिजिटल संग्रहक सम्भावना खोजैत छथि।
८९५. (D) कॉपीराइट संकट। — डिजिटल उपलब्धता केवल तकनीकी नहि, विधिक प्रश्न सेहो अछि।
८९६. (C) दिल्ली-बंबई-अमेरिका धरि मैथिल गीत-संगीत सुनि सकथि एहन एकठाम मंच। — विस्थापित मैथिलक सांस्कृतिक संबंध लेल डिजिटल केंद्रक कल्पना अछि।
८९७. (A) नब तकनीकक सतर्क उपयोग। — लेखक तकनीककेँ भाषा-संरक्षणक साधन मानैत छथि।
८९८. (A) बड़ पैघ धरोहर। — धरोहरकेँ आम मैथिलसँ जोड़बाक आवश्यकता रेखांकित अछि।
८९९. (C) ऑडियो-विजुअल युग। — लोक पढ़बाक अपेक्षा सुनब-देखब बेसी चाहत, एहि हेतु माध्यम बदलय पड़त।
९००. (A) ट्रस्ट वा सोसाइटी अधीन संस्थागत, इमानदार डिजिटल-सांस्कृतिक प्रयास। — सरकारपर निर्भर रहबाक बदला नागरिक-संस्था आधारित संरक्षणक सुझाव अछि।
९०१. (B) सुन्दर आ समृद्ध इलाकाक। — लेख भविष्य-दृष्टि सँ मिथिलाक विकासक कल्पना करैत अछि।
९०२. (A) एकटा यूनिवर्सिटी आ मेडिकल कॉलेज। — ई विकासक आरम्भिक रंग मानल गेल अछि।
९०३. (A) मिथिलाक हृदयस्थली बाटे संपर्क-संरचना बनब। — सड़क-रेल सम्पर्क भविष्यक शिक्षा-उद्योगक आधार मानल गेल।
९०४. (C) दर्जनों इंजीनियरिंग आ मेडिकल कॉलेज। — शिक्षा-केंद्रित विकास मॉडल सपनाक प्रमुख तत्व अछि।
९०५. (A) मिथिला बाहरी विद्यार्थीक आकर्षण-केंद्र बनत। — लेखक क्षेत्रीय संस्थानकेँ राष्ट्रीय स्तरक शिक्षा-केंद्र बनैत देखैत छथि।
९०६. (C) मिथिलाक मार्गीय-पर्यटन आ ढावा-संस्कृति विकसित होएबाक संकेत। — हाइवे मिथिलाकेँ यात्रा, व्यापार आ सांस्कृतिक सम्पर्कक राह बनबैत अछि।
९०७. (A) उद्योग-धंधा खुलत। — जे कस्बा छथि, से भविष्यक आर्थिक केन्द्र बनि सकैत छथि।
९०८. (A) रोजगार आ उच्च शिक्षा। — प्रवास-नियति बदलि घर लग आर्थिक-सांस्थानिक अवसरक कल्पना अछि।
९०९. (B) विश्व-स्तरीय ब्रांडिंग आ निर्यात। — मिथिलाक स्थानीय उत्पादक वैश्विक पहचानक कल्पना कएल गेल।
९१०. (C) शिक्षा, पर्यटन आ जीवन-शैलीक नब सम्भावना। — संपर्क-संरचना क्षेत्रीय मानसक क्षितिज बढ़ा सकैत अछि।
९११. (D) नियोजनक कमी। — मानव श्रम, पानी आ मेधा पर्याप्त अछि, मुदा योजना-अभाव विकास रोकैत अछि।
९१२. (B) मिथिलाकेँ फेर जोड़ब। — कोसी नदी मिथिलाकेँ दू फाँकमे बाँटि देने छल, पुल एकीकरणक साधन अछि।
९१३. (D) सम्पूर्ण क्षेत्रीय संपर्क-सुधार लेल। — सड़क-ढाँचा विकासक मेरुदण्ड रूपमे प्रस्तुत अछि।
९१४. (C) शांति-सुव्यवस्था आ बिजलीसँ मिथिला जगमगाएब। — सीमापार संसाधन-सहयोग विकास-दृष्टिक हिस्सा अछि।
९१५. (C) पर्यटन स्थलसभक विकास। — आकर्षण स्वतः नहि, व्यवस्थित प्रस्तुति आ सुविधा चाही।
९१६. (B) पर्यटन सर्किट। — धार्मिक-ऐतिहासिक स्थलसभकेँ जोड़ि पर्यटन-विकासक संभावना देखल गेल।

११७. (C) कार्यशाला आ म्यूजियम। — संस्कृतिक पैकेजिंग आर्थिक आ सांस्कृतिक दुनू लाभ देब।
११८. (A) माछ-मखान उत्पादन आ सौन्दर्यकरण आधारित आर्थिक गतिविधि। — जल-संपदा केवल परम्परा नहि, विकासक साधन बनि सकैत अछि।
११९. (A) मेडिकल हब। — क्षेत्रीय शहरसभक विशिष्ट आर्थिक-शैक्षिक भूमिका कल्पित अछि।
१२०. (C) भागलपुर सिल्क-हस्तकला, मधुबनी कला-सेमिनारक केन्द्र। — लेखक प्रत्येक क्षेत्रक परम्परागत सामर्थ्य आधार पर विकास चाहैत छथि।
१२१. (B) दोसर प्रान्त-भाषा जकाँ विकास किएक नहि भेल। — लेख आत्मालोचनात्मक ढंगसँ विकास-अभावक कारण ताकैत अछि।
१२२. (A) किछु मुट्ठी भरि लोकक दिमागी कसरत धरि। — आम मैथिलक अलगाव भाषिक आन्दोलनक कमजोरी रूपमे देखल गेल।
१२३. (C) ओ मैथिली नहि, हिंदीमे बात करैत छथि। — घर-क्षेत्रमे भाषिक दूरीक उदाहरण भाषा-चेतनाक संकट देखबैत अछि।
१२४. (C) एकरा खास इलाका आ खास लोकक भाषा बनएबाक प्रयास। — भाषा-संकुचन सामाजिक-सांस्कृतिक दूरी जन्मबैत अछि।
१२५. (A) दरभंगा-मधुबनी आ खासकए ओतुक्का ब्राह्मणक भाषा। — लेखक एहिसँ व्यापक जनसमुदायकें बाहिर रहि गेल मानैत छथि।
१२६. (A) ओ किताबी मैथिली नहि बजैत अछि। — मानक भाषा आ लोक-भाषा बीच दूरी भाषाई आन्दोलनक बाधा अछि।
१२७. (A) भाषिक अपनत्व घटैत अछि। — लेखक आन भाषासँ तुलना कऽ मैथिलीमे स्थानीय रूपक उपेक्षा पर प्रश्न उठबैत छथि।
१२८. (D) ओहि भाषामे हुनकर तस्वीर नहि देखाइ पड़ल। — भाषा-साहित्यक प्रतिनिधित्व-सीमा सामाजिक असंतुलन देखबैत अछि।
१२९. (C) राज्यक कल्पना विशाल, भाषा-मानक पंचकोसी धरि सीमित। — लेखक भाषिक राजनीति आ भूगोलक असंगति देखबैत छथि।
१३०. (C) मैथिली आम मैथिलसँ कटत तँ आन्दोलन कमजोर रहत। — भाषा केवल अभिजात मानक नहि, लोक-समाजक व्यापक आवाज बनबाक चाही।
१३१. (C) अलग आ हीन-दृष्टि। — क्षेत्रीय भाषिक भिन्नताकें अहंकारसँ देखब भाषाक लेल हानिकारक कहल गेल।
१३२. (D) कोनो भाषामे स्वाभाविक। — समस्या भिन्नता नहि, अहंकारबोध आ उपेक्षा अछि।
१३३. (D) विराट जनसमुदाय आन्दोलनसँ नहि जुड़ि सकल। — भाषिक संकुचन राज्य-आन्दोलनक जनाधार घटबैत अछि।
१३४. (C) मैथिलीकें बीपीएससीसँ हटाओल गेल आ अकादमी निर्जीवप्राय बनल। — सत्तात्मक उपेक्षा भाषिक संकटकें आर गाढ़ करैत अछि।
१३५. (B) जनता दिससँ प्रबल प्रतिरोध नहि छल। — भाषा-अधिकार लेल केवल सरकार-निन्दा नहि, लोक-प्रतिरोध जरूरी अछि।
१३६. (B) स्वर रहल, मुदा व्यापक मुख्यधारा नहि बनि सकल। — लेखक पूर्ण अभाव नहि, प्रभाव-अभाव पर बल दैत छथि।
१३७. (A) भाषा-विकास समाज-विकाससँ अलग नहि। — समाजक जड़ता रहिते भाषा अकेले विकसित नहि भऽ सकैत।
१३८. (C) भाषा-विकास लेल बनल संस्थासभ जनतासँ कतेक जुड़ल अछि, से बुझबाक लेल। — संस्थागत आत्मालोचना भाषा-आन्दोलनक हिस्सा बनैत अछि।
१३९. (C) सालाना जलसा-सेमिनार छोड़ि भाषा लेल ठोस योगदान की? — लेखक प्रतिष्ठित संस्थाकें जन-सम्बन्धक कसौटी पर रखैत छथि।
१४०. (C) दूनु दिसक लोककें जोड़बाक ठोस उपाय नहि। — सीमापार मैथिली समाजक एकता भाषा-आन्दोलनक अनसुलझल पक्ष अछि।
१४१. (A) साहित्य अकादेमी। — मान्यता पछाति साहित्यिक संस्थागत गतिविधिमे वृद्धि देखल गेल।
१४२. (D) जखन भाषा आम जनता आ ओकर सरोकारसँ जुड़त। — साहित्यिक मान्यता पर्याप्त नहि, सामाजिक सम्बन्ध जरूरी अछि।
१४३. (C) मैथिलीक पुरोधा कहबैत बुद्धिजीवी लोकनिपर। — लेखक नेतृत्व-वर्गसँ ठोस समाधानक अपेक्षा रखैत छथि।
१४४. (C) ठोस, सर्वग्राही आ समीचीन समाधान सामने आनब। — समस्या मात्र उठाओल नहि, समाधान-उन्मुख संवाद चाही।
१४५. (C) भाषा-संकट बहुस्तरीय अछि। — मानक, क्षेत्र, समाज, संस्था, सरकार, जन-अधार—सभपर एक साथ विचार चाही।
१४६. (B) भाषा-आन्दोलनक धार कम भऽ जाएब। — जन-सरोकार बिना साहित्यिक ऊर्जा सामाजिक शक्ति नहि बनैत।
१४७. (B) कानूनी मान्यता सामाजिक स्वीकृति नहि बनबैत। — भाषा घरे-घरे, वर्ग-वर्गमे जायत तखने मान्यता सार्थक अछि।
१४८. (A) भाषाक सर्वसमावेशी रूप स्वीकारबाक। — स्थानीय रूप आ व्यापक मिथिलांचलक भाषिक रूपकें अपनाब आवश्यक अछि।
१४९. (B) आम मैथिलक प्रतिरोध, सहभागिता आ संस्था-समीक्षा। — लोक आ संस्था दुनू सक्रिय रहिते भाषिक भविष्य सुरक्षित होएत।
१५०. (C) मैथिलीकें मान्यतासँ आगू बढ़ि जन-सरोकारक भाषा बनबाक अछि। — लेखक भाषा-विकासक केन्द्रमे आम लोक, बहुभाषिक क्षेत्रीयता आ सामाजिक सुधार राखैत छथि।

१५१. (D) आधुनिक मैथिली नाटकमे चित्रित निर्धनताक समस्या। — लेख आधुनिक मैथिली नाटकक सामाजिक-साहित्यिक अध्ययन करैत अछि।
१५२. (A) कृषि कार्य आ बरखा पर। — अनियमित बरखा, उपेक्षा, अशिक्षा आ पिछड़ापन गरीबीक पृष्ठभूमि बनैत अछि।
१५३. (B) मजदूर वा बोनिहार। — ग्रामीण दरिद्रता शहरक नारकीय श्रम-जीवनमे रूपान्तरित होइत अछि।
१५४. (A) बेवस, लाचार, शक्तिहीन, दीन-हीन। — लेख निर्धनताकेँ केवल आर्थिक स्थिति नहि, मानवीय असमर्थता मानैत अछि।
१५५. (D) ओ स्वतंत्र कोना भऽ सकैत अछि? — आर्थिक अभाव मानवीय स्वतंत्रता आ विचार-अभिव्यक्ति रोकैत अछि।
१५६. (C) तंगदिल, तुच्छ, कमजोर आ इच्छामारक बनबैत अछि। — दरिद्रता नैतिक-मानसिक संसारकेँ सेहो कुंठित करैत अछि।
१५७. (A) वीर-वीरेन्द्र, मनोरथ, कुहेस, कनियाँ-पुतरा, ओकरा आँगनक बारहमासा, नायकक नाम जीवन, आगि धधकि रहल छै, अन्तिम प्रणाम, बुधिबधिया आदि। — लेख मैथिली नाट्य-साहित्यक अनेक उदाहरण सँ समस्या देखबैत अछि।
१५८. (D) लक्ष्मीनाथ नहि, दरिद्रनाथ होमक चाही। — चरित्रक कथन आर्थिक व्यंग आ आत्मपीड़ा दुनू व्यक्त करैत अछि।
१५९. (A) आर्थिक दशाक क्षीणतासँ संकटापन्न समस्या। — आलोचकक कथन निर्धनताक नाटकीय दिग्दर्शन पर बल दैत अछि।
१६०. (C) निर्धनता आधुनिक सामाजिक मैथिली नाटकक केन्द्रीय समस्या अछि। — लेख सामाजिक यथार्थ, नाटक आ आर्थिक अभावक सम्बन्ध स्थापित करैत अछि।
१६१. (D) क्यो खाइत-खाइत मरैत अछि तँ क्यो कमाइत-कमाइत। — ई वाक्य व्यवस्थागत अभाव आ श्रमजीवी त्रासदीक तीक्ष्ण संकेत अछि।
१६२. (A) कूड़ाक ढेरसँ किछु बीछैत लोक आ रोगाएल बच्चा। — नाटक शहरी/सामाजिक निर्धनताक नग्न दृश्य उपस्थित करैत अछि।
१६३. (C) निम्नवर्गक यथार्थ चित्रणक कारण। — लेख एहि नाटककेँ सर्वहारा जीवनक यातनापूर्ण दस्तावेज मानैत अछि।
१६४. (B) सर्वहारा वर्गक यातनापूर्ण जीवन। — ऋतु, मास, प्रकृति—सभ गरीब लेल फुसि बनि जाइत अछि।
१६५. (C) किएक तँ भूख आ अभाव सब अनुभूति ढाँकि दैत अछि। — बसन्त, ग्रीष्म, वर्षा, हेमन्त, शिशिर गरीबक दुखक पृष्ठभूमि अछि।
१६६. (D) दुखक मास। — एहि समय अन्नाभाव भऽ जाइत छैक आ निम्नवर्ग दयनीय स्थितिमे पहुँचैत अछि।
१६७. (B) मिथिलाक निम्नवर्गीय आँगनक रोस आ हाहाकार। — गीत व्यक्तिगत नहि, लाख-लाख आँगनक मर्मस्पर्शी ध्वनि बनैत अछि।
१६८. (B) अन्न, वस्त्र आ आवास। — नाटक समाजक न्यूनतम जीवनोपयोगी आवश्यकताक अभाव देखबैत अछि।
१६९. (C) मिथिलाक निम्नवर्गीय समाजक अलबम। — एहि टिप्पणीसँ नाटकक प्रतिनिधिक यथार्थता रेखांकित होइत अछि।
१७०. (A) ऋतुगीत सामाजिक आ आर्थिक पीड़ाक दस्तावेज बनैत अछि। — लोक-रूपक भीतर निर्धनता, भूख आ वर्गीय हाहाकार अभिव्यक्त अछि।
१७१. (B) गरीबक मुइलाक बाद कफन लेल टका नहि। — मृत्युपरान्त संस्कार धरि गरीबीक मारि पहुँचैत अछि।
१७२. (A) सामुदायिक सहयोग बिना गरीबक अंतिम संस्कार कठिन। — गरीबी सामाजिक सहकारक आवश्यकता उजागर करैत अछि।
१७३. (A) देहपर एक बीत वस्त्र नहि, अंग-उघार स्थिति। — नाटक नग्न अभावक दृश्य सँ समाजक असमानता देखबैत अछि।
१७४. (C) लाभ गरीब लोक धरि नहि पहुँचि सकैत अछि। — व्यवस्था बनितो लाभ प्रवाह विफल अछि।
१७५. (D) सामान्य लोक भोजन, वस्त्र, आवास जुटएबामे परेशान अछि। — निर्धनता महँगाईसँ आर कठोर बनैत अछि।
१७६. (A) बच्चा भुखले सुतैत आ पत्नी फाटल वस्त्रमे। — नाटक घर-परिवारक अभावक त्रासदीकेँ प्रत्यक्ष बनबैत अछि।
१७७. (A) सामाजिक चेतनाक गतिशीलता आ परंपरागत रूढ़ि व्यवस्थाक जड़ता। — युग-संघर्ष आधुनिक सामाजिक नाटकक मूल पृष्ठभूमि अछि।
१७८. (B) संघर्ष, तनाव आ अनेक सामाजिक समस्या। — नाटक समाजक यथार्थ तनावक कलात्मक रूप अछि।
१७९. (C) नाटककारक सामाजिक दृष्टि आ रचना-दृष्टि पर। — लेख साहित्यिक चित्रणकेँ लेखक-दृष्टिसँ जोड़ैत अछि।
१८०. (D) मिथिलांचलक आर्थिक विपन्नता अस्त-व्यस्तता सँ स्वाभाविकता बनि गेल अछि। — गरीबी अपवाद नहि, जीवन-व्यवस्थाक सामान्यीकृत विकृति रूपमे देखल गेल।
१८१. (D) रचनाकार निराशावादी छथि। — लेखक शीर्षकक अधूरा अर्थ खोलबाक लेल पाठककेँ अगुताइत नहि कहैत छथि।
१८२. (D) “अन्हारपर इजोतक कहिओ विजय नहि, सरकारपर जनताक कोनो धाख नहि।” — शीर्षकक पूर्णता राजनीतिक व्यंगक दिशा स्पष्ट करैत अछि।
१८३. (A) व्यंगक प्रचुरता नहि, स्तरीय आलोचना नहि, आ आलोचना अबितो हरिमोहन झाकेँ शिखर मानि सभकेँ भुट्टा बनाओल जाइत अछि। — ई तीनो बिन्दु मैथिली व्यंग-आलोचनाक समस्या रूपमे रखल गेल।

१८४. (B) ओ तेना घोसिआएल रहैत छथि जे आन आलोचना सेहो हुनक आलोचना बुझाईत अछि। — लेखक एक-केन्द्रित आलोचना-परम्पराक विडंबना देखबैत छथि।
१८५. (C) मैथिली व्यंगमे बिसरल नाम। — लेखक प्रो. विद्यापति झाक लेखक सन्दर्भसँ ई उपेक्षा रेखांकित करैत छथि।
१८६. (A) १९६३-६७ बीच मात्र छह कथा धरि। — लेखक मानैत छथि जे ई उल्लेख हुनक कुल रचनात्मक अवदानक मुकाबले बहुत कम अछि।
१८७. (B) १९३०मे जन्म, १९६० लग रचनारम्भ, १९७२मे मृत्यु। — छोट जीवन आ लगभग बारह वर्षक लेखनकालमे महत्त्वपूर्ण रचना भेल।
१८८. (B) मोमक नाक, धूकल केरा, लगाम, वचन वैष्णव, नहला पर दहला। — लेखक हुनकर व्यापकता देखबैत छह कथा धरि सीमित आलोचना पर प्रश्न करैत छथि।
१८९. (C) ठाकुरजी भविष्यक राजनीतिक-सामाजिक संकेत कऽ गेल छथि। — शीर्षक आलोचनात्मक लेखकें रूपकांतक व्यंग-दृष्टिसँ जोड़ैत अछि।
१९०. (A) मैथिली व्यंग आलोचनामे रूपकांत ठाकुरक पुनर्पाठ। — लेख उपेक्षित व्यंगकारक राजनीतिक चेतना आ साहित्यिक महत्त्व उजागर करैत अछि।
१९१. (B) जाहि व्यंगमे राजनीति, शासन-व्यवस्था आ संचालकपर निशाना साधल गेल हो। — ओ स्वयं कहैत छथि जे ई अकादमिक परिभाषा नहि, मुदा व्यावहारिक समझ अछि।
१९२. (B) व्यंगकें आलोचक प्रायः हास्य मानि लैत छथि। — लेखकक अनुसार ९३ प्रतिशत व्यंग हास्यक नामे पढ़ल जाइत अछि।
१९३. (D) सुच्चा व्यंग लिखलापर सेहो हास्य-व्यंग सम्राट कहल गेलाह। — हास्यकार पहिने, व्यंगकार बादमे—ई क्रम लेखककें समस्या लगैत अछि।
१९४. (B) मर्दानगी, कमाइ, विवाह आ अधिकारहीन श्रमक सामाजिक धारणा। — “मर्द माने कमौआ...” सूत्र मैथिल समाजक ठस धारणा पर चोट अछि।
१९५. (D) कमीशनखोरी आ नातागत शोषण। — भातिज-जमाए पिती-ससुर धरि नहि छोड़ैत—ई सामाजिक-राजनीतिक भ्रष्टाचारक चित्र अछि।
१९६. (D) बेशर्म, निर्लज्ज, हेहर, थेथर सत्ता। — लेखक ई वाक्य तात्कालीन राजनीतिक व्यंगक केन्द्र बनबैत छथि।
१९७. (D) कांग्रेसी नेतासँ। — लोककें पेटमे राखि सुख-दुख बिसरि आगू बढ़बाक छवि राजनीतिक रूपक बनैत अछि।
१९८. (A) उन्नतिक कागजी आँकड़ा मोन राखबाक निरर्थकता। — सरकारी डपोरशंखी योजना पर प्रहार अछि।
१९९. (C) सुधारवादी दृष्टि मात्रसँ सुधार नहि होइत। — लेखक एकरा प्रगतिशीलता लिखलासँ प्रगतिशीलता आबि जाइत नहि, एहि रूपमे पढ़ैत छथि।
१०००. (B) जनता मोमक नाक जकाँ जेम्हर नफगर तेम्हर घूमि जाइत अछि। — रूपक जनता, सत्ता आ अवसरवादक चरित्र पर तीक्ष्ण व्यंग अछि।
१००१. (C) आकाशवाणीक बी-हाइग्रेड कलाकार आ परम्परागत योगक शिक्षाप्राप्त। — लेखकक परिचय लोकसंगीत आ साधना-दुनूक संग देल गेल अछि।
१००२. (A) मिथिलाक परम्परागत लोकगीत-धनकें लुप्त होइत रूपमे बुझि संरक्षणक आग्रह। — लेख लोककंठमे रहल संस्कार-गीतक घटैत परम्पराक ओर ध्यान दैत अछि।
१००३. (C) मिथिलाक श्रेष्ठ संस्कृति आ परम्पराकें सुरक्षित रखबाक श्रेय। — लोकगीत केवल मनोरंजन नहि, सांस्कृतिक स्मृति-संरक्षणक साधन अछि।
१००४. (B) ओ सभ लोकगीतक माध्यमसँ जनसामान्यकें मूल संस्कृति प्रति उदार बनौलनि। — लेख परम्पराक सूत्रधार पूर्वजक सांस्कृतिक दूरदृष्टि देखबैत अछि।
१००५. (C) रचनामे विविधता आएल, मुदा आदर्श-आचारक परम्परा लोककंठमे रहि गेल। — परिवर्तन भेल, तथापि मूल नैतिक-सांस्कृतिक भाव बाँचल रहल।
१००६. (B) लोकगीतमे कृत्रिमता नहि, समाजक सामान्य व्यवहारक अभिव्यक्ति होइत अछि। — लोकगीतक शक्ति तकर सहजता आ सामाजिक स्वाभाविकतामे अछि।
१००७. (D) सभ्यता, संस्कृति, रीति-रिवाज, पर्व-त्योहार, कला, साहित्य आ आकांक्षा। — लेखक लोकगीतकें मिथिलाक सामूहिक जीवनक दर्पण बनबैत छथि।
१००८. (C) सभ बिध-बेवहार गीतक संग सम्पन्न होइत रहल अछि। — संस्कार-समाज आ गीत एक-दोसरसँ अलग नहि रहल।
१००९. (D) खास प्रकारक रागक प्रयोग, जे अन्यत्र नहि देखल जाइत। — लेख गीतक सांगीतिक विशिष्टता पर बल दैत अछि।
१०१०. (C) पराती लोकगीतसँ। — पराती गीतक माध्यमे जागरण आ धर्म-संस्कारक सम्बन्ध देखाओल गेल अछि।
१०११. (C) सोहर, खेलउना, छठिहार, पीपर पिलाई, आँख अँजाई आ बधैया। — लेख जन्म-संस्कारक विविध गीत-रूपक सूची दैत अछि।
१०१२. (B) बगीचा, नैहर आ सासुरक पूर्णता पुत्र बिना अधूर मानल गेल। — गीतक रूपक पुत्र-कामनाक सामाजिक भाव व्यक्त करैत अछि।
१०१३. (B) बहुलता रहितहुँ एक प्रिय अभावसँ सौन्दर्य अधूर बुझाईत अछि। — गीतमे बगीचाक छवि पुत्र-अभावक रूपक बनैत अछि।

१०१४. (B) भाइ-भातिज रहितहुँ माय बिना नैहर अपूर्ण लगैत अछि। — गीत मातृ-सम्बन्धक भावनात्मक केन्द्रीयता देखबैत अछि।
१०१५. (C) अपन होरिल/संतान बिना सासुर सेहो मनभावन नहि लगैत। — गीत मातृत्वक आकांक्षाकें सामाजिक वातावरणसँ जोड़ैत अछि।
१०१६. (A) दैवी सहाय आ संतान-प्राप्तिक आशासँ। — धार्मिक क्रिया पुत्रकामनाक प्रार्थना-भावमे आयल अछि।
१०१७. (B) एक संतान भेटिते हृदय जुड़ा जाए। — गीतमे पुत्र-प्राप्तिकें हृदय-शान्तिक रूपमे देखल गेल अछि।
१०१८. (C) जन्म-संस्कारक भाव-गहनता आ लोकस्मृति देखएबाक लेल। — उदाहरण लोकगीतक सामाजिक मनोविज्ञान स्पष्ट करैत अछि।
१०१९. (B) संतान-आकांक्षा सामाजिक अछि, मुदा दैव-सहायक आशा धार्मिक अछि। — लोकगीत सामाजिक यथार्थ आ भक्ति-भाव दुनूकें जोड़ैत अछि।
१०२०. (D) ओ मिथिलाक जन्म-संस्कारक भाव, विश्वास आ परिवार-रचना सुरक्षित राखैत अछि। — लेख सोहरकें जीवित सांस्कृतिक अभिलेख मानैत अछि।
१०२१. (C) वेदना कालमे सासु, जेठानी आ ननद कठोर लगैत छथि। — गीत प्रसव-दर्दक मानस-स्थिति सहज रूपमे कहैत अछि।
१०२२. (C) संतान देखिते सभ कष्ट बिसरि जाइत अछि। — लेख प्रसव-पीड़ासँ आनन्दक भावान्तर देखबैत अछि।
१०२३. (A) अपन माय वेदना बाँटि लेतथि, एहि विश्वासक अभाव। — गीत माय-संबंधक करुण निकटता व्यक्त करैत अछि।
१०२४. (C) पीड़ित स्त्रीक दृष्टिमे असंवेदनशील सासु-भाउज। — प्रसव-वेदना सम्बन्धक भावात्मक दूरी बढ़ा दैत अछि।
१०२५. (D) छठिहार। — लेख जन्म-संस्कारक प्रथम सार्वजनिक/घरेलू उत्सवक रूपमे छठिहारक उल्लेख करैत अछि।
१०२६. (D) ननद आ भाउजक मधुर हास-परिहास। — खेलउना गीत परिवारक स्त्री-संबंधक सहज नाट्य प्रस्तुत करैत अछि।
१०२७. (D) छठिहारक आनन्दमे ननदिक उपस्थिति मधुर मानल गेल। — गीत ननदिक आवाज, आगमन आ व्यवहारक स्नेह देखबैत अछि।
१०२८. (D) नगर, द्वार, आँगन, सोइरी धरि क्रमिक प्रवेश। — गीत ननदिक स्वागतकें चरणबद्ध नाटकीय रूप दैत अछि।
१०२९. (B) स्नेह बीच उपहार-मांगक चुटकीदार हास्य। — ननद-भाउज सम्बन्धक मिठास आ मांगक तिक्त-मजाक एकठाम अछि।
१०३०. (B) दुख, जन्म, स्नेह, मांग आ उत्सवक पूरा घरेलू संसार। — लेख जन्म-संस्कार गीतमे जीवनक बहुरंगी अनुभव देखबैत अछि।
१०३१. (B) इनाम/बधैया आ गहना-सामग्री। — गीत छठिहारक उपहार-परम्पराकें संवादक रूप दैत अछि।
१०३२. (D) मांग टारबाक चतुर हास्यपूर्ण प्रयास। — भाउज ननदिक मांगसँ बचबाक लेल तर्कक सहारा लैत अछि।
१०३३. (B) उपहार-मांगक खेलमे हास्यपूर्ण दबाव। — ननद-भाउज परिहास सामाजिक सम्बन्धक जीवंत रूप अछि।
१०३४. (C) भाइपर अपन स्नेह-अधिकारक ठिठोली। — गीतमे अधिकार, स्नेह आ चुटकुला एक संग अछि।
१०३५. (D) हारि बधैया गबैत अधिकारपूर्वक मांग करैत अछि। — संवाद अंतमे गीत-रूपक अधिकारमय मांगमे बदलैत अछि।
१०३६. (D) ओ अधिक विशेष, मनपसिन्न वस्तु चाहैत अछि। — गीत उपहारक श्रेणीकरणसँ हास्य आ लालसा देखबैत अछि।
१०३७. (D) उत्सवक सौन्दर्यबोध आ सजधजक आकांक्षा। — ननदिक मांग जन्मोत्सवक उल्लासक विस्तार अछि।
१०३८. (C) आधुनिक व्यवहारमे पुरान लोक-गायनक प्रचलन घटि रहल अछि। — लेख प्रत्यक्ष चिन्ता व्यक्त करैत अछि जे गीत सभ लुप्त भऽ रहल अछि।
१०३९. (A) लौकिक परम्परागत सम्बन्धक मधुरता प्रभावित होएबाक सम्भावना। — लेख गीतकें सम्बन्ध-संरक्षणक माध्यम मानैत अछि।
१०४०. (C) आदर्शकें बचाबए लेल विकल्प कोना खोजल जाए। — लेख संरक्षणक व्यावहारिक बाट सोचबाक आग्रह करैत अछि।
१०४१. (A) विवाहपूर्वहिसँ गीतक रीत लोकजीवनमे रहल अछि। — लेख विवाहक आरम्भिक चरणसँ गीतक उपस्थिति देखबैत अछि।
१०४२. (B) सम्मर, कुमार आ लगन। — लेख विवाह-पूर्व वर-खोज परम्परासँ एहि गीत-रूपकें जोड़ैत अछि।
१०४३. (C) सीता स्वयंवर। — मिथिलाक बेटी सीताक विवाह लोकगीतक बीज-रूपमे सुरक्षित कहल गेल।
१०४४. (C) धनुष तोड़निहार वरक चयन। — स्वयंवरक मूल कथा गीतमे संक्षिप्त रूपेँ आयल अछि।
१०४५. (A) योग्यता वंश-धनसँ ऊपर निर्णायक अछि। — धनुष तोड़बाक सामर्थ्य वर-चयनक मापदण्ड बनैत अछि।
१०४६. (D) विवाह सुनिश्चित भेलापर आँगनमे स्त्रीगण समूह द्वारा। — लेख विवाह-पूर्व कन्याविधिक संग लगन गीतक सम्बन्ध बतबैत अछि।
१०४७. (A) द्वारपर धनुष राखल, जे तोड़त से सीताकें लऽ जाएत। — गीत कथा आ अनुष्ठानक मिलन करबैत अछि।

१०४८. (A) धनुष-स्पर्शक असफलता आ रामक विजयक विरोधी पृष्ठभूमि बनबैत अछि। — गीत नाटकीयता बढ़ाबाक लेल भिन्न राजाक आगमन देखबैत अछि।
१०४९. (A) विवाहक व्यवस्था, कन्यादान आ दहेज-चिन्ता। — लेख कुमार गीतकें पितृ-चिन्ता आ कन्या-जिज्ञासाक संवाद बनबैत अछि।
१०५०. (D) बेटीकें धर्म-सम्पादनक अनिवार्य अंग मानल गेल। — गीत पिता-कन्या सम्बन्धक गौरवपूर्ण रूप प्रस्तुत करैत अछि।
१०५१. (C) बेटी लछमी आ जमाय विष्णु रूपमे। — परिछन गीत दुलहा-दुलहिनकें दैवी सौन्दर्यसँ जोड़ैत अछि।
१०५२. (C) दुलहाकें शुभ, दैवी अतिथि रूपमे देखब। — गीत विवाह-आँगनकें पावन आगमनक स्थल बनबैत अछि।
१०५३. (C) दुलहाक। — दुलहाकें कलश, डाला आ गीतक संग विधिपूर्वक स्वागत कएल जाइत अछि।
१०५४. (C) मंगल-स्वागतक विधिकारी उपस्थिति। — कलश लोक-विवाहक शुभ प्रतीक अछि।
१०५५. (D) अरवा चाउरक चानन, सिन्दूर, काजर, बेसन, राई, लवण आदि। — लेख परिछनक उपचार-सामग्रीक लोकविधि गिनबैत अछि।
१०५६. (D) टोना-टारबाक लोक-उपचार। — विवाहक शुभकामना संग अपशकुन-निवारणक भाव जुड़ल अछि।
१०५७. (D) दुआरसँ गृह-आँगन धरि विधिपूर्वक प्रवेश। — परिछन बाह्य आगमनकें पारिवारिक स्वीकृतिमे बदलैत अछि।
१०५८. (B) दुलहा-दुलहिन लेल मंगलकामना। — गीतक आवृत्ति स्वयं शुभांशक लय बनबैत अछि।
१०५९. (B) सौन्दर्य, रक्षा आ मंगलक मिश्रित लोकविधि। — परिछन गीत विधि-सूचीकें काव्यात्मक बनबैत अछि।
१०६०. (D) विवाहक लोक-विधि आ तकर संगीत-स्मृति कमजोर होइत अछि। — लेखक गीत-धुनक संरक्षणकें संस्कार-संरक्षणक रूपमे देखैत छथि।
१०६१. (D) हिमालय राजा, गौरी बेटी आ शिव जमाय मानल जाइत छथि। — गीत मिथिलाक बेटी-विवाहक भावकें शिव-पार्वती कथासँ जोड़ैत अछि।
१०६२. (C) गरल, नाग, जटा-गंगा, डमरू आ भूत-प्रेतसहित भयावह-विलक्षण। — गीत शिवक अलौकिक बरियातक हास्य-भय मिश्रित चित्र दैत अछि।
१०६३. (B) लोक कोठा चढ़ि देखैत अछि आ बरियात भयंकर लगैत अछि। — गीत लोक-प्रेक्षणक रंगमंचीयता प्रस्तुत करैत अछि।
१०६४. (A) नवतुरिया पीढ़ीक बीच। — लेख विवाहक वैदिक विधि संग गीतक घटैत परम्परा पर चिन्ता करैत अछि।
१०६५. (B) मंगलमय दान-विधि आ दुलहा-दुलहिनक जोड़ी देखबाक हर्ष। — गीत कन्यादानक गंभीर क्षणकें उत्सव-रससँ भरैत अछि।
१०६६. (B) बेटीक वियोगक करुणा। — सुनयना माताक सिसकैत भाव गीतक केन्द्र बनैत अछि।
१०६७. (B) कन्यादान। — गीत विवाह-मण्डपक कर्मकाण्डीय क्षणकें लोक-भाषामे पकड़ैत अछि।
१०६८. (C) लोकगीतमे वैदिक कर्मकाण्डक समावेश। — गीत शास्त्रीय विधि आ लोक-संवेदना बीच सेतु बनैत अछि।
१०६९. (D) बेटीकें विदा/वीरान होइत देखबाक वियोग। — कन्यादान गीत विवाहक करुण पक्ष उजागर करैत अछि।
१०७०. (D) विवाह-वियोगकें सामाजिक परम्पराक अनिवार्य रूप मानब। — गीत निजी दुख आ सामाजिक रीति बीचक तनाव देखबैत अछि।
१०७१. (B) बरियाती भोजन करए बैसला पर स्वागतक लेल। — जेवनार गीत भोजन-संस्कारकें हास्य-विनोदसँ जोड़ैत अछि।
१०७२. (A) भोजनकें कल्पनाशील महल/मंदिरक उत्सवमे बदलि दैत अछि। — खोआ, बरफी, जलेबी, गुलाबजामुन आदि स्थापत्य-रूपक बनैत अछि।
१०७३. (A) आतिथ्यक सम्पन्नता आ भोजक विस्तार। — गीत समधी-बरियातीक सम्मानक भव्य लोक-छवि बनबैत अछि।
१०७४. (D) दुलहामे धैर्य, विनम्रता आ सहिष्णुता जगाएब। — डहकनक गारि केवल अपमान नहि, सामाजिक प्रशिक्षण आ हास्यक विधि अछि।
१०७५. (A) मान्यता अछि जे राम सेहो मैथिलानीक गारि सुनि प्रसन्न भेलाह। — रामक कथा डहकनकें लोक-धर्मक सम्मान देल गेल अछि।
१०७६. (D) गारि-विनोदक मर्यादा आ सौन्दर्य-दृष्टि दुनू साथ अछि। — डहकन विनोदक सीमा मानैत अछि, निष्ठुर अपमान नहि।
१०७७. (D) विध-बेवहार करबैत दुलहासँ चुटकी लेब। — गाइनिनक गीत विवाह-विधि कें सामूहिक हास्यमय बनबैत अछि।
१०७८. (A) विवाहक बाद दुलहा-दुलहिनक कोहबरमे चारि दिन रहबाक परम्परा। — कोहबर गीत नवदम्पतिक सम्बन्धक भाव-भूमि बनबैत अछि।
१०७९. (C) ओ प्रेमभाव जगाबए बला विलक्षण कोहबर-वर्णन करैत अछि। — गीत कोहबरकें दैवी दाम्पत्यक प्रतीक बना दैत अछि।
१०८०. (D) दाम्पत्य-प्रेम बढ़ाबए बला लोक-संस्कारक गीत-स्मृति। — लेख विवाहक आंतरिक भाव-संस्कार पर गीतक भूमिका देखबैत अछि।
१०८१. (D) नवविवाहिताक तेरह दिनक व्रत-अनुष्ठान। — लेख मधुश्रावणीकें विवाह संस्कारक अभिन्न अंग कहैत अछि।
१०८२. (A) अपराह्मे फूल लोढ़ि आनब। — फूल-लोढ़ाइ व्रत, सामूहिकता आ गीतक संग जुड़ल अछि।

१०८३. (B) गामभरिक नवविवाहिताक टोली मनोरंजनपूर्वक व्रत-निष्ठा निभबैत अछि। — गीत व्रतकें सामूहिक स्त्री-अनुभव बनबैत अछि।
१०८४. (B) नाग-नागिनक पूजा। — बिषहारा गीत सुहाग-सुरक्षा आ नाग-पूजनक लोक-संस्कारसँ जुड़ल अछि।
१०८५. (C) सिन्दूर, टिकुली, अँगूठी, मुनरी आ तिरछी नजरि। — गीत नवविवाहिताक श्रृंगार आ उमंगक छवि बनबैत अछि।
१०८६. (C) सखी-समूह आ देवी-नायिका सभकें फूल-लोढ़ाइमे जोड़ैत अछि। — गीत पौराणिक नायिका आ लोक-व्रतकें एक स्थान पर अनैत अछि।
१०८७. (C) शिवक वैरागी रूपक लोक-संकेत। — गीत गौरी-शिव प्रेमक प्रतीकात्मक चयन देखबैत अछि।
१०८८. (D) पूजाक श्रृंगारिक आ मंगलमय तैयारी। — विषहारी गीत पूजाक वस्तुकें अलंकारिक महत्त्व दैत अछि।
१०८९. (C) सुहागिनक कंत लाख बरिस जीबथि। — मधुश्रावणी गीत सुहाग-रक्षा आ दीर्घ दाम्पत्यक आकांक्षा दैत अछि।
१०९०. (B) नवतुरिया पीढ़ीक बीच पद, धुन आ परम्परा कमजोर भऽ रहल अछि। — लेख स्त्री-व्रत गीतक पीढ़ीगत संकटक ओर ध्यान दैत अछि।
१०९१. (A) बेटीक द्विरागमनक अवसरपर स्त्रीगणक समवेत स्वरमे। — समदाउन विदाई/द्विरागमनक करुण लोकगीत अछि।
१०९२. (A) करुणा प्रधान उदासी। — लेख नवतुरिया पीढ़ीक बीच एहि करुण भासक लुप्तप्रायता बतबैत अछि।
१०९३. (A) निरधन कोखि, रूप, मुख्य पति आ बेटी-भाग्यक करुण प्रश्न। — समदाउन सामाजिक विवशता आ बेटी-वियोगक दुख जोड़ैत अछि।
१०९४. (B) नैहर मिथिला सँ बिछोह। — सीताक माध्यमसँ बेटी-वियोगक लोक-करुणा अभिव्यक्त अछि।
१०९५. (B) मायक आँसू गंगा-धार जकाँ बहि रहल अछि। — समदाउन मायक वियोगकें महा-प्रवाहक रूपक दैत अछि।
१०९६. (D) जाँत चलबैत दू स्त्रीक गायन। — लगनी श्रमप्रधान घरेलू गीत अछि।
१०९७. (B) भक्ति, करुणा आ व्यवहारप्रधान स्वरक कारण। — श्रमक बीच गीत सामाजिक-संवेदनाकें मजबूत करैत अछि।
१०९८. (B) जाँतक चलन बन्द भेलासँ गीत प्रायः लुप्त, मुदा दूर देहातमे कतहु सुरक्षित। — तकनीकी परिवर्तन लोक-गीत पर सीधा असर करैत अछि।
१०९९. (B) राधा-कृष्ण विरह आ माधवकें रोकबाक भाव। — लगनी श्रमगीत रहितो भक्तिरस आ विरहसँ भरल अछि।
११००. (B) ओ स्त्री-जीवनक वियोग, श्रम, भक्ति आ सम्बन्धक लोक-संसार सुरक्षित करैत अछि। — दूनू गीत मिथिलाक स्त्री-लोक अनुभवक अलग-अलग रूप पकड़ैत अछि।
११०१. (D) समृद्ध रहल, मुदा वर्तमानमे गीत आ धुन लुप्तप्राय। — लेख ऋतु-प्रधान गीतक क्षरणक चर्चा करैत अछि।
११०२. (A) साहेबदास पदावलीसँ। — लेख संकलन-स्रोत देलक अछि जे लोकसाहित्यक संरक्षणमे सहायक अछि।
११०३. (B) विरह आ प्रेमक व्यथा। — मलार पद वर्षा-ऋतु, रति-वेदना आ विरहक भाव जगबैत अछि।
११०४. (D) विरह-वेदना सँ पत्र लिखबो कठिन। — अँचल-पत्र, नयन-जल, काजर आदि रूपक विरहक तीव्रता देखबैत अछि।
११०५. (C) प्रेम, श्रृंगार आ रति-भावक अभिव्यक्ति। — लेख बटगमनीकें राग-अनुरागसँ परिपूर्ण लोक-गीत मानैत अछि।
११०६. (C) मांगलिक अनुष्ठानमे डिहबार, ब्रह्मस्थान, माटिमंगल, आम-महू बियाह आदि लेल बाटमे निकलैत काल। — गीत चलैत टोलीक मार्ग-संगीतक रूपमे अछि।
११०७. (D) नव पीढ़ीक मैथिल ललनाक गीत-उमंग आ रुचिक अभाव। — पीढ़ीगत परिवर्तन लोक-परम्पराक संकट बनैत अछि।
११०८. (B) संभोग-संकेतयुक्त श्रृंगारिक नायिका-वाणी। — लेख एहि पदकें स्नेह, चुम्बन, आलिंगन आ अनुरागक उदाहरण रूपमे रखैत अछि।
११०९. (B) मिलन लेल साज-श्रृंगार आ प्रेम-उत्साहमे आकुल। — गीत विरहक बाद मिलनक तैयारीक लोक-भाव बतबैत अछि।
१११०. (B) धुन, पद, ऋतु, प्रेम आ संस्कार सभकें संग-संग बचाएब जरूरी अछि। — लेख केवल शब्द नहि, गायन-परम्परा आ प्रसंग-स्मृति बचाएबाक आग्रह करैत अछि।
११११. (B) डॉ. गंगेश गुंजन आ विद्या मिश्र। — विशेषांक स्मरण-लेखक रूपमे ई नाम सामने रखैत अछि।
१११२. (C) महान पोथीक पुस्तकालयमे सजा देबाक ऐतिहासिक शोक जेकाँ। — ओ व्यक्ति-क्षतिकें ज्ञान-संसारक क्षति मानैत छथि।
१११३. (D) मैथिलीक लौकिक आ शास्त्रीय बुद्धिक समन्वयमे। — स्मरण जयकान्त मिश्रकें परम्परा आ व्यवहार दुनूक सेतु बनबैत अछि।
१११४. (B) आगामी पीढ़ी हुनका देखबाक सौभाग्यपर रश्क करत, एहि भावक संकेत लेल। — उद्धरण स्मृति-गौरव आ पीढ़ीगत मूल्यक बोध करबैत अछि।
१११५. (C) मैथिलीक आधुनिक वेद। — ई कथन हुनक व्यापक ज्ञान-प्रतिष्ठा आ सांस्कृतिक महत्त्व सूचित करैत अछि।

१११६. (A) मिथिला-मैथिलीक विकास आ साहित्यमे हुनक योगदानक चर्चा सुनि। — घरक वातावरणमे जयकान्त मिश्र आदर्श-रूपमे उपस्थित छलाह।
१११७. (B) ओ जयकान्त मिश्रक भातिजक संग विवाहित भऽ परिवारक पुतोहु बनलीह। — स्मरण निजी आदर सँ पारिवारिक निकटताधरि पहुँचैत अछि।
१११८. (C) ओ जयकान्त-उमेश मिश्र परिवारक विद्वत्ता आ गुरु-सम्बन्धक प्रशंसा करैत छल। — ई प्रसंग परिवारक अकादमिक प्रतिष्ठाकें बाहरी मान्यता दैत अछि।
१११९. (D) संयुक्त राज्य अमेरिकामे बसलाह, मुदा हृदय-आत्मा-मन इलाहाबादमे रहल। — स्मरण प्रवास आ जड़ि-बन्धनक भाव व्यक्त करैत अछि।
११२०. (C) समर्पण, परम्परा, सरलता आ सांस्कृतिक प्रति लगाव। — स्मरण परिवारक मुखिया, गुरु आ “भाइजी काका” रूपक क्षति अनुभव करैत अछि।
११२१. (C) रंग-अबीरक खेलसँ पहिने सम्मत/होलिका दहन। — लेख होलीक बाहरी रंगसँ पहिने सांस्कृतिक विधिक अर्थ खोलैत अछि।
११२२. (A) प्रह्लादक विष्णु-भक्ति सँ। — कथा भक्तिपर अत्याचारी सत्ता-कुपित होएबाक प्रसंग बतबैत अछि।
११२३. (A) बरदानमे भेटल चदरि/रक्षा-वस्त्रक रूपमे। — ओहि वरदानक दुरुपयोगक कारण ओ स्वयं भस्म भेल।
११२४. (B) अन्याय अंततः टिकैत नहि, भक्त/धर्मक रक्षा होइत अछि। — लेख होलीक कथा सँ नैतिक शिक्षा ग्रहण करबैत अछि।
११२५. (D) अत्याचारीक अंतपर लोक खुशी मनबैत अछि। — कथा सामाजिक न्याय-बोधक प्रतीक बनैत अछि।
११२६. (D) समाज अत्याचार सहर्ष स्वीकार करैत अछि, से नहि। — लेख चुप्पीकें स्वीकृति नहि मानबाक चेतावनी दैत अछि।
११२७. (A) अकाल मृत्यु वा विनाशक दिशा ओहि प्रवृत्तिक फल भऽ सकैत अछि। — होलिका प्रसंगसँ अन्यायकारी आचरणक परिणाम देखाओल गेल।
११२८. (A) धन-बल आ सुख-भोगसँ स्वयंकेँ ईश्वर मानब। — लेख अहंकारकें पतनक कारण रूपमे देखैत अछि।
११२९. (C) जनकल्याणमे, जनविरोधी काजमे नहि। — होलिकाक वरदानक दुरुपयोग उल्टा ओकरा पर पड़ल।
११३०. (B) ओ आजुक व्यवहार, मर्यादा आ सामाजिक बुद्धिक पाठ दैत अछि। — लेख कथा सँ आधुनिक जीवन लेल मार्गदर्शन निकालैत अछि।
११३१. (C) ककरो घरक जरूरी लकड़ी चुपचाप जरा देब सामाजिक क्षति अछि। — लेख पर्व-उत्साहकें मर्यादा आ दूसरेक हितसँ बाँधैत अछि।
११३२. (D) पर्वक बहाना आर्थिक असंतुलन आ बादक कष्ट बना सकैत अछि। — उत्सव विवेकहीन खर्चक अवसर नहि हेबाक चाही।
११३३. (D) मस्ती बादमे अनर्थक कारण बनि सकैत अछि। — लेख संयमित आ विवेकपूर्ण उत्सवक आग्रह करैत अछि।
११३४. (A) एहन “मस्ती” दोसराक तकलीफ बढ़बैत अछि। — होलीक रंग आनन्दक साधन हो, हिंस्र मजाकक नहि।
११३५. (C) उत्सवमे सीमाक भीतर रहब बुद्धिमानी अछि। — लेख सहानुभूति आ परिमिति केन्द्रीय बनबैत अछि।
११३६. (D) बन्धन-बाधा रहितहुँ समाजक निरन्तर दायित्व। — होलीक चर्चा व्यापक सांस्कृतिक उत्तरदायित्व धरि पहुँचैत अछि।
११३७. (D) नटवेश धरि नृत्य देखेबाक। — लेख विद्यापतिक गीतसँ मर्यादित क्रियाशीलताक उदाहरण लैत अछि।
११३८. (A) गंगाधर बहि धरती जलमग्न आ सर्प चारुदिसि बिखरि जाएबाक। — गीतमे कार्यक सम्भावित परिणामक विवेकपूर्ण विचार अछि।
११३९. (C) बाधा रहितहुँ बुद्धिमानीपूर्वक मर्यादित काजक संकेत लेल। — लेखक मान राखब आ अनर्थ टारब दुनूकें साधबाक शिक्षा लैत छथि।
११४०. (C) क्रियाकलाप अपन आ समाजक हितमे, बुद्धिमानीपूर्वक होए। — लेख पर्वकें आत्मसंयम, करुणा आ सांस्कृतिक चेतनाक पाठ बनबैत अछि।
११४१. (A) अमेरिकामे मैथिल परिवार सभक पारम्परिक होली। — लेख प्रवासमे मिथिला-सांस्कृतिक पालनक अनुभव दैत अछि।
११४२. (C) २५-३० टा परिवार। — संख्या प्रवासी समुदायमे सामूहिकता देखबैत अछि।
११४३. (A) प्रो. हरिमोहन झाक नाति आ डॉ. रमा झाक पुत्र। — लेख पारिवारिक-साहित्यिक वंश-संबंधक प्रसंग जोड़ैत अछि।
११४४. (A) पाबनि-तिहार पारम्परिक रूपमे मनेबाक, जाहिसँ अगिला पीढ़ी सीखि सकए। — होली केवल मनोरंजन नहि, सांस्कृतिक शिक्षा बनैत अछि।
११४५. (D) हिरण्यकश्यप/होलिका प्रसंगक नाटक। — बच्चा सभ पाबनिक कथा मंचन द्वारा बुझि रहल छल।
११४६. (B) होली किएक-कोना मनाओल जाए, रंग, गरा-मिलन, खानपान आ गीत। — लेख संस्कारक संपूर्ण शिक्षण-पद्धति देखबैत अछि।
११४७. (D) न्यू-जर्सी, वर्जिनिया, वाशिंगटन डी.सी. आ मेरीलैण्ड। — प्रवासी मैथिलक क्षेत्रीय फैलाव आ जुटान स्पष्ट अछि।
११४८. (B) नीक उत्तर, श्रेष्ठ पोशाक-समन्वय आ पार्सल देबाक प्रतियोगिता। — उत्सवमे सांस्कृतिक ज्ञान आ सहभागिता प्रतियोगितासँ जोड़ल गेल।
११४९. (D) मिथिला-सांस्कृतिसँ सम्बन्धित गहन प्रश्न। — प्रवासी बाल-युवा पीढ़ीकें ज्ञानमूलक ढंगसँ जोड़ल गेल।
११५०. (D) स्कूल-कॉलेजक बच्चा सभ एहि अवसरमे भाग लऽ सकल। — उत्सवक समय-परिस्थिति प्रवासी जीवनक अनुकूलता देखबैत अछि।

११५१. (B) विनीत उत्पलक कविता-संग्रहपर। — शीर्षक स्वयं कविताक आत्म-प्रकाश आ समीक्षा-दृष्टि सूचित करैत अछि।
११५२. (C) बजार जकाँ मंदी आ दबाव साहित्य-विधामे सेहो पसरल अछि। — लेख साहित्यकें बाजार-तर्कसँ प्रभावित मानैत अछि।
११५३. (B) कविता आओर अनठिआएल, कात-करोट भेल वा कएल जा रहल अछि। — लेख कविता-विधाक उपेक्षा आ बाजारीकरणक संकट उठबैत अछि।
११५४. (C) ओ दीर्घजीवी कला नहि रहि, ड्राइंग रूमक सजावटी नमूना बनि जाएत। — लेख कविता कें सामाजिक जीवन-संबंध चाही, मात्र प्रदर्शन नहि।
११५५. (C) केवल उपयोगिता वा क्रय-विक्रय मूल्यपर भाषा बचबाक धारणा अवसरवादी अछि। — लेख भाषाक सांस्कृतिक अस्मिता आ काव्य-सम्पत्ति पर बल दैत अछि।
११५६. (D) भाषाकें केवल “दाम” वा बिक्रीक आधारपर नहि बुझल जाए। — साहित्यिक भाषा बाजारक उत्पाद नहि, संवेदनाक वाहक अछि।
११५७. (D) बजारक भाषा आ कविताक भाषा बीचक भेद। — ई नैतिक बुद्धिसँ बुझबाक बात कहल गेल अछि।
११५८. (B) जँ कवि बाजारक तर्कमे समर्पित भऽ जाए। — लेख कविता कें मॉल/दोकानक सामान बनबाक विरुद्ध चेतावनी दैत अछि।
११५९. (A) नीति-बुद्धि, स्वविवेक आ गंभीर मंथन। — बाजार-कविता द्वन्द्वसँ निकलए लेल विवेक जरूरी अछि।
११६०. (D) ओहि पाण्डुलिपिक बहाने लेखक बाजार आ कविता-भाषाक प्रश्न उठबैत छथि। — भूमिका केवल प्रशंसा नहि, व्यापक साहित्यिक विमर्श बनैत अछि।
११६१. (C) भाषाक सवारीपर। — कविता भाषेक माध्यमे लोक धरि पहुँचैत अछि।
११६२. (A) भाषा, कवि आ काव्यबोध यात्रा-स्वरूप निर्धारित करैत अछि। — लेख कविता-साधनाक साधन आ साधक दूनूकें महत्त्व दैत अछि।
११६३. (D) स्वविवेक आ अनेक आन्तरिक काव्य-तत्त्व। — कवि निरंतर अभ्याससँ अपन कलात्मक कर्म-कुशलता विकसित करैत अछि।
११६४. (C) ब्रांड प्रकाशन, धन, सरकारी पुस्तकालय आ बिक्रीक दबाव देखएबाक लेल। — लेख बाजारी प्रकाशन-व्यवस्थाक व्यंग्यात्मक आलोचना करैत अछि।
११६५. (A) लेखक-कविकें प्रायः अपना अपनी कऽ पुस्तक छपवाबए पड़ैत अछि। — मैथिलीक प्रकाशन-संरचना कमजोर देखाओल गेल अछि।
११६६. (C) मैथिल लेखकक पोथी-प्रसार-विक्रयक उद्यमक इतिहास देखएबाक लेल। — व्यक्ति-समर्पण मैथिली साहित्य-प्रसारमे जरूरी रहल अछि।
११६७. (A) युवक दुस्साहसी बुझएलाह। — कविताक बाट धरबाक लेल साहस चाही, से लेखक मानैत छथि।
११६८. (A) ई काज हुनक प्राथमिकतासँ बाहर, मुदा मैथिली भविष्य सामने हो तँ स्वागत योग्य। — लेखक औपचारिक भूमिकासँ अलग रहितो नव प्रतिभाकें स्वीकार करैत छथि।
११६९. (A) ओ कविताक संसार, वर्तमान आ सरोकार बुझबामे सहायक अछि। — प्रस्तावना केवल आयुजन्य उच्छ्वास नहि, वचनबद्धता रूपमे पढ़ल गेल।
११७०. (D) कथनक कोटि, तकर पकड़ आ प्रयोगक विधि। — लेख अन्तमे ऊर्जावान संवेदनशील कविक पथ प्रशस्त होएबाक आशा व्यक्त करैत अछि।
११७१. (B) साझा प्रकाशन, ललितपुरक अध्यक्ष। — लेखकक सामाजिक-साहित्यिक हस्तक्षेप संस्थागत अनुभवसँ जुड़ल अछि।
११७२. (C) नेपालक संचार-साहित्य क्षेत्रमे मधेशी/मैथिल प्रतिनिधित्वक कमी। — लेख समावेशिताक नारा आ वास्तविकता बीचक फाँक देखबैत अछि।
११७३. (D) नेपाली भाषा आ नेपाली भाषी सभक पृष्ठपोषण मुख्य रहल। — संचार इतिहासमे बहुभाषिक समुदायक उपेक्षा लेखकक मुद्दा अछि।
११७४. (D) ऑगुरपर गनएबला परिवर्तनक संकेत। — लेख परिवर्तन स्वीकारैत अछि मुदा ओकर सीमितता देखबैत अछि।
११७५. (B) सय वर्षसँ अधिक इतिहासमे पहिल बेर एहन जवाबदेह पदपर पहुँच। — संचार-नीति तहमे प्रतिनिधित्वक प्रश्न ई प्रसंग उठबैत अछि।
११७६. (B) लगभग शून्य। — मुख्य समस्या प्रतीकात्मक उपस्थिति नहि, निर्णयकारी पहुँच अछि।
११७७. (B) मधेशक पत्र-पत्रिकापर पक्षपातपूर्ण आ द्वैध चरित्र देखाओल गेल। — लेख संचार-संस्थाक संरचनात्मक असमानता चिन्हित करैत अछि।
११७८. (A) सबकर कर-मालपोत लगितो समावेशी अवधारणा किएक नहि अपनाओल गेल। — लेख सार्वजनिक साधनपर सभक अधिकारक तर्क दैत अछि।
११७९. (D) मधेश, मिथिला आ मैथिली चर्चा कहुआ गोली जकाँ बुझायल। — निजी क्षेत्रमे प्रतिनिधित्व आ रुचिक संकट बताओल गेल।
११८०. (D) संचार आ साहित्य क्षेत्रमे वास्तविक, निर्णयकारी समावेशी स्वरूप। — लेख नारा नहि, कार्यरूपमे समावेशिताक माँग करैत अछि।
११८१. (D) सूचना-प्रवाहक संकट। — भारत-नेपाल मैथिली जगत बीच संवाद-अभावक प्रश्न उठल अछि।

११८२. (A) ओ सभ अपना मे सीमित भऽ नेपालक गतिविधिपर नजरि राखब जरूरी नहि बुझैत छथि। — सीमापार मैथिली चेतनाक कमी सूचना-अपूर्णता बढ़बैत अछि।
११८३. (C) विगत चारि वर्षसँ राजनीतिक शिकार, गठन नहि भेने काज रुकल। — संस्थागत ठहराव मैथिली परियोजना रोकि रहल अछि।
११८४. (C) भारतीय पत्र-पत्रिकामे चर्चा नहि भेल आ पत्रिका ठमकल। — सीमापार उपेक्षा आ संस्थागत अवरोध दूनू देखाओल गेल।
११८५. (C) सांस्कृतिक संस्थाक राजनीतिकरण। — लेख प्रज्ञाकें राजनीति-सँ मुक्त करबाक बात करैत अछि।
११८६. (C) दैनिक एक पृष्ठ। — लेख कहैत अछि जे उपकार कतेक अछि से देखबाक विषय, मुदा भाषा-उपस्थिति सन्तोषक बात।
११८७. (B) माहौल बनि रहल अछि। — ई प्रसंग संचार-माध्यममे मैथिली उपस्थितिक सकारात्मक संकेत अछि।
११८८. (B) मैथिली प्रति जनमत-वृद्धि, एक उपलब्धि। — विवाद सामाजिक-भाषिक चेतना बढ़एबाक प्रसंग बनल।
११८९. (C) नीक, आओर बढ़ल सम्भावना। — राजनीतिक संरचना-परिवर्तन भाषिक अधिकारक राह खोलि सकैत अछि।
११९०. (C) छपल पुस्तकक प्रचार-प्रसार, समालोचना-समीक्षा आ उदारता। — पुस्तक छपल मात्र पर्याप्त नहि, समीक्षा-चर्चा ओकर सामाजिक जीवन बनबैत अछि।
११९१. (D) २०६५ साल पुस २ गते। — लेखक अपन संस्थागत अनुभवक तिथि दैत साझा प्रकाशनक कथा शुरू करैत छथि।
११९२. (D) पुस्तक-पत्रिका छपब आ सरकारी विद्यालयक पाठ्यपुस्तक वितरण-विक्रय। — लेख संस्थाक व्यापक प्रकाशन-प्रशासनिक भूमिका बतबैत अछि।
११९३. (D) मधेशक मंत्रीक प्रवेश आ समावेशी लोकतंत्रक माहौलसँ। — लेख नेतृत्व-परिवर्तनकें भाषिक-सांस्कृतिक अवसर मानैत अछि।
११९४. (B) पहिल मधेशी, मैथिली साहित्य-प्रेमी जे एहि गरिमामय पदपर बैसाओल गेल। — व्यक्तिगत नियुक्ति सामूहिक प्रतिनिधित्वक प्रसंग बनल।
११९५. (A) नेपाली भाषामे मात्र। — लेख परिवर्तनक पहिले एकभाषिक नीति स्पष्ट करैत अछि।
११९६. (A) नेपाली वाहेकक भाषामे सेहो पुस्तक छापल जाए। — ई निर्णय बहुभाषिक प्रकाशनक द्वार खोलैत अछि।
११९७. (B) विद्यापतिक पोस्टर-चित्र बहार करबाक। — विद्यापति मैथिली सांस्कृतिक प्रतीकक रूपमे साझा प्रकाशनमे प्रवेश करैत छथि।
११९८. (A) छोट चित्रमे देखाओल पागक गणित बुझब कठिन भेल। — मिथिलाक पाग-चिह्न कलात्मक रूपान्तरणमे खास चुनौती बनल।
११९९. (C) “बगियाक गाछ” बालकथा-संग्रह। — देवेन्द्र मिश्रक संकलन साझा प्रकाशनमे नेपाली वाहेक पहिल मैथिली पुस्तक कहल गेल।
१२००. (B) साझा प्रकाशनक दरवाजा मैथिली आ आन भाषाक अधिकार लेल खुजल। — ई पुस्तक प्रतीकात्मक आरम्भ मात्र नहि, बहुभाषिक अधिकारक संकेत अछि।
१२०१. (C) स्त्री-रोग विशेषज्ञ। — परिचयमे मेडिकल शिक्षा आ स्त्री-रोग विशेषज्ञ रूपमे हुनक कार्य स्पष्ट अछि।
१२०२. (D) राटी। — परिचयमे पिता डा. शिव कुमार झा आ गाम राटीक उल्लेख भेटैत अछि।
१२०३. (C) गजहारा। — लेखक-परिचयमे गाम राटी आ सासुर गजहाराक सूचना देल अछि।
१२०४. (B) लगभग ३०-३२ बरससँ। — परिचयमे हुनक दीर्घ मुम्बई-निवासक उल्लेख अछि।
१२०५. (B) मातृभाषा-प्रेम सुनल-पढ़ल बातसँ आगाँ, स्वयं अनुभवक विषय अछि। — लेखिका कहैत छथि जे मातृभाषाक प्रेम बहुत सुनल-पढ़ल अछि, मुदा अनुभव करबाक अवसर विरल अछि।
१२०६. (D) महानगरीक चकाचौंधमे हराएब वा भटक जाएबाक चिन्ता। — बम्बईक आरम्भिक जीवनमे अस्थिरता, भय आ सम्भावना सभ संग-संग उपस्थित अछि।
१२०७. (A) बेरोजगार ग्राजुएट लेल बैंकसँ २०,००० रुपयाक लोन। — लेखमे बेरोजगार डॉक्टर होएबाक कारण हुनका तुरते लोन भेटबाक प्रसंग अछि।
१२०८. (B) क्लीनिक वा दवाखाना खोले भविष्य सुरक्षित करब। — लेखिका कहैत छथि जे ओहि पाइसँ क्लीनिक, घर वा निवेश सम्भव छल।
१२०९. (B) गहना बनाब, सोख पूरा करब वा भारत-भ्रमण करब। — लेखिका निजी उपभोगक सम्भावना सभ गनौलनि, मुदा ओहि दिस नहि गेलीह।
१२१०. (B) किएक तँ मातृभाषा-सेवा लेल निजी पूँजी आ भविष्यक सुरक्षा दाउपर लगल। — लेख भाषा-प्रेमकें भावुक नारा नहि, जीवन-निर्णय आ जोखिमक रूपमे देखबैत अछि।
१२११. (A) डा. मणिकान्त मिश्र। — लेखमे डा. मणिकान्त मिश्रक मैथिली-जुनून मुख्य प्रेरक शक्ति रूपमे आयल अछि।
१२१२. (C) मैथिली भाषाक पत्रिका निकालब। — क्लीनिक वा निजी निवेशक बदला ओ पत्रिका निकालबाक इच्छा व्यक्त कएलनि।

१२१३. (C) “विदेह”। — लेखिका कहैत छथि जे ओ सभ “विदेह” नामक मैथिली पत्रिकाक शुरुआत केलनि।
१२१४. (A) के कीनत आ के पढ़त। — छपाइ मात्र समस्या नहि, पाठक आ क्रेता भेटब मुख्य संकट छल।
१२१५. (C) लगभग दू बरख। — लेखिका कहैत छथि जे कोनाहु घरक पूँजी लगा दू बरख पत्रिका चलल।
१२१६. (B) दूनू गोटे डाक्टरी, घर, अस्पताल आ पारिवारिक झंझटमे व्यस्त छलाह। — भाषा-सेवा संग जीविका आ पारिवारिक दायित्वक दबाव बढ़ल।
१२१७. (C) नव महानगरीय संघर्षक बीच मैथिली पत्रिका निकालब असाधारण साहस छल। — लेखिका एहि काजकेँ साधारण लोकक बसक नहि मानैत छथि।
१२१८. (C) सुरक्षित निजी लाभ छोड़ि मातृभाषाक लेल कठिन जोखिम उठाएब। — लेखमे आर्थिक-सामाजिक अनिश्चितताक बीच भाषा-सेवा केन्द्रीय अछि।
१२१९. (D) भाषा लेल संस्थागत, मुद्रित आ सार्वजनिक मंच बनएबाक प्रयास। — प्रेम केवल बोलब नहि, पत्रिका-सृजनक ठोस प्रयत्न बनल।
१२२०. (B) निजी भविष्यक साधन मातृभाषाक सार्वजनिक सेवामे लगा देल गेल। — एहि कारण प्रसंग त्याग, जोखिम आ भाषिक आस्था तीनूकेँ जोड़ैत अछि।